GURUKUL PATRIKA JAN-SEP 1976 G.K.U.

गुरुकुल पत्रिका

जून-सितम्बर १९७६ —*:*— 18/11/76 आसाढ़-आश्विन २०३३

...ा इन्द्रवेश की अध्यक्षता में प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी से १७-८-७६ को शिष्ट मंडल की भेंट
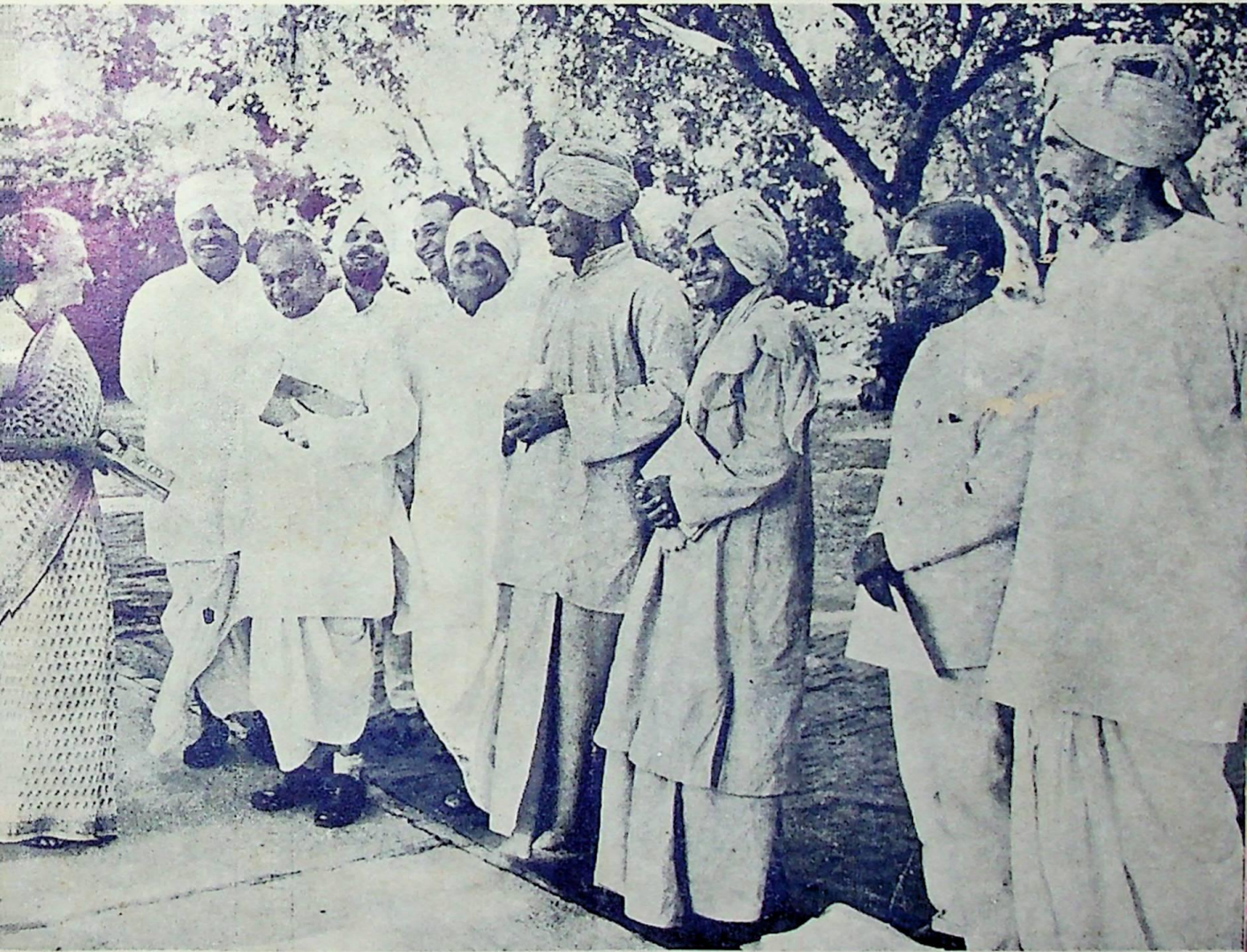
...:- माननीया प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी (डॉ० गंगाराम द्वारा प्रदत्त "ऑक्सफोर्ड हिन्दी परिचायक" हाथ में लिये हुए), चौधरी सुलतान सिंह (संसद सदस्य) डॉ० गंगाराम (कुलपति), सरदार जी, चौ. रणवीर सिंह जी (राज्यसभा में कांग्रेस दल के उपनेता), डॉ. आनन्द (उपमंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब), स्वामी इन्द्रवेश जी (प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब एवं कुलाधिपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार). स्वामी सुधानन्द (आचार्य, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ), पं० मुरारीलाल (मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब) एवं चौधरी सुमेर सिंह ।

सम्पादक— रामाश्रय मिश्र

विश्वविद्यालय के नये कुलपति डॉ० गंगाराम
जिन्होंने २८ अगस्त, १९७९ को नये कुलपति
पद का भार ग्रहण किया।
३१ अगस्त को अभिनन्दन के समय का एक चित्र।

संदेश

माननीया प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी

एवं

राष्ट्रीय युवा नेता संजय गांधी

के

२५ सूत्री आर्थिक कार्य-क्रमों को निष्ठापूर्वक क्रियान्यवन हेतु

सतत प्रयत्नशील

उत्तर प्रदेश के यशस्वी

मुख्य मंत्री श्री नारायणदत्त जी तिवारी

की

५१ वीं वर्षगांठ

पर

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,

हरिद्वार

उनका हार्दिक अभिनन्दन करता है।

डॉ० गंगा राम
कुलपति

स्वामी इन्द्रवेश
कुलाधिपति

सं दे श

युवा सन्यासी स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के शुभागमन से गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में एक नया जीवन आ गया है। स्वामी जी महाराज का स्वप्न गुरुकुल को उसी चरमोत्कर्ष तक पहुंचाने का है जिसकी कल्पना गुरुकुल के संस्थापक अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी ने की थी। हम सभी कुलवासियों का यह पावन कर्तव्य है कि हम इस महान् यज्ञ में अपनी-अपनी आहुति देकर इस यज्ञ को सफल बनायें।

डॉ० गंगाराम
कुलपति

★ अनुक्रम ★

★ सम्पादक मण्डल ★

सम्पादक :

रामाश्रय मिश्र

सहायक सम्पादक :

डॉ० क्रान्ति कृष्ण, प्रो० भारत भूषण, डॉ० अमर नाथ द्विवेदी,

प्रो० वेदप्रकाश, श्री महावीर नीर ।

हमें ऐसे शक्तिशाली और गतिशील भारत का निर्माण करना है, जहाँ व्यक्ति अपने धर्म, अपनी भाषा या प्रांत के बारे में न सोच कर सिर्फ भारत के बारे में सोचें।

- इन्दिरा गांधी
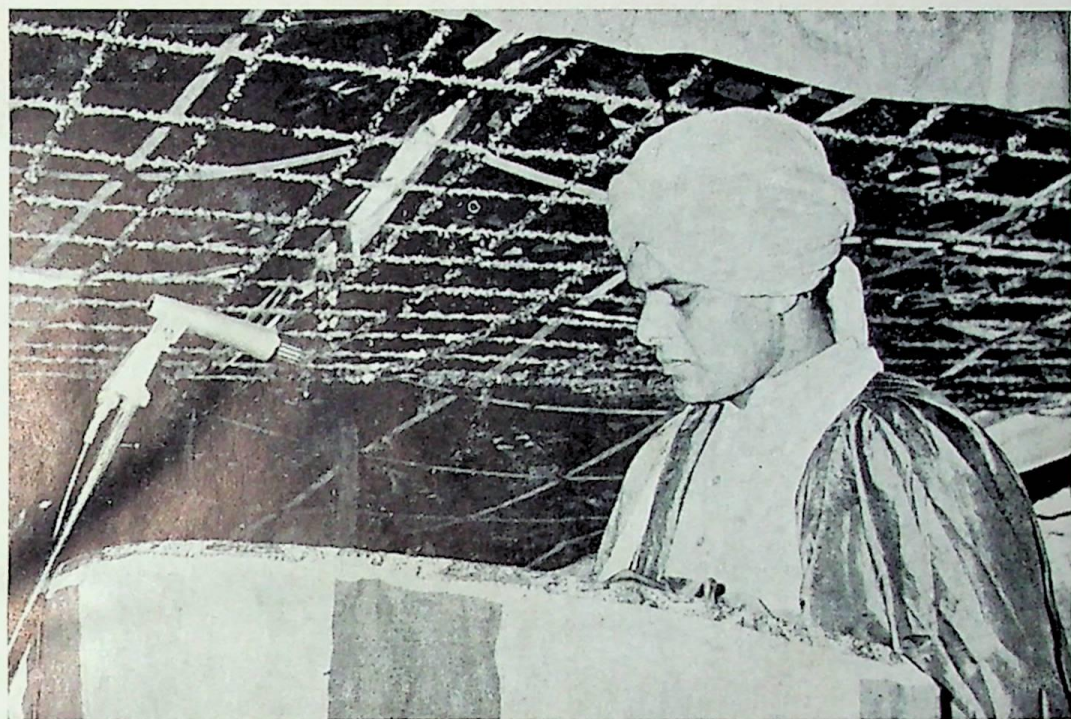
कुलाधिपति स्वामी इन्द्रवेश जी अप्रैल १९७४ के दीक्षांत समारोह के अवसर पर नव स्नातकों को आशीर्वाद देते हुए ।

वेदों के प्रकांड पंडित, दर्जनों पुस्तकों के लेखक, भारत तथा उत्तर-प्रदेश सरकारों द्वारा पुरस्कृत स्वामी ब्रह्म मुनि जी महाराज, विजीटर, गुरुकुल कांगड़ी विवशविद्यालय, अप्रैल १९७४ में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में दीक्षांत भाषण देते हुए ।

श्री नाथूराम जी मिर्धा वृक्षारोपण करते हुए ।

कुलाधिपति स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज और श्री नाथूराम जी मिर्धा वार्तालाप की मुद्रा में ।

ओ३म्

गुरुकुल-पत्रिका

[गुरुकुलकांगड़ीविश्वविद्यालयस्य मासिक पत्रिका]

आसाढ़-आश्विन : २०३३, जून-सितम्बर १९७६, वर्षम्-२९, अङ्कः८, पूर्णाङ्कः ३२९
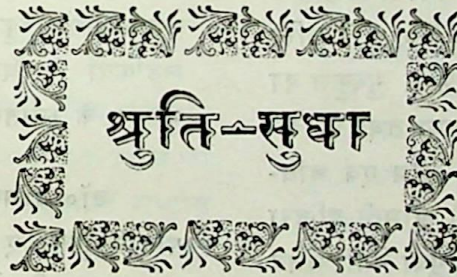
न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवाः ।

ऋग्वेद ४।३३।११

(श्रान्तस्य ऋते) परिश्रम के विना (देवाः) देव (सख्याय) मित्रता नहीं करते । अर्थात् जो परिश्रम करता है उसी की उत्तरोत्तर वृद्धि होती है । जो पुरुषार्थ नहीं करता उसकी उन्नति नहीं हो सकती ।

इस प्रकार वेद में पुरुषार्थ को उन्नति का मूल बताया गया है ।

—●—

सम्पादकीय :-

गुरुकुल प्रगति के पथ पर

माननीय श्री नारायण दत्त तिवारी, मुख्य मन्त्री उत्तर प्रदेश सरकार, लखनऊ से मार्ग-दर्शन प्राप्त कर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान एवं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के कुलाधिपति स्वामी इन्द्रवेश जी १५ जुलाई, '७६ को प्रातः विश्वविद्यालय परिसर में पधारे तथा ११ बजे गुरुकुल काँगड़ी विश्व-विद्यालय का पूर्ण नियन्त्रण अपने आधीन ले लिया। स्वामी जी ने स्पष्ट घोषणा की कि वे स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित इस महान संस्था के लिए पूरी शक्ति से कार्य करेंगे। स्वामी जी के पदार्पण से गुरुकुल का वातावरण पुनः शान्त एवं पवित्र हो गया तथा विश्व-विद्यालय के सभी शिक्षक, कर्मचारी, छात्र एवं अधि-कारी देश की प्रगति एवं प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के २० सूत्री कार्य-क्रम तथा युवा नेता संजय गांधी के ५ सूत्री कार्य-क्रम को क्रियान्वित करने में संलग्न हो गये तथा सभी ने प्रगतिशील कार्यों में निरन्तर तत्परता का संकल्प लिया।

गुरुकुल की व्यवस्था को सुचारुता प्रदान करने हेतु कुछ नियुक्तियाँ अत्यावश्यक थीं जिसकी ओर स्वामी जी का ध्यान गया। १८ जुलाई को विश्वविद्यालय परिसर में सीनेट की बैठक अत्यन्त उत्साहमय वाता-वरण में सम्पन्न हुई जिसमें सर्वसम्मति से प्रसिद्ध वैदिक विद्वान स्वामी ब्रह्म मुनि जी को विश्वविद्यालय का नया विजिटर नियुक्त किया गया। स्वामी जी वेदों के प्रकाण्ड पण्डित तथा निरुक्त, उपनिषदों, सामवेद, प्राचीन ग्रन्थ, वृहद् विमान-शास्त्र एवं दर्जनों अन्य प्राचीन ग्रन्थों के भाष्यकार हैं। आपकी अनेक रच-नाएं विभिन्न प्रान्तीय सरकारों तथा केन्द्र सरकार द्वारा सम्मानित एवं पुरस्कृत की जा चुकी हैं। आपने वैदिक सिद्धान्तों पर सैकड़ों अन्य ग्रन्थ लिखे हैं।

डॉ० गंगाराम गर्ग कुलपति नियुक्त हुए हैं। आप गत २४ वर्षों से गुरुकुल की सेवा कर रहे हैं। जिसमें गत दस वर्षों से कुलसचिव का कार्य कर रहे थे आप हिन्दी एवं अंग्रेजी साहित्य के प्रमुख विद्वान हैं तथा अनेक पुस्तकें लिखी हैं जिसमें एक ग्रन्थ ऑक्स-फोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस से प्रकाशित हो चुका है। आर्य समाज एवं गुरुकुल में अगाध विश्वास है आपके लड़के-लड़कियों के विवाह अन्तर्जातीय हुए हैं तथा लड़के गुरुकुल के स्नातक हैं।

डॉ० वाचस्पति उपाध्याय आचार्य एवं उपकुल-पति नियुक्त हुए हैं। ये वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्या-लय वाराणसी के परीक्षाधिकारी एवं कुलसचिव तथा दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली में संस्कृत विभाग के प्राध्यापक रह चुके हैं। संस्कृत, हिन्दी, बंगला तथा अंग्रेजी भाषा के पडित हैं। अनेक ग्रन्थ भी लिखे हैं। साहित्य के साथ-साथ दर्शन में भी समान गति है। आर्य समाज के प्रति अपूर्व निष्ठा है जो उनकी पैत्रिक दाय एवं अर्जित सम्पत्ति है।

प्रो० बलजीत सिंह आर्य जनता वैदिक कालेज बड़ौत के भूतपूर्व सहायक आचार्य (एसोशिएट प्रोफेसर) कृषि प्रसार, भूतपूर्व प्राचार्य नवां शहर, कुल-सचिव नियुक्त किये गये हैं। आर्य समाज में अगाध निष्ठा है। सैकड़ों नवयुवकों को इस पथ पर लाने का इन्हें श्रेय है। डॉ० कश्मीर राही भूतपूर्व प्रवक्ता इतिहास विभाग, सोहना उपकुलसचिव एवं साधूराम संख्यानक नियुक्त किये गये हैं।

विश्वविद्यालय में ही नहीं गुरुकुल में भी अनेक नियुक्तियाँ हुई हैं। श्री शिवचरण विद्यालंकार सहायक मुख्याधिष्ठाता के रूप में कार्य कर रहे हैं। घासीपुर गुरुकुल के भू० पू० प्राचार्य श्री अनूप सिंह शास्त्री जिन्होंने वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से शास्त्री एवं गुरुकुल किरठल से वाचस्पति की परीक्षा उत्तीर्ण की है के प्रधानाचार्य रूप में कार्य भार संभाल लेने से विद्यालय का अध्ययन–अध्यापन व्यवस्थित एवं पूर्ण अनुशासन में चल पड़ा है।

राजकीय फल अनुसंधान केन्द्र बस्ती के भूतपूर्व हार्टी कल्चर निरीक्षक एवं राजकीय बीज निगम के भूतपूर्व सहायक बीज उत्पादक श्री ओमपाल एम.एस-सी. एग्रोनामी कृषि अधीक्षक के रूप में कार्य कर रहे हैं। जिन्होंने अस्त-व्यस्त कृषि व्यवस्था को पूर्ण नियन्त्रित कर लिया है। गुरुकुल भूमि शस्य-श्यामला एवं हरित-क्रान्ति लिए हुए दृष्टिगोचर हो रही है।

युवा हृदय सम्राट एवं युवा नेता संजय गांधी के ५ सूत्री कार्यक्रम को पूर्ण रूपेण क्रियान्वित किया जा रहा है। वृक्षारोपण सप्ताह का उद्घाटन राष्ट्रीय कृषि के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री नाथूराम मिर्धा ने किया जिसके अन्तर्गत गुरुकुल भूमि में दो हजार वृक्ष लगाये गये जिससे परिसर के सौन्दर्य में अभि-वृद्धि तो हुई ही है अनेक प्राकृतिक लाभ भी हुए हैं।

द्वारविहीन १८ कमरे खाली पड़े थे अब उनमें कक्षाएं चल रही हैं। विश्वविद्यालय में इसी सत्र से तीन विषयों से बी.ए. की कक्षाएं प्रारम्भ की गई हैं। जिसमें १२ छात्रों ने प्रवेश लिया है। उनका अध्ययन अलंकार के छात्रों के साथ होता है। इसे विश्वविद्यालय की सबसे बड़ी कक्षा होने का गौरव प्राप्त है।

बी.ए. कक्षा में तीन मुस्लिम छात्रों ने भी प्रवेश लिया है जो हिन्दी साहित्य का अध्ययन ही नहीं करते अपितु हिन्दी के प्रतिभाशाली छात्रों में हैं।

गत वर्ष "छात्र कल्याण कोष" की स्थापना हो चुकी है इस वर्ष "प्राध्यापक कल्याण कोष" की स्थापना प्रायः हो चुकी है। निकट भविष्य में विधिवत कार्य सम्पन्न होगा।

वर्तमान आपात-कालीन स्थिति में हमारे अधिकारियों - कर्मचारियों एवं अध्यापकों - छात्रों ने जिस सुन्दर अनुशासन का परिचय दिया है, वह इस बात का द्योतक है कि हमारे चरित्र में देश की स्वतन्त्रता को बनाये रखने और उसे सुदृढ़ बनाने की क्षमता विद्यमान है। इसी के परिणाम स्वरूप विश्वविद्यालय का प्रशासन तथा अध्ययन – अध्यापन अतीव शान्त, व्यवस्थित एवं निष्ठापूर्ण वातावरण में प्रगति के पथ पर अग्रसर है।

घटे मूल्य की पुस्तकें एवं अभ्यास पुस्तिकाएं सुलभ रूप से सस्ते मूल्य पर उपलब्ध कराने, छात्रावास में विद्यार्थियों को सस्ते दामों पर खाद्यान्न तथा अन्य आवश्यक सामग्री सुलभ रूप से उपलब्ध कराने, निर्बल वर्ग के छात्रों के लिए बुक-बैंक की योजना बड़े पैमाने पर लागू करने हेतु गुरुकुल विश्वविद्यालय सतत प्रयत्न-शील है। माननीय प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के बीस सूत्री एवं युवा नेता संजय गांधी के ५ सूत्री कार्य–क्रम को सफल बनाने तथा इसे सक्रिय रूप प्रदान करने हेतु आओ हम सब पुनश्च दृढ़ संकल्प लें। अस्तु।

–रामाश्रय मिश्र

सर्वेगुणा नायकमाश्रयन्ति

यस्यास्ति सता स नरः प्रवीणः सदाव वक्ता स च दर्शनीयः
सदाव धीमान् धनवान्तथाहि सर्वेगुणा नायकमाश्रयन्ति ॥१॥

स्वयं जनेशः जनता न गण्या मताधिपत्येन सदा प्रतिष्ठः
मतं न लोकस्य मुखरी करोति पदं स्वकीयं सततं वृणोति ॥२॥

पदं मदीयं च मतं त्वदीयं धनं मदीयं यतनं त्वदीयम्
गीतं मदीयं श्रवणं त्वदीयं ममास्ति सर्वं तवनास्ति किंचित् ॥३॥

पदं विलासाय मतं तदर्थं मुखं विवादाय च जल्पनार्थम्
मुखं स्वदीयं प्रचुरं प्रपुष्टं मुखं न लोकाभिमुखं करोति ॥४॥

नाश्वासनस्य प्रतिपालनं च क्रिया विरक्तः पटुतानकार्ये
प्राप्ता न विद्या न च पात्रताहि स्वामित्व भोक्ता जनता कियंता ॥५॥

लोकादरान्ने नृपदे सदैव पदेषुसक्तः जनताभिषिक्तः
धनानुरक्तः न च कर्मं सिद्धः सन्मानलुब्धः पदानुसक्तः ॥६॥

कृतिर्विभिन्ना मतयो विभिन्नाः नैकोऽपि नेता वचने प्रमाणम्
नयस्य तत्त्वं कठिणं निकामं नेता न जानाति न चानुयायी ॥७॥

—जयेशः

राजस्थान के भूतपूर्व-मंत्री श्री नाथूराम जी मिर्धा ८ अगस्त, १९७६ को गुरुकुल पधारे। कुलाधिपति स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज ने मिर्धा जी को माल्यार्पण किया। कुलपति डॉ० गंगाराम माला लिये स्वागत के लिए खड़े हैं।

श्री नाथूराम जी मिर्धा आयुर्वेद संग्रहालय में बीच में खड़े हैं स्वामी इन्द्रवेश जी और उनके साथ हैं आयुर्वेद महाविद्यालय के प्रिंसिपल डॉ० अनंतानन्द जी।
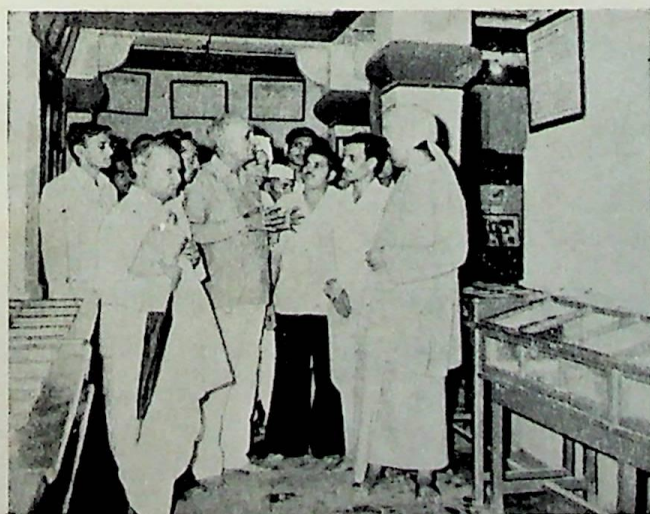
श्री नाथूराम जी मिर्धा गुरुकुल संग्रहालय में।

मिर्धा जी का परिचय देते हुए स्वामी इन्द्रवेश जी। स्वामी जी के बायीं ओर हैं डॉ० अनंतानन्द जी, प्रिंसिपल आयुर्वेद महाविद्यालय, श्री सुरेश चन्द्र जी, प्रिंसिपल विज्ञान महाविद्यालय, श्री कश्मीर सिंह, उपकुलसचिव और श्री शिवचरण सहायक मुख्याधिष्ठाता। कुलपति डॉ० गंगाराम ठीक बाईं ओर बैठे हैं।

१५ अगस्त १९७६ को कुलपति डॉ० गंगाराम विश्वविद्यालय में ध्वजारोहण करते हुए।
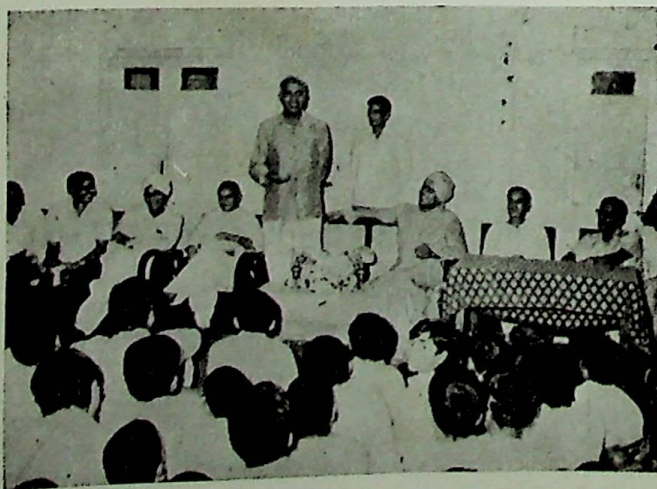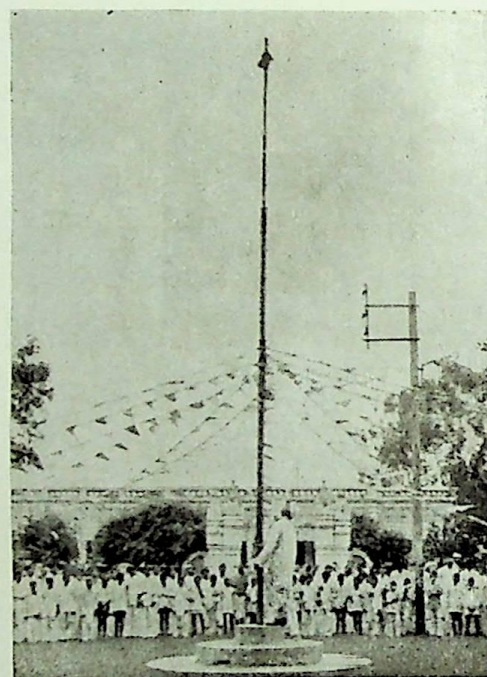
श्री नाथूराम जी मिर्धा गुरुकुल वासियों को संबोधित करते हुए।

"अर्थापत्तौ भाट्टमतम्"

"अर्थापत्तिरपि दृष्टः श्रुतो वार्थोऽन्यथा नोपपद्यत इत्यर्थकल्पना"; यथा जीवतो देवदत्तस्य गृहाभावदर्शनेन वहिर्भावस्याहृष्टपरिकल्पना इति शाबरं भाष्यम् । १

दृष्टोऽर्थः-प्रत्यक्षादि प्रमाणपञ्चकेन प्रमित इत्यर्थः । श्रुतोऽर्थः-शब्द प्रमाणप्रमित इत्यर्थः । श्रुत इति पृथगुपादानाच्छ्रुतातिरिक्तप्रमाणप्रमितो दृष्टपदार्थः कल्पनीयः । अयमेव गोबलीवर्दन्याय इत्याचक्षते न्यायविदः । अतएव दृष्टार्थपत्त्या श्रुतार्थपत्तिर्भिन्नेति परिगण्यते । एवञ्च प्रमाणषट्केन प्रमितस्यार्थस्यार्थान्तरेण विनाऽनुपपत्तिमालोच्य तदुपपत्तये या अर्थान्तरकल्पना सार्थापत्तिरिति लक्षणार्थस्सम्पन्नः ।

तथा च-अर्थस्यापत्तिः - कल्पना यस्मादिति व्युत्पत्या प्रमाणपरः, अर्थस्यापत्तिरिति षष्ठीसमासेन च फलपरः अर्थापत्तिशब्दः । तत्र दृष्टार्थापत्तिः प्रमाणपञ्चकपूर्विका पञ्चविधा, श्रुतार्थापत्तिस्त्वेकविधा । दृष्टार्थापत्तावर्थस्य कल्पना, श्रुतार्थापत्तौ तु शब्दरूपं प्रमाणं कल्प्यते । पञ्चविधाया दृष्टार्थापत्तेरिमान्युदाहरणानि ।

प्रत्यक्षपूर्विकार्थापत्तिः

(१) तत्र दाहं प्रति वन्हेः कारणत्वं क्वचित्प्रत्यक्षतोऽनुभूयते, २ क्वचिच्च सत्यपि वन्हौ दाहो नानूभूयते । अतः प्रत्यक्षप्रमितस्य दाहस्यान्यथानुपपत्या वन्हेर्दाहकत्वशक्तिः कल्प्यते । इयमेव प्रत्यक्षपूर्विका ।

नैयायिकास्तु—दाहत्वावच्छिन्नं प्रति मण्याद्यभावविशिष्टवन्हित्वेन कारणतास्वीकारणे प्रतिबन्धकमणिसमवधानदशायां दाहापत्तिवारणे सति शक्तिर्नांगीकर्तव्येति वदन्ति । तत्र दाहं प्रति क्वचित् मण्याभावविशिष्टवन्हित्वेन क्वचिच्च वन्हिविशिष्टमण्याभावत्वेन, क्वचिदोषध्यभावविशिष्टवन्हित्वेन, क्वचिच्च वन्हिविशिष्टौषध्यभावत्वेन' क्वचिन्मन्त्राभावविशिष्टवन्हित्वेन, क्वचिच्च वन्हिविशिष्टमन्त्राभावत्वेनेत्येवमनन्ताः कार्यकारणभावा भवेयुरित्यतिरिक्त शक्तिकल्पनमेव ज्याय इति मीमांसकाः पश्यन्ति । तत्रातिरिक्तशक्तिस्वीकारेऽपि तस्या आनन्त्यं प्रागभावध्वंसाश्चानेके कल्पयितव्या एवेति मीमांसकानामपि गौरवमापतत्येव, तथापि फलमुखगौरवं न दोषायेति न्यायेन शक्तेरेव कारणत्वमर्थापत्या स्वीकुर्वन्ति ।

(२) एवं देशान्तरप्राप्तिर्लिंगकेनानुमानेन भास्करे गतिमनुमाय तदन्यथानुपपत्या तत्र गमनशक्तिकल्पना र्थापत्या भवति । इयमनुमानपूर्विकार्थापत्तिः ।

१— शबर भाष्य अ० १, सू० ५, पृष्ठ १२,

२— "तत्र प्रत्यक्षतो ज्ञाताद् दाहाद् दहनशक्तिता ।
वन्हेरनुमितात्सूर्ये यानात् तच्छक्तियोग्यता ।।

श्लोकवार्त्तिकम्

औत्पत्तिकसूत्रे अर्थापत्तिपरिच्छेदः श्लोक-३

(३) "पीनो देवदत्तो दिवा न भुङ्क्ते" इति श्रुतेन वाक्येन दिवा भुजञ्जाने देवदत्ते पीनत्वरुपो योऽर्थः प्रमितः तदन्यथानुपपत्तिमालोच्य तदुपपत्तये "रात्रौ भुङ्क्ते" इति रात्रिभोजनरुपार्थप्रतिपादकवाक्यान्तरस्य कल्पना। यद्यपि दिवा वाक्यप्रमितस्यार्थस्योपपत्त्यर्थं रात्रिभोजन-रुपार्थस्यैव कल्पनमुचितम्, तथापि "शाब्दः शाब्देनान्वेति" "न हि शाब्दमशाब्देनान्वेति इति" वा न्यायेन श्रुतवाक्यप्रतीयमानार्थान्यथानुपपत्ति प्रतिसन्धानपुरस्सर तदुपपत्तये आकाङ्क्षितस्यार्थान्तरस्य तद्बोधकेन वाक्येनैव समर्पणं युक्तम्। सेयं शब्दपूर्विका प्रमाण ग्राहिण्यर्थापत्तिः।

(४) गवयदर्शनादेतत्सदृशो गौरिति यदविगवयसादृश्यमुपमितं तदन्यथानुपपत्या तादृशसादृश्यविशिष्टगवि तादृश प्रभाविषयत्वशक्तिरस्तीति कल्पना उपमानपूर्विका -र्थापत्तिरिति परिगण्यते।

शब्दस्यार्थबोधान्यथानुपपत्त्या वाचकशक्तिं कल्पयित्वा पुनस्तदनुपपत्त्या शब्दस्य नित्यत्वकल्पना-अर्थापत्ति-पूर्विकार्थापत्तिः सेयमर्थापत्तः 'नित्यस्तु स्याद्दर्शनस्य परार्थत्वात्'[१] इति सूत्रयता भगवता जैमिनिना बोध्यते। तथाहि दृश्यते शब्दोऽनेनेति व्युत्पत्त्या दर्शनशब्द उच्चारणार्थकः। यदि शब्दो नित्यो न भवेत् तदा परार्थपरानर्थं प्रत्याययितुं दर्शनमुच्चारणं नोपपद्येतेति सूत्रार्थः। परार्थं यदुच्चारणं न तत्स्वतः फलरूपम्। तस्य चान्येन केनचित्फलेन भवितव्यम्। तदालोचनायां फलवतो गवानयनादि व्यापारस्यांगभूतो यो गवानयनादिरुपार्थप्रत्ययः स तत्फलेनैव फलवान् इति शब्दस्योच्चारण-संस्कृतस्य फलसाकांक्षस्य फलमिति योग्यतयावधार्यते। तादृशार्थप्रत्ययफलकत्वञ्च शब्दस्य नित्यत्वमेवोपपद्यत इति भावः।

(५) अनुपलब्धिपूर्विकार्थापत्तिर्भाष्यकारेणैवोदाहृता "जीवति देवदत्ते गृहाभावदर्शनेन बहिर्भावस्यादृष्टस्य कल्पना" इति। जीवितो देवदत्तस्य गृहे भावः योग्यानुपलब्ध्या प्रमितः तदन्यथानुपपत्त्या च बहिर्भावस्य प्रमाणान्तरागम्यस्य या कल्पना सानुपलब्धिपूर्विकार्थापत्तिरित्यर्थो भाष्यसन्दर्भस्य। अत्रेयमाशंका-वन्हिमन्तरेणानुपपन्नाद्धूमाद्वन्हिर्यथा नुमीयते, तथा-अनुपपन्नादुपपादक कल्पनायामनुमानमेवायाति। कथमर्थापत्तिः प्रमाणान्तरमिति। अनुमानेऽनुपपन्नं गमकं भवति, अर्थापत्तौ तु तदनुपपन्नं तदेव गम्यं भवतीति प्रमाणान्तरत्वमर्थापत्तेः। अनुमाने निश्चितं लिंगं भवति। यस्य हि जीवनं गृहसम्बन्ध्येव प्रायशोऽवगतं, तस्य कदाचिद्गृहाभावे प्रत्यक्षीकृते जीवनं सांशयिक भवद्बहिर्भावकल्पनाया समाधीयते। यथा ह्यनुमाने निश्चितलिंगं तथातर्थापत्तौ केनचित्प्रमाणेनावगतं प्रमाणान्तरेणोत्थापितवितर्कं गमकं भवतीति दर्शनबलादभ्युपगम्यते। न प्रमाणयोरन्यतरत्रापि सशयः, किन्तु निश्चितप्रमाणयोरेव चात्र प्रमाणयोरेव द्वयोः समर्थनापेक्षामात्रं कथमिदमुभयमुपपद्यत-इति। यथा..."नातिरात्रे षोडशिनं गृह्णाति" अतिरात्रे षोडशिनं गृह्णाति इत्यत्र ग्रहणाग्रहणशास्त्रयोः। अत्रैकपरित्यागेन नेतरदुपपादयितुं शक्यते। अतो यथा तत्र कथमिदमुभयमुपपद्यतामित्यपेक्षिते प्रयोगभेदेनोभयमुपपद्यते, एवमिहापि प्रमाणप्रतिपन्नमुभयं निश्चित सद्भावमर्थान्तरपरिकल्पनया समर्थ्यते। तदिदमुक्तं

---

१. जै० सू० १८, पृष्ठ ३३.

२. "उच्चरितमात्रे हि विनष्टे शब्दे न चान्योन्यायर्थं प्रत्याययितुं शक्नुयात्। अतो न परार्थमुच्चार्यते। अथ न विनष्टः ततो बहुश उपलब्धत्वादर्थावगम इति युक्तम्" इति शाबरं भाष्यमत्रोपष्टम्भकम्।

पृ० ३२, १.१.१८

वार्त्तिककारैः—

अन्यथानुपपत्तौ तु प्रमेयानुप्रवेशिता ।
तादृरूप्येणैव विज्ञानान्न दोषः प्रतिभातिनः ।।

.. श्लोक वा० ५-२९.

इत्यादिना ।

कि च, नैयायिकाः-लिग-अन्वयव्यतिरेकिकेवलान्वयि-केवलव्यतिरेकि इति त्रिविधमंगीकृत्य केवलव्यतिरेकिणार्थापत्तेश्चारितार्थ्यं वदन्ति । साध्याभावव्यापकीभूताभावप्रतियोगित्वमेव केवलव्यतिरेकत्वम् । अतएव विश्वनाथो भाषापरिच्छेदे-

"अर्थापत्तिस्तु नैवेह प्रमाणान्तरमिष्यते ।
व्यतिरेकव्याप्तिबुध्या चरितार्था हि सा यतः ।।"

..का० १४४ (अर्थापत्तेरनुमानेऽन्तर्भावः)

इति वदति ।

मीमांसकास्तु—केवलव्यतिरेकिणमनंगीकृत्य तत्स्थानेऽर्थापत्तिं स्वीकुर्वन्ति । अनुमाने उपपादकं गम्यम् अनुपपन्नं च गमकम्, अर्थापत्तौत्वनुपपन्नं गम्यम् उपपादक च गम्यकम् इति भेदः । व्याप्तिपक्षधर्मताभ्यामनुमितिर्जायते, दिवा भोजनत्वाभावपीनत्वयोरसामानाधिकरण्यरूपानुपपत्तिज्ञानादर्थापत्तिरिति सामग्रीवैलक्षण्येनोभयोर्भेदः । अनुमितौ अनुमिनोमीत्यनुव्यवसायः । अर्थापत्तौ तु कल्पयामि अर्थापयामिति वानुव्यवसायः । तेन च तयोर्भेदः ।

"अर्थापत्तौ प्रभाकरमतम्"

प्राभाकरास्तु-दृष्टार्थापत्तिमेवांगीकुर्वन्ति, श्रुतार्थापत्तिं नांगीकुर्वन्ति । भाष्यगतं श्रुतपदं गोवलीवर्दन्यायेनोपलब्धपरतया नयन्ति । किन्तु भाट्टमते गोबलीवर्दन्यायेन संकोचः, प्रभाकरमते त्वसंकोचः । स चोपालब्धोऽर्थः अर्थान्तरानुपपत्यापादकतया विवक्षितोऽर्थान्तरकल्पको गुरुमते । तथा चायं फलितोऽर्थः -अर्थान्तरकल्पनायामसत्यां योऽर्थान्तरमनुपपन्नं कुरुते सार्थापत्तिः । अनुपपत्तिश्च सन्देहरूप एव । प्रमीयतेऽनेनेति करणव्युत्पत्त्यंगीकारेऽर्थसन्देहापादकोऽर्थः प्रमाणम्, बहिर्भावकल्पना प्रमा, कल्पितोऽर्थः प्रमेयम । प्रमितिः प्रमाणमिति भाव व्युत्पत्त्यभ्युपगमे कल्पनाप्रमाणम् तदनन्तरभावि देवदत्तो बहिर्भाववान्" इति विशिष्टज्ञानं फलमिति विवेकः ।

अर्थापत्तेरनुमानान्तर्भावश्च पूर्ववदेव । बहिर्भावसाधकानुमाने "देवदत्तः बहिर्भाववान् गृहे सत्त्वात्" इत्यत्र गृहाधिकरणाभावप्रतियोगित्वं हेतुः, तद्विशिष्ट—जीवनवत्त्वं वा । तत्र प्रथमपक्षे मृतेऽपि हेतोस्सत्त्वेन व्यभिचारः, द्वितीयपक्षं बहिर्भावस्थानुमितिसितत्वेन तस्य प्रागेव निर्णीतत्वेन न किंचिदनुमेयमवशिष्यत इति सिद्धसाधनं दोषः । तदिदमुक्तम् –

"तेन मेयानपेक्षस्य सन्दिग्धत्वादहेतुता ।
हेतुत्वं यावति त्वस्ति ततो नान्यल्पमीयते ।।"

गेहाभावस्तु यश्शुद्धो विद्यमानत्ववर्जितः ।
स मृतेष्वपि दृष्टत्वाद्बहिर्वृत्तेर्न साधकः ।। इति

— श्लोकवार्त्तिकम् – ५. २१.

अर्थापत्तिविषये भट्टप्रभाकरयोरयं भेदः – "पीनो देवदत्तो दिवा न भुङ्क्ते" इत्यत्र "रात्रौ भुङ्क्ते" इति शब्दः कल्पनीय इति भाट्टा आशेरते । प्राभाकरास्तु रात्रिभोजनरूपोऽर्थ एव कल्पनीय इत्यंगीकुर्वन्ति ।

तत्र भाट्टाः – अर्थकल्पनापक्षे - "वृत्या पदजन्य पदार्थोपस्थितेरशाब्दबोधे कारणत्वात् अपदार्थस्य च

---

१. " तत्सन्देहव्युदासाय कल्पना या प्रवर्तते ।
सन्देहापादकादर्थादर्थापत्तिरसो स्मृता ।।
इति शालिकनाथः । पृष्ठ २७५ (काशी हिन्दू वि० वि० सं०)

शाब्दबोधे मानायोगात् श्रूयमाणवाक्यस्य तद्वाचकशक्त्यभावाच्चेति दोषं पश्यन्ति । ततश्च यत्र श्रूयमाणस्य वाक्यस्य शब्दकल्पनायानुपपत्तिश्शाम्यति तत्र शब्द एव कल्प्यते न त्वर्थः । यत्र तु शब्दकल्पनेऽपि—अर्थकल्पनां यावदनुपपत्तिर्न शाम्यति तत्रार्थ एव कल्प्यते न शब्द इति लौकिकः पन्थाः । सर्वमिदमभिप्रेत्य भट्टपादैरुक्तम्—

"पीनो दिवा न भुङ्क्ते चेत्येवमादिवचः श्रुतौ ।
रात्रिभोजनविज्ञानं श्रुतार्थापत्तिरुच्यते ।।५१।।

नचाप्यस्याः प्रमाणत्वे कश्चिद्विप्रतिपद्यते ।
भेदाभेदे विसंवादः कृतस्तत्र विनिर्णयः ।।८५।।

(श्लोक वार्त्तिकम् पृष्ठ ४६३—४७१)

इत्यादिना ।

प्राभाकरास्तु— श्रुतार्थापत्तिं नांगीकुर्वन्तीत्यवोचाम । तेषामयमाशयः— "पीनो देवदत्तो दिवा न भुङ्क्ते" इत्यत्र श्रुतो दिवाभोजनाभावो रात्रिभोजनं विना पीनत्वस्यानुपपन्नत्वे सत्युपपद्यमानो रात्रिभोजनमेव कल्पयति, न शब्दम् । न हि शब्देन विनार्थस्यानुपपत्तिः, किन्त्वर्थेनैवेति तत्कल्पनैवोचिता । यद्युच्येत—अर्थकल्पनाय प्रवृत्तार्थापत्तिः रात्रिभोजनस्वरूपस्यार्थस्य सविकल्पकज्ञानवेद्यत्वेन शब्दपूर्वकत्वप्रतीतेः शब्द एवादावुपतिष्ठते । अतश्शब्द एव कल्पनीय इति । अत्रैवं प्राभाकरा वदन्ति-सर्वत्र सविकल्पकज्ञानेषु शब्दो विशेषणतया भासते । वाचकतया शब्दोऽर्थमवच्छिनत्ति । तेन गौरिति प्रतीतो गोशब्दवाच्यो यमित्याकारकोऽर्थो गृह्यते । नह्यत्र शब्दश्शब्दवाच्यतां वक्ति । तेनार्थस्याप्रतिपादकोऽस्मिन्वषये शब्दः । किन्तु वृद्धव्यवहारावगतया वाचकतया वाच्यं विशिंषन्नत्र भवति । तेन शब्दोऽर्थस्यानुपस्थापकत्वात्प्रथमभाव्यपिनानुपपत्ति शर्मायितुं क्षम इति नार्थापत्तिः प्रमेयतां गन्तुमर्हति । तेनार्थविषयैवेय, मिति ।

डॉ० वाचस्पति उपाध्याय
आचार्य एवं उप कुलपति
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

अतिनंदनमतिनन्दनमतिनंदनं

श्रद्धावनम्

अमृतबिन्दुतरलचारुताराकमनं
लोचनचन्द्रशीतलचन्द्रसान्द्रचन्द्रिकं
स्यन्ददाकाशगङ्गानीहारशीतलं
चन्दनहस्तपवनसंवाहननवीकृतमानसम्
श्रद्धावनं श्रद्धावनं श्रद्धावनम् ।

वनदेवतावात्सल्यसमीरितकदलीदलव्यजनं
करुणार्द्र चिन्तेन्द्रविस्तारितजलदपटलातपत्रं
मुनिजनसञ्चारदिनमुखायमानमार्गं
विविधविहगारब्धसमूहकीर्तनम्
श्रद्धानन्दनं श्रद्धानन्दनं श्रद्धानन्दनम् ।

वसुधासुधाशनस्वाहास्वरसहिताहुतिर्समिद्ध–
मानाहुतहुताशनप्रकाश्यमानखण्डब्रह्माण्डाध्वरकुण्डं
विस्तृतशुष्कतृणान्तरितावनितलकुशाशयनं
तपःसिद्धिप्रभावोपगतसौधसौख्यसाधनम्
आनन्दैकपलायमानबहुलकल्पम्
श्रद्धानन्दनं श्रद्धानन्दनं श्रद्धानन्दनम् ।

ब्रह्मविद्याभ्यासकदर्थितव्यसनम्
ओंकारनादतिरोहितकलहकोलाहलं
समाधिभाषाकृतसकलमौनसम्भाषणं
कीराङ्गनाकृतसामगानम्
श्रद्धावनं श्रद्धावनं श्रद्धावनम् ।

चन्द्रशालायमानागणितपर्णशालं
कण्वायमानवटतरुवक्षःखेलत्शकुन्तलालतम्
अनिलास्थिरबालपादपमुनिकुमारं
योगाचरणनिष्कम्पैकचरणशाल्मलीतरुवरम्
श्रद्धावनं श्रद्धावनं श्रद्धावनम् ।

क्रीडापर्वतायमानदूरवर्तितैलपर्णद्रुमं
शुकायमानपत्रकुलाकुलराजवृक्षं
दौर्वारिकायमाणानेकदेवदारुकं
कुमारायमाणसंनद्धकदम्बकम्
श्रद्धावनं श्रद्धावनं श्रद्धावनम् ।

बुद्धदेवः,
संस्कृत विभागः
गु० कां० वि० हरिद्वार

भक्ति कालीन रासो काव्य परम्परा और विकास

डॉ० विजय कुलश्रेष्ठ
हिन्दी विभाग,
पोद्दार कालिज, नवलगढ़

हिन्दी साहित्य जहाँ अपनी आदिकालिक सृजनात्मक मेधा और पौरुष का मूर्त-चित्र उपस्थित करता है, वहीं भक्तिकाल की सृजनात्मक मेधा हिन्दी साहित्य एवं सांस्कृतिक चेतना की मनोवैज्ञानिक परि– णति के आकलन की दिशादर्शक है । हिन्दी साहित्य के काल निर्णय में परम्परा और काव्य रूपों तथा प्रवृत्तिगत विशेषताओं के स्तर पर विभाजन रेखा नहीं खींची जा सकती और पूर्व परम्पराओं का किंचित आकलित स्वरूप तद्कालीन रचनाओं में उपलब्ध हो जाता है और उसी प्रकार भावी साहित्यिक प्रवृत्तियों के विकास चिन्ह भी निवर्तमान प्रवृत्तियों में समाहित होते दृष्टिगत होते हैं, यही कारण है कि विभिन्न विद्वानों ने हिन्दी साहित्य के काल-विभाजन में विभिन्न मत मतान्तरों की स्थापना की है आचार्य शुक्ल से लेकर हजारीप्रसाद द्विवेदी एवं डॉ० नगेन्द्र तक काल-चिन्तन की दिशा मिलती है । आचार्य द्विवेदी के काल विभाजन के औचित्य की प्रस्तुति भक्तिकालीन विचारण के लिए अपेक्षित है, वह निम्न प्रकार है ।

हिन्दी साहित्य का काल विभाजन

(१) आदिकाल (१० वीं—१४ वीं शताब्दी)
(२) भक्तिकाल (१४ वीं—१६ वीं शताब्दी)
(३) रीतिकाल (१६ वीं—१६ वीं शताब्दी)
(४) आधुनिककाल (१६ वीं उत्तरार्ध से अब तक)

भक्तिकाल की सीमा–रेखा एक ओर आदिकाल की प्रवृत्तियों के सक्रांत परिवेश में प्रविष्ट हुई दृष्टिगत होती हैं तो दूसरी ओर रीतिकाल की प्रवृत्तियों के मूल संस्कारों के प्रविकास काल में अपने चिन्हांकित करती हैं भक्तिकाल की महत्ता सभी हिन्दी इतिहासज्ञों ने उसकी सृजनात्मक मेधा एवं सांस्कृतिक उत्थान के प्रतिमानों को गति प्रदान करने के स्तर पर स्वीकार की है । भक्तिकाल का सांस्कृतिक परिवेश विभिन्न ज्ञानधाराओं, सम्प्रदायों, धार्मिक मत-मतान्तरों एवं संस्कारिताओं की भावधाराओं से सम्पन्न है, जिनमें से प्रमुख काव्य प्रवृत्यात्मक धाराएं निम्न हैं —

भक्तिकालीन काव्य प्रवृत्तियां

(१) निर्गुण (क) निर्गुण ज्ञानाश्रयी
(ख) सूफी प्रेमाश्रयी

(२) सगुण (क) सगुण रामाश्रयी
(ख) सगुण कृष्णाश्रयी

उपर्युक्त काव्य-प्रवृत्तियों के परिवेश में हिन्दी रासो काव्य रूप के सृजनात्मक पक्ष की एक विशिष्ट-परम्परा का स्पष्ट संकेत हमें भक्ति-कालीन साहित्य-धारा में उपलब्ध होता है। यह निर्विवाद सत्य है कि रासो काव्यरूप का विकास आदिकाल में हुआ है और प्रायः अनेक वीर-गाथाओं को 'रासो' 'संज्ञा से अभिहित किया गया है जो मूलतः चरित्र काव्य की परम्परा में लिखे गये 'काव्यरूप' का परिणाम है। आदिकालीन चरित्रकाव्य परम्परा में हमें रासो काव्य रूप के अतिरिक्त अन्य काव्यरूप यथा रूपक, विलास, चरित, प्रकाश, चउपई, पवाड़ऊ आदि भी उपलब्ध होते हैं। परन्तु रासो काव्यरूप का विकास मात्र चरित्र काव्य तक ही सीमित नहीं रह गया। वह आदिकाल से आगे चल कर आधुनिक काल के उत्तरार्ध तक प्रचलित रहा है और विषय-परिपाक के नवीन क्षितिजों को अपना वर्ण्य-विषय बनाकर रासो काव्यरूप की व्यापक पृष्ठ-भूमि के महत्त्व को स्थापित करता है। रासो की व्युत्पति के विषय में विद्वानों में अनेक मत हैं (१) परन्तु अब यह निर्विवाद रूप से स्वीकार्य मत है कि 'रासो' शब्द 'रासक' से व्युत्पन्न हुआ है (२) और यह 'रासक' शब्द सर्वप्रथम 'सनेह रासअ' या 'सन्देश रासक' में प्रयुक्त हुआ है, प्रारम्भ में ये रासो-काव्य मूलतः चरित्र काव्य रहे और इनके पीछे 'स्वामिनः सुखाय' की भावना का प्राधान्य रहा परन्तु कालान्तर से यह काव्य रूप 'स्वान्तः सुखाय' की प्रेरणा-भूमि के उत्स के रूप में स्थिर होता चला गया है।(३)

भक्तिकाल की सीमा रेखा १४ वीं विक्रम शती से आरम्भ होकर १६ वीं विक्रम शती तक मान्य रही है। इस चौदहवीं विक्रम शती में जहाँ रासो काव्यरूप की स्थिति व्याप्त रही है, वहीं परवर्ती काल में भी अपनी विशिष्ट परम्पराओं से चरित्रकाव्य की सामान्य विशेषताओं से विकसित हुई और भक्तिकालीन लोक-भावनाओं से सम्पृष्ट होकर भक्तिकालीन भावधाराओं की प्रवृत्तियों के आकलन के लिये अपने महत्वपूर्ण योग दान में सिद्ध प्रतीत होती है, रासो काव्यरूप की इस विशिष्ट प्रवृत्यात्मक विशिष्टता ने भक्तिकालीन रचनाकारों को आकृष्ट किया है और उन्होंने अपने आश्रय-दाताओं, आराध्यों, गुरुओं को अपनी रचनाओं का केन्द्र मानकर अपनी सम्प्रदायनिष्ठ विचार धाराओं के उल्लेख में रासो काव्य को प्रयुक्त किया है। चौदहवीं से सोलहवीं शती विक्रमी तक कालक्रमानुसार रासो ग्रन्थों की सूची निम्न प्रकार है :-

१४ वीं विक्रम शताब्दी के रासो ग्रन्थ :-

महावीर रास	१३०७	अभय तिलक गणि
शान्त नाथ देव रास	१३१३	लक्ष्मीतिलक उपाध्याय
अन्तरंग रास	१३१६	जिनप्रभ सूरि
तार्थमाला रास	१३२३	आनंदसूरि या प्रेमसूरि
सप्तक्षेत्रि रास	१३२७	(१) जगड़ कवि (२) विजय भद्र
जिनेश्वर सूरि दीक्षा विवाह वर्णन रास	१३३१	

(१) विस्तृत अध्ययनार्थ लेखक का शोध प्रबन्ध द्रस्टव्य है — पृथ्वीराज रासो का लोकतात्त्विक अध्ययन: प्रथम अध्याय पूर्वाध भाग (राजस्थान विश्वविद्यालय १९७३)

(२) उपरिवत् - उत्तरार्ध भाग

(३) उपरिवत् पृष्ठ ६२—७०

जिनेश्वर सूरि संयम		
श्री विवाह वर्णन रास	१३३२	सोममूर्ति
शालिभद्र रास	१३३२	राजतिलक गणि
गौतम रास	१३३३	विनयचन्द्र सूरि
बारह व्रत रास	१३३८	विनय चन्द्र सूरि
जिन चन्द्र सूरि वर्णन रास	१३४१	श्रावक लक्खमसिंह
विजयपाल रासो	१३५५	नाल्ह
गौतम स्वामी रास	१३५५	उदयदत्त
हम्मीर रासो	१३५७	शारंगधर
कच्छूली रास	१३६३	प्रज्ञतिलक सूरि
पेथड़रास	१३६३	माण्डलिक
बीसबिटह्मानरास	१३६८	कवि वास्तिग
समरा रास	१३७१	अम्बदेव सूरि
सघपति समरारास	१३७१	अम्बदेव सूरि
श्रावक विधि रास	१३७१	(१) गुणाकर सूरि (२) धनपाल
जिन कुल सूरि पट्टाभिषेक रास	१३७७	मुनि धर्मकलश
जिन पद्म सूरि पट्टाभिषेक रास	१३८८	सारमूर्ति
जिन दत्त सूरि पट्टाभिषेक रास	१३८९	धर्मकलश
नेमिनाथ बारहमाशा रासो	...	पाल्हणु
स्थूलि भद्र रास	...	जिन पद्म सूरि
मयनरेहा रास	...	टयणु
वीसलदेव रास	...	नरपति नाल्ह
बुद्धि रास	...	जल्ह
मृंगाकबेट्टा रास	...	वच्छ

१५ वीं विक्रम शताब्दी के रासो ग्रन्थ :—

क्षेत्र प्रकाश रास	१४१०	जयानंद सूरि
पंच पांडव रास	१४१०	शालिभद्र सूरि
पंच पांडव चरित रास	१४१०	शालिभद्र सूरि
कमलापति रास	१४११	विजयभद्र सूरि
कलावती रास	१४११	विजयभद्र सूरि
गौतम रास	१४१२	विनयप्रभ उपाध्याय जयसागर उपाध्याय विजय चन्द्र
गौतम स्वामी दास	१४१२	विनयप्रभ उपाध्याय
मयन रेहा रास	१४१३	हरसेवक मुनि
	१४२५	जिनप्रभ सूरि
त्रिविक्रम रास	१४१५	जिनोदरा सूरि
त्रिनोदय सूरि पट्टाभिषेक रास	१४१५	जान कलश
गच्छनायक गुरु दास	१४२०	कन्ह कवीश्वर
शिवदत्त रास	१४२३	सिद्ध सूरि रास
हमीर रासो	१४२५	जज्जल कवि
कलिकात रास	१४२९	शालि सूरि
	१४८६	हीरानंद सूरि
	१४६०	नयचन्द सूरि
कालिकाल स्वरूप रास	१४३०	हीरानन्द सूरि
कुमारपाल रास	१४३५	देवप्रभ गणि
देव सुन्दर सूरि रास	१४४५	कवि चोप
आराधना रास	१४५०	सोम सुन्दर सूरि
शालिभद्र रास	१४५५	साधु हंस
शान्तरस रास	१४५५	मुनि सुन्दर जैन
हंस शालिभद्र रास	१४५५	हंस कवि [१]

(शेष आगामी अङ्क में......)

[१] लेखक के मतानुसार हंस कवि और साधु हंस दोनों एक ही व्यक्ति हैं।

कविता

कु० तृप्ति विश्वास

किसे ढूँढते मेरे लोचन ?
रहते यमुना के कछार
जाती हैं भीग भीग पलकें
किसकी स्मृति में बार बार ?

कौन चपल मुझ सोती की
कर जाता अलकें अस्त व्यस्त ?
हो जाती देख किसे मेरे
मस्तक की बिन्दी सदा त्रस्त ?

किसकी मैं नरम हथेली को
लेती स्वप्नों में चूम चूम ?
ओ सूर्यसुता ! है ज्ञात तुझे
किस पर आशान्वित यज्ञधूम ।

लौटा दे मुझे दया करके
मेरे आँचल का मृदुल हास,
फिर से बिखेर दे कलयुग के
आँगन में द्वापर का प्रकाश ।

रो रही वन्दिनी मानवता
जग की इस निर्मम कारा में,
कह, कहां छिपाया लाल मेरा ?
अपनी किस निर्मल धारा में ?

कृष्णे ! उन नन्हें हाथों का
फिर से दे दे स्पर्श मुझे ।
ढलके ना अङ्क सुधी मेरी
दे दे जीवन का हर्ष मुझे ।

बैठी सूने गृहमन्दिर में
यमुने ! यह ममता रोती है ।
हर ओर मची है त्राहि त्राहि
तू किधर विमुग्धा सोती है ?

बता मुझे क्यों रुष्ट हुआ ?
मुझसे ही मेरा आत्म--रक्त,
समझी, उन कलुष कलंकों से
हो गया स्नेहिल हृदय शप्त ।

है कहाँ छुपा नादान मूढ़ ?
भर कर नयनों में वृथा नीर
निज हेतु अचिन्तित होकर ही
परहित में रहते धीर वीर ।

फिर से इन फैली बाहों में
आ लौट मेरे नन्हें किशोर ।
कब कहा जननि ने बोल सही ?
अपने बालक को त्रिया चोर ।

दे दे 'जीवन' को अभयदान
आ लौट विश्व के शान्ति दूत
हैं सभी दृष्टियां तुझी ओर
अब रूठ नहीं मेरे सपूत ।

कर पूर्ण वचन अब गीता का
आ गया समय, आ गया काल
ओ मातृ--शक्ति के सत्य रूप !
हो गया खण्ड भारत विशाल ।

साहित्य समीक्षा :

आँधी और चाँदनी

लेखक —

डॉ० रामेश्वरलाल खण्डेलवाल 'तरुण'

प्रोफेसर तथा अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र।

प्रकाशक– नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली-६

१९५७; पृष्ठ १३९; मूल्य १५-०० मात्र।

डॉ० खण्डेलवाल हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ कवि हैं। प्रथम किरण और हिमांचला के पश्चात् आँधी और चाँदनी का प्रकाशन उनकी काव्य–निष्ठा का ज्वलन्त प्रमाण है।

कवि ने आँधी और चाँदनी को अपने 'बेटे मुनुआ (अमित)' को समर्पित किया है और दो पृष्ठों में 'अपनी बात' कह दी है। उसने विश्वास व्यक्त किया है कि "इस कृति में अनुभूति, विचार और अभिव्यक्ति के नाना आरोह-अवरोह और प्रयोग परीक्षण स्पष्टतः दृष्टिगोचर हो सकेंगे।" यहीं पर कवि ने यह भी बताया है कि आँधी और चाँदनी शीर्षक का निर्धारण उसके सुदूर अतीत जीवन में जिये और भोगे हुए एक ऐसे गंभीर व सम्वेदनामय प्राकृतिक दृश्य व स्थिति से प्रेरित है जो उसके व्यक्ति–जीवन व युग-जीवन की अंतरंग व संश्लिष्ट मर्म-वेदना का सफल-सार्थक ढंग से वाहक व व्यंजक है : घोर मरुस्थल के प्रचण्ड ग्रीष्म की एक अर्द्धरात्रि के चाँदनी-धुले उद्दाम अन्धड़ वाले विजन के खुले आकाश के नीचे वह बचपन में कभी सोया था। आँख खुलने पर प्रचण्ड-कोमल, कटु-मधुर प्राकृतिक दृश्य सामने था वह तब से बिम्ब बनकर वर्षों उसकी चेतना में कहीं खुंसा–पड़ा कसमसाता रहा। वह अब उसके काव्य–संग्रह का विवक्षित शीर्षक बना।

प्रस्तुत काव्य–संग्रह तीन भागों में विभक्त है– 'आँधी', 'मुक्तक' और 'चाँदनी'। 'आँधी' में ५५ कवितायें ८४ पृष्ठों में संकलित हैं; 'मुक्तक' संख्या में ४९ हैं; 'चाँदनी' में ३० कवितायें ४१ पृष्ठों में हैं।

'आँधी' में संकलित कवितायें मार्मिक, हृदयस्पर्शी हैं और उनके भाव व बिम्ब विषय के सर्वथा अनुरूप हैं। 'घोषणा' जिससे यह भाग प्रारम्भ होता है, कवि के काव्य-विषय की, अमेरिकन कवि ह्विटमन की शैली में, घोषणा करता है। 'शोक समाचार' यह बताता है कि कवि के उष्मिल साँसों भरे गीत अब नहीं रहे। इसी

तरह अन्य कवितायें भी विषय, भाषा एवं शैली की दृष्टियों से खरी उतरी हैं। पर इस भाग में निम्नांकित कवितायें कुछ अत्यधिक रुचिपूर्ण लगीं : 'प्यार करो! 'आकाश का निमन्त्रण'; 'कौन कभी' और 'अस्तित्व'। ये सारी कवितायें सुगेय, लयबद्ध, एवं भावनाओं से ओत–प्रोत हैं। अन्य अधिकांश कवितायें छन्दमुक्त हैं; उनमें नवीनता, आधुनिकता एवं प्रगतिवादी परीक्षण की झंकार है। एक विशेष बात इन कविताओं की है अमिट वैयक्तिक छाप। 'आंधी' में कवि ने प्रकारान्तर से अपनी काव्य–रचना के बारे में भी अनेक स्थलों पर प्रकाश डाला है : उदाहरणार्थ :–

बहने दो आज के कवि की चेतना–
आक्रोश, विद्रोह, फुंकार व भुंझलाहटों–भरी।
'यह लो मेंरे हस्ताक्षर', पृष्ठ २७

और

जीवन लूंगा मैं तो आँधी, नद्दी या तूफान–सा,
जिसमें तड़पन हो, ज्वाला हो, गुंजन, मेघ-मलार हो।
'जीवन : तीन स्थितियाँ', पृष्ठ २९

बीच बीच में कहीं–कहीं लोक गीतों तथा संस्कृत सूक्तियों का सुन्दर उद्धरण पेश किया गया है, जैसे-

(१) 'श्यामा का नख–दान मनोहर...' (पृष्ठ १४)

(२) 'आँखों ही आँखों में इशारा हो गया।'
(पृष्ठ २१)

(३) 'मुहुर्तं ज्वलितं श्रेयो न च धूमायितं चिरम्'
(पृष्ठ ६०)

इस तरह के उद्धरण विविध प्रकार के सुमधुर व्यंजनों में चटनी का काम करते हैं।

'मुक्तक' दो, तीन, चार और पांच लाइनों के हैं। इनमें से कुछ भावप्रधान तथा कुछ विचार-प्रधान हैं। पाठकों के मनोरंजन के लिये एक मुक्तक यहां उद्धृत है :–

कागज़ी इस फूल में मकरन्द लाओ,
जिंदगी के गद्य में कुछ छन्द लाओ,
भेज कर सब वायु–यानों को गगन में–
भूमि पर सब स्वर्ग का आनन्द लाओ।
(पृष्ठ ९५)

'चाँदनी' में संकलित अधिकतर कवितायें गीत हैं। गीतों के प्रति सहज आकर्षण होने के नाते मैं 'चाँदनी' को पुस्तक का सर्वोत्तम भाग मानता हूं। इन गीतों में माधुर्य, प्रवाह, चन्दा की शीतलता सब कुछ है। इनमें वह लय, स्वर एवं रस है जो सहज ही सम्वेदनशील प्राणियों की हृद्-तन्त्री को झंकृत कर दे। मन को मुग्ध कर देने वाले कुछ गीतों के शीर्षक यों हैं- 'मुझको एकाकी गाने दो', '(मैंने) गीत-प्रदीप जलाएं', 'हम तुम कहीं चल दें', 'गीतः दूर–बड़ी दूर–', 'गीतः तुमने ने अभी देखा जीवन', 'गीत : सुकुमारि, उठाओ अवगुंठन', 'गीत : याद न कर मन, प्रीत पुरानी', 'गीत : सबका अपना अपना मन है', 'लो, कवि का मन खोल दिखाऊं', 'मेरे गींत मौन मत होना' इत्यादि। आखिरीं कविता को पढ़ कर लगा कि मैं आनन्द के सातवें आसमान पर पहुंच गया हूं। इस कविता का कुछ अंश यहाँ उद्धृत है :-

मेरे गीत मौन मत होना!

चिर दरिद्र सा जीवन—पथ पर,

भटकूं जब ले काया जर्जर,

तब तुम आ उर की प्राची से, बरसाना ऊषा का सोना!

हों रस-हीन दिशायें सारी,

उजड़ चले जीवन—फुलवारी,

तब तुम बरस जलद से रिमझिम, मधु से मेरे प्राण भिगोना !

...... (पृष्ठ १३९)

पुस्तक का समापन अत्यन्त प्रभावपूर्ण व रोचक है ।

अन्त में यही कहना है कि आँधी और चाँदनी जैसे सृजनात्मक, परीक्षणात्मक एवं कलात्मक काव्य-संग्रह कम ही हाथ लगते हैं । इसमें कवि ने अपने जीवन के कटुतम तथा मधुरतम अनुभवों को भली-भाँति संजोया है । यहाँ उसकी काव्य-चेतना आधुनिकता के कगार पर खड़ी होकर हुँकार भर रही है । काव्य, कला, अभिव्यक्ति, लय, रस, प्रयोग-परीक्षण, समसामयिकता, सांस्कृतिक सूझ-बूझ, मानवीय मूल्यों की पहचान : सभी दृष्टियों से यह काव्य-संग्रह वस्तुतः अभिनन्दनीय है । प्रबुद्ध कवि डॉ० खण्डेलवाल इस स्तुत्य प्रयास के लिए बधाई के पात्र हैं ।

समीक्षक —

डॉ० अमर नाथ द्विवेदी

जीवन-पथ पर चलने वालो

जीवन-पथ पर चलने वालो, मन का मत सन्तुलन बिगाड़ो ।
आज अगर प्रतिकूल है कोई, कल अनुकूल तुम्हारे होगा ॥

आंधी और तूफान सदा ही,
आते और जाते रहते हैं ।
पतन और उत्थान सदा ही,
हमको खुद परखा करते हैं ।
आज अगर प्रतिकूल समय है, कल अनुकूल तुम्हारे होगा ।

सुख 'औ' दुःख की राम कहानी,
आदि कालसे चलती आयी ।
आशा की स्वर्णिम बातें भी,
आदि काल से छलती आयीं ।
आज अगर छल रहा तुम्हें है, कल अनुकूल तुम्हारे होगा ।

संघर्षों बलिदानों से ही,
सदा मार्ग विस्तीर्ण हुऐ हैं ।
जो सहते दुःख 'औ' दर्दों को,
वे जन ही उत्तीर्ण हुए हैं ।
आज अग प्रतिबंधित जीवन, कल अनुकूल तुम्हारे होगा ।

माना हथकढ़ी 'औ' बेड़ी में,

बंधा श्राज मानव का स्वर है ।
माना गीतों की कड़ियों में,
सिसक रहा श्रब भाव प्रखर है ।
श्राज श्रगर शंकित हर क्षण है, कल श्रनुकूल तुम्हारे होगा ।

माना जीवन की गलियों में,
श्राज हँसी कम, रूदन श्रधिक है ।
माना बगिया के फूलों में,
श्राज खुशी कम, घुटन श्रधिक है ।
श्राज श्रगर दुःख श्रौ' मातम है, कल श्रनुकूल तुम्हारे होगा ।

माना पथ के चौराहे पर,
श्राज कपट श्रौ' झूठ बिक रहा ।
माना चांदी की झिलमिल में,
श्राज किसी का मान बिक रहा ।
श्राज श्रगर धूमिल जीवन है, कल श्रनुकूल तुम्हारे होगा ।

माना सुन--सुन कर दुष्टों की,
कपट-पूर्ण बातें कुछ जग में ।
माना श्रपने रूठ गये हैं,
छोड़ चले एकाकी मग में ।
श्राज 'नीर' प्रतिकूल है कोई, कल श्रनुकूल तुम्हारे होगा ।

● महावीर 'नीर' विद्यालंकार

गौ आलम्भन

ले० स्वामी ब्रह्ममुनि जी परिव्राजक

नवीन याज्ञिक यज्ञ में अष्टापदी (आठ पैर वाली अर्थात् चार पाद निज के और चार गर्भगत वत्स 'बछड़ा–बछड़ी' के) का आलम्भन–हिंसन–बध मानते और करते हैं। ऐसा मानना और करना अवैदिक है-वेदविरुद्ध है। कारण-कि वेद में गौ को चाहे चतुष्पदी हो चाहे अष्टापदी हो, अघ्न्या कहा गया है "अद्धितृण-मघ्न्ये" (ऋ० १/१६४/४०)। इस पर निरुक्तकार यास्क ने लिखा है "अघ्न्याऽहन्तव्या भवति" (निरु० अध्याय ११/ खं० ४५)।

आलम्भन शब्द का अर्थ प्राचीन वैदिक साहित्य में हिंसा-वध करना नहीं है। इसके लिए निम्न प्रमाण देखें :—

" आलभन्ते " (ऐ० ब्रा० ३/१६), इस पर सायण का भाष्य है, "आलभन्ते–स्पृशन्ति" (सायण)। सायण ने आलम्भन का अर्थ स्पर्श करना लिखा है हिंसा करना नहीं। सायण कोई आर्य समाजी नहीं था। "वत्समालभते" – (का० ७/७) । इस पर ब्राह्मणोद्धार कोष में अर्थ दिया है 'स्पृशति' अर्थात् बच्चे को स्पर्श करना - प्यार करना। सभी मानव बच्चे को प्यार करते अर्थात् छाती से लगाते और चूमते हैं। मानवेतर गौ आदि प्राणी चूमते और चाटते हुए तो देखे जाते हैं तथा 'लभ्' धातु (लभ् प्राप्तौ) प्राप्ति अर्थ में है। 'आ' उपसर्ग समन्ताद्- 'सब प्रकार से' अर्थ में आता है। किसी मित्र के घर जब मिल आता है तो हाथ से हाथ पकड़ कर स्वागत करते हैं प्राप्त करते हैं और जब 'आ' उपसर्ग लगकर आलम्भन हो जाता है तो छाती से लगा कर आलिंगन करते हैं यह आलम्भन आलिंगन हो जाता है। "मात्रा, पित्रा, भ्रात्रा, सख्या - आलभते" (मै० ३/६/६)। माता के साथ, पिता के साथ, भ्राता के साथ, मित्र के साथ अपने को आलिंगित करता है – इनसे अपना आलिंगन करता है।

'लभ्' धातु को शप् और लिट् से भिन्न अजादि प्रत्यय परे होने पर नुम् का आगम होता है। शप् में लभते, आलभते और लिट् में लेभे और आलेभे होता है। □ 'उपात् प्रशंसायाम् (अष्टा० ७/१/६६)' उप उपसर्ग से परे प्रशंसा अर्थ में 'य' प्रत्यय परे होने पर लभ् धातु को नुम् आगम होता है। जैसे 'उपलम्भ्यं विद्याधनम्' (विद्याधन प्रशंसनीय है) 'आङो । यि' अष्टा० ७/१/६५' आङ् उपसर्ग पूर्वक लभ् धातु को नुम् का आगम होता है 'य' प्रत्यय परे होने पर जैसे– 'आलम्भ्या' प्रयोग बनता है। महाभाष्य में इसका उदाहरण है "आलम्भ्य गौः" यहां पाणिनि सूत्रकार ने

□ रभेरशब्लिटोः, लभेश्च — अष्टा० ७/१/६३–६४

'हिंसायाम्' शब्द नहीं लिखा है, इसलिए उपर्युक्त प्रमाणों के अनुसार स्पर्श करने योग्य प्यार या आलिंगन करने योग्य गौ होती है। भैंस, बकरी, भेड़ स्पर्श करने योग्य या आलिंगन करने योग्य नहीं होती। वह गौ के समान आर्कषक नहीं, इसलिए आलम्भन, आलम्भक, आलम्भी, साधु–आलम्भी, आलम्भयति - इन शब्दों का अर्थ हिंसापरक नहीं है किन्तु स्पर्श, आलिंगन करने के अर्थ में है।

यज्ञ में यजमान द्वारा पुरोहित को गो दान दी जाती है हाथ से स्पर्श करके. प्यार करके। पुरोहित भी इस दान को हाथ से स्पर्श करके, प्यार करके स्वीकार करता है। कन्यादान वर को दिया जाता है पिता द्वारा। वह हाथ से कन्या को प्यार करता है और आश्वासन देता है "मैं तुझे इच्छा पूर्वक वर के लिए देता हूं, चिन्ता नहीं करना, वह तुझको बलात् नहीं ले जा रहा है।" ऐसे ही यजमान गौ का स्पर्श करता है, प्यार करता है "मैं इच्छा पूर्वक तुझे पुरोहित को दान देता हूं. वह तुझे बलात् नहीं ले जा रहा है।" लेते समय गौ को पुरोहित स्पर्श करता है, प्यार करता है। अब प्रश्न यह है अष्टापदी अर्थात् सगर्भा गौ को दान क्यों देता है, दूध देती हुई को दे। यह उच्छिष्ट दान है जैसे किसी घर आए अतिथि को भोजन खिलाना है अपने आप पहले खा कर के। अतिथि को पहले खिलाना चाहिए – 'अग्रे भोजयेदतिथीन्'। इसलिए सगर्भा गौ को दान देना चाहिए। जब सगर्भा गौ पुरोहित को दी जायगी, वह उसकी सेवा करेगा और गौ भी उससे प्रेम करेगी और रुचि से दूध देगी तथा पुरोहित उसको अपने अनुकूल उसको घास, चारा, दाना आदि शुद्ध एवं सात्विक देगा शुद्ध एवं सात्विक दूध प्राप्त करने के लिये। साथ ही अन्तिम गर्भ वाली धृद्धा गौ को दान नहीं देना वरन् प्रथम गर्भा गौ को दान देना सात्विक दान है जो विवाह के प्रसंग में देना चाहिए जैसे राजा दशरथ ने राम के विवाह–प्रसंग में गौ दान दिया था "स्वस्ति प्राप्नुहि भद्रं ते गमिष्यामः स्वालयम्। श्राद्धकर्माणि करिष्ये—इति चाब्रवीत्, स गत्वा निलयं राजा श्राद्धं कृत्वा विधानतः प्रभाते काल्यमुत्थाय चक्रे गोदानमुत्तमम्।" (वा० रामायण से) अर्थात् राम का विवाह हो जाने पर दशरथ जनक को कहते हैं कि आप कल्याण को प्राप्त करें, अब हम अपने घर को जायंगे, वहाँ श्राद्धकर्म (ब्रह्मभोजादि) करेंगे। दशरथ ने घर पहुंच कर ब्रह्मभोज दे दिया और प्रभात काल में उठ कर उत्तम काल प्राप्त गोदान कर दिया (सगर्भा गोदान किया)। अब यह गोदान किसी विद्वान–पुरोहित आदि को दिया आशीर्वाद के लिए जैसे गौ प्रथम गर्भ वाली दी जाती है ऐसे ही नवीन पुत्रवधू सगर्भा हो जाय।

(२) विद्वानों की दृष्टि में गौ का आलम्भन (आलिङ्गन) :–

विद्वानों की दृष्टि में अष्टापदी गौ है वाक्–'गौः -वाङ्नाम' (निघ०)। चार उसके मुख्य पाद हैं 'नामाख्याते उपसर्ग निपाताश्च' (निरु० १/१/१), नाम आख्यात, उपसर्ग और निपात हैं तथा इसके आन्तरिक पाद सुप् कृत्, तद्धित और समास (समासान्त) प्रत्यय हैं। इस प्रकार वाणी रूप गौ अष्टापदी हुई। इसका आलम्भन (आलिंगन) विद्वान लोग करते हैं। "उत त्वः पश्यन् न ददर्शनाम्, उत त्वः श्रृणवन् न श्रृणोत्ये-

नाम् उत त्वस्मै तन्वं विसस्रे जायेव पत्य उशती सुवासाः" (ऋ० १०/७१/४) अर्थात् इस वाणी रूप गौ को कोई एक देखता हुआ भी नहीं देखता है लिपि रूप में आई हुई को, कोई एक इसको सुनता हुआ भी नहीं सुनता है, परन्तु किसी एक (विद्वान) के लिए यह वाणी रूप गौ अपने शरीर को खोल देती है (अपने अर्थ को खोल देती है। उक्त वाक् वेद वाक् है। "स्तुता मया वरदा वेदमाता, प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्, आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्ति द्रविणं ब्रह्म–वर्चसं मह्यं दत्वा व्रजतब्रह्मलोकम्" (अथर्व० कां १९ /) इस प्रकार वेद वाक् रूपी गौ से आयु, प्राण, प्रजा, पशु कीर्ति, धन ब्रह्मतेज तथा मोक्ष प्राप्त होते हैं।

(३) योगियों की दृष्टि में उत्कृष्ट वाक् 'ओ३म्' अष्टापदी गौ का आलम्भन (आलिङ्गन)

योगियों की दृष्टि में उत्कृष्ट वाक् ओ३म् गौ है। 'तस्य वाचकः प्रणवः' (योग० १/२७) उस ईश्वर का वाचक ओ३म् है। "तज्जपस्तदर्थभावनम्" (योग० ७/४२८)। उस ओ३म् का जप और उसका अर्थ भावन– स्वरूप का अपने अन्दर धारण करना है। ओ३म् के स्वरूप का वर्णन माण्डूक्योपनिषद् में आता है वह उसके चार पादों के अन्दर दिखलाया गया है। जागरित स्थान, स्वप्न स्थान, सुषुप्त स्थान, तुरीय स्थान, ये चार पाद दृष्ट हैं तथा ये ओ३म् की अ, उ, म्, इति (विराम) इन मात्राओं में क्रमश; आते हैं। इनकी उपासना से चार फल होते हैं, वे आन्तरिक पाद हैं जो कि जागरित स्थान 'अ' का सारी कामनाओं को प्राप्त कर लेना, स्वप्न स्थान 'उ' का ज्ञान सन्तति का उत्कर्ष करना, सुषुप्त स्थान 'म्' का सब के मूल को लक्षित कर लेना, तुरीय स्थान आत्म स्वरूप 'इति' (विराम) का आत्मा का परमात्मा में संविष्ट होना है। इस प्रकार वाक् ओ३म् अष्टापदी गौ हुई। इसका आलिंगन योगी लोग करते हैं जैसा कहा गया है आत्मा का परमात्मा में संविष्ट होना।

(४) मुक्तात्माओं की दृष्टि में मुक्ति रूप अष्टापदी गौ का आलम्भन (आलिङ्गन):

मुक्तात्माओं की दृष्टि में मुक्ति अष्टापदी गौ है। "गौः पदनाम" (निघ० ५/५)। मुक्ति में अष्ट सुख-पद–प्राप्ति होती है इससे मुक्ति अष्टापदी हुई। ऋग्वेद में नवम मण्डल के ११३ वें सूक्त में अष्ट सुख पदों का २ मन्त्रों में वर्णन है " यत्र कामा निकामाश्च ...... यत्र स्वधा च तृप्तिश्च ......" १० वाँ मन्त्र, 'यत्रा-नन्दाश्च मोदाश्च मुदः प्रमुद आसते ...... तत्र भामृतं कृधीन्द्राय इन्दो परिस्रव" ११ वाँ मन्त्र। काम निकाम स्वधा और तृप्ति ये चार सुखपद पीछे और आगे के पद हैं, आनन्द, मोद, मुद, प्रमुद ये चार सुखपद इनके मध्य में है और इस प्रकार यह मुक्ति रूप गौ अष्टापदी हुई। इसका आलम्भन आलिगन मुक्तात्माएं करती हैं। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि "शृण्वन् श्रोतं भवति मन्वानो मनोभवति" ( ) मुक्ति में सुनना चाहता है तो कान हो जाता है, मनन करना चाहता है तो मन हो जाता है "यं यं कामं कामयते सोडस्य सङ्कल्यादेव समुत्तिष्ठते"– ( ) "सोडश्नुते सर्वान् कामान् स ब्रह्मणा विपश्चिता"।

इति।

श्रीकृष्ण समयोगी बनो

भाद्रपद की अष्टमी समुदित मनाई जायगी,
जन्म से भगवान् तक झांकी दिखाई जायगी।
कृष्ण-माखन चोर था यह भी बताया जायेगा,
गोपियों में रत बिहारी को नचाया जायेगा ॥१॥

कीर्तनों में एक ध्वनि बाजे बजाये जायेगें,
मग्न हो सह गान के करतल बजाये जायेगें।
गोपाल गिरधर बोलके मोहन बुलाये जायेगें,
भोग भी नैवेद्य से बहु विध लगाये जायेगें ॥२॥

ओ ! कृष्ण पूजक भक्तजन,क्या कृष्ण महिमा है यही,
क्या कभी सद्बुद्धि से तुमने विचारा है सही।
चोर था भगवान् भी था, ग्राह्य गरिमा क्या रही,
सोचे बिना आरोप निन्दित नित लगाये हैं वही ॥३॥

गोपाल बन गोपालने की श्रेष्ठ शिक्षा दे गया
राष्ट्ररक्षा गौ बिना सम्भव नहीं, बल दे गया।
आदर्श यदि पाला नहीं तो कृष्ण पूजन क्या किया,
आदर्श यदि पाला नहीं तो भक्त बनके क्या किया ॥४॥

गोदुग्ध, घी मक्खन सदा ही कृष्ण ने सेवन किया,
बल बढ़ाकर युक्ति से ही राक्षसों का वध किया ।
चाय, कहवा पान करके पेय मादक साथ में,
दुष्ट घातक क्या बनोगे शक्ति नहीं जब गात में ॥५॥

कृष्ण योगेश्वर बनें सब ऋद्धि-सिद्धि प्राप्तकर,
नीतिवक्ता युद्धवेत्ता, आप्त बुद्धि प्राप्तकर ।
शास्त्रवेत्ता, नीतिज्ञाता योग साधक है नहीं,
पेट पालक मात्र हैं वे कृष्ण पूजक हैं नहीं ॥६॥

गौ पालके, घी दूध पीकर शक्तिशाली तुम बनों,
आर्षविद्या शास्त्र पढ़के बुद्धिशाली सब बनो ।
गुण प्राप्ति में पुरुषार्थी बन, यह व्यर्थ पूजन त्याग दो,
श्रीकृष्ण समयोगी बनो, निज हेय दुर्गुण त्याग दो ॥७॥

योगेन्द्र पुरुषार्थी
योगधाम, ज्वालापुर

संक्षिप्त जीवन परिचय—

विश्वविद्यालय के नये कुलपति

डॉ० गंगाराम जी

डॉ० गंगाराम जी ने आंग्लभाषा उपाध्याय के रूप में सन् १९५२ में कार्यभार ग्रहण किया। १९६६ में उन्हें विश्वविद्यालय का कुलसचिव नियुक्त किया गया। २८ अगस्त, १९७६ से वे विश्वविद्यालय के कुलपति पद पर नियुक्त हुए हैं।

डॉ० गंगाराम जी पंजाब विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में पी-एच० डी० हैं। साहित्यिक जगत उनकी कृतियों से ऋणी है। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस द्वारा प्रकाशित "संक्षिप्त ऑक्सफोर्ड हिन्दी साहित्य परिचायक" ग्रंथ उनकी मौलिकता का कीर्तिस्तम्भ है। "विश्व सभ्यता का इतिहास" स्वेन महोदय के अंग्रेजी ग्रंथ का हिन्दी रूपान्तर है। भारत की सम्पूर्ण प्राचीन एवं अर्वाचीन भाषाओं के साहित्यकारों और 'भारतीय साहित्य का विश्वकोष' एवं 'भारतीय माइथोलॉजी का विश्वकोष' नामक ग्रंथों पर आपकी लेखनी दस वर्षों से सतत प्रयत्नशील है। इनकी एक रचना अर्थशास्त्र पर भी प्रकाशित है। अंग्रेजी, हिन्दी एवं उर्दू में भी अन्यान्य पत्र-पत्रिकाओं में आपके लेख निकलते रहते हैं।

डॉ० गंगाराम का जन्म सन् १९२४ में ग्राम कोहंड, जिला करनाल, (हरियाणा) में हुआ, जहाँ आपके माता-पिता कृषि-कार्य करते हैं। डॉ० गंगाराम ने अपने पुत्रों की शिक्षा-दीक्षा गुरुकुल में ही दी। जाँति-पाँति तोड़ कर अपने पुत्रों के विवाह किये। अपनी पुत्रियों के विवाह पंजाब और हिमाचल प्रदेश में किये। वर्षों तक आप गुरुकुल कांगड़ी आर्य समाज के मंत्री रहे।

नवनियुक्त उपकुलपति एवं आचार्य

डॉ० वाचस्पति उपाध्याय

उत्तर प्रदेश के पूर्वी क्षेत्र में गोमती नदी के किनारे स्थित सुलतानपुर जनपद के छोटे से गांव में १ जुलाई १९४३ में जन्म। शिक्षा-दीक्षा शस्य श्यामला भूमि पश्चिमी बंगाल में। कलकत्ता विश्वविद्यालय से संस्कृत में प्रथम श्रेणी में एम० ए० परीक्षा, १९६२। तदुपरान्त शोध-कार्य हेतु विश्वविद्यालीय शोध - छात्रवृत्ति - राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत ब्रह्मश्री पट्टाभिराम शास्त्री एवं डॉ० गौरीनाथ शास्त्री के चरणों में बैठ कर विद्याध्ययन। 'स्वतः प्रामाण्यवाद' पर शोध प्रबन्ध लिखकर कलकत्ता विश्वविद्यालय से डी० फिल० की उपाधि, १९६७। १९६७ में वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय में परीक्षाधिकारी पद पर नियुक्ति। तदुपरान्त ढाई वर्षों तक इसी विश्वविद्यालय के कुलसचिव पद पर कार्य। १९७० में कौटिल्य के अर्थशास्त्र पर शोध प्रबन्ध लिख कर डी० लिट्० उपाधि संस्कृत विश्वविद्यालय से प्राप्त की।

सितम्बर, १९७० से दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में अध्यापन। तीन पुस्तकें प्रकाशित। विभिन्न पत्रिकाओं में लगभग एक दर्जन शोध निबन्ध। निर्देशन में ५ छात्र पी-एच० डी० की उपाधि प्राप्त कर चुके हैं। लगभग १० शोधार्थी विभिन्न विषयों पर शोध-कार्यरत हैं।

प्रकाश्यमान ग्रन्थ :—

(१) मीमांसा दर्शन का उद्भव एवं विकास।

(२) कुमारिल भट्ट एंड हिज़ क्रिटिक्स।

नवनियुक्त कुलसचिव

श्री बलजीत सिंह जी आर्य

धरित्री का इतिहास इस बात का साक्षी है कि बल जिसके पास है, जीत उसी का वरण करती आई है। बल और जीत का यह शाश्वत संबंध अनादिकाल से अनवरत रूप से चलता आया है। बल और जीत के समन्वय की परिभाषा हैं हमारे श्रद्धेय श्री बलजीत सिंह जी आर्य। आपके जीवन का संक्षिप्त दिग्दर्शन इस प्रकार है।

जन्म व जन्म स्थान :-

१० मई, १९४१ को दिल्ली के प्रसिद्ध कस्बा नरेला मे आपने जन्म लेकर एक किसान परिवार को धन्य किया। आपके पिताजी का नाम था श्री महासिंह जी और माता जी का नाम श्रीमती भगवन्ती देवी। परिवार ने पिछले कई पीढ़ियों से अपनी अथक अतिथि सेवा-भावना तथा वचन-बद्धता के कारण सारे क्षेत्र में मान व प्रतिष्ठा का एक ऊंचा स्थान बना लिया है। आपकी ममतामयी माता अत्यन्त धर्मपरायणा नारी थी। आपकी अधिकांश धार्मिक भावना माता जी की ही देन है।

आर्य समाज में प्रवेश :-

वैसे तो दिल्ली व हरियाणा के किसान जन्म से ही आर्य समाजी होते हैं किन्तु नरेला तो आर्य समाज में भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम का मेरठ है। इसीलिये श्री आर्य जी आर्य समाज का अमृत प्रसाद लेने में क्यों चूकते ! बचपन से ही आर्य समाज ने आपको वैदिक रंग में रंग दिया।

शिक्षा :-

आपने प० उत्तर प्रदेश की प्रसिद्ध किसानों की संस्था जं० वैदिक कालेज बड़ौत (मेरठ) में स्नातकीय परीक्षा कृषि से उत्तीर्ण करके एशिया के सबसे प्रसिद्ध कृषि संस्थान भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली से एम. एस-सी. कृषि परीक्षा उत्तीर्ण की।

अध्यापन एवं साहित्य सृजन :—

१९६४ से बी० एस-सी० तथा एम० एस-सी० कृषि कक्षाओं को जिस योग्यता, कुशलता तथा स्नेह के साथ पढ़ाया है, वह कॉलेज के छात्रों और बड़ौत क्षेत्र के साथ जनमानस में व्याप्त लोकप्रियता का एक आधार स्तम्भ है। एक आदर्श गुरु के रूप में जैसा सम्मान श्री आर्य जी को जं० वै० कॉलेज बड़ौत तथा बड़ौत के निकटवर्ती क्षेत्र में मिला है ऐसा सम्मान बिरले अध्यापकों को ही मिल पाता है। संस्था में निर्धन एवं पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों की सेवा तो मानों उनका धर्म ही बन गया था। आदर्श गुरु और आदर्श मानव के समन्वित व्यक्तित्व से प्रभावित होकर

ही आपके कई छात्रों ने तो सारा जीवन ही आर्य-समाज के कार्य के लिये दान दे दिया है। यह आपके व्यक्तित्व के चुम्बकीय आकर्षण का ही परिणाम है -

श्री आर्य जी ने अध्यापकों और विद्यार्थियों की कठिनाइयों को दूर करने के लिये कृषि विज्ञान की तीन मौलिक पुस्तकों का प्रणयन किया है, जिनके नाम हैं (१) ग्रामीण समाज शास्त्र (२) कृषि प्रसार (३) कृषि प्रसार का सरल अध्ययन। कई एक धार्मिक पुस्तकों पर आपने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका तथा अनेक पर अपनी समालोचनात्मक सम्मतियां लिखी हैं -

सामाजिक कार्य क्षेत्र में :—

आपने अपनी माता जी के दूध और जीवन घूंटी को लिया ही इसलिये था ताकि समाज का कोई काम कर सके। १९५७ में जब हिन्दी रक्षा आन्दोलन चल रहा था तब छोटी आयु होने पर भी सत्याग्रह के लिये धन एकत्रित करना तथा बड़ों को जेल जाने के लिये प्रेरित करना आपके दैनिक जीवन का अग बन चुका था। गौ-रक्षा आन्दोलन में भी शापने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। १९६७ से १९६९ तक आपने सार्व-देशिक आर्य युवक परिषद के महामंत्री के रूप में बड़े धैर्य, साहस और अध्यवसाय से काम किया और प्राय युवकों का एक सशक्त संगठन बन गया। सैकड़ों नई आर्य युवक परिषदें दिल्ली, हरियाणा तथा प० उत्तर प्रदेश में गठित की गईं। युवकों की दुधर्ण-शक्ति को सही दिशा देने के लिये विशाल स्तर पर कई ब्रह्मचर्य शिक्षण –शिविरों का आयोजन किया गया। युवकों में नेतृत्व भावना विकसित करने के लिए सामूहिक वार्ता, वाद-विवाद प्रतियोगिता, लेख-प्रतियोगिता, सर्वोत्तम स्वास्थ्य-प्रतियोगिता आदि कार्य-क्रम तो आपकी दिन चर्या में आ गये थे।

मद्य-निषेध सम्मेलन, गौरक्षा सम्मेलन विशेष रूप से आपने करवाये हैं। नशा विरोधी समिति की, स्थापना कर, जगह-जगह प्रचार कर, पोस्टर लगवाना आदि काम आपने बड़ी लगन से करवाये हैं।

तप, सरलता एवं स्वदेश प्रेम :—

आपने बचपन से लेकर आज तक खादी कुर्ता - धोती धारण कर भारतीय आदर्श का मूर्तिमान स्थापित किया है। एक घटना आपके जीवन की विशेष प्रसिद्ध है जब आप भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली में अध्ययन करते थे तो संस्थान के प्रोफेसरों ने आपको अंग्रेजी परिवेश में आने के लिये कहा। कक्षा से बाहर कर दिया गया धमकियां दी जाने लगी। पर वाह रे भारतीय सभ्यता के पुजारी। झुकना पड़ा आपके सामने संस्थान के उन नराधमों को। सम्पन्न होते हुए भी कभी आज तक बाजारू वस्तुओं का प्रयोग न किया। आपने कभी निर्धन को तुच्छ व हीन न समझा।

यहां से पूर्व :-

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलसचिव पद को सुशोभित करने से पूर्व आप आर० के० आर्य कालेज नवांशहर. जालन्धर में प्रिंसिपल पद पर पिछले दो वर्षों से कार्यरत थे वहां भाषा, वेशभूषा की विभि-न्नता होते हुए भी संस्था के प्रशासन को जिस योग्यता एवं वरीयता से संभाला है वह उस संस्था के इतिहास में एक अभूतपूर्व धटना है। पिछले १५ वर्षों में इस संस्था में १०–१२ प्रिंसिपल आये और अपमान के साथ उनको कॉलेज से निष्कासित कर दिया गया।

नवनियुक्त कुलसचिव

श्री बलजीत सिंह जी आर्य

धरित्री का इतिहास इस बात का साक्षी है कि बल जिसके पास है, जीत उसी का वरण करती आई है। बल और जीत का यह शाश्वत संबंध अनादिकाल से अनवरत रूप से चलता आया है। बल और जीत के समन्वय की परिभाषा हैं हमारे श्रद्धेय श्री बलजीत सिंह जी आर्य। आपके जीवन का संक्षिप्त दिग्दर्शन इस प्रकार है।

जन्म व जन्म स्थान :-

१० मई, १९४१ को दिल्ली के प्रसिद्ध कस्बा नरेला मे आपने जन्म लेकर एक किसान परिवार को धन्य किया। आपके पिताजी का नाम था श्री महासिंह जी और माता जी का नाम श्रीमती भगवन्ती देवी। परिवार ने पिछले कई पीढ़ियों से अपनी अथक अतिथि सेवा-भावना तथा वचन-बद्धता के कारण सारे क्षेत्र में मान व प्रतिष्ठा का एक ऊंचा स्थान बना लिया है। आपकी ममतामयी माता अत्यन्त धर्मपरायणा नारी थी। आपकी अधिकांश धार्मिक भावना माता जी की ही देन है।

आर्य समाज में प्रवेश :-

वैसे तो दिल्ली व हरियाणा के किसान जन्म से ही आर्य समाजी होते हैं किन्तु नरेला तो आर्य समाज में भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम का मेरठ है। इसीलिये श्री आर्य जी आर्य समाज का अमृत प्रसाद लेने में क्यों चूकते! बचपन से ही आर्य समाज ने आपको वैदिक रंग में रंग दिया।

शिक्षा :-

आपने प० उत्तर प्रदेश की प्रसिद्ध किसानों की संस्था जं० वैदिक कालेज बड़ौत (मेरठ) में स्नातकीय परीक्षा कृषि से उत्तीर्ण करके एशिया के सबसे प्रसिद्ध कृषि संस्थान भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली से एम. एस-सी. कृषि परीक्षा उत्तीर्ण की।

अध्यापन एवं साहित्य सृजन :—

१९६४ से बी० एस-सी० तथा एम० एस-सी० कृषि कक्षाओं को जिस योग्यता, कुशलता तथा स्नेह के साथ पढ़ाया है, वह कॉलेज के छात्रों और बड़ौत क्षेत्र के साथ जनमानस में व्याप्त लोकप्रियता का एक आधार स्तम्भ है। एक आदर्श गुरु के रूप में जैसा सम्मान श्री आर्य जी को जं० वै० कॉलेज बड़ौत तथा बड़ौत के निकटवर्ती क्षेत्र में मिला है ऐसा सम्मान बिरले अध्यापकों को ही मिल पाता है। संस्था में निर्धन एवं पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों की सेवा तो मानों उनका धर्म ही बन गया था। आदर्श गुरु और आदर्श मानव के समन्वित व्यक्तित्व से प्रभावित होकर

ही आपके कई छात्रों ने तो सारा जीवन ही आर्य-समाज के कार्य के लिये दान दे दिया है। यह आपके व्यक्तित्व के चुम्बकीय आकर्षण का ही परिणाम है -

श्री आर्य जी ने अध्यापकों और विद्यार्थियों की कठिनाइयों को दूर करने के लिये कृषि विज्ञान की तीन मौलिक पुस्तकों का प्रणयन किया है, जिनके नाम हैं (१) ग्रामीण समाज शास्त्र (२) कृषि प्रसार (३) कृषि प्रसार का सरल अध्ययन। कई एक धार्मिक पुस्तकों पर आपने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका तथा अनेक पर अपनी समालोचनात्मक सम्मतियां लिखी हैं -

सामाजिक कार्य क्षेत्र में :—

आपने अपनी माता जी के दूध और जीवन घूंटी को लिया ही इसलिये था ताकि समाज का कोई काम कर सके। १९५७ में जब हिन्दी रक्षा आन्दोलन चल रहा था तब छोटी आयु होने पर भी सत्याग्रह के लिये धन एकत्रित करना तथा बड़ों को जेल जाने के लिये प्रेरित करना आपके दैनिक जीवन का अंग बन चुका था। गौ-रक्षा आन्दोलन में भी आपने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। १९६७ से १९६९ तक आपने सार्व-देशिक आर्य युवक परिषद के महामंत्री के रूप में बड़े धैर्य, साहस और अध्यवसाय से काम किया और आर्य युवकों का एक सशक्त संगठन बन गया। सैकड़ों नई आर्य युवक परिषदें दिल्ली, हरियाणा तथा प० उत्तर प्रदेश में गठित की गईं। युवकों की दुधर्ष-शक्ति को सही दिशा देने के लिये विशाल स्तर पर कई ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण –शिविरों का आयोजन किया गया। युवकों में नेतृत्व भावना विकसित करने के लिए सामूहिक वार्ता, वाद-विवाद प्रतियोगिता, लेख-प्रतियोगिता, सर्वोत्तम स्वास्थ्य-प्रतियोगिता आदि कार्य-क्रम तो आपकी दिनचर्या में आ गये थे।

मद्य-निषेध सम्मेलन, गौरक्षा सम्मेलन विशेष रूप से आपने करवाये हैं। नशा विरोधी समिति की, स्थापना कर, जगह-जगह प्रचार कर, पोस्टर लगवाना आदि काम आपने बड़ी लगन से करवाये हैं।

तप, सरलता एवं स्वदेश प्रेम :—

आपने बचपन से लेकर आज तक खादी कुर्ता - धोती धारण कर भारतीय आदर्श का मूर्तिमान स्थापित किया है। एक घटना आपके जीवन की विशेष प्रसिद्ध है जब आप भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली में अध्ययन करते थे तो संस्थान के प्रोफेसरों ने आपको अंग्रेजी परिवेश में आने के लिये कहा। कक्षा से बाहर कर दिया गया धमकियां दी जाने लगी। पर वाह रे भारतीय सभ्यता के पुजारी। झुकना पड़ा आपके सामने संस्थान के उन नराधमों को। सम्पन्न होते हुए भी कभी आज तक बाजारू वस्तुओं का प्रयोग न किया। आपने कभी निर्धन को तुच्छ व हीन न समझा।

यहां से पूर्व :-

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलसचिव पद को सुशोभित करने से पूर्व आप आर० के० आर्य कालेज नवांशहर, जालन्धर में प्रिंसिपल पद पर पिछले दो वर्षों से कार्यरत थे वहां भाषा, वेशभूषा की विभि-न्नता होते हुए भी संस्था के प्रशासन को जिस योग्यता एवं वरीयता से संभाला है वह उस संस्था के इतिहास में एक अभूतपूर्व धटना है। पिछले १५ वर्षों में इस संस्था में १०–१२ प्रिंसिपल आये और अपमान के साथ उनको कॉलेज से निष्कासित कर दिया गया।

लेकिन कॉलेज के इतिहास में पहली बार श्री आर्य जी की ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा, सरल स्वभाव, संस्कृति प्रेम एवं समभाव के कारण उनको कॉलेज की प्रबन्ध-समिति, कॉलेज के प्रोफेसरों, तृतीय एवं चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों की ओर से भावभीनी विदाई दी गयी :

ऐसे कुलसचिव को पाकर क्या यह स्वामी श्रद्धानन्द का उजड़ा चमन फिर हरा न हो जायेगा ? क्या अपनी पुरानी गरिमा और महिमा को यह विश्वविद्यालय अन्तर्राष्ट्रीय रूप में प्राप्त न करेगा ? हमें पूर्ण विश्वास है कि श्री आर्य जी के नेतृत्व में चल कर यह विश्वविद्यालय अपनी चरम सीमा और चरम लक्ष्य तक अवश्य पहुँच जायेगा। प्रभु करें आप दीर्घायु स्वस्थ्य हों ताकि शिक्षा जगत आपकी सेवाओं का पूर्ण लाभ प्राप्त कर सकें।

नवनियुक्त उपकुलसचिव

डॉ० काश्मीर 'राही'

आपका जन्म ४, अप्रैल, १९४६ को निर्मल बाग, कनखल, हरिद्वार में हुआ। बी. ए. कक्षा का अध्ययन एस० एम० जे० एन० महाविद्यालय में किया। एम० ए० एवं पी–एच० डी० की उपाधि गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार से प्राप्त की।

सितम्बर, १९७२–७५ तक एस० एम० जे० एन० महाविद्यालय, हरिद्वार में इतिहास के प्रवक्ता रहे। सितम्बर '७५ से जून '७६ तक संत निरंकारी लोकप्रिय कॉलेज सोहना, गुड़गाँव में इतिहास विभाग के अध्यक्ष रहे।

वर्तमान समय में आप गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के उप कुलसचिव पद पर कार्यरत हैं।

सहायक मुख्याधिष्ठाता

शिवचरण विद्यालंकार

जन्म — ७ जुलाई १९३५

स्थान — हनुमानगढ़ी, कनखल, जि० सहारनपुर ।

शिक्षा — पन्नालाल भल्ला कॉलेज से इण्टर तक प्रारम्भिक शिक्षा, साहित्य-रत्न, विद्यालंकार, एम० ए०, अब शोध-छात्र ।

राजनीतिक गतिविधि — युवक कांग्रेस के अध्ययन मंच का संयोजक, क्षेत्रीय कांग्रेस कमेटी कनखल का मंत्री, १९७१ में नगर पालिका सदस्य, नगर पालिका शिक्षा-समिति का चेयरमैन, पंचपुरी की प्रारम्भिक शिक्षा की अध्यापक–समिति का अध्यक्ष, राज्य विद्युत कर्मचारी परिषद् नगरपालिका–समिति का अध्यक्ष, कञ्ज्यूमर्स कोआपरेटिव सोसाइटी का डायरेक्टर ।

साहित्यिक — अतिथि त्रैमासिक पत्रिका का सम्पादक,
गुरुकुल पत्रिका का भू० पू० प्रबन्ध सम्पादक,
सा० हिन्दुस्तान, शाकम्भरी, वीर अर्जुन, कहानीकार (वाराणसी) साथी, कीर्ति, हिन्दू, अरुण (मुरादाबाद), युवक (आगरा), रेखा (नागपुर) आदि पत्र-पत्रिकाओं में लगभग दो दर्जन कहानी प्रकाशित ।

संवाददाता– दैनिक 'मयराष्ट्र' मेरठ ।

१५ घुलाई, ७६ से गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के सहायक मुख्याधिष्ठाता पद पर कार्यरत हैं । इससे पूर्व लगभग १४ वर्ष से विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों में अनेक पदों पर कार्य करके अपूर्व योगदान दिया ।

–रामाश्रय मिश्र
सम्पादक

संरक्षक सभा का प्रस्ताव

दिनाङ्क	उपस्थिति	उपस्थितों के हस्ताक्षर
५–९–७६	१— श्री बाबूराम जी आर्य, प्रधान	ह० बाबू राम आर्य
	२— श्री अतरसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष	ह० अतरसिंह
	३— ओमप्रकाश द्विवेदी, सदस्य	ह० ओमप्रकाश द्विवेदी
	४— भजनदास जी जागीदार, सदस्य	ह० भजनदास जागीदार

कार्यवाही :—

आज दिनांक ५–९–७६ को संरक्षक सभा गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय के विद्यालय विभाग की अन्तरंग की बैठक दिन के ३ बजे स्थान– सीनेट हाल में श्री बाबूराम जी आर्य प्रधान की अध्यक्षता में हुई।

कुल संख्या — सदस्य – १२
कोरम – ४
उपस्थिति – ४

प्रस्ताव नं० ३—

श्री भजनदास जी जागीदार निवासी थाना शिमला ने प्रस्ताव रखा कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज ने जब से इस गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का कुलाधिपति पद ग्रहण किया है तब से गुरुकुल अमर हुतात्मा स्वर्गीय श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज द्वारा दिखाये गये मार्ग पर तीव्र गति से बढ़ चला है। हम सब को एक आशातीत सफलता दिखाई पड़ रही है जिसकी कि हम इतने थोड़े समय से कल्पना भी नहीं कर सकते थे। किन्तु जहाँ यह प्रसन्नता है वहाँ एक दुःख का विषय भी है कि कुछ अवांछनीय तत्वों ने स्वामी जी की सरलता का लाभ उठा कर गुरुकुल के आय का श्रोत फार्मेसीं पर जबरदस्ती कब्जा जमा रखा है और फार्मेसी से मिलने वाली गुरुकुल को मासिक सहायता नहीं दी जा रही है।

अतः यह संरक्षक सभा भारत सरकार से यह अपेक्षा करती है कि भारत सरकार अविलम्ब फार्मेसी को विश्वविद्यालय कांगड़ी के अधिकार में दिला दे जिससे भविष्य में आने वाला आर्थिक संकट इस फलती-फूलती संस्था को न मुर्झा सके।

श्री ओमप्रकाश द्विवेदी निवासी जिला बहराइच ने उक्त प्रस्ताव का समर्थन किया तथा प्रस्ताव सर्व-सम्मति से स्वीकृत किया गया।

बाबूराम
प्रधान
संरक्षक सभा
गु० का० विश्वविद्यालय, हरिद्वार।

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय कर्मचारी यूनियन हरिद्वार के मंत्री श्री साधूराम द्वारा
श्री नारायणदत्त तिवारी, मुख्य मंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार के प्रति

कृतज्ञता ज्ञापन प्रपत्र

पत्र संख्या २५८/७६ दिनांक ७-८-७६

श्रीयुत नारायणदत्त तिवारी
मुख्यमंत्री
उत्तर प्रदेश सरकार, लखनऊ।

महोदय,

हम गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय के सब कर्मचारी आपको विशेष साधुवाद एवं धन्यवाद भेज रहे हैं कि आपने गुरुकुल के वातावरण को पुनः शान्त एवं पवित्र बना दिया है। आपका मार्गदर्शन लेकर जब से गुरुकुल विश्वविद्यालय के कुलाधिपति स्वामी इन्द्रवेश जी गुरुकुल में पधारे हैं तब से यहां का प्रत्येक व्यक्ति प्रसन्न है। पढ़ने-लिखने का प्रबन्ध तथा अनुशासन आदि सुचारु-रूप से चल रहा है। इस विश्वविद्यालय की कर्मचारी यूनियन जो इण्टक तथा युवक कांग्रेस से संबद्ध है प्रारम्भ से ही प्रधान मन्त्री के बीस सूत्री कार्यक्रम के पालन तथा प्रसारण के लिये प्रयत्नशील रही है। किन्तु विश्वविद्यालय के तत्कालीन अधिकारियों के ताना-शाही रवैये के कारण कार्य पालन में काफी बाधा पहुँच रही थी। ये स्वार्थी तत्व संस्था के शोषण के साथ-साथ पुलिस की सहायता से दमन की नीति भी अपनाये हुए थे। अब आपकी कृपा से वातारण अत्यन्त स्वच्छ हो गया है और विश्वविद्यालय के सभी शिक्षक, कर्मचारी व छात्र देश की प्रगति में अपना योगदान खुले दिल से कर रहे हैं। हम सब गुरुकुल कर्मचारी यूनियन के सदस्य आपको विश्वास दिलाते हैं कि यहाँ पूर्ण शान्ति के साथ सभी कुलवासी संस्था के विकास के लिये कार्य करते रहेंगे और आपके प्रगतिशील कार्यों एवं प्रधानमन्त्री के २० सूत्री कार्यक्रम को क्रियान्वित करने के लिये तत्पर रहेंगे।

साधुराम माहेश्वरी
मंत्री

प्रतिलिपि—
१- प्रधानमंत्री, भारत सरकार, नई दिल्ली--१
२- गृहमंत्री, भारत सरकार, नई दिल्ली—१।
३- रक्षामंत्री, भारत सरकार, नई दिल्ली—१।
४- राज्यपाल, उत्तर प्रदेश सरकार लखनऊ।
५- मुख्यमंत्री, हरियाणा सरकार, चण्डीगढ़।
६- मुख्यमंत्री, पंजाब सरकार, चण्डीगढ़।
७- अध्यक्ष, भारतीय युवक कांग्रेस, नई दिल्ली—१।
८- अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी, १९ कैसर बाग लखनऊ।
९- महामंत्री, इण्टक, १७ जनपथ, नई दिल्ली—१।

साधुराम माहेश्वरी मंत्री

स्वामी इन्द्रवेश, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब एवं कुलाधिपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के प्रति प्रेषित विभिन्न

बधाई एवं शुभकामना सन्देश

मुख्य मंत्री
सील
पंजाब

चंडीगढ़
अगस्त १६, १९७६

मान्यवर श्री इन्द्रवेश जी,

आपका पत्र नं० ३०३६, दिनाँक ७-८-७६ प्राप्त हुआ। यह जानकर अति हर्ष हुआ कि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का कार्य ठीक प्रकार से चल रहा है।

सद्भावना सहित,

शुभ चिन्तक :
ह० जैलसिंह
(जैलसिंह)

श्री इन्द्रवेश जी,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी, (सहारनपुर), उत्तर प्रदेश।

मुख्य मंत्री
सील
पंजाब

चंडीगढ़
अगस्त १६, १९७६

मान्यवर श्री इन्द्रवेश जी,

आपका पत्र दिनाङ्क १६-७-७६, जिसमें आपने मुझे गुरुकुल कांगड़ी (सहारनपुर) की पावन धरती पर आने के लिये निमन्त्रित किया है, प्राप्त हुआ। इसके लिये मैं आपका धन्यवाद करता हूँ। सितम्बर के अन्त तक मैं बहुत कार्यव्यस्त हूँ। इसके बाद कभी समय मिला तो आने की कोशिश करूंगा।

सद्भावना सहित,

शुभ चिन्तक
ह० जैलसिंह
(जैलसिंह)

श्री इन्द्रवेश जी
कुलाधिपति,
गुरुकुल कांगड़ी (सहारनपुर), उत्तर प्रदेश।

सील

रक्षामंत्री, भारत
नइ दिल्ली,
जुलाई २३, १९७६

प्रिय श्री इन्द्रवेश जी

आपका पत्र दिनांक १६ जुलाई, १९७६ का प्राप्त हुआ। मेरा अभी निकट भविष्य में आगामी अधिवेशन की वजह से गुरुकुल कांगड़ी (सहारनपुर) आने का कोई विचार नहीं है।

शुभ कामनाओं सहित,

आपका.
ह० बंसीलाल
(बंसीलाल)

श्री इन्द्रवेश-
कुलाधिपति,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
डा० गुरुकुल काँगड़ी, जिला सहारनपुर।

सील

निजी सचिव
मुख्यमंत्री हरियाणा
चंड़ीगढ़
जुलाई २८, १९७६

आदरणीय स्वामी इन्द्रवेश जी,

गुरुकुल कांगड़ी में अभिनन्दन समारोह के अवसर पर आपके निमन्त्रण के लिए मुख्य मंत्री जी आभारी हैं परन्तु उन्हें खेद है कि २९-७-७६ के लिये पूर्व निश्चित कार्य-क्रम के कारण वे इस समारोह में भाग नहीं ले सकेंगे।

वे इस समारोह की सफलता के लिए शुभकामनाएं करते हैं।

आदर सहित,

आपका
ह० अपठित
(प्रो: प्र: साबती)

स्वामी इन्द्रवेश,
कुलाधिपति,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार।

महासिंह
सील

कृषि मंत्री, हरियाणा
चंडीगढ़
अगस्त १९, १९७६

आदरणीय स्वामी जी,

आपके पत्र दिनाङ्क १६-७-७६ के लिये अति धन्यवाद। मैं अभी-अभी विदेश से लौटा हूँ। मुझे चण्डीगढ़ में अपनी समस्यायें हैं, इसलिये मैं इतनी जल्दी गुरुकुल में नहीं आ पाऊंगा। जब मौका मिलेगा तो मैं आपके दर्शन अवश्य करूंगा।

आदर सहित,

आपका :
ह० महासिंह
(महासिंह)

स्वामी इन्द्रवेश,
कुलाधिपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
गुरुकुल कांगड़ी, (सहारनपुर), उत्तर प्रदेश।

वीरेन्द्र वर्मा
कृषि मंत्री

सील

फोन : कार्यालय–२२८७५
सी० एच० २८३
आवास–२७९०६
विधान भवन, लखनऊ–१
दिनांक जुलाई २२, १९७६

प्रिय श्री इन्द्रवेश जी,

आपका १६ जुलाई का पत्र प्राप्त हुआ। धन्यवाद। ३० जुलाई से मैं विदेश जा रहा हूँ तथा सितम्बर में वापिस आऊंगा। उसके उपरान्त जब भी सम्भव हुआ उधर आऊंगा।

शुभकामनाओं सहित,

आपका :
ह० वीरेन्द्र
(वीरेन्द्र वर्मा)

श्री इन्द्रवेश
कुलाधिपति,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार, जिला सहारनपुर।

ओ३म्

डॉ० गंगाराम कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

के कर कमलों में सादर सर्मपित

अभिनन्दन पत्र

मान्यवर,

आज हम सभी छात्रों को आपके द्वारा कुलपति पद-ग्रहण के अवसर पर अभिनन्दन करते हुए परम हर्ष हो रहा है।

आपको यह पत्र आपकी लगभग २४ वर्षों की सेवा, जिसके १० वर्ष आपने कुलसचिव के उत्तरदायी पद पर रहते हुए समालंकृत किये हैं, दिया जा रहा है। आपकी कुशाग्र बुद्धि तथा सुचारू कार्य करने की क्षमता ने विश्वविद्यालय को जितना आलौकिक किया है, वह सभी को विदित है।

श्रद्धेय! आप अनुशासन को बनाये रखने के लिए सतत् चिन्तित रहे हैं। संघर्ष के समयों में आपने सदा लौहपुरुष का आवरण पहने रखा। आपकी कर्मठता, सत्यनिष्ठा कार्य-संलग्नता तथा न्यायीय प्रबन्ध कुशलता से हम सभी लोग भली प्रकार परिचित हैं।

हमें विश्वास है कि आप जैसे कुशल प्रबन्धक के हाथों में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का यह वृक्ष सदा पल्लवित और पुष्पित होता रहेगा।

हम हैं आपके

विज्ञान महाविद्यालय के

समस्त छात्र

दिनाङ्क : ३१-८-१९७६

मंगलवार।

डॉ० गंगाराम जी गर्ग के कुलपति पद ग्रहण करने के अवसर पर उनका स्वागत

यह बड़ी प्रसन्नता का विषय है कि आज के दिन श्री डॉ० गंगाराम जी गर्ग, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति पद को ग्रहण कर रहे हैं। इस अवसर पर मैं भी आप सबके साथ इनको हार्दिक बधाई देता हूं। प्रार्थना करता हूं कि वे चिरायु हों और परमेश्वर उन्हें शक्ति दें कि वे इस गुरुतर कार्य को सफलता से निभा सकें। पूर्ण आशा है कि उनके कुलपति पद पर आसीन होने पर इस विश्वविद्यालय की शिक्षा का स्तर ऊंचा होगा। माननीय शिक्षक वर्ग जो अब भी शिक्षा देने में पर्याप्त दिलचस्पी लेते हैं आगे और अधिक दिलचस्पी लेंगे। शिक्षार्थियों से आशा है कि वे शिक्षा प्राप्ति में और अधिक जुटेंगे तथा अतिरिक्त विषयों पर ध्यान न देंगे। छात्र का मस्तिष्क जो बन्द सा होता है उसे शिक्षा विकसित करती है। जिस छात्र को शिक्षा नहीं मिलती उसका मस्तिष्क बन्द सा हो रह जाता है। यदि किसी की आंख या कान बन्द से रह जायें तो यह उसका कितना दुर्भाग्य है इसी प्रकार यदि किसी का मस्तिष्क बिना शिक्षा के बन्द सा ही रह जाये तो यह उसका कितना दुर्भाग्य है। छात्रों का यह कितना सौभाग्य है कि उन्हें यहां शिक्षा प्राप्त करने का सुअवसर मिला है। उन्हें इस अवसर से पूर्ण लाभ उठाना चाहिये। इंगलिश के एज्यूकेशन शब्द का अर्थ है वह चीज जो डेवलपमेंट का साधन हो। जैसे फूल की एक बन्द सी कली सूर्य प्रकाश पाकर एक खिले हुए फूल के रूप में परिवर्तित हो जाती है ऐसे ही बालक का मस्तिष्क रूपी अनखिला फूल शिक्षा के द्वारा खिलकर एक सुन्दर सुगन्धित पुष्प बन जाता है। छात्रों को चाहिए अन्य सब कार्य छोड़कर वे अधिक से अधिक शिक्षा प्राप्त करने में लगे रहें पर शिक्षा भी एक साधन है मनुष्य का साध्य या लक्ष्य तो सचाई या रियलिटी का जानना या देखना है। अशिक्षित व्यक्ति सच्चाई को देख नहीं सकता। शिक्षित ही सचाई को ढूंढता है और देख सकता है। सच्चा शिक्षित वह है जो सच्चाई का अन्वेषक हो पक्षपाती न हो जिसका दृष्टि-कोण वैज्ञानिक हो। श्रुति ने कहा है पूषन् सचाई के उपर जो सोने का बना ढकना पड़ा है उसे हटा देना कि मैं सच्चाई को देख सकूं। सच्चाई का देखना ही शिक्षा का उद्देश्य है। अर्थोपार्जन भी एक उद्देश्य है क्योंकि वह शरीर के विकास के लिये जरूरी है 'सत्य धर्मा दृष्टये' कह कर श्रुति ने सत्य के ढूंढने और देखने को जीवन का या शिक्षा का उद्देश्य कहा है। दूसरे शब्दों में शिक्षा का उद्देश्य शरीर मन और आत्मा तीनों का विकास करना है।

अभिप्राय यह है कि शिक्षणालय में शिक्षा का ही वायुमण्डल रहना चाहिए। परमेश्वर करे आपके कुलपति पद पर रहने के काल में यह गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय शिक्षा का एक उत्तम क्रीड़ास्थल या फार्म बने।

वैद्य धर्मदत्त

विश्वविद्यालयीय छात्रों द्वारा स्वागत

हे हे उदार मानव स्वागत है आज तेरा ।
उपहार के प्रणय से स्वागत है आज तेरा ॥
हे हे ! ... ...

इक प्रेम वन्दना से छोटी सी साधना से ।
कुल भूमि पुष्प लेकर करती सिंगार तेरा ॥
हे हे ! ... ...

इक चाह है हमारी इक बात है हमारी ।
हम बच्चे हैं तुम्हारे, देना हमें सहारा ॥
हे हे ! ... ...

कुलवासी हम तुम्हारे अब भेंट क्या चढ़ायें ।
श्रद्धा–सुमन की माला स्वीकार हो हमारा ।
हे हे ! ... ...

नव प्रेम वाटिका के फूलों से है सजाया ।
संभार यह हमारा गलहार हो तुम्हारा ॥
हे हे ! ... ...

वैदिक राष्ट्र गान

ब्रह्मन् ! स्वराष्ट्र में हो द्विज बुद्ध तेजधारी ।
क्षत्री महारथी हों अरि दल विनाश कारी ॥
होवें दुधारु गौवें पशु अश्व आशुवाही ।
बलवान सभ्ययोद्धा यजमान पुत्र होवें ॥

कुलपति के नाम पत्र

हिन्दू महा सभा
टेलीफोन : ४६४५६ / ४६६४४

तार : हिन्दू महा सभा

अखिल भारत हिन्दू महासभा

पोस्ट बाक्स ७०३,
नई दिल्ली–१

क्रमांक : निजी

दिनाङ्क ८–६–७६

प्रिय बन्धुवर,

सादर सप्रेम नमस्ते ।

आपका ७–६–७६ का पत्र मिला। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति पद का भार ग्रहण करने पर मेरे हृदय में मिश्रित प्रतिक्रिया हुई।

जिन परिस्थितियों में आपने यह गम्भीर दायित्व लिया है सर्वथा संस्था के तात्कालिक हित में है। आपका रजिस्ट्रार और प्राध्यापक के रूप में इस महान् संस्था की सेवा का दीर्घकालीन अनुभव और समय-समय पर हो चुकने वाले संघर्षों व बवण्डरों के वातावरणों के मंच पर खेले जाने वाले नाटकों के प्रसिद्ध पात्रों, उदान्त नायकों और खल-नायकों के मनोविज्ञान का अवबोध– आपका पूरा सहायक होगा। परन्तु मुझे डर है कि नई उलझनें और कुछ विपरीत परिस्थितियां आपको विह्वल न कर दें। अतः बहुत सावधानी और सतर्कता की आवश्यकता है।

प्रभु पर भरोसा रखिये, अन्ततोगत्वा सभी मार्ग परिमार्जित हो जायेंगे। प्रिय बहिन जी की सेवा में नमस्ते। बच्चों को प्यार और आशीर्वाद।

आपका

रामसिंह

रणवीर सिंह
उपनेता
कांग्रेस पार्टी राज्य सभा ।

सील

टेलीफोन : ३७७८०७
३७७६३०
३७७८१२
२४ पार्लियामैंट हॉउस
नई दिल्ली

सितम्बर १४, १९७६

प्रिय डॉक्टर साहब,

आपका पत्रांक ५४४२, दिनाङ्क ७-९-७६ का प्राप्त हुआ। यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि आपने २८ अगस्त से गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति का पद भार संभाल लिया है।

समय मिलने पर मैं यथाशीघ्र गुरुकुल कांगड़ी संस्था में उपस्थित होने का प्रयास करूंगा।

ससम्मान,

आपका.
ह० रणवीर सिंह
(रणवीर सिंह)

डॉ० गंगाराम,
कुलपति,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार, जिला सहारनपुर (उ०प्र०)

सील

मुख्यमंत्री हरियाणा

डी.ओ.न. सी.एम.एच.—७६/४७३३

मुख्यमंत्री हरियाणा

चंडीगढ़

सितम्बर १५, १९७६

प्रिय डॉ० गंगाराम जी,

आपका पत्र क्रमांक ५२६८, दिनाँक १०—८—७६ का मिला। धन्यवाद। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आपने कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार का पद ग्रहण कर लिया है। अवसर मिलने पर मैं अवश्य ही विश्वविद्यालय आने का प्रोग्राम बनाऊंगा।

आदर सहित,

आपका

ह० बनारसीदास गुप्त

(बनारसीदास गुप्त)

डॉ० गंगाराम,
कुलपति,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार।
(सहारनपुर)

सैंटर आफ एडवांस स्टडी, शिमला, २०-९-७६

प्रिय डॉ० गर्ग,

आपका ७—९ का पत्र कल मैं पंजाब से लौटा तब मिला। यह जानकर बहुत हर्ष हुआ कि आप कुलपति पद पर आसीन हुए। आपकी योग्यता का यह सही उपयोग हुआ है।

आपका :—

ह० डॉ० प्रभाकर माचवे
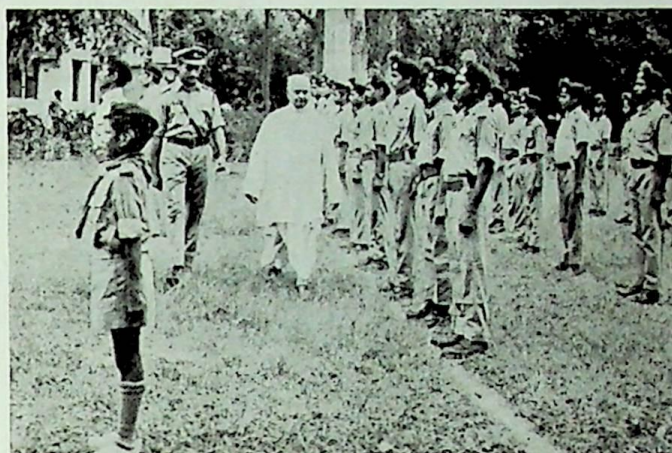
१५ अगस्त को कुलपति डॉ० गंगाराम
एन.सी.सी. की टुकड़ी का निरीक्षण करते हुए ।
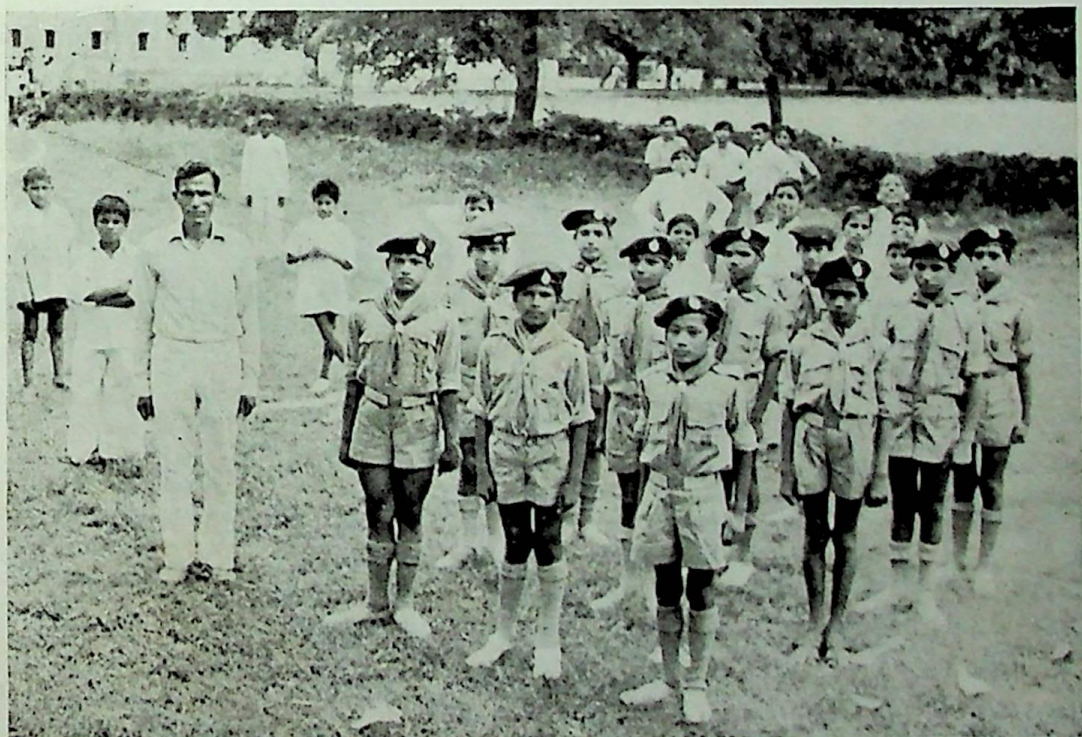
१५ अगस्त समारोह के अवसर पर विद्यालय के छात्रों द्वारा व्यायाम प्रदर्शन ।

विज्ञान महाविद्यालय के प्रिंसिपल श्री सुरेशचन्द्र जी अति प्रसन्न मुद्रा में माल्यार्पण करते हुए बाईं ओर बैठे हैं पं० सुखदेव जी दर्शन वाचस्पति, भूतपूर्व उपाचार्य, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय और डॉ० अंनतानंद जी ।

आयुर्वेद महाविद्यालय के प्रिंसिपल डॉ. अनंतानंद जी कुलपति डॉ० गंगाराम को माल्यार्पण करते हुए । चित्र में कुलपति उन्हें ही माला पहिनाने का प्रयत्न कर रहे हैं ।
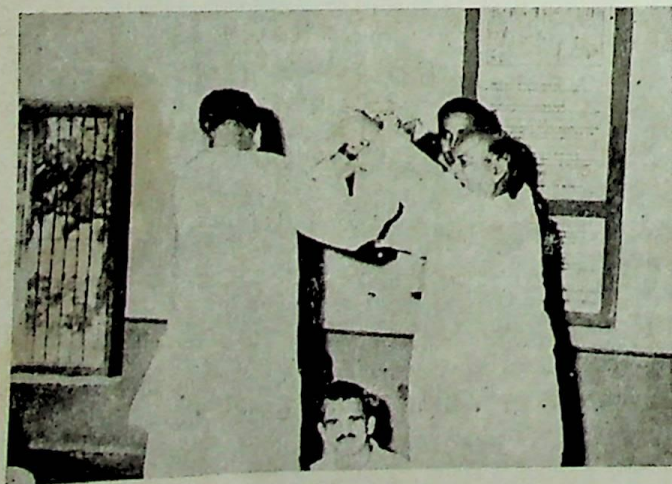
विश्वविद्यालय के आचार्य एवं उप कुलपति डॉ० वाचस्पति जी उपाध्याय ३१ अगस्त, ७६ को कुलपति डॉ० गंगाराम को श्रद्धाभाव से माल्यार्पण करते हुए ।

ओ३म्

गुरुकुल समाचार

ऋतु-रंग

– 'नीर' विद्यालंकार

मई-जून लगते ही ऋतु में विशेष उष्णता व्याप्त हो गई। धरती तपने लगी। ज्येष्ठ दहकने लगा। साथ ही मौसम की विचित्रता के दर्शन भी होते रहे। उष्ण हवाओं के थपेड़े धूल और रेत के गुब्बारे उड़ाते रहे। मध्यान्ह का ताप असह्य हो उठा। नीम, जामुन कटहल, नीबू आदि में फलोद्भव होने लगा। आमों का अभाव होने से, आम्र—निकुञ्जों में उदासी छायी रही। मोतिया (हजारा) की भीनी-भीनी मादक गंध बिखर गयी। कनेर भी पुष्पित हो गये। 'गुलेचीन' के श्वेत–श्वेत, पीत-पीत पुष्पों की मादक सुरभि से वातावरण महकने लगा। गुलाब, गेंदा, गुलमोहर की छटा आकृष्ट करती रही। अमलतास वृक्ष पर अंगूरों के समान पीले–पीले पुष्प-गुच्छ लटकते-झूमते-बिखरते हुए कुल भूमि का अभिनन्दन करते रहे। आक, ढाक, शीशम, पीपल सभी फूल उठे। वातावरण में तपन और तीक्षणता होते हुए भी प्राकृतिक सौन्दर्य की मनमोहनी माधुरी कुलवासियों के हृदय को प्रफुल्लित एवं उल्लसित करती रही। गंगनहर का स्नान ताप से संतापित शरीरों को सुख प्राप्त करता रहा। शीतल व मधुर पेय पान करने की उत्कण्ठा तीव्रतम होने लगी। विद्युत् पंखों पूर्ण वेग से घूमने लगे। अकस्मात् मौसम में विकटता आती रही। भयंकर आंधी–तूफान और ओला-वृष्टि से समस्त गुरुकुलीय वातावरण विकम्पित एवं विक्षुब्ध हो उठा। ओलों की सफेद चादर सी बिछ गयी। किन्तु मई-जून का ऋतु-रंग एकदम तपन और उमस भरा रहा। शरीर स्वेद कणों से स्नात हो उठा। पूर्वी और पश्चिमी वायु के तीव्रतम झोंके चलते रहे।

इधर जुलाई व अगस्त मास लगते ही कुलभूमि में पुन: जीवन सञ्चार हो उठा। राजा इन्द्र की मेघ रूपी विकट सेना अम्बु-राशि का परिवेश धारण कर कुल-भूमि को अपनी सुधावर्षिणी जल धारा से आलावित करने लगी। मेघों की गड़गड़ाहट और चमचमाहट के बीच प्रभूत जल-वृष्टि हुई। नीम की कड़वी-मीठी गंध वायु में विलीन हो गयी। निबोलिया व जमोये पक गये। वीरवहूटी व केंचुए प्रादुर्भूत हो गये। वनस्पतियों में नया जीवन आ गया। ताल-तलैया खड्ड सब जल पूर्ण हो गये। सावन-भादो की ठण्डी-ठण्डी फुहारें पड़ने लगी। मूसलाधार वर्षा के सतत प्रवाह को धरती का हृदय निरन्तर समेटता रहा। समीपस्थ नहर का जल मटमैला हो चला। चहुंओर हरीतिमा ही हरीतिमा छा गयी। दादुरों और झिल्ली का उच्च स्वर

रजनी की निस्तब्धता को टोंकता रहा। बिच्छु व सापों का भय बना रहा। विविध कीट-पंतगों की उत्पत्ति बढ़ चली। मच्छरों व मक्खियों से वातावरण आक्रान्त रहा।

विद्यालय विभाग

इस बार विद्यालय-बिभाग का वार्षिक-परीक्षा परिणाम संतोष जनक रहा। क्रमशः प्रथम द्वितीय तृतीय निम्न रहे:—

प्रथम श्रेणी:—सूर्यपाल, संजीव तथा सुरेश, दीपवर्धन।
द्वितीय श्रेणी:—मनीष, संजय, अजय।
तृतीय श्रेणी:—महेन्द्र कुमार, श्याम दत्त, विपुल तथा सुनीलदत्त।
चतुर्थ श्रेणी —गजेन्द्र, रवीन्द्र कुमार, देवेन्द्रपाल सिंह, तथा वीरेन्द्र।
पंचम श्रेणी:—नरेश, दिगम्बर सिंह, गुलाब सिंह।
षष्ठ श्रेणी:—भोलेराम, इन्द्रपाल, उमाशंकर।
सप्तम श्रेणी:--राकेशकुमार, भगवानसिंह, महेश कुमार।
अष्टम श्रेणी:—रमेश, गणेश कुमार, कमल कुमार।
दशम श्रेणी:—ब्र. कलम सिंह, का स्थान प्रथम रहा।

आचार्य डॉ० रामनाथ जी वेदालंकार का —विदाई समारोह—

विद्यालय-विभाग के छात्रों ने आचार्य एवं प्रोवाइसचांसलर डॉ० रामनाथ जी को ससम्मान विदाई दी। सभी छात्रों ने आचार्य जी के स्नेह और वात्सलयपूर्ण स्वभाव की चर्चा की। आचार्य जी ने विद्यालय-विभाग को वाद-विवाद प्रतियोगिता के लिए स्नेह-स्मृति स्वरूप अपनी धर्म-पत्नी के नाम से चाँदी की एक शील्ड प्रदान की तथा विद्यालय पुस्तकालय के लिए कुछ साहित्य भी प्रदान किया। समस्त विद्यालय-परिवार आचार्य जी का आभारी है। तथा चण्डीगढ़ विश्वविद्यालय में दयानन्द पीठ के अध्यक्ष बनने पर आपका हृदय से अभिनन्दन करते हुए सदैव स्नेह की आशा करता है। ३१ जुलाई को वेद तथा कला महाविद्यालय में भी विदाई समारोह संपन्न हुआ। कुलपति डॉ० गंगाराम ने डॉ० रामनाथ जी की सेवाओं की भूरी-भूरी प्रशंसा की और उन्हें विश्वास दिलाया कि गुरुकुल उन्हें कभी नहीं भूल सकता।

विद्यालय--छात्रों द्वारा चुनाव

विद्यालय के छात्रों ने श्री तिलकराज की अध्यक्षता में निम्न चुनाव किये:—

सभा मंत्री:—नरेन्द्र, उपमंत्री:—विनोद, क्रीड़ा मंत्री:—द्विजेन्द्र, उपमंत्री:—विश्वामित्र, हॉकी कप्तान:—प्रदीप, उप कप्तान:—यशपाल, फुटबॉल कप्तान:—विश्वामित्र, उप कप्तान:—अश्विनी, क्रिकेट कप्तान:—सुनील, उप-कप्तान:—रवीन्द्र, बॉलीवाल कप्तान:—द्विजेन्द्र, उपकप्तान:—चन्द्रप्रकाश, टेबिल टेनिस कप्तान:—रणपाल उपकप्तान:—चन्द्रप्रकाश, बैडमिंटन कप्तान:—विश्वामित्र, उपकप्तान:—नरेन्द्र, तैराकी:—चन्द्रप्रकाश, मेघवीर, कुश्ती संचालकः—रणपाल, राकेश, कबड्डी कप्तान:—प्रदीप, उपकप्तान:—अश्विनी।

विद्यालय के नये मुख्याध्यापक:—

विद्यालय-विभाग में श्री पं० अनूपसिंह जी शास्त्री ने मुख्याध्यापक का कार्य भार संभाल लिया है। आप आर्यमहाविद्यालय किरठल के स्नातक हैं तथा

गुरुकुल घासीपुरा के लगभग १० वर्ष तक आचार्य रहे। आप वेदवाचस्पति, शास्त्री तथा शिक्षा शास्त्री हैं। इस प्रकार आप अनुभवी आर्य समाजी ही नहीं शिक्षा शास्त्री व अच्छे प्रबंधक भी हैं। आपकी संरक्षता में विद्यालय उत्तरोत्तर उन्नति की ओर प्रगतिशील है।

संरक्षक--सभा की बैठक:—

१-५-७६ को जो संरक्षक सभा की बैठक हुई उसमें अनेक विषयों पर विचार हुआ। श्री बाबूराम जी आर्य (प्रधान) के अनुसार मुख्य विषय निम्न थे;— (१) षष्ठ व दशम कक्षाओं में पढ़ाई जाने वाली इतिहास की पुस्तकों में से वे भाग अलग किये जायें, जिनमें लिखा है कि 'आर्य लोग मांस आदि का भक्षण' करते थे। (२) विद्यालय अस्पताल को छात्रों के आश्रम में लाना रुग्ण एवं स्वस्थ छात्रों दोनों के हित में नहीं है। (३) विद्यालय-आश्रम में अधिष्ठाता सात्विक विचार वाले व प्रौढ़ तथा अध्यापक गुरुकुलीय विचार प्रवृत्ति के लिये जायें।

विविध-क्रिया कलाप :-

विद्यालय विभाग में जुलाई व अगस्त में छात्रों की वाक् शक्ति को बढ़ाने के लिए प्रति शनिवार को सभाएं होती रहीं। मुख्याध्यापक श्री अनूप सिंह जी ने ब्रह्मचारियों को इस ओर विशेष प्रोत्साहित किया। इसी प्रकार-क्रीड़ा-सम्बन्धी आयोजन भी होते रहे। विद्यालय-टीम ने ज्वालापुर महाविद्यालय की टीम को कबड्डी व फुटबाल में पराजीत किया। १०-८-७६ को परिवार टीम के साथ फुटबाल मैच बराबर रहा। इसी प्रकार नित्य प्रति फुटबॉल, वालीवॉल, बैडमिंटन ऊंचीकूद आदि के खेल होते रहे।

ब्र. देवकेतु का बल प्रदर्शन:—

उदीयमान कुलीय भीम एवं अभिमन्यु ब्र. देवकेतु ने पीलीभीत, बस्ती तथा बहराइच आदि स्थानों में अपने अद्भुत ब्रह्मचर्यबल का प्रदर्शन किया। देवकेतु ने दो कारों को एक साथ रोककर, छाती पर से कार उतरवाकर, जंजीर तोड़कर, छाती पर पत्थर तुड़वाकर जनता को मोहित व आश्चर्य चकित कर दिया।

पंचपुरी तैराकी प्रतियोगिता:—

२-५-७६ को समस्त हरिद्वार क्षेत्र के लिए एक तैराकी प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। प्रतियोगिता मायापुर पुल से प्रारम्भ होकर गुरुकुल के मोतीघाट पर समाप्त हुई। इस प्रतियोगिता में श्री ओंकारसिंह (कनखल) प्रथम तथा श्री सुनील कुमार द्वितीय तथा श्री दयाराम तृतीय एवं विनोद शर्मा चतुर्थ रहे। छोटे छात्रों की प्रतियोगिता में विद्यालय–विभाग गुरुकुल के ब्र. राजेश १० वीं ब्र. किशोर ७वीं तथा ब्र. विजयेन्द्र ७वीं प्रथम, द्वितीय तृतीय रहे। पुरस्कार वितरण चीफ इन्जीनियर गंग नहर ने किया। इस प्रतियोगिता के सरक्षक तत्कालीन कुलपति श्री बलभद्र कुमार जी तथा संयोजक श्री डॉ. अनन्तानन्द जी आयुर्वेदालंकार प्रिंसिपल आयुर्वेद महाविद्यालय रहे।

आर्य समाज गुरुकुल कांगड़ी:—

आर्य समाज की ओर से आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के लिए १–५–७६ को प्रतिनिधियों का चुनाव

इस प्रकार रहा । कुल प्रतिनिधि थे १७ । इसमें ३ अवैध, २ नाम वापिस लिये । निर्विरोध प्रत्याशी चुने गये १२ । आर्य समाज के सदस्यों की संख्या कुल २६५ चन्दा कम जमा होने से नाम कटे ३३ । इसप्रकार शेष कुल मतदाता थे २३२ । निर्विरोध चुने गये प्रत्याशियों की सूची—सर्व श्री प्रतापसिंह जी, शेखरानन्द जी, साधुराम जी, धर्मपाल सिंह जी नेहरा, हरिभजन जी, कालूराम जी, इन्द्रसेन जी, चैतन्य वल्लभ जी, महावीर जी, सुरेशचन्द जी त्यागी, तथा डा० वासुदेव जी चैतन्य ।

इसके अतिरिक्त जुलाई, अगस्त में स्वामी रुद्रवेश जी के भजनोपदेश भी होते रहे । श्री शोभाराम जी 'प्रेमी' के भी मधुर व ओजस्वी भजन हुए ।

स्वामी इन्द्रवेश जी का आगमन

१५ जुलाई । स्वामी इन्द्रवेश जी गुरुकुल पधारे और कुलाधिपति रूप में एक आज्ञा प्रसारित की कि सभी विभागों को सहयोग करना चाहिए । इस आज्ञा पत्र की प्रतिलिपि १६ जुलाई १९७६ को आचार्य डॉ. रामनाथ जी वेदालंकार को भी दी गयी । १५ जुलाई को स्वामी जी ने सभी शिक्षकों एवं कर्मचारियों की एक बैठक बुलाई और सभी ने सहयोग का आश्वासन दिया । १६ जुलाई की रात्रि को डॉ. गंगाराम जी जो उस समय कुलसचिव एवं कार्यवाहक कुलपति थे स्वामी जी की बातचीत उनसे हुई । स्वामी जी ने उन्हें दिल्ली न्यायालय के १५ मई के निर्णय की तथा अन्य न्यायालयों द्वारा प्राप्त स्टे की प्रतिलिपियाँ दीं । जिसके अनुसार सोनीपत में उन्हें आर्य प्र. नि. सभा, पंजाब का निर्वाचन करने पर से रोक हटा दी गयी ।

स्वामी जी ने डॉ. गंगाराम को जालंधर न्यायालय की प्रतिलिपि भी दी जो २७ मई को हुआ था । इसके अतिरिक्त स्वामी जी ने अनेक पत्र भी दिये । साथ ही स्वामी जी ने डॉ. गंगाराम जी से यह अनुरोध किया कि वे उन्हें कुलाधिपति रूप में स्वीकार करें । डॉ. गंगाराम जी ने सम्बद्ध निर्णयों को देखते हुए उन्हें कुलाधिपति रूप में स्वीकार कर लिया । १८ जुलाई को डॉ० गंगाराम जी ने शक्ति-आश्रम के समारोह में कार्यवाहक कुलपति के रूप में भाग लिया और उत्तर प्रदेश के राज्यपाल डॉ० एम० चेन्ना रेड्डी को माल्यार्पण किया । उसके पश्चात् सीनेट तथा विद्यासभा की बैठकें हुईं । उनमें अनेक महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये ।

२० जुलाई को प्रात: १० बजे सीनेट में स्वामी जी की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय के सभी उपाध्यायों की बैठक हुई । इसमें स्वामी जी ने इस बात पर बल दिया कि सभी शिक्षकों को छात्रों की संख्या बढ़ाने में योग देना चाहिए । डॉ० गंगाराम जी ने कहा कि विश्वविद्यालय ने तो भारत के प्रमुख अंग्रेजी व हिन्दी के समाचार पत्रों में विश्वविद्यालय की ओर से विज्ञापन करवा दिया है । पञ्चपुरी के समाचार पत्रों में भी विज्ञापन परिपत्र भेजा जा चुका था । कोई विभाग अपनी ओर से विज्ञापन कराना चाहे या कोई उपाध्याय आसपास के विश्वविद्यालयों में जाना चाहे तो उसका वास्तविक व्यय विश्वविद्यालय दे देगा ।

इस प्रकार स्वामी इन्द्रवेश जी ने गुरुकुल में पधार कर कुलाधिपति के रूप में कार्य प्रारम्भ कर दिया है ।

विश्वविद्यालय के नव–कुलसचिव श्री बलजीत सिंह जी आर्य माल्यार्पण करते हुए । दाईं ओर बैठे हैं श्री शिवचरण जी सहायक मुख्याधिष्ठाता एवं बाईं ओर समारोह के अध्यक्ष श्री रामधारी सिंह ।

गुरुकुल विद्यालय के मुख्याध्यापक श्री अनूपसिंह जी शास्त्री डॉ० गंगाराम को माल्यार्पण करते हुए ।
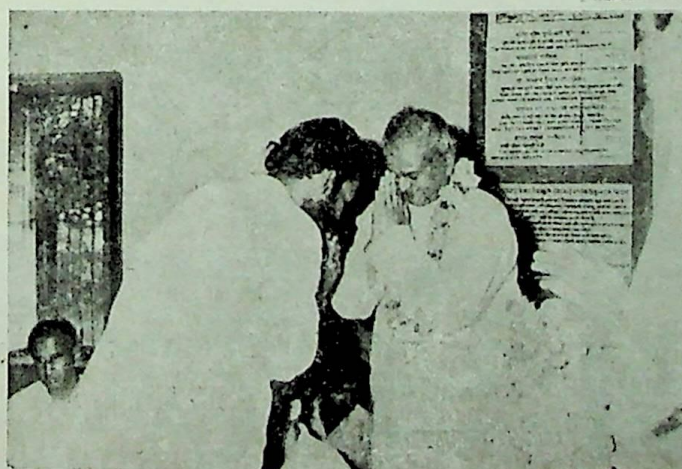
आनन्द कुमार एम. ए. के एक छात्र डॉ० गंगाराम को माल्यार्पण करते हुए ।

प्रसिद्ध साहित्यकार पंडित किशोरीदास जी वाजपेयी कुलपति डॉ० गंगाराम को माल्यार्पण करते हुए ।
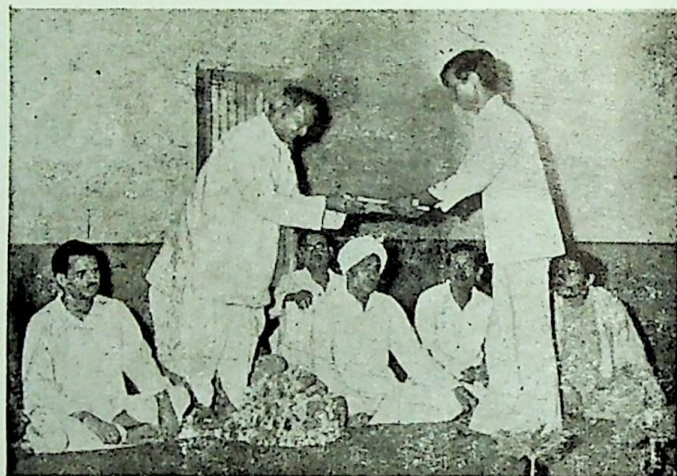
बी. एस-सी. का एक छात्र डॉ. गंगाराम कुलपति को अभिनन्दन पत्र भेंट करता हुआ ।
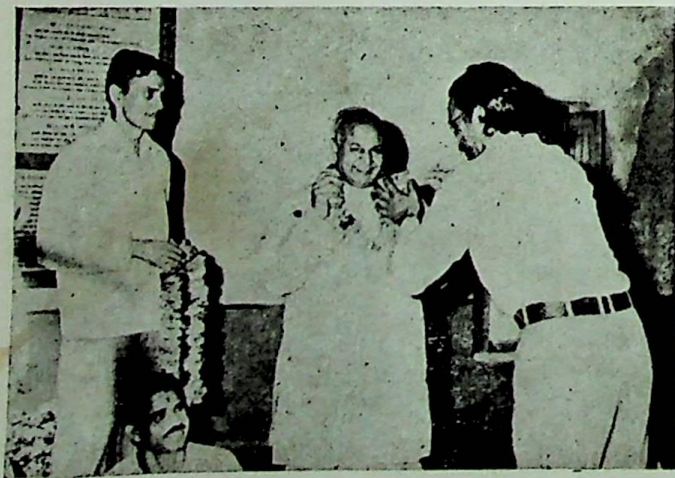
पंचपुरी नागरिकों की ओर से श्री काश्मीर सिंह राही वर्तमान उप कुलसचिव, कुलपति को माल्यार्पण करते हुए ।

कुछ नयी नियुक्तियां

गुरुकुल एवं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए स्वामी इन्द्रवेश जी के कुलाधिपतित्व में सीनेट व विद्या-सभा ने कुछ नयी नियुक्तियाँ इस प्रकार की हैं :—

गुरुकुल विश्वविद्यालय के विजिटर—स्वामी ब्रह्म-मुनि जी महाराज। कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता—डॉ० गंगाराम जी। कुलसचिव—श्री बलजीत सिंह जी आर्य। उप कुलसचिव— डॉ० काश्मीर 'राही'। आचार्य एवं उप कुलपति— डॉ० वाचस्पति जी उपाध्याय। मुख्या-ध्यापक—श्री अनूपसिंह जी शास्त्री। स० मुख्याधिष्ठाता -श्री शिवचरण जी विद्यालंकार। कृषि अधीक्षक— श्री ओमपाल सिंह जी। विश्वविद्यालय के कोषाध्यक्ष—डॉ० कृष्णलाल जी आनन्द। वित्त समिति में— श्री सरदारी लाल जी को सदस्य नियुक्त किया है। फार्मेसी के व्य-वस्थापक— श्री पं० मुरारीलाल जी बनाये गये हैं।

श्रावणी पर्व

६-८-७६ को अमृत वाटिका स्थित भव्य यज्ञ-शाला में आश्रमाध्यक्ष श्री योगेन्द्र जी पुरुषार्थी के नेतृत्व में वृहद् यज्ञ हुआ। नवीन यज्ञोपवीत धारण किया गया। विद्यालय विभाग के समस्त छात्रों ने शाँति पूर्वक समारोह में भाग लिया। यज्ञ के पश्चात् कुलपति डॉ० गंगाराम जी ने श्रावणी पर्व के महत्व पर प्रकाश डालते हुए वेदों के स्वाध्याय की ओर प्रेरित किया। प्राचीन ज्ञान एवं नवीन विज्ञान दोनों के समन्वय की ओर इंगित करते हुए रक्षाबंधन का महत्व प्रतिपादित किया। श्री सुरेश चन्द जी त्यागी ने आचार्य पद से बोलते हुए गुरुकुल के पुनर्निमाण की ओर ध्यान आकृष्ट किया। अन्त में स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज ने कहा कि "श्रावणी के पावन पर्व पर हम प्रतिज्ञा करें कि निराशा की बातें न करेंगे। यहाँ उत्साह की बात करें।" शान्ति-पाठ के पश्चात् समा-रोह समाप्त हुआ।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी

१८ अगस्त को वेद मन्दिर के भव्य-भवन में श्री कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। वृहद् यज्ञ के पश्चात् गीता के दूसरे अध्याय का पाठ हुआ। इसके पश्चात् प्रो० बुद्धदेव जी ने दूसरे अध्याय का संक्षिप्त भाव बताया। तदन्तर कुलपति डॉ० गंगाराम जी की अध्यक्षता में सभा हुई। प्रो० ओमप्रकाश जी (दर्शन विभाग) ने बताया कि प्रद्युम्न जैसे पुत्र को प्राप्त करने के लिए श्री कृष्ण जी ने सपत्नीक १२ वर्ष तपस्या की। डॉ० सूर्यप्रकाश विद्या-लंकार ने कहा कि गुरुकुल की शिक्षा कुछ कमियों के होते हुए भी सर्वोत्तम है। श्री ओमपाल सिंह जी कृषि अधीक्षक ने ब्रह्मचर्य के महत्व पर बल दिया। विद्या-लय के छात्रों ने भी अपनी-अपनी रचनाएं सुनाई। श्री सुरेश चन्द जी त्यागी ने कहा कि हमें निर्भीक होकर गुरुकुल के आदर्शों पर चलना चाहिए। श्री रामधारी सिंह जी शास्त्री ने बताया कि श्रीमद्भगवद् गीता हमारे वेद आदि का निचोड़ है। अन्त में अध्यक्ष पद से कुलपति ने कहा कि "जो श्री कृष्ण १२ वर्ष सपत्नीक तपस्या कर सकते हैं उन पर यह आरोप लगाना कहाँ तक उचित है कि उनकी १६ हजार रानियाँ थी। वस्तुतः गुरुकुल का उद्देश्य अपने छोटे छात्रों में यह संस्कार बैठाना है कि श्री कृष्ण जी महान योगी थे। भोगी नहीं। स्वामी दयानन्द जी महाराज

ने भी सत्यार्थ प्रकाश में श्री कृष्ण के चरित्र को आदर्श माना है। गुरुकुल को इस सत्साहित्य का निर्माण करना चाहिए।" शांति पाठ के पश्चात् सभा समाप्त हुई।

स्वतन्त्रता-दिवस समारोह

पूर्व वर्षों की भांति इस वर्ष भी आजादी की २९ वीं वर्षगांठ बड़े हर्षोल्लास से मनायी गयी। सर्वप्रथम कुलपति डॉ० गंगाराम जी ने राष्ट्रीय-ध्वजा फहराई। तदन्तर परेड का निरीक्षण किया एवं शपथ-ग्रहण की गयी। इसकी व्यवस्था एन. सी. सी. के अफसर प्रो० वीरेन्द्र द्वारा की गई। उनके द्वारा किया गया प्रबंध सराहनीय था। स्वतन्त्रता दिवस के महत्व पर प्रकाश डालते हुए मान्य कुलपति जी ने कहा कि "आजादी का झण्डा भारत की आजादी का प्रतीक है किन्तु जिस भारत की स्वतन्त्रता का यह प्रतीक है उस भारत के विषय में कुछ जानकारी देना मैं आवश्यक समझता हूँ। जिस जगह अब हिमालय है वहाँ पहले समुद्र था। दक्षिण भारत की नदियां इसी हिमालय के समुद्र में गिरती थीं। जब हिमालय का उदय हुआ तो दक्षिण पठार और हिमालय के बीच एक बहुत गहरा गड्ढा हो गया। जिसमें हजारों वर्षों तक रेत भरती गयी। यही गंगासिंधु का मैदान है। तीन हजार फुट तक की गहराई तक खोदा जाये तो एक ही प्रकार की मिट्टी मिलेगी। इधर दक्षिण पठार का सम्बन्ध अफ्रीका महाद्वीप एवं दक्षिण अमरीका से था। ये धीरे-धीरे अलग हो गये। पहले सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र ये तीनों नदियां एक थीं पर कालान्तर में अलग-अलग हो गयीं। वस्तुतः पहले यमुना सरस्वती से मिलकर सिंधु की ओर बहती थी। पंजाब की जो आज ५ नदियां हैं। वे प्रारम्भ में बहुत छोटी छोटी नदियां थी। धीरे-धीरे उनका बड़ा आकार हो गया।

हमारे इतिहास को ही लीजिये। सतयुग में महाराजा हरिश्चन्द्र हुए। त्रेता में महाराज रामचन्द्र और द्वापर में श्री कृष्ण चन्द्र तथा कलियुग में हम सब। महाभारत काल को लगभग ५००० वर्ष पूर्व का माना जाता है। इसके बाद में इस देश में अनेक महान विभूतियां हुई। जैसे महात्मा बुद्ध, भगवान महावीर, सम्राट अशोक, चन्द्रगुप्त मौर्य, गुप्त साम्राज्य के महान शासक, गुप्त शासन ने ५०० वर्ष तक हूणों का मुकाबला किया। फिर मुसलमानों के कई वंश आये। उनसे भी टक्कर ली। पृथ्वीराज चौहान, महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी एवं गुरु गोविन्दसिंह के नाम उल्लेखनीय हैं। अंग्रेजों के शासन से भी डट कर मुकाबिला किया गया। भगवान् तिलक, महात्मा गांधी, पं० जवाहर लाल नेहरु, लाला लाजपतराय, वीर सावरकर के नाम उल्लेखनीय हैं। क्रान्ति द्वारा जो सरकार का तख्ता उलटना चाहते थे उनमें रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह, अशफाक उल्ला आदि हैं।

इस गुरुकुल ने भी स्वतन्त्रता-संग्राम में अपनी भूमिका निभाई है। पहले हमारा गुरुकुल, कांगड़ी ग्राम में था, जिसे स्वामी दयानन्द जी के महान् शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने स्थापित किया था। उसी गुरुकुल में महात्मा गांधी तीन बार पधारे। आज भी वह कुटिया विद्यमान है। इस पावन पर्व पर हमारा कर्तव्य है कि हम अपनी आजादी की रक्षा करें। पर यही पर्याप्त नहीं है हमें अपने देश का नाम संसार के महान् राष्ट्रों में करना होगा। आओ हम

आज यह संकल्प लें।"

तदनन्तर आचार्य डॉ० वाचस्पति जी उपाध्याय ने शिक्षामंत्री उत्तर प्रदेश तथा शिक्षा निदेशक लखनऊ के संदेश सुनाये। अन्त में 'भारत माँ की जय' से कुल भूमि गूंज उठी। हर्षोल्लास के मध्य समारोह समाप्त हुआ।

श्री नाथूराम जी मिर्धा, अध्यक्ष, कृषि आयोग भारत सरकार का ८ अगस्त १९७६ को गुरुकुल कांगड़ी में स्वागत

श्री नाथूराम जी मिर्धा ८ अगस्त को प्रातः १० बजे गुरुकुल पधारे। कुलपति निवास पर स्वामी इन्द्र-वेश जी महाराज कुलाधिपति और डॉ० गंगाराम जी कुलपति ने उन्हें माला पहनाई। जलपान के पश्चात् श्री मिर्धा जी सीनेट हाल गये जहाँ पर उनका भव्य स्वागत किया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उपमंत्री श्री रामधारी शास्त्री, आयुर्वेद महाविद्यालय की ओर से डॉ० अनन्तानन्द जी, वेद एव कला महा-विद्यालय की ओर से प्रिंसिपल सुरेश चन्द जी, गुरुकुल विभाग की ओर से श्री शिवचरण जी स० मुख्याधि-ष्ठाता ने, गुरुकुल विद्यालय की ओर से श्री अनूपसिंह जी शास्त्री, पंचपुरी की ओर से डॉ० काश्मीर राही, कर्मचारियों की ओर से श्री साधुराम जी, संग्रहालय की ओर से संग्रहालयाध्यक्ष डॉ० विनोद चन्द्र जी सिन्हा, श्री ओमप्रकाश मित्र प्रोक्टर, श्री जबरसिंह सेंगर पुस्तकालय ध्यक्ष, एन० सी० सी० के लैफ्टीनेन्ट श्री वीरेन्द्र अरोरा, श्री ओमपाल सिंह कृषि अधीक्षक, रिसर्च स्कालर पं० भगवतदत् जी, गुरुकुल आर्यसमाज के प्रधान डॉ० हरगोपाल सिंह, श्री चैतन्य और विद्या-लय के सबसे छोटे छात्र ने श्री मिर्धा जी को माल्या-र्पण किया।

कुलपति डॉ० गंगाराम जी ने कुलाधिपति स्वामी इन्द्रवेश जी से माननीय अतिथि का परिचय देने की प्रार्थना की। स्वामी जी महाराज ने परिचय देते हुए बतलाया कि मिर्धा जी बहुत छोटी आयु में ही अपनी प्रतिभा के कारण मंत्री बन गये थे और आपके परिवार का राजस्थान के निर्माण में बड़ा योग दान है। आपके भाई श्री रामनिवास जी मिर्धा केन्द्रीय मंत्रालय में मंत्री पद पर आसीन हैं। कृषि प्रधान भारत की समस्याओं का समाधान ढूंढने के लिये ही एक कृषि आयोग की स्थापना की गयी, जिसके अध्यक्ष श्री नाथूराम जी मिर्धा हैं। डॉ. गंगाराम जी ने गुरुकुल का संक्षिप्त परिचय देते हुए वृक्षारोपण के महत्व पर प्रकाश डाला और कहा कि जिस प्रकार से मनुष्य शरीर में फेफड़े उसके रक्त की शुद्धि करते हैं, ठीक उसी प्रकार वृक्ष वायु को शुद्ध करते है। यदि पृथ्वी पर से वृक्ष समाप्त हो जायें तो मनुष्य जीवित नहीं रह पायेगा। अतः वृक्षों का सभी दृष्टियों से महत्व है- चाहे भोजन रूप में, इमारती लकड़ी के रूप में और इंधन के रूप में। महाभारत काल के बाद जंगलों को काट कर खेती करने की प्रथा थी पर अब मनुष्य वृक्षों के महत्व को समझ गया है। हमारी प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी और युवा नेता श्री संजय गांधी का इस बात पर बल है कि वृक्षारोपण का कार्य-क्रम पूर्ण गति से हो।

माननीय अतिथि ने अपने भाषण में इस बात पर बल दिया कि स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के आगमन से गुरुकुल का वातावरण स्वच्छ हो गया है और इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह प्रगति के पथ पर आगे बढ़ेगा। उनका स्वामी जी महाराज से बड़ा पुराना परिचय है और उन्हें उनकी कार्य-क्षमता पर पूर्ण विश्वास है। श्री मिर्धा जी ने आगे कहा कि उन्होंने रजवाड़ों में वह युग देखा है जिसमें कुछ व्यक्तियों को छोड कर कोई भी शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकता था। छोटे-छोटे अपराधों पर बड़े भारी दण्ड दिये जाते थे। अब परिवर्तन हो गया है और शिक्षा तथा अन्य सभी सुविधायें राजस्थान में प्राप्त हो चुकी हैं।

अन्त में विश्वविद्यालय की ओर से डॉ. अनन्तानन्द जी ने माननीय अतिथि का धन्यवाद किया।

सभा से पूर्व श्री मिर्धा जी विद्यालय, संग्रहालय, पुस्तकालय, विज्ञान महाविद्यालय और आयुर्वेद महाविद्यालय आदि देखने गये। वर्षा होते हुए भी श्री मिर्धा जी अपने कार्य-क्रम में व्यस्त रहे। पर जब वृक्षारोपण का समय आया तो सौभाग्य से वर्षा रुक गयी थी।

कार्यक्रम के पश्चात् सभी कुलवासियों ने श्री मिर्धा जी को भाव भीनी विदाई दी।

आई० ए० एस० आफिसरों का गुरुकुल आगमन

आई० ए० एस० एवं एलाइड सर्विसेज के ३० आफिसरों का एक दल गुरुकुल आया और उन्होने विश्वविद्यालय के सीनेट हाल में निवास किया। वे लगभग एक सप्ताह तक ठहरे। दिनांक २६ अगस्त की संध्या को ५ बजे उनका विदाई समारोह सीनेट हाल में हुआ। इस समारोह में श्री गणेशदत्त जी पुनेठा रेज़ीडेंट मजिस्ट्रेट, हरिद्वार, डॉ० गंगाराम, कुलपति, श्री के० पी० गुप्ता, प्रिंसिपल, प्रसार प्रशिक्षण केन्द्र, गुरुकुल कांगड़ी एवं अन्य महानुभावों ने भाग लिया। आरम्भ में आई० ए० एस० आफिसरों की ओर से श्री सुन्दर मूर्ति जी ने गुरुकुल का धन्यवाद किया कि उन्होंने उनके निवास आदि का प्रबन्ध किया।

एक सभा हुई जिसमें डॉ० गंगाराम ने आई० ए० एस० आफिसरों को संबोधित करते हुए कहा कि भारत का आई०ए०एस० आफिसर प्रतिमा में अंग्रेजी आई०सी०एस० से कम नहीं है। जबकि आई.सी.एस. आफिसर एक शासक था और वह अंग्रेज सरकार के प्रति उत्तरदायी था, आज का आई०ए०एस० आफिसर शासक होते हुए जनता के प्रति उत्तरदायी है। यह है वह भेद-रेखा जो कि इन दो प्रकार के अफसरों को अलग करती है। आई०ए०एस० आफिसरों की जिम्मेदारी वर्तमान प्रजातन्त्रों में बहुत अधिक है। अन्त में सुझाव देते हुए श्री कुलपति ने कहा कि अधिकांश अंग्रेज आफिसरों की यह कार्य प्रणाली थी कि वे अपने प्रशासनिक कार्यों के अतिरिक्त देश की समृद्धि के लिए साहित्य की खोज, प्राचीन अवशेषों के आधार पर संस्कृति की खोज, भारत की वनस्पतियों, खनिज पदार्थ, पशु-पक्षी, भाषाओं आदि पर अनुसंधान करते थे। यह उपयुक्त रहेगा कि आप लोग भी कोई न कोई एक दिशा अपना लें।

जलपान के अवसर पर सभी आफिसरों ने यह

आश्वासन दिया कि वे अपने कार्य के अतिरिक्त अवश्य ही एक दिशा अपनायेंगे ।

डॉ० वाचस्पति उपाध्याय का आचार्य पद पर स्वागत

सभी कुलवासियों को यह जानकर प्रसन्नता हुई कि डॉ० वाचस्पति जी उपाध्याय, एम.ए., पी-एच.डी., डी० लिट्० विश्वविद्यालय के आचार्य एवं उपकुलपति नियुक्त हुए हैं । आपने अपने पद का भार १० अगस्त को ग्रहण कर लिया है । साथ-साथ आप संस्कृत विभाग में रीडर पद पर भी सुशोभित हैं । वेद, कला तथा विज्ञान महाविद्यालयों की ओर से डॉ. गंगाराम, कुलपति की अध्यक्षता में एक स्वागत समारोह आयोजित किया गया । प्रारम्भ में सभी विभागों की ओर से उपाध्याय जी को मालाओं से लाद दिया गया । सभी विभागाध्यक्षों ने अपने-अपने विभाग की ओर से सहयोग के आश्वासन पर बल दिया । श्री बलजीत सिंह आर्य (जो उस समय कुलसचिव नहीं थे) ने सभा की ओर से पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया । उन्होंने कहा कि यह गुरुकुल का सौभाग्य है कि इतने उच्च कोटि के विद्वान आचार्य एवं उप कुलपति नियुक्त हुए हैं । प्रिंसिपल सुरेशचन्द जी ने कहा कि वे पूर्ण मनोवेग से उपाध्याय जी का सहयोग करेंगे । वे किसी भी बात में उन्हें पीछे नहीं पायेंगे । डॉ. गंगाराम जी ने कहा कि जिस प्रकार के व्यक्ति की कल्पना वे आचार्य एवं उपकुलपति पद के लिये कर रहे थे, वह आज साकार हो गई । उपाध्याय जी में वे सभी गुण हैं जो आचार्य में होने चाहियें । अन्त में डॉ. उपाध्याय जी ने विनम्रभाव से कहा कि वो अर्पित होकर गुरुकुल के वृक्ष को सिंचित करेंगे । बाद में छात्रों ने अपने आश्रम में श्री आचार्य जी, कुलपति जी, प्रिंसिपल सुरेश चन्द जी तथा प्रिंसिपल बलजीत सिंह आर्य के साथ सहभोज किया । ३० अगस्त को पुनः छात्रों की ओर से श्री आचार्य जी का अभिनन्दन किया गया ।

दिनांक ३०–८–७६ को प्रातः १० बजे वेद आर्ट्स कालेज के समस्त छात्रों की ओर से आचार्य एवं उपकुलपति डॉ० वाचस्पति जी उपाध्याय का भव्य स्वागत किया गया । इस समारोह की अध्यक्षता डॉ० अनन्तानन्द जी, प्राचार्य, आयुर्वेद महाविद्यालय ने की। इस अवसर पर आचार्य जी का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया गया । स्वागत के साथ-साथ सभी विभागीय छात्र वक्ताओं ने आचार्य जी को यह विश्वास दिलाया कि हम सभी छात्र-बन्धु अनुशासन में रहकर पूर्ण कर्तव्य निष्ठा के साथ गुरुकुलीय गौरव को पुनरुज्जीवित करने के लिये कटिबद्ध हैं तथा प्रत्येक समस्या के समाधान हेतु साधक रूप में प्रस्तुत हैं । अध्यक्ष महोदय ने भी आचार्य जी का स्वागत करते हुये वेद-आर्ट्स कालेज के छात्रों को आह्वान किया कि वे गुरुकुलीय परम्पराओं के प्रति पूर्ण जागरूक रहें । साथ ही निराशा के वातावरण को फैलाने वाले तत्वों की निन्दा की ।

छात्रों के द्वारा प्रदर्शित स्नेह व आदर भाव से

प्रति आभार प्रकट करते हुये श्रद्धेय आचार्य जी ने कहा कि हम सभी कुलवासी मित्र की भांति व्यवहार करते हुये कुलमाता की सेवा में सर्वात्मना तत्पर रहें।

इस सभा में मान्य अतिथि के रूप में श्री रामधारी जी शास्त्री, उपमंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व श्री अनूपसिंह जी शास्त्री मुख्याध्यापक भी उपस्थित थे।

सभा के अनन्तर जलपान का भी आयोजन छात्रों द्वारा किया गया।

संयोजक :

आनन्द कुमार

संस्कृत एम. ए. (द्वितीय वर्ष)

गुरुकुल के नये कुलपति डॉ० गंगाराम जी का भव्य अभिनन्दन समारोह

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार में दिनांक ३१-८-७६ को नये कुलपति डॉ० गंगाराम जी का आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उपमंत्री श्री रामधारी जी शास्त्री की अध्यक्षता में स्वागत समारोह हुआ जिसमें पंचपुरी की जनता एवं समस्त कुलवासी उपस्थित थे। डॉ० गंगाराम कार्यवाहक कुलपति थे पर २८ अगस्त से उन्हें विश्वविद्यालय के विजिटर स्वामी ब्रह्ममुनि जी महाराज ने कुलपति नियुक्त कर दिया और उन्होंने अपने पद का भार ग्रहण कर लिया। २८ अगस्त से ही प्रिंसिपल बलजीत सिंह जी आर्य ने कुलसचिव का पद ग्रहण किया। वन्दना का कार्य-क्रम एम.ए. के विद्यार्थी सत्यकाम व नारायणदेव ने किया। तत्पश्चात् स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया। नये कुलपति को सभा के उप मंत्री रामधारी शास्त्री, डॉ० वाचस्पति उपाध्याय, आचार्य, प्रो० बलजीतसिंह आर्य कुलसचिव, श्री अनन्तानन्द जी प्रिंसिपल आयुर्वेद महाविद्यालय, श्री सुरेश चन्द त्यागी प्रिंसिपल विज्ञान महाविद्यालय, अनूपसिंह शास्त्री, मुख्याध्यापक, श्री शिवचरण विद्यालंकार, स० मुख्याधिष्ठाता, डॉ० काश्मीर 'राही', आचार्य किशोरी दास जी वाजपेयी, भू० पू० प्राचार्य पं० सुखदेव जी, ज्वालापुर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ० अकिंचन, भू० पू० विज्ञान महाविद्यालय के प्राचार्य श्री फकीरचन्द जी, वैद्य धर्मदत्त एवं रामप्रसाद जी, श्री सदाशिव भगत, डॉ. अम्बिका प्रसाद जी वाजपेयी, श्री ओमप्रकाश जी मिश्र, डॉ० अभेदानन्द, डॉ० विनोद चन्द जी सिन्हा, डॉ० चम्पत स्वरूप, डॉ० विजय शंकर, श्री बुद्ध प्रकाश शुक्ल, श्री रामकुमार पालीवाल तथा पुस्तकालयाध्यक्ष श्री जबर

डॉ० विनोद चन्द जी सिन्हा, रीडर, प्राचीन इतिहास विभाग एवं संग्रहालयध्यक्ष कुलपति को माल्यार्पण करते हुए ।
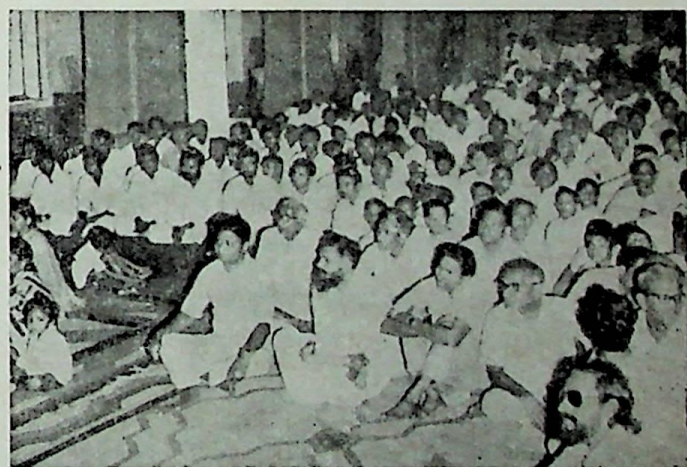
कुलपति के अभिनन्दन समारोह का एक दृश्य । दायें कक्ष कक्ष में उपाध्याय वर्ग विद्यमान है ।
अग्रिम पंक्ति में ठीक दाईं ओर चश्मा लगाये ज्वालापुर महाविद्यालय के प्रिंसिपल डॉ० अकिंचन तथा उसी पंक्ति में चौथे स्थान पर गुरुकुल पत्रिका के सम्पादक रामाश्रय मिश्र बैठे हैं ।

कुलपति डॉ० गंगाराम के अभिनन्दन समारोह का एक दृश्य। बाईं ओर के कक्ष में महिलाएं और छात्र बैठे हैं। महिलाओं के ठीक पीछे दाईं ओर पं० गणपति वेदालंकार विद्यमान हैं।
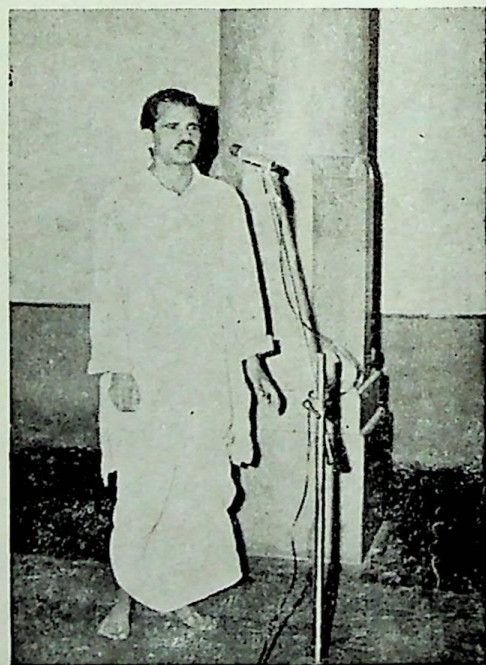
कुलपति डॉ० गंगाराम के अभिनन्दन समारोह के अध्यक्ष एवं आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के उपमंत्री श्री रामधारी सिंह जी शास्त्री कुलपति का अभिनन्दन करते हुए।

सिंह सेंगर, कार्यालय अधीक्षक श्री प्रताप सिंह जी, श्री जिलेसिंह जी और संख्यानक श्री साधूराम जी एवं विश्वविद्यालय के छात्र आनन्द कुमार ने माल्यार्पण द्वारा अभिनन्दन किया। इससे पूर्व वैदिक राष्ट्रीय गान हुआ और तत्पश्चात् स्वागत गान।

श्री विक्रम व ब्र० नरेन्द्र दशम् एवं डॉ. काश्मीर 'राही' आदि ने सहायता का पूर्ण आश्वासन दिया। विद्यालय प्राध्यापक श्री अनूप सिंह जी शास्त्री ने अभिनन्दन को नये युग की आधार शिला की संज्ञा दी। विज्ञान महाविद्यालय के प्राचार्य श्री सुरेश चन्द त्यागी ने गुरुकुलीय शिक्षा एवं अधिकारियों की कथनी करनी एकता पर बल दिया। आगे उन्होंने कहा कि यदि आर्यसमाज को एक पलड़े में तथा गुरुकुल को दूसरे पलड़े में रखा जाय तो गुरुकुल का पलड़ा ही भारी होगा। डॉ० अनन्तानन्द जी ने नये कुलपति की तुलना श्री लालबहादुर शास्त्री से की तथा शास्त्री जी की भांति वे भी जनता के प्रतिनिधि हैं। डॉ० गंगाराम जी से उनका घनिष्ट सम्बन्ध है। वे २४ वर्षों से गुरुकुल में हैं – पहले अंग्रेजी के उपाध्याय के रूप में और १० वर्षों से कुलसचिव के रूप में। विश्वविद्यालय की समस्याएं उनके लिये नई नहीं हैं। मैं उन्हें पूर्ण सहयोग का आश्वासन देता हूं।

बी० एस-सी० के छात्र हिमांशु द्विवेदी ने अभिनन्दन पत्र भेंट किया।

विश्वविद्यालय के नवनियुक्त कुलसचिव प्रो. बलजीत सिंह जी आर्य ने कहा मैं स्वागत भाषण देने नहीं खड़ा हुआ हूं अपितु-जिम्मेदारी भाषण प्रस्तुत करूंगा स्वागत भाषण तो एक वर्ष बाद प्रस्तुत करूंगा। आर्य समाज में कुछ तथाकथित मठाधीश युवापीढी के कार्यकर्ताओं को कुचलने की कोशिश कर रहे हैं किन्तु उन्हें सफलता नहीं मिलेगी यह पद का संघर्ष नहीं तन्त्र का संघर्ष होना चाहिये। युवा कार्यकर्त्ता ऐसे मन्त्र फूंक रहे हैं जिससे किसी भी संस्था की सभी इकाइयां कार्यशील हैं तथा निरन्तर की गतिशीलता ही उत्थान का द्योतक है। मेरी कर्मचारियों से प्रार्थना है कि किसी की शिकायत न करें। नवीन योजनाएं प्रस्तुत कर गुरुकुल का उत्थान करें।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उपमंत्री पं० रामधारी शास्त्री ने अपने अध्यक्षीय भाषण में अधिकार एवं कर्त्तव्य स्पष्ट कर दिया तथा गुरुकुल संस्था रूपी यज्ञ में समिधा बनने एवं आहुति देने की प्रेरणा दी। साथ ही इस तथ्य पर बल दिया कि किसी की आलोचना से पूर्व अपने अन्दर झांकें। क्योंकि जब किसी की ओर एक अंगुली उठाते हैं अर्थात् निन्दा करते हैं तो शेष तीन उंगलियां अपनी ही ओर आती हैं। जो संघर्ष से डरता है वह कुछ नहीं कर सकता वह व्यक्ति रस निकले हुए गन्ने की खोई के समान है। संघर्ष विहीनता ही मरण है।

अपने स्वागत एवं अभिनन्दन का उत्तर देते हुए डॉ० गंगाराम जी ने अति विनम्र शब्दों में कहा कि यह स्वागत मेरा नहीं आपका ही है। क्योंकि मैं भी आप में से ही एक सिपाही हूं जनरल नहीं। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान एवं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री इन्द्रवेश के आदेशानुसार आया हूं जब तक उनका आदेश होगा मैं हंसता

रहूंगा और जाता हुआ भी हंसूगा । मैं इसे परमात्मा का आदेश समझता हूं । परमात्मा की इच्छानुसार ही कार्य करूंगा । साथ ही उन्होंने कहा कि वे महर्षि दयानन्द जी सरस्वती, स्वामी श्रद्धानन्द जी तथा सभी भूतपूर्व कुलपतियों से प्रेरणा लेकर कार्य करेंगे। गुरुकुल की दिशाहीन नौका को दिशा देना एवं समन्वय की भावना उत्पन्न करना ही मेरा एक मात्र उद्देश्य होगा । प्राचीनता एवं नवीनता तथा विज्ञान एवं संस्कृति के समन्व्य के बिना संस्था राष्ट्रीय-आदेश का उन्नयन नहीं हो सकता ।

विश्वविद्यालय के उपकुलपति एवं आचार्य डॉ० वाचस्पति उपाध्याय ने अत्यन्त सफलता एवं मनोरम ढंग से समारोह का संचालन किया । अपने अभिनन्दन में उन्होंने "काम अधिक बातें कम" का उद्बोधन किया ।

शान्ति पाठ के बाद सभा विसर्जित हुई ।

संयोजक :

डॉ० वाचस्पति उपाध्याय
आचार्य एवं उप कुलपति

गुरुकुल डायरी

मई – अगस्त, १९७९

मई — १- संरक्षक सभा

१- आर्य समाज गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार में प्रतिनिधि चुनाव ।

२- पंचपुरी तैराकी प्रतियोगिता ।

जून — १८- उच्चस्तरीय उप वित्त समिति की बैठक, दिल्ली ।

१९- उच्चस्तरीय संविधान समिति की बैठक, दिल्ली ।

जुलाई — ७- डॉ० गंगाराम, कार्यवाहक कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता नियुक्त ।

१४- डॉ० गंगाराम राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान की बैठक में सम्मिलित ।

१५- डॉ० गंगाराम राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान की बैठक में सम्मिलित ।

१५- आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी का गुरुकुल आगमन ।

१५- स्वामी इन्द्रवेश जी की अध्यक्षता में शिक्षकों एवं कर्मचारियों की बैठक ।

१६- डॉ० गंगाराम कार्यवाहक कुलपति ने स्वामी इन्द्रवेश को विश्वविद्यालय का कुलाधिपति स्वीकार किया ।

१७- महामहिम चेन्ना रेड्डी को डॉ० गंगाराम द्वारा शक्ति आश्रम में माल्यार्पण ।

१८- गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की शिष्ट–परिषद् एवं विद्या सभा की बैठक ।

२०- स्वामी इन्द्रवेश कुलाधिपति की अध्यक्षता में छात्र संख्या विषयक प्राध्यापकों की बैठक ।

अगस्त — ८- श्री नाथूराम मिर्धा का स्वागत एवं वृक्षारोपण ।

९- अमृत वाटिका में श्रावणी पर्व समारोह ।

१०- डॉ० वाचस्पति उपाध्याय की आचार्य एवं उपकुलपति के रूप में नियुक्ति ।

१२- डॉ० वाचस्पति उपाध्याय का विश्वविद्यालय प्राध्यापकों द्वारा स्वागत ।

१५- स्वतन्त्रता दिवस समारोह, कुलपति द्वारा परेड निरीक्षण एवं स्वतन्त्रता संदेश ।

१८- जन्माष्टमी समारोह ।

२६- डॉ० गंगाराम द्वारा विश्वविद्यालय में आये हुए आई० ए० एस० आफिसरों को प्रेरणात्मक संदेश ।

२८- प्रो० बलजीत सिंह आर्य कुलसचिव नियुक्त ।

२८- डॉ० गंगाराम की डी० एम०, आर० एम०, डी० एस० पी० से भेंट ।

३०- डॉ० वाचस्पति उपाध्याय का विश्वविद्यालय छात्रों द्वारा स्वागत ।

३१- डॉ० गंगाराम की आर० एम० से भेंट ।

३१- नव नियुक्त कुलपति डॉ० गंगाराम का अभिनन्दन ।

रामाश्रय मिश्र
जन-सम्पर्क अधिकारी
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार ।
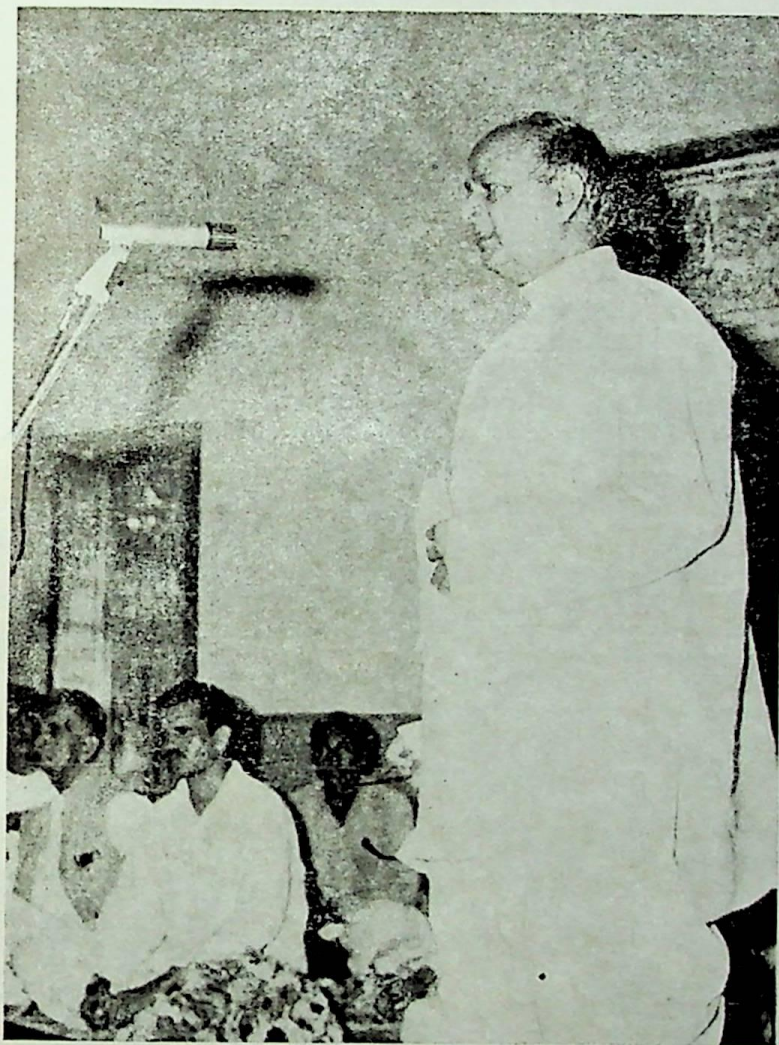
अभिनन्दन समारोह में डॉ० गंगाराम, कुलपति,
स्वागत का उत्तर देते हुए ।

स्वामी इन्द्रवेश की अध्यक्षता में शिष्ट मंडल की प्रधान मंत्री से भेंट

१७ सितम्बर, ७६ को आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के प्रधान एवं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी से मिले। उनके साथ विश्वविद्यालय के कुलपति डा० गंगाराम, राज्यसभा में कांग्रेस दल के उप नेता चौधरी रणवीर सिंह, संसद सदस्य; पं० मुरारीलाल जी, मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब; चौधरी सुलतान सिंह, संसद सदस्य; डॉ० के० एल० आनन्द, उप मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब; स्वामी सुधानन्द एवं चौधरी सुमेरसिंह भी थे।

स्वामी जी महाराज ने प्रधान मंत्री को गो–हत्या निषेध के सम्बन्ध में अपनायी गई नीति पर बधाई दी। जम्मू, कश्मीर, हिमाचल, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश और राजस्थान की आर्य–समाजों की ओर से आश्वासन दिया कि वे प्रधानमंत्री की नीतियों में विश्वास प्रकट करते हैं। आर्य समाज ने सदा ही प्रगतिशील नीतियाँ अपनायी हैं, पर दुर्भाग्य से पिछले कुछ वर्षों में आर्य समाज पर सांप्रदायिक एवं प्रतिक्रियावादी तत्वों ने अधिकार जमा लिया था, जो शनैः–शनैः समाप्त किया जा रहा है। इन शक्तियों को अब ऊपर नहीं उठने दिया जायेगा।

सभा मंत्री ने गुरुकुल की स्थिति स्पष्ट करते हुए कहा कि वहां पूर्ण शान्ति है और जो तार भेजे गये हैं कि वहां अशान्ति है, वह निराधार हैं। वे तार भिजवाये गये हैं। प्रमाण-स्वरूप उन्होंने वह मूल पत्र भी दिखाया जिस के आधार पर ये तार भेजे गये थे। स्वामी जी ने प्रधानमंत्री को यह आश्वासन दिलाया कि गुरुकुल विश्वविद्यालय, शिक्षा मंत्रालय एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा दिये गये सुझावों का आदर करेगा।

चौधरी रणवीर सिंह एवं चौधरी सुलतान सिंह जी ने बड़े ही सुचारु ढंग से इस शिष्टमंडल की कार्यवाही को सम्पन्न करवाया, जिसके लिये वे बधाई के पात्र हैं। इस अवसर पर कुलपति डॉ० गंगाराम ने आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस द्वारा प्रकाशित "आक्सफोर्ड हिन्दी साहित्य परिचायक" नामक अपनी पुस्तक भेंट की, जो चित्र में प्रधान मंत्री के हाथ में है।

इससे पूर्व १६-९-७६ को शिष्ट मंडल विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष, प्रो० सतीशचन्द्र से मिला। उन्हें भी यह विश्वास दिलाया कि गुरुकुल, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा शिक्षा मंत्रालय के सुझावों को शीघ्र ही क्रियान्वित करेगा।

शिष्ट मंडल ने श्री ओम मेहता, गृह मंत्री और श्री चरणजीत यादव से भी भेंट की और उन्हें विश्वविद्याल[य] की शांत स्थिति से अवगत कराया।

सभी ने विश्वविद्यालय में पैदा हुए नये वातावरण की सराहना की और इसकी प्रगति के लिये शुभकामना की।

प्रकाशक : डॉ० गंगाराम, कुलपति, : गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय।
मुद्रक : डॉ. गुरांदित्ता मल खन्ना, प्रबन्धक : जगदम्बा प्रिंटिंग प्रेस, ज्वालापुर।

गुरुकुल-पत्रिका

आर्यभट-अंक
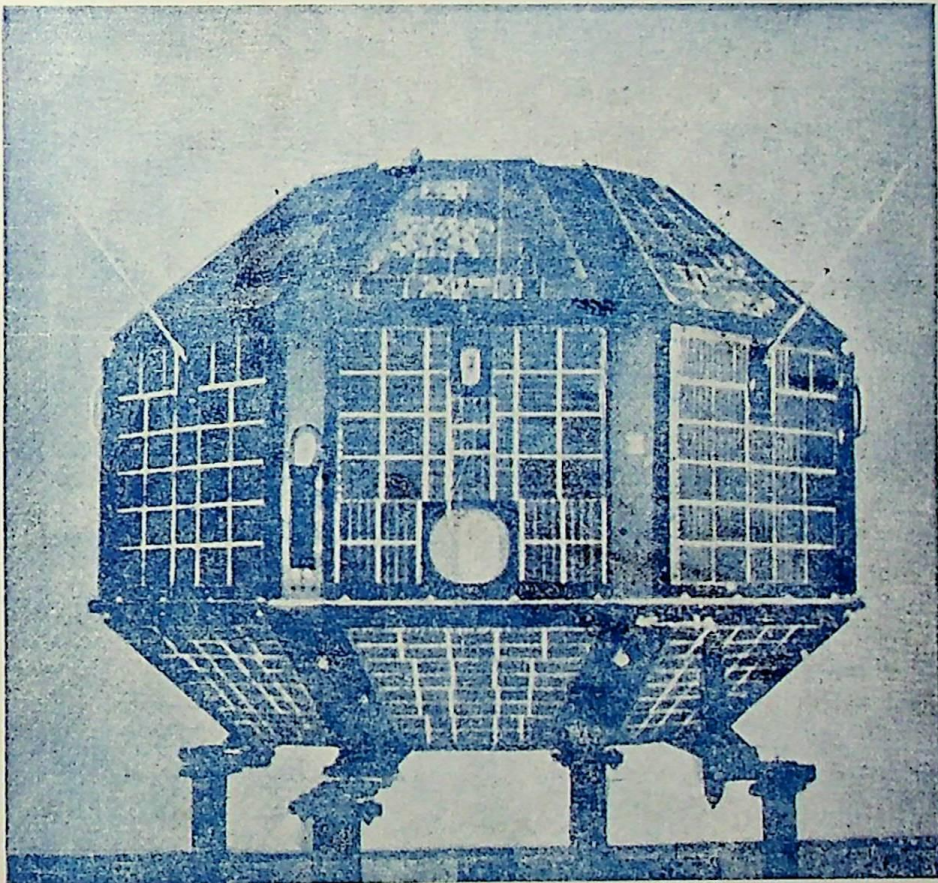
भारतीय वैज्ञानिकों की अपूर्व सफलता का प्रतीक

उपग्रह-आर्यभट

अप्रैल १९७६ ★ वैशाख २०

अनुक्रमणिका

आर्यभट्ट परिवार के सदस्यों के नाम संदेश

आर्यभट्ट परिवार के सदस्यों के प्रति मैं शुभकामनायें प्रस्तुत करता हूँ। जिस तरह से नवयुवक वैज्ञानिकों ने आर्य भट्ट को अन्तरिक्ष में स्थापित कर भारत को गौरवान्वित किया उसी तरह मैं आशा करता हूँ कि गुरुकुल के गुरुजन, शिष्यगण एवं कर्मचारीगण मिलकर गुरुकुल को भी ऊंचा उठाने का प्रयत्न करेंगे, ताकि गुरुकुल भी शिक्षा गगन में चमकदार सितारे की तरह चमके और अपनी पुरानी गरिमा को पुनः प्राप्त करे।

आइये, इस शुभ मास में हम यह व्रत धारण करें।

बलभद्र कुमार

आर्य भट्ट परिवार

विश्वविद्यालय-प्राध्यापक

१. डा० अभेदानन्द
२. प्रो. चन्द्रशेखर त्रिवेदी

शिक्षकेतर

३. श्री कुंवरसिंह
४. श्री सरदारसिंह

विश्वविद्यालय-छात्र

५. कृष्ण कुमार अंगिरा
६. गुरुदेव भारद्वाज
७. रंजन कुमार जोशी
८. शमशेरसिंह
९. सत्यवान यादव
१०. सागर सिंह
११. स्वामी विवेकानन्द
१२. हरिकृष्ण मनचन्दा
१३. हेमन्त कुमार
१४. विजेन्द्र सिंह

कार्यालय

१५. श्री दौलतराम

विद्यालय भण्डार

१६. श्री जीतराम

विद्यालय माध्यमिक अध्यापक

१७. श्री बलराम दत्त मिश्र-

शिक्षकेतर

१८. श्री कालीचरण

विद्यालय ब्रह्मचारी

१९. ब्र० अशोक कुमार
२०. ,, अशोक कुमार 'मंगल'
२१. ,, अश्विनीकुमार
२२. ,, टीकादत्त
२३. ,, दिनेश कुमार
२४. ,, पुरुषोत्तम
२५. ,, मनजीतसिंह
२६. ,, रवीन्द्रकुमार
२७. ,, राजेन्द्रसिंह
२८. ,, राम अवतार
२९. ,, बेदप्रकाश
३०. ,, शैलेन्द्रनाथसिंह
३१. ,, सुमेरसिंह
३२. ,, सुरेन्द्र कुमार

टिप्पणी:--जन्मतिथि को दृष्टिगत रखते हुए मासानुसार समस्त गुरुकुल एवं विश्व विद्यालय के छात्रों, अध्यापकों, प्राध्यापकों, कर्मचारियों एवं अधिकारियों के निम्न परिवार बनाये गये हैं । जनवरी लाजपत, फरवरी-दयानन्द, मार्च-भगतसिंह, अप्रैल,-आर्य भट्ट, मई-रवीन्द्र, जून- अनामिका, जुलाई-तिलक, अगस्त-अरविन्द, सितम्बर-विनोबा, अक्टूबर-गाँधी, नवम्बर-नेहरू एवं दिसम्बर-श्रद्धानन्द। परिवार के सदस्यों की सूची प्रतिमास निकलेगी जिनके नाम सूची में अभी तक नहीं आयें । कृपया दे देवें ।

--सम्पादक

-:०:-

भारत-सोवियत मैत्री : आर्यभट

परिवर्तिन संसारे मृतः को वा न जायते ।
सजातो येन जातेन याति वंश समुन्नतिम् ॥

नीतिशतकम्–भर्तृहरि ।

परिवर्तनशील संसार में कौन व्यक्ति मर कर जन्म नहीं लेता है अथवा कौन ऐसा है जो मरता नहीं है और जन्म नहीं लेता है अर्थात् मरना-जीना तो साथ लगा रहता है किन्तु जिसके उत्पन्न होने से वंश उन्नति को प्राप्त होता है वही सच्चे अर्थों में उत्पन्न हुआ है अर्थात् उसी का जन्म सफल है।

भर्तृहरि जी ने ठीक ही कहा किन्तु मैं इसमें संशोधन करना चाहूंगा कि उसका जन्म लेना सफल है जिसके उत्पन्न होने से न केवल वंश अपितु राष्ट्र एवं विश्व उन्नति को प्राप्त होता है। ऐसे व्यक्तियों को ही महा पुरुष कहा जाता है जिनके जन्म दिन ही नहीं जन्म शताब्दियां मनायी जाती हैं। ऐसे ही एक महापुरुष का जन्म आज से १५०० वर्ष पूर्व पाटलिपुत्र, आजकल पटना के नाम से ज्ञात के गंगा तटवर्ती ग्राम कुसुमपुर में हुआ था। वह महापुरुष आर्यभट्ट था। जिसने २३ वर्ष की आयु में विज्ञान में अपूर्व सफलता प्राप्त की। उन्होंने गणितीय बिधि से इस तथ्य को प्रमाणित कर दिया कि पृथ्वी सूर्य के चतुर्दिक घूमती है और बीजगणित एवं त्रिकोणमीति सम्बन्धी उनकी कृतियां गौरव ग्रन्थ बन गई हैं। आर्यभट्ट ने भारतीय विचारधारा के साथ-साथ यूनानी ज्योतिष विदों के विचारों को संस्कृत भाषा में लिपिबद्ध किया था। जिसकी महत्ता को देखते हुए हमारी प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने इस पर विशेष बल दिया कि उपग्रह का नाम आर्यभट के आधार पर आर्यभट ही रखा जाय।

१९ अप्रैल, १९७५ को उपग्रह आर्यभट का प्रक्षेपण पूर्ण सफल हुआ। यह सफलता भारत सोवियत मैत्री का ही फल है। जिस पर न केवल उक्त दो राष्ट्र ही प्रसन्न हैं अपितु विश्व आनन्दित हो उठा है। हम स्थल पर ही नहीं अपितु वायु-मण्डल एवं अन्तरिक्ष में भी इस मैत्री का प्रतिपादन कर रहे हैं। कवि के शब्दों में—

सन् १९७० में स्वर्गीय डॉ० विक्रम सारा भाई ने प्रो० यू० आर० राव की अध्यक्षता में त्रिवेन्द्रम् में अन्तरिक्ष केन्द्र के अंग के रूप में उपग्रह प्रणाली प्रभाग की स्थापना की थी। १० मई १९७२ को भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन और सोवियत अकादमी ऑफ साइंसेस के बीच आर्यभट के प्रक्षेपण के समझौते पर हस्ताक्षर हुए और इसी वर्ष उपग्रह निर्माण का कार्य बंगलौर में प्रारम्भ हुआ। मूर्धन्य वैज्ञानिक प्रो० सतीश धवन एवं बी० एन० पेत्रोव तथा श्री हरिकोटा एवं कास्मोड्रोम नामक स्थानों को आज विश्व का कौन सा व्यक्ति नहीं जानता।

आर्यभट परियोजना के मुख्य उद्देश्य पर विचार करते हुए हमारे सम्मुख इसकी आधार शिला के रूप में निम्न महत्त्वाकांक्षाएं दृष्टिगोचर होती हैं—

(१) उपग्रह का डिजाइन, उसका निर्माण तथा उस पर आवश्यक वातावरणीय परिक्षण पूर्णतः भारतीय प्रयासों से किए जायें।

(२) अन्तरिक्ष में अपनी कक्षा में अपने अक्ष पर परिभ्रमण कर रहें उपग्रह की पूर्ण रूपेण जटिल जांच-पड़ताल विधि, क्रमबद्ध तरीके भारतीय वैज्ञानिकों एवं इञ्जीनियरों द्वारा विकसित किये जायें।

(३) उपग्रह से रेडियो सम्पर्क द्वारा आदान-प्रदान हेतु आवश्यक ग्राउण्ड स्टेशनों का निर्माण देश के भावी कार्यक्रमों को ध्यान में रखते हुए अत्यन्त सतर्कता से भारतीय विशेषज्ञों द्वारा किये जायें।

(४) देश की विभिन्न समस्याओं को ध्यान में रखते हुए उपग्रहों के निर्माण हेतु उपयुक्त गुण-तकनीकी आधारों का क्रमशः विकास किया जाये।

५) उपग्रह निर्माण के प्रथम प्रयास में भारतीय वैज्ञानिकों को अन्तरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में अनुसन्धान करने का अवसर प्रदान किया जाये।

उपर्युक्त उद्देश्यों को पूर्णरूप से कार्यान्वित किया गया। जिसके परिणामस्वरूप आर्यभट उपग्रह जो ६ मास के लिए प्रक्षेपित किया गया था वह १ वर्ष पूरा करके अब भी पूर्ण सफलता से गतिमान भारतीय वैज्ञानिकों की कार्य पटुता पर सोवियत संघ की विज्ञान अकादमी की अन्तर्ब्रह्माण्डीय परिषद के अध्यक्ष अकादमीशियन बी० एन० पेत्रोव का कथन द्रष्टव्य है "भारतीय विशेषज्ञों ने अत्यन्त संक्षिप्त अवधि में विज्ञान में भारी प्रगति की है। अपने सोवियत सहकर्मियों के सहयोग से उन्होंने उपग्रह सम्बन्धी प्रविधि में और उसके साथ ही वैज्ञानिक तथा भूमि आधारित इन्स्ट्रूमेण्टेशन के विकास में अमूल्य अनुभव हासिल किया है भारतीय वैज्ञानिकों ने विस्तृत अन्तरिक्ष अनुसंधान कार्यक्रम तैयार किया है। उन्होंने उपग्रह के द्वारा सूर्य, आयन मण्डल तथा एक्सकिरण विकिरण की खोज बीन करने के लिए प्रयोग करने की जो योजना तैयार की है, वे समकालिक विज्ञान की विद्यमान समस्याएं हैं।"

उपग्रह के निर्माण के दौरान कर्मियों को तैयार करने और प्रशिक्षित करने पर अत्यधिक ध्यान दिया गया। नौजवान विशेषज्ञ बहुत उत्साह और रुचि के साथ काम करते थे और विशिष्ट बात यह है कि भारतीय सहकर्मी अन्तरिक्ष अनुसन्धान के प्रति व्यापक दृष्टिकोण अपनाते है। मनोवैज्ञानिकों, शिक्षाविदों और फिल्म तैयार करने वालों की मदद हासिल की है। २० वीं सदी में अन्तरिक्ष प्रविधि के मामले में यही तरीका अपनाया जाना चाहिए। इसने विज्ञान और उद्योग की कई शाखाओं को रूपान्तरित कर दिया है।

भारत के प्रथम उपग्रह पर सैकड़ों लोगों ने काम किया है और अब यह सोवियत संघ और भारत दोनों महान् राष्ट्रों के बीच मित्रता और सहयोग का प्रतीक बन गया है। आर्यभट वह ब्रह्माण्डीय सेतु है जो भारत सोवियत संघ के विज्ञान, शोधकर्मियों और विशेषज्ञों को संयुक्त करता है।

—सम्पादक रामाश्रय मिश्र,
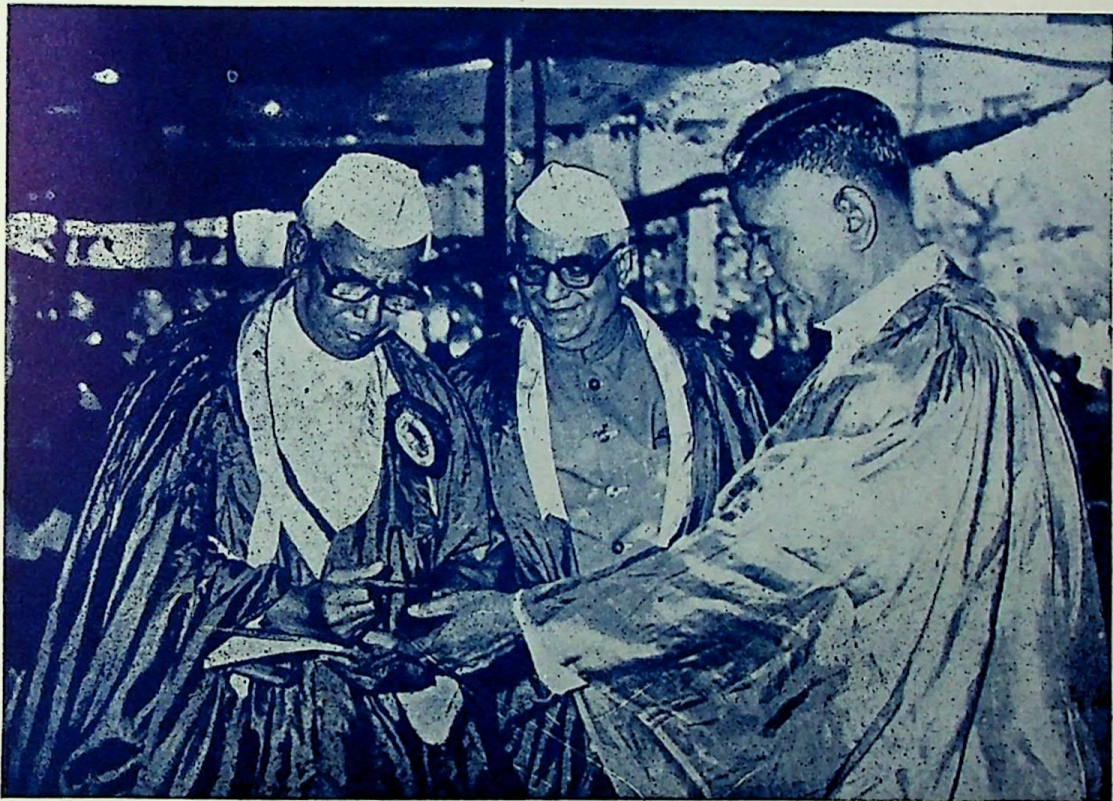
श्री पृथ्वीसिंह आजाद कुलाधिपति, राज्यपाल डॉ० चेन्नारेड्डी से 'वैदिक-पथ' का विमोचन करवाते हुये
बीच में श्री बलभद्रकुमार जी कुलपति प्रसन्न मुद्रा में

ओ३म्

गुरुकुल-पत्रिका

[गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालयस्य मासिक पत्रिका]

बैशाख : २०३२, अप्रैल १९७६, वर्षम्-२९, अङ्कः ६, पूर्णाङ्कः ३२७

ऋ० ९ मं०, ११३ सूक्त.

पवमान सोम

पवमान पवित्र हुआ सोम रस–(भौतिक क्षेत्र)

उपासक के हृदय में पवमान–शान्त प्रवाह रूप में सोमरूप परमात्मा (आध्यात्मिक क्षेत्र)

यत्र ब्रह्मा पवमान छन्दस्यां वाचं वदन् ।
ग्राव्णा सोमे महीयते सोमेनानन्दं जनयन्निन्द्रायेन्द्रो ....॥६॥

(पवमान) मेरे अन्दर प्रवाहित होने वाले सोमरस परमात्मन् ! (यत्र) जहाँ (ग्राव्णा सोमे), स्तोता विद्वान् के द्वारा स्तुत तुझ सोम के होने पर (ब्रह्मा) वेद वेत्ता (छन्दस्याँ वाचं वदन्), छन्दोमयी मधुर वाणी को बोलता हुआ और (सोमेन आनन्दजनयन) तुझ सोम से अपने अन्दर आनन्द पैदा करता हुआ (महीयते) महिमा को प्राप्त होता है ऐसी स्थिति मैं चाहता हूं।

ग्रावा––स्तोता ग्रावा गृणातेः विद्वाँसो वै गुणाणः । शत० ३।९।३।१४

––०:०––

जयवंशमहाकाव्ये सवाई जयसिंहः

श्री रामदत्त शर्मा

जयपुर राज्यस्य ऐतिहासिक–संस्कृत–महाकाव्य परम्परासु जयवंशमहाकाव्यस्य विशिष्टं स्थानं वर्तते । काव्येस्मिन् इक्ष्वाकुवंशजकच्छवाहा-नृपाणां ग्रामेर शाखाया नृपाणां,तेषां कार्यकलापानां तत्कालीनसामाजिकव्यवस्थायाश्च काव्यात्मकं वर्णनं कृतम् । महाराज सोढ़देव (१०२३) ग्रारभ्य प्रथममाधवसिंह (१८००) पर्यन्त नृपाणां राज्यकालस्य वर्णनं काव्येस्मिन् ग्रस्ति । इदं काव्यं एकोनविंशति सर्गेषु विभक्तं । द्वितीय जयसिंह समकालीक श्रीसीतारामपर्वणीकरमहोदयेन विरचितम् । काव्यमिदं राजस्थान-विश्वविद्यालयेन १९५२ वर्षे प्रकाशितम् ।

जयवंश महाकाव्ये सवाई जयसिंहविषयिणी बहुला सामग्री प्राप्यते । सवाई जयसिंह महाराज-विष्णुसिंहस्य ज्येष्ठः सुतः मिर्जाराजाः–रार्मासहस्य प्रपौत्र रूपेण काव्येस्मिन् वर्णितः । तस्य सर्वं प्रथमं वर्णनं महाकाव्यस्य दशमे सर्गे विद्यते । तत्र तस्य जन्मवर्णनं कर्तुकामः कविः लिखति–

'दिषट्ग जालीजयजातकीर्तिःशिशुर्भयथावकृतजातकर्मा।
सिंहेन तुल्यो जयसिंहनाम चकार तातोऽस्य ततोऽर्थवेदी

जयवंशम्० १०।५१

महाराज जयसिंहस्य प्रारम्भिकं जीवनं राज-गृहेषु सानन्दं व्यतीतम् । बाल्यकाले सः एकः उद्दण्डः बालकः ग्रासीत् । तस्य ग्रनुचितव्यवहारेण पितरौ ग्रतीव दुःखितौ ग्रास्ताम् । तस्य ईदृशीं दशां दृष्ट्वा गुरुजनाः तस्मै सद्व्यवहारस्य शिक्षां ग्रदु । किन्तु जयसिंहस्य क्रोधो न शाम्यति ग्रपितु वर्धते एव । तदा तस्य जननी तं ताडयति वदति च—

निवेदिता सा जननी कुमार,–
मुद्घोषयामास च ताडयन्ती ।
पित्रोर्गुरोस्ताडनमर्हमेव,
त्वं मूढधीर्दग्धमनाः शिशुत्वात् ।।

तत्रैव० १०।११८

सा रात्रौ स्वपतिं प्रति जयसिंहस्य चेष्टां निवेदयति । ततः नृपः गुरुणां ग्राज्ञया जयसिंहस्य स्वस्य साम्राज्यं विजयसिंहाय च हिण्डौननगरस्य राज्यं ददाति । राज्यकार्यस्य भारेण जयसिंहस्य स्वभावे ग्रतीव परिवर्तनं बभूव एवं सः एकः प्रजापालकः धर्मपरायणः नृपः ग्रभवत् ।

कविः जयसिंहस्य गुणानां वर्णनं इत्थं करोति
ग्रथाधिपः प्राप्तगुणप्रकर्षः,
शशास लोकाञ्जयसिंहवर्मा ।
नित्यं श्रिया पूजितपादसद्मः,
समस्तभूपालनतो विनीतः ।।

तत्रैव० १२।१

ग्रनेन प्रकारेण राजा सवाई जयसिंहः स्वस्य ग्रागामिनि जीवने एकस्य कुशलस्य प्रशासकस्य रूपेण ग्रस्माकं सम्मुखे उपस्थितः भवति । कविः कथयति यत् सः जनकल्याणार्थं एव जातः ।

सवाई जयसिंहस्य ग्रन्येषां गुणकर्मणां विवरणं ईदृशं वर्तते–

धर्मपरायणता–सवाई जयसिंहः एकस्य धर्मतेन स्वस्य जीवनकाले धार्मिक स्थलानां परायणस्य नृपस्य रूपेण ग्रस्माकं सम्मुखे ग्रायाति । निर्माणं ग्रकारि, तावन्न निर्माणं राजस्थानस्य ग्रन्यस्य कस्यापि नृपस्यकाले न ग्रभवत् । कल्की-गोपीनाथविश्वेश्वर सीतापतिगोविन्ददेवादि मन्दिराणि ग्रद्यापि सवाई जयसिंहस्य गुणानां कीर्तिं उद्घोषयन्ति । धार्मिकेषु स्थलेषु स्नानं विप्राणां समादरोऽपि जयसिंहस्य धर्मपरायणताया प्रमाणं ग्रस्ति । स० जयसिंहस्यकाले ब्रजनाथ शर्मा, रत्नाकरशर्मा, सीतारामपर्वणीकरश्च ग्रभवन् एवं

तेषाँ निर्देशने तेन अनेकानि धार्मिकानि कर्माणि कृतानि दानं च दत्तम्–

'तत्रतेभ्यो द्विजातिभ्यो दक्षिणां प्रददौ नृपः ।
येन दारिद्रयदारिद्रयं ब्रजे समभवत्समे ।।
तत्रैव० १३।४६

दिग्विजयकाले तेन मथुरावृन्दावनकाशीपुरी-हरिद्वारपुष्करादीनाँ प्रधानतीर्थानां भ्रमणं कृतम् । इदं तस्य धार्मिकताया सुदृढ़ं प्रमाणं अस्ति । चतुर्दशेसर्गे दिग्विजयानंतरं तेन अश्वमेधयज्ञस्या-योजनं कृतम् । यज्ञेस्मिन् तेन बहुलाभरणा रजत-श्रृंगखुरमय्यी गावः बहुदक्षिणाश्च दत्ता–

'कपिलाः पयोभृतिवहाः स च गा,
बहुशोददौ द्विजनुषु प्रमची ?
बहुदक्षिणा रजतश्रृंगखुरीर्बहु-
मूल्यवस्त्रबहुलाभरणाः ।
तत्रैव० १४।५५

कुशलप्रशासकता–स० जयसिंहः न केवलं धर्मपरायणः नृपः अपितु कुशलप्रशासकोपि आसीत् तस्य राज्ये जनाः आनन्देन जीवनं यापयन्ति । जनानां भोजनस्य वस्त्राणां निवासस्य सुव्यवस्था आसीत् । जयपुरापणवर्णने कविना तत् धनधान्य पूर्णं वर्णितम् (द्रष्टव्यम्० तत्रैव० १२।७६–८२) गृहे गृहे माङ्गलिकं प्राभातिकं भवति । गावः दुग्धं ददति–

'गावः सवत्साः सितभा घटोध्न्यः,
पयोभिरानन्दित सर्वलोकाः ।
गृहे गृहे यत्र वसन्ति नित्यं–
प्राभातिकं मङ्गलमादधत्यः ।।
तत्रैव० १२।३६

जयपुरस्य नागरिकाः सवाई जयसिंहस्य चित्रं स्वस्य भवनेषु स्थापयन्ति (तत्रैव० १२।४६) इदं तस्य लोकप्रियताया उदाहरणं अस्ति । अत-एव सः एकः सुप्रशासकः आसीत् ।

विद्यानुरागिता-कलाप्रियता–सवाई जयसिंहः कलाया ज्ञाताऽऽसीत् । स्थापत्यकलासु तस्य अत्यन्तं रूचिरासीत् । तेन कृतं देवालय निर्माणं कविना मुक्तकंठं प्रशंसितम्–

'अन्योऽपि देवा बहवोऽध्युवात्सुः ।
स्यात्कस्य तेषां गणने तु शक्तिः ।।'
(तत्रैव० १२।५१)

सः चित्रकलायाः प्रिय आसीत् । तस्य समयो विदुषां मध्ये व्यतीतवान् । अतएव सः विद्यानुरागी आसीत् ।

इत्थं महाराजजयसिंहः सम्यक् रूपेण धर्म-परायणः, कुशलप्रशासकः, वीरः, विद्यानुरागी च आसीत् ।

विचारकाणां इतिहासकाराणां चेयं भणितुः यत् सः चतुर्दशविद्यानाँ चतुःषष्टि कलानां पारगः आसीत् जयपुर दिल्लीउज्जैनकाशीनां यंत्रशालाः साम्प्रतं अपि तस्य नृपस्य ज्योतिषशास्त्रवेत्वस्य प्रमाणं अस्ति । तेन निर्मापितं जयपुरं तस्य दूर-दर्शिताया प्रमाणं विद्यते । एवं राजस्थानस्य इतिहासे स० जयसिंहस्य विशिष्टं स्थानं विद्यते । संस्कृतसाहित्यस्य अमरकृतैः जयवंशस्य निर्माणं अस्यैव राज्ञः अनुगृहस्य परिणामः । अतः संस्कृत-साहित्यं सवाई जयसिंहस्य ऋणी वर्तते ।

अम्बरे विस्तृतमम्बरम्

डा० अमरनाथ पाण्डेयः—

काशीविद्यापीठे संस्कृतविभागाध्यक्षः

अम्बरे विस्तृतमम्बरम् ।

नग्नमङ्गं छातमङ्गं स्थण्डिले नित्यं लुठत् ।
अस्थिमात्रं विकृतवेशं कालकवलितमञ्चलम् ।
अश्रुधाराभिः परीतं शैलसागरगह्वरम् ॥१॥
अम्बरे ....

सेवते हर्म्ये कुलीनं क्षुत्पिपासापीडितः ।
आह्वयति करुणं सहायं शृंखलाभिः संयतः ।
किरति मोदकराशिमेकोऽमुको वाञ्छति शम्बरम् ॥२॥
अम्बरे.........

भ्रमति पान्थोऽतृप्तकामः सृतिं पृच्छति चञ्चलम् ।
आविलं ननु पिबत्यम्भश्चकितदृष्टिः सुस्थिरम् ।
क्वचिच्छ्रान्तो विषमभूमौ स्थितः पश्यतिडम्बरम् ॥३॥
अम्बरे.........

जीर्णकन्थावृतशरीरो विपणिवीथ्यां सञ्चरन् ।
प्रोल्लसत्क्षौमं च दृष्ट्वा भागधेयं गर्हते ।
अहं क्षामो दुर्विधोऽलं प्रार्थये रे कं वरम् ।४॥
अम्बरे.........

कामिनी नन्वहं दिव्या न मम शाटी शोभना ।
भूषितापीयं विरूपा किं कदाचिच्छोभते ।
विधातुर्योगो विचित्रो वदति सर्वः सत्वरम् ॥५॥
अम्बरे........
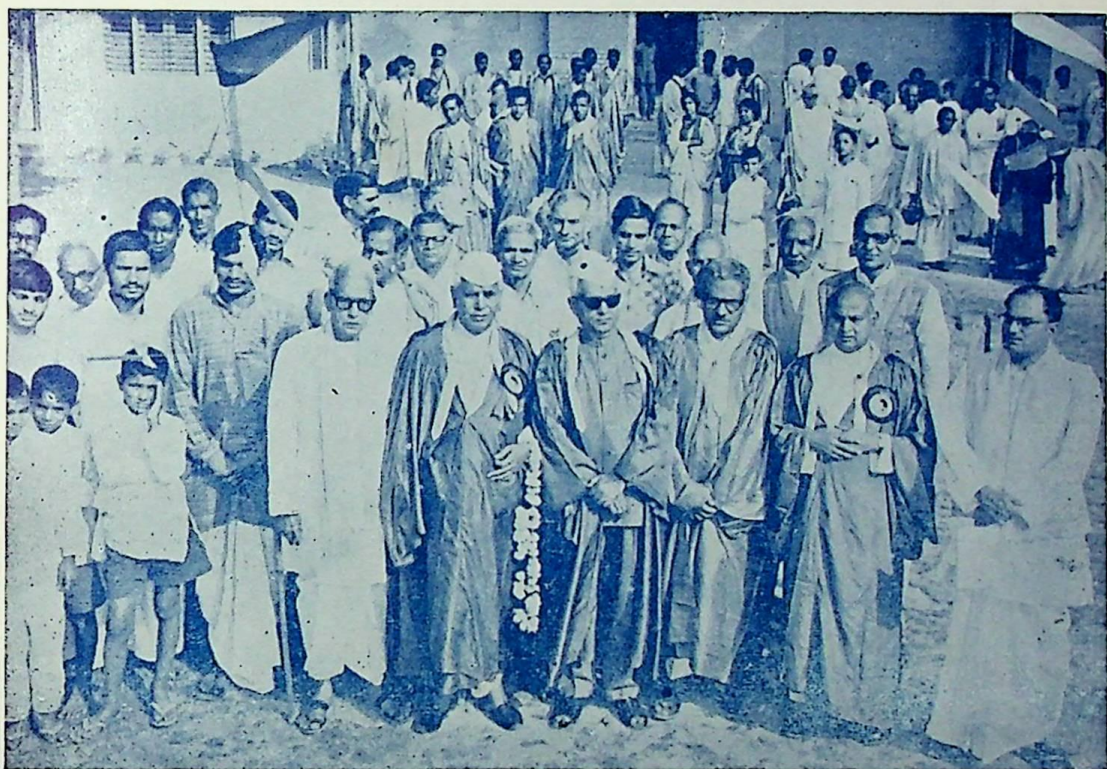
कुल-पताका आरोहण से पूर्व आगे खड़े — बायी ओर से आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति,
श्री पृथ्वीसिंह आज़ाद कुलाधिपति, श्री बलभद्रकुमार कुलपति, डॉ० गंगाराम गर्ग कुलसचिव,
तथा उनके पीछे खड़े हैं—श्री धर्मवीर जी सहा० मुख्याधिष्ठाता एवं
डॉ० हरगोपालसिंह उप-कुलसचिव

"परम पूज्य महात्मा हंसराजः"

रवि शास्त्री

दीनातिदीन ह्युटजे सुजाते भृशं दिदीपे निजकर्मभिर्यः ।
अनेक जन्मार्जितपुण्यराशिः सदामरोभूत्स च हंसराजः ॥१॥
त्यागेन वै वाग्मितया दृढेण, श्रमेण बुद्धयाऽत्मबलेन यस्य ।
पञ्चाम्बुदेश समवापवृद्धि, सद्वेदवाणी बहुभिः प्रयत्नैः ॥२॥
सत्कर्मभिः संप्रति हंसराजो, विराजते भारत प्रान्तथेषु ।
बिभिन्नकेन्द्रेषु विद्वद्वरेण्यः सदामरोभाति सहंसराजः ॥३॥
विद्यालयान्यो बहुधा चकार, विद्वद्वरान्यो वहुमानदोऽभूत् ।
सद्धर्म स्वातन्त्र्य हिताय येन, प्रसारिता साङ्गलवेदवाणी ॥४॥
अज्ञान दारिद्रय जलोर्मिमग्रान् विलोक्य बालान करुणा द्रचेतः।
स्वदेश सेवोत्सक मित्रवर्यैश्चकार विद्यालयसंप्रतिष्ठाम् ॥५॥
विभिन्नकेन्द्रेषु च पुस्तकालयान् संस्थापय द्वालहितायमोऽसौ ।
नृपुण्डरीकः पुरुषो महात्मा स राजहंसो विरराज भारते ॥६॥
चतुः षष्ट्यधिकेवर्षे क्रिस्तोरष्टादशेशते
अप्रेलस्योनविंशे स बजवाड पुरेऽभूत् ॥७॥
चोनोलालः पितातस्य मुल्लकराजः सहोदरः ।
शुघढदेव्याः प्रियः पुत्रष्ठाकुरदेव्याः प्रियः पतिः ।८
प्रथभ्रष्टान् हिन्दुवालान्मिशन नाङ्गल पाठालये गतान् ।
निवारयामास चाक्षेपैर्निज गौरवं शिक्षया ।९॥
मुख्याध्यापक दासेन "ईसाई" धर्मचारिणा ।
आक्षिप्तो वैदिको धर्मः हंसो नवम कक्षगः ॥१०॥
प्रत्युत्तरं ददौतस्मै तेनासौज्वलनोपमः ।
प्रत्युत्थाय स दण्डेन हंसराजमताडयत् ॥
प्रेरितोऽनुविचारेण हंससमतोषयत् ॥११॥

—

सर्वासु भाषासु विभाति संस्कृतम्

ले० वैद्य–रामस्वरूप शास्त्री, सम्पादकः–बाल संस्कृतम्, बम्बई ८६

न पूर्णतामेति नरस्य जीवनं
शिक्षां विना रत्नमिवाऽपरीक्षितम् ।
शिक्षाऽप्यपूर्णा पुरुषस्य तावत्
न संस्कृतं यावदुपैति मानुषः ॥१॥

सभारतीयो न च भारतीयः
यः संस्कृतं वेत्ति न शिक्षितोऽपि ।
न साक्षरः सोऽपि च साक्षरोऽस्ति
योऽधीतविद्योऽपि न वेत्ति संस्कृतम् ॥२॥

वेदाहि विज्ञानविधौ प्रसिद्धाः
अध्यात्मवादे ज्ञानं प्रसिद्ध्यति ।
ध्वनिश्च सत्काव्यगुणेषु तेषु
देहेषु चात्मा निगदेषु सस्कृतम् ॥३॥

वन्येषु सिंहः पशुषु प्रसिद्धः
शुकश्च सर्वेषु विहङ्गमेषु ।
गावश्च गृह्येषु पयः प्रदेषु
चतरस्त्रबोधं भाषासु संस्कृतम् ॥४॥

नरेषु गान्धिर्नारीषु चेन्दिरा
मुम्बापुरी पूर्षु नदीषु गङ्गा ।
हिमालयश्चोच्चशिलोच्चयेषु
द्वीपेषु जम्बूः निगदेषु संस्कृतम् ॥५॥

देशः कृतार्थः जननी च पूताः
तेषां च धन्यं खलु लोक जीवनम् ।
ते सन्ति पुण्या निपुणाजनाये
पठन्ति जानन्तिवदन्ति संस्कृतम् ॥६॥

सा भारते संस्कृत भारती नः
गिरां समासांजननी च तासाम् ।
पुष्णाति लोकव्यवहारभाषा
सर्वासु भाषाषु विभाति संस्कृतम् ॥७॥

शिक्षा-सम्मेलन में पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ के भूतपूर्व कुलपति डॉ० सूरजभान जी भाषण करते हुए साथ में बैठे हुए हैं—डॉ० स्वामी प्रकाशानन्द जी भूतपूर्व अध्यक्ष—रसायन विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय

कांटों से नेह लगाने वालो........

महावीर 'नीर' विद्यालंकार

कांटों से नेह लगाने वालों को,
नहीं फूलों के हार मिला करते हैं।
तूफानों से टकराने वालों को,
नहीं कूल-कगार मिला करते हैं॥
जो बने रहनुमा जग भर के साथी,
उनको तपना पड़ता है जीवन में।
दुनिया की पीर मिटाने वालों को,
नहीं सुख-आधार मिला करते है...

क्यों अधीर हो उठे आज परवानो,
कुछ तो धीरज को बाँधों।
उपवन में रंगत लाने वालों को,
कडुवे, मोठे, व्यवहार मिला करते हैं...
कब तक दासत्व तुम्हें बांधेगा,
युग करवट लेता ही रहता है।
हर दिल की पीर हटाने वालों को,
नहीं दर-२ से प्यार मिला करते हैं....

पाषाणों में गति देने वालों को,
कंकालों में ज्वाला भरने वालों को।
प्रतिकूल धार से लड़ने वालों को,
नहीं हर पथ आसान मिला करते हैं....
जिनको केवल निज कर्म सदा प्यारा है,
जो तुच्छ कीर्त्ति के कागज नहीं हैं पाते।
ऐसे निज अस्तित्व मिटाने वालों को,
नादान से, दुत्कार मिला करते है....
ए ! 'नीर' बगावत कैसी,
कैसा माली से झगड़ा।
दुनियां में कुछ करने वालों को,
नहीं सदा सत्कार मिला करते हैं।

गतांक से आगे–

शिशु का जातकर्म संस्कार

स्वस्थ जीवन एवं सुखी आदर्श समाजका मूलाधार

आचार्य ब्रह्मदत्त शर्मा आयुर्वेदालंकार, २८५।१३।सो–४बी, जनकपुरी, नयी दिल्ली–५८)

इस परिवर्तन का एक ही उपाय है––– 'संस्कार' अर्थात् 'गुणान्तराधान,' सम्परिवर्तन, आमूल-परिवर्तन, पुनर्नवी-करण। 'दशमुख' को 'दशरथ' बनाने तथा बनाये रखने के इस प्रयोजन से ही प्राचीन ऋषि-मुनियों ने वैदिक संस्कृति में था समाज में संस्कारों की प्रथा डाली थी जो आज-दिन तक भी थोड़ी-बहुत प्रचलित है हमें उसे पुनः पूर्णतया जागृत करना होगा। समाज तथा राष्ट्र को राक्षसयुगीन सर्वनाश से बचाने के लिए संस्कार ही एकमात्र शान्ति-पूर्ण उपाय है, 'नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाप'। अन्यथा, -रक्तसय-क्रान्ति' होगी, 'महाभारत' मचेगा, जिसका स्वरूप हिंसा पूर्ण होगा तथा परिणाम प्रायः ध्वंसात्मक होगा, सृजनात्मक नहीं। अतः राष्ट्र-देश-समाज एवं विश्व के हित में हमें अभी समय रहते चेतना तथा नवनिर्माण प्रारम्भ करना युगोचित एवं आवश्यक है।

'जात कर्म संस्कार'—

अर्थात्, नवजातशिशुका प्रथम संस्कार। प्रसवक्रिया द्वारा जब शिशु का जन्म होता है, तो सर्वप्रथम यही किया जाता है। इसके द्वारा शिशु के जीवन में स्वास्थ्य-साद्‌गुण्य एवं सच्चरित्रता की आधारशिला रखी जाती है। जीवन के इन प्रारम्भिक क्षणों में जो क्रिया की जाती है उससे जहाँ स्वस्थ-सद्‌गुणी-सच्चरित्र व्यक्ति का निर्माण होगा वहाँ समाज एवं राष्ट्र तथा विश्व भी स्वस्थ, परस्परोपकारी एवं जीवन-स्पृहणीय बनेगा। अर्थात्, सुखी स्वस्थ व्यष्टिजीवन तथा आदर्श समाज एवं विश्व बनाने के लिए पहली मूर्त्त सीढ़ी यह 'जातकर्मसंस्कार' है।

जात कर्म संस्कार की विधि–

इस संस्कार के पूर्वविधि-उत्तरविधि ये दो अंग होते हैं। पूर्वविधि का स्थल प्रसूतिकक्ष होता है तथा उत्तरविधि गृह में सामाजिक रूप में सम्पन्न की जाती है। पूर्वविधि जन्म-परक होती है तथा उत्तरविधि जन्मोत्तरकालीन।

पूर्वविधि.––

इसका प्रारम्भ तबसे होता है जब गर्भिणी में प्रसवकालीन वास्तविक आवियाँ प्रारम्भ होती हैं। ऐसी प्रसोष्यताणा गर्भिणी में बलाधान तथा आश्वासन के लिए अभिमन्त्रित जल का अभ्यासेक (छिड़कना) किया जाता है।[1] अभिम-त्रण के लिए पढ़े जाने वाले मन्त्रों से यह प्रार्थना की जाती है कि दश मासोंवाला प्रस्तुत गर्भ संलग्न जरायु (आवंग,) आवियों द्वारा विचलित होकर निर्बाध रूप में बाहर निकल आवे, निर्गमन मार्ग

१.'सोष्यन्तीमद्‌भिरभ्युक्षति।'(पारस्करगृह्यसूत्र। का०१।क०१६)।तथा च–आश्वलायन गृह्यसूत्र (१।१४।१–३), गोभिलीयगृह्यसूत्र, प्रभृति में भी ऐसा ही विधान है।

से कोई मांस-आदि-जनित अवरोध न हो तथा जरायु भी न रुके ।२प्रसोष्यमाणा गर्भिणी की सुरक्षा के लिए भी प्रार्थना की जाती है ।३

प्रसवद्वारा गर्भ एवं जरायु के बाहर आ जाने पर यदि उल्व (गर्भावरण) बिना फटे साथ ही निकला हो तो नवजात के मुख-नासा-श्वासपथ-आदि को स्वच्छ करने के लिए तुरन्त इस उल्व को फाड़कर पृथक् कर देना अत्यन्त आवश्यक होता है। एतदर्थ सैन्धवमिश्रित घृतक परिषेकार्थ तथा उष्ण जलका प्रक्षालनार्थ उपयोग किया है ।१ तालु-ओष्ट-कण्ठ-जिह्वा-कर्ण-नेत्र-आदिका भी कोष्णजल से भीगी रूई की फुरहरी (पिचु) द्वारा शोधन किया जाता है ।२ प्रसूतिक्रिया में सिर पर लगे अभिघात-दबाव-खरोंच-आदि के क्लेशनिवारणार्थ सिर एवं शिरस्तालु पर बलातैलका परिषेक किया जाता है ।३ तथा, घृताक कार्पास-पिचु रखकर तर्पण किया जाता है ।४ तदनन्तर नाभिनाल का यथाविधि कर्तन करके कुष्ठतैल लगाकर पट्टी बाँधकर तथा उसके सिरे के साथ तागा बाँधकर नवजात के गले में शिथिल रूप मे अटका दिया जाता है, ताकि उलझे नहीं।५ फिर बलातैल मल कर क्षीरिवृक्षों-आदि के क्वाथ में सुगन्धित द्रव्य मिलाकर उस द्रव से स्नान कराया जाता है ।६ यह सारी विधि प्रसूति-कक्ष में प्रसाविका-चिकित्सि-का-दाई-आदि द्वारा की जाती है ।

उत्तरविधि--

यह जन्मोत्तरकालीन विधि है तथा इसका स्वरूप पारिवारिक एवं कर्मकाण्डपरक अधिक है।

२.(क) 'ओम्! एजतु दशमास्यो गर्भो जरायुणा। सह । यथायं वायुरेजति यथा समुद्र एजति। एवायं दशमास्यो अस्त्रज्जरायुणा सह।।' (यजुर्वेद ।८।२८।। पारस्कर०।१।१६।१)।

(ख) 'ओम् । अवैतु पृश्निशैवलछँ शुने जरायवत्तवे । नैव या छँ सेन पीवरी न कस्यिंश्चना यतनमव जरयु पद्यताम् ।।' (पारस्करगृह्यसूत्र ।१।१६।२)। (चरक । शरीर ।८।२८) ।

३ 'क्षितिर्जलं वियत्तेजो वायुविष्णुः प्रजापतिः। सगर्भां त्वां सदा पान्तु वैशल्यं च दिशन्तु ते।।,

१ (क) जातमात्रं विशोध्योल्बाद् बालं सैन्धवसर्पिषा, '(अष्टांगहृदय । उत्तर०।१।१)।

(ख) 'अथ जातस्योल्बमपनीय, मुख च सैन्धवसर्पिषा विशोध्य. . .' (सुश्रुत ।श०।०।१०।१२)

२'अथास्य ताल्वोष्ठकण्ठजिह्वा प्रमार्जनमारभेतां-गुल्या सुपरिलिखितनखया सुप्रक्षालितोप- धानका-र्पासपिचुमत्या!' (च।२।।८.४३)

३'प्रसूतिक्लेशित चानु बलातैलेत सेचयेत् ।।'(अ० ह० ।उ०।१।१)

४ (क) 'प्रथमं प्रमार्जितास्यस्य चास्य शिरस्तालु कार्पासपिचुना स्नेहगर्भेण । संछादयेत् । '(च०।शा० ।८।४३)।

(ख) 'घृताक्तं मूर्ध्नि पिचुं दद्यात्।' (सुश्रुत । शारीर ।१०।१२)। सयगबध्नीयात् ।।' (सु०।२।।०। १०।१२)।

५ (क) 'ततो नाभिनाडीमष्टागुलमायम्य सूत्रेण बद्ध्यवा छेदयेत, तत्सूचैकदेशं कुमारस्य ग्रीवायां ।

(ख) 'नाभिं च सूत्रेण चतुरंगुलात् । बद्ध्वोर्ध्वं वर्धयित्वा च ग्रीवायामवसंजयेत् ।।ह०।उ०।१।५)

(ग) 'ततः कल्पनं नाड्याः।. .छेदयेत् । तामग्रे सूत्रेणोपनिबध्य कण्ठेऽस्य शिथिलमवसृजेत् ।' (च०३।।०।८।४४)

६'स्नपयेदनु । या क्षीरिवृक्षकषायेण सर्वगन्धवोदकेन वा ।। कोष्णेन' (अन्तगहृदय । उत्तर०।१।६)।

गतांक से आगे--

एक महान् क्रान्तिकारी परिवार

शहीदे आज़म सरदार भगतसिंह के बुज़ुर्गों की मुख्तसर कहानी

अज़ श्रीमती वीरेन्द्र सिन्धू एम० ए०

सियासत में इन्हें लोकमान्य तिलक का साथ मिला। तब सरदार किशन सिंह कांग्रेस में दिलचस्पी लेने लगे थे। इनके छोटे भाई सरदार अजीत सिंह भी उनके साथ ही लोकमान्य तिलक से मिलते रहते थे। लोकमान्य तिलक का इन दोनों पर बहुत असर पड़ा। इन्हीं दिनों पंजाब में इनक्लाबी तहरीक शुरू हुई। सूफी अम्बा प्रसाद, लाला हरदयाल, सरदार करतार सिंह केसर गढ़िया, लाला लालचन्द तिलक, महाशय घसीटा राम, सरदार श्रवन सिंह, महता नन्दकिशोर, लाला केदार नाथ सहगल, जियाउल हक, लाला पंडेदास वगैरह इस तहरीक में पेश थे। सरदार किशन सिंह की सदारत में एक रोजाना अखबार सहायक में निकाला गया। भारत माता सोसायटी के जलसों में अपने भाषणों से आग लगाना सरदार अजीत सिंह का काम था। सोसायटी के काम को गांव-गांव सरदार श्रवन सिंह फैलाया करते थे। तीनों भाई इन्क्लाबी तहरीक के ब्रह्मा, विष्णु और महेश थे।

नेपाल में

सन् १९०७ में सरदार अजीत सिंह को मांडले (बर्मा) में नजरबन्द किया गया। सरदार किशन सिंह नेपाल चले गये। सूफी अम्बा प्रसाद और महता नन्दकिशोर भी इनके साथ थे। नेपाल सरकार से सरदार किशन सिंह का पहले से ही तालुक था। वहां बतौर शाही मेहमान इन्हें उसी मकान में ठहराया गया जहां कभी लार्ड किचनर को ठहराया गया था। नेपाल के प्रधान मंत्री महाराज चन्द्र शमशेर जंग बहादुर राना सरदार किशन सिंह की बातों से बहुत मुतासिर हुए। राना ने अपने बेटे को सियासत की तालीम हासिल करने के लिये रोजाना इनके पास भेजना शुरू किया।

सरदार किशन सिंह ने हिन्दुस्तान में इनक्लाब लाने के लिये हुकूमत नेपाल से फौज की मदद मांगी। इन्होंने नेपाल से हथियार हासिल करने की भी बात-चीत की। जब अंग्रेज सरकार को पता चला तो उसने नेपाल सरकार से मुतालबा किया कि इन लोगों को उसके हवाले करदे। नेपाल सरकार ने ऐसा किया तो जरूर लेकिन उसने इनको पालकी में बिठाकर सरहद पर भेजा। हिन्दुस्तान पहुंचने पर अंग्रेज डी०एस०पी० मिस्टर फिलिप पर हमला करने और सरकार के खिलाफ बगावत फैलाने का मुकदमा चलाया गया। लेकिन बाद अजां लंदन में बरतानवी हुकूमत ने अपनी पालीसी तब्दील करदी। सरदार किशन सिंह को पचास हजार की जमानत पर रिहा कर दिया गया। सरदार अजीतसिंह को मांडले की नजरबन्दी से छोड़ दिया गया और चीफ कोर्ट ने सरदार श्रवन सिंह को बरी कर दिया। ये तीनों जिस रोज एक साथ घर पहुंचे उसी रोज सरदार भगत सिंह का जन्म हुआ।

सरदार अजीतसिंह फरार

सरदार अजीतसिंह पर सरकार की कड़ी निगाह थी। इनके घर के बाहर बीसियों सी० आई०डी० वाले तायनात थे। एक-एक मिनट की खबर सरकार को मिला करती थी। सरदार

किशन सिंह ने सरदार अजीत सिंह को देश से कहीं और चले जाने का मशिवरा दिया। लेकिन अब सवाल यह था कि सरदार अजीत सिंह घर और गांव से बाहर कैसे निकलें। लेकिन सरदार किशन सिंह ने इनके फरार होने का कामियाब मंसूबा तैयार किया। पुलिस वाले संगीनें लिये पहरे पर खड़े रहे और सरदार अजीत सिंह रूपोश हो गये। जियाउलहक और सूफी अम्बा प्रसाद को भी वह साथ ले गये। कराँची से होकर वे ईरान चले गये।

सरदार किशन सिंह ने अपने बच्चों को भी जंग आजादी के लियें तैयार किया। भगत सिंह को तैरना, लाठी चलाना, बासों पर चढ़कर दरिया पार करना, लम्बी सांस खीचना और सख्तियां झेलना सिखाया। छोटा भाई कुलबीर सिंह जेल में था। उसकी बहन अमर कौर ने उसे जेल से भगाने की स्कीम बनाई। बीमारी के बाअस कुलबीर सिंह को लाहौर हस्पताल में लाया गया। सरदार किशन सिंह इन दिनों फालिज से बीमार थे। वह नहीं चाहते थे कि पुलिस घर वालों को ज्यादा परेशान करे। छोटी बेटी सुमित्रा ने गांव जाकर फरार का यह मंसूबा नहीं बताया। वह झट से लाहौर गये। उन्होंने अमर कौर से कहा कि में बीमार हूं, हो सकता है कि पुलिस की सख्तियों के बाअस मेरे मुंह से कुछ निकल जाय। इसलिये मुझे कुलबीर के फरार के मुतालिक कुछ न बताओ। मेरे पास यह पांच सौ रुपये हैं। इसे ले जाओ और अपना काम करो।

जिस रोज भगत सिंह को फांसी हुई उस रोज लाहौर में एक बड़ा जुलूस निकला जिसके आखिर में मोरी दरवाजा के बाहर जलसा हुआ। इसमें सरदार किशन सिंह ने पुरजोर तकरीर की। जलसे में जोश फैला हुआ था। पास ही मिलाप के दफ्तर में कुलतार सिंह बैठे थे। इतने में वहां टेलीफोन आया कि भगत सिंह और उन के साथियों को फांसी घर की तरफ ले जाया जा रहा है। कुलतार सिंह दौड़ कर जलसा में पहुंचे और सरदार जी को खबर दी। सरदार किशन सिंह यह सुन कर जरा परेशान न हुए। उन्होंने कुलतार सिंह को बैठा दिया और बाकायदा तकरीर करते रहे। इतने में एक ग्वाला दौड़ता हुआ आया। वह जेल में दूध दिया करता था। उसने खबर दी फांसी लग गई है, जा कर लाश ले आवो। जलसा में जोश फैल गया। सरदार किशन सिंह ने कड़कती आवाज में कहा। मै लाश लेने जेल जा रहा हूं। सब लोग अपनी जगह बैठे रहें। कोई जेल की तरफ न जाये। ऐसा न हो कि एक भगत सिंह लेने जायें और सैकड़ों भगत सिंह ले आयें।

बच्चों के साथ इन्हें बहुत प्यार था। वह अकसर कहा करते थे-

दीन दयाल भरोसे तेरे
सब परिवार चढ़ाया बेड़े।

लोगों में खतबली मच गई। बहुत कहने पर भी बहुत से लोग उनके साथ हो लिये। जेल पर सन्नाटा था। वह दरवाजे पर पहुंचे। अन्दर से अफसरों के कहकहों की आवाज सुनाई दे रही थी। उन्हें बहुत दिनों बाद चैन की सांस मिली थी। सरदार किशन सिंह ने जोर-जोर से आवाजें दीं और बड़े आहिनी दरवाजे को बेहद खटखटाया। मगर कोई नहीं बोला। आखिर खबर मिली कि भगत सिंह और उनके साथियों की लाशों को

जलाने के लिये कहीं बाहर भेज दिया गया है। लोग उस जगह को खोज के लिये चारों तरफ बिखर गये।

माता विद्यावती जी ने किन हालात में सितम्बर १९०७ में अपने बेटे भगत सिंह को जन्म दिया। इसका अन्दाजा इससे हो सकता है कि भगत सिंह के जन्म से एक दिन पहले तक सरदार किशन सिंह एक मुकदमे में गिरफ्तार थे। सरदार स्वरन सिंह जेल काट रहे थे और सरदार जीत सिंह मान्डले (बर्मा) में जलावतन थे। और इतफाक की बात है कि जिस दिन भगत सिंह का जन्म हुआ उसी रोज सब रिहा हुए।

भगत सिंह की शादी की बात चल रही थी और एक जगह से कुछ आदमी उन्हें देखने आये। सब को डर था कि भगत सिंह मना न करदें। पर उस रोज भगत सिंह पूरी मस्ती में थे। बराबर उछलते कूदते रहे, नाचते गाते रहे। माता विद्यावती से कहा 'बीबी जी, मेरी सगाई होने वाली है, जिसे जो बांटना हो बाट दे" इससे पहले कि सगाई हो। भगत सिंह अपने पिताजी की दराज से रुपये निकाल कर और उसकी जगह एक खत छोड़ कर खुद वहां से गायब हो गये। मां अपने गुमशुदा बेटे की तलाश में लाहौर के इलाके ग्वालमंडी में रहने वाले एक मशहूर जोतशी के पास गई। उसने भगत सिंह का कोई कपड़ा मांगा। भगत सिंह की पगड़ी पेश की गई। उस पर कुछ पढ़कर ज्योतिषी जी ने कहा" तुम्हारा बेटा कुछ दिन बाद वापस आ जायेगा। लेकिन फिर वा[पस] चला जायेगा। इस लड़के का भाग्य कुछ अजीब [औ]र गरीब है। वह या तो तखत पर बैठेगा या तख्त[े] [पर] भूलेगा।"

क्रान्तिकारी परिवार में रहने वाली विद्यावती तखत का तो ख्वाब भी नहीं ले सकती थी। इस परिवार की किस्मत में जो तख्ता ही था जोकि एकदम उसकी नजरों के सामने घूम गया और उन्हें ऐसा महसूस हुआ जैसे सैकड़ों बिच्छुओं ने एक साथ डंक चला दिये हों। भगत सिंह को एक मुकदमे में बड़ी मुश्किल से ६० हजार रुपये की जमानत पर छुड़वाया गया और उन्हें कामकाज में लगाने के लिये एक डेरी फार्म बना दिया गया। भगत सिंह तांगे पर दूध रख कर लाहौर ले जाते और फिर कई-कई बार दो-दो तीन-तीन दिन वापस न आते। जब कई दिन के बाद वापस लौटते तो भगत सिंह को देखते ही मां की आंखों से आंसू टपकने लगते। भगत सिंह कुछ भी न कहते। वह रोने लगती। वह हंसते रहते, मटकते रहते या मां को छेड़ते रहते। आखिर में जीत हंसी की ही होती! मां और बेटा दोनों हंसने लगते और बेटा झट मां के आसू पोंछ देता।

भूख हड़ताल की वजह से भगत सिंह और बटकेश्वर दत्त सूख कर कांटा हो गये थे। इन्हें स्ट्रेचर पर डाल कर अदालत में लाया जाता था। माता विद्यावती की हमराह दौया नाम की एक लड़की शहीद राम प्रसाद बिसमिल की बहन बन कर अदालत में गई।

उसने जब भगत सिंह और दत्त को इस हालत में देखा तो वह छाती पीटने लगी और चिल्लाने लगी। हमारे भाई भूखे मारे गये। इन जालिमों ने हमारे भाई भूखे मार दिये।

यह आवाज सुनकर अदालत में मौजूद दूसरे लोग भी चिल्लाने लगे। अदालत में कोहराम मचगया। अदालत बरखास्त करनी पड़ी, लेकिन

इस शोरगुल में कुछ मिनटों तक भगत सिंह को जेल भेजना ही भूल गये।

मजिस्ट्रेट ने कहा पकड़ लो इस लड़की को। तब भगत सिंह ने चिल्ला कर कहा यहां मेरी मां भी है, चाची भी है, बहन भी है, किस-किस को पकड़ेंगे आप।

एक रोज माता जी भगत सिंह से जेल में मुलाकात करने गई। भगत सिंह ने मां से कहा।

आप भी जेल में आ जाइये। यहां साथ ही रहेंगे। आपको इतनी दूर से चल कर मुलाकात के लिए आना नहीं पड़ेगा। बेटे की बात सुनकर मां बोली। आ कैसे जाऊं। पिकेटिंग करके आ जाऊं क्या। यह करना मुझे आता नहीं है। भगत सिंह बोले नहीं,, यह हमारा काम नहीं है। तो फिर मां और बेटे के बीच में जेल की सलाखें और दीवारें जैसे कुछ लमहों के लिये गायब हो गई। मां अज राहे मजाक बोली, तो किसी को पत्थर मार कर आ जाऊं" यह सुन कर भगत सिंह खिलखिलाकर हंस पड़े और मौके पर मौजूद दूसरे लोग भी अपनी हंसी न रोक सके। सन् १९३९-४० का जमाना आया। माता जी के दो बेटे कुलबीर और कुलतार जेलों में जा पहुंचे और इनके पिता सरदार किशन सिंह पर फालिज गिर गया। अब माता जी पर ही गृहस्थी की जिम्मेदारियां थीं। वह एक तरफ तो खेती-बाड़ी का काम करतीं और बीमार पति की तीमारदारी करतीं और कभी जलसों की सदारत करतीं। एक बार मोरी गेट (लाहौर) के बाहर उनकी सदारत में जलसा हुआ। इसमें सीधे-साधे अलफाज पर तकरीर करते हुए आपने कहा

"मेरे एक बेटे को तुमने फांसी पर लटकाया, मेरे छोटे देवर स्वरन सिंह को जेल में सजायें देकर तपेदिक का मरीज बना दिया और वह परलोक सिधार गया। मेरे दूसरे देवर अजीत सिंह को जलावतन होकर विदेशों में भटकना पड़ा। अब मेरे दो बेटों को मुकदमा चलाये बगैर गिरफ्तार कर लिया गया। क्या इन सब बातों से वह डर गई? नहीं मैं मिट जाऊंगी, पर सिर नहीं झुकाऊंगी। मैं बरतानवी राज को चेतावनी देती हूं और अपने दो बेटों को देश सेवा के लिये पेश करती हूं।

बकिया अमानत में खयानत न करो

एक राय से फैसला हुआ कि हम एक ऐसा हिन्दुस्तान चाहते हैं जो कुलवतन आजाद हो, जो हिन्दुस्तानियों का हिन्दुस्तान हो, हिन्दुओं, मुसलमानों, सिक्खों, या ईसाइयों का नहीं बल्कि सब का। उन लोगों का भी जो किसी मजहब को नहीं मानते हैं। तब ऐसा हिन्दुस्तान जो रिपब्लिकन हो जमहूरियत के रास्ते पर चले। फासिज़्म और डिक्टेटरशिप के रास्ते पर नहीं। किसी एक पार्टी की मलकियत बनकर नहीं और फिर ऐसा हिन्दुस्तान जो मुकम्मल तौर पर सोशलिस्ट हो, समाजवादी हो, जहां हर मेहनतकश को उसकी मेहनत का मुआवजा मिले। कोई भी बगैर मेहनत के और अपने आपको देश के लिए मुफीद बनाये बगैर दूसरों की मेहनत का फल न खा जाय।

इस साफ और सीधे आदर्श को लेकर ये लोग लड़े और एक के बाद एक अपनी जानें देते चले गये। आज मुल्क के पास जो आजादी है वह इन लोगों की देन है।

उनकी अमानत। इस अमानत को हम उसी रूप में रखते हैं जिसमें भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु, चन्द्र शेखर, भगवती चरण, अशफाक उल्लाह, राम प्रसाद बिसमिल, धनवन्तरी, बिशेशर, हरी कृष्ण और दूसरे लोग रखना चाहते थे या उसमें खयानत कर रहे हैं यह हमें सोचना चाहिये। मैंने उन लोगों के साथ काम किया। मुझे मालूम है कि उनके सीने में कैसी आग थी। इस लिये बहुत अदब और प्यार से मैं सिर्फ इतना चाहती हूं, अमानत में खयानत न कीजिये। यह बहुत बड़ा पाप है और पाप का फल अच्छा नहीं होगा।

रनबिया

गतांक से आगे–

गुरुकुल कांगड़ी–संक्षिप्त परिचय

लेखक–डा० गंगाराम, कुलसचिव गुरूकुल कांगड़ी, हरिद्वार ।

सन् १६०६ ई तक गुरुकुल में सात श्रेणियां हो गई थीं । जिसमें मुख्यतया संस्कृत साहित्य और व्याकरण तथा सामान्यतया अंग्रेजी और कुछ अन्य प्रारंभिक विषयों की शिक्षा दी जाती थी । अब उच्च कक्षाओं के खुलने पर यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि विज्ञान, गणित आदि आधुनिक विषयों की क्या व्यवस्था की जाय । इसी समय मा० रामदेव जी गुरुकुल में कार्य करने आये । वे एक ट्रेन्ड ग्रेजुएट थे और जालन्धर में एक स्कूल के सफल हेडमास्टर रह चुके थे। उनका विचार था कि आधुनिक युग में विज्ञान शिक्षा का आवश्यक अंग है और गुरुकुल में उसकी यथोचित व्यवस्था होनी चाहिए साथ ही वे शिक्षा सम्बन्धी नियन्त्रण के भी पक्षपाती थे। वे चाहते थे कि नियमित समय विभाग बने और सब कार्य व्यवस्थित रूप में हों । यह स्वाभाविक था, क्योंकि प्रारंभ से ही गुरुकुल को एक पुराने ढंग की पाठशाला बनाना अभिप्रेत नहीं था । गुरुकुल की प्रारम्भिक योजना में संस्कृत साहित्य और वेदांग की शिक्षा के साथ-साथ आधुनिक ज्ञान–विज्ञान की शिक्षा को भी यथोचित स्थान दिया गया था ।

महाविद्यालय विभाग:–सन् १६०७में महाविद्यालय विभाग का प्रारंभ हुआ । तीन विद्यार्थी ६वर्ष तक तक विद्यालय विभाग में रहकर अधिकारी परीक्षा उत्तीर्ण कर महाविद्यालय में आये । महाविद्यालय विभाग के शुरू होने पर गुरुकुल में अनेक उच्चकोटि के विद्वान् अध्यापन के लिये नियुक्त किये गये । गुरुकुल के महाविद्यालय विभाग के इन प्रारंभिक शिक्षकों के नामों का स्मरण कर लेना यहां उचित ही होगा ।

१– महात्मा मुन्शीराम जी आचार्य
२– आचार्य रामदेव जी बी०ए०,एम०आर०ए०एस० आचार्य तथा उपाध्याय पाश्चात्य दर्शन ।
३– पं० काशीनाथ जी शास्त्री–उपाध्याप प्राच्यदर्शन ।
४– पं० शिवशंकर काव्यतीर्थ–उपाध्याय वेद ।
५– श्री बालकृष्ण राज एम०ए०–उपाध्याय–इतिहास, अर्थशास्त्र ।
६– श्री विनायक गणेश साठे–एम०ए०–उपाध्याय रसायनशास्त्र ।
७– श्री महेशचरणसिंह एम०ए०–उपाध्याय–वनस्पतिशास्त्र ।
८–श्री घनश्यामसिंह गुप्ता बी०ए०एल०बी–उपाध्याय विज्ञान ।
६– श्री सेवाराम एम०ए०–उपाध्याय आंग्ल भाषा
१०–श्री श्लक्ष्मीनारायण बी०ए०–उपाध्याय आंग्लभाषा ।
११–श्री लक्ष्मणदास बी०ए०–उपाध्याय गणित ।

शिक्षा के क्षेत्र में इस समय गुरुकुल बड़ी तत्परता से कार्य कर रहा था । महाविद्यालय स्तर तक गुरुकुल में सब विषयों की शिक्षा मातृभाषा हिन्दी के माध्यम द्वारा दी जाती थी। विज्ञान, गणित, पाश्चात्य दर्शन- आदि विषय भी हिन्दी में पढ़ाये जाते थे । उस समय हिन्दी में
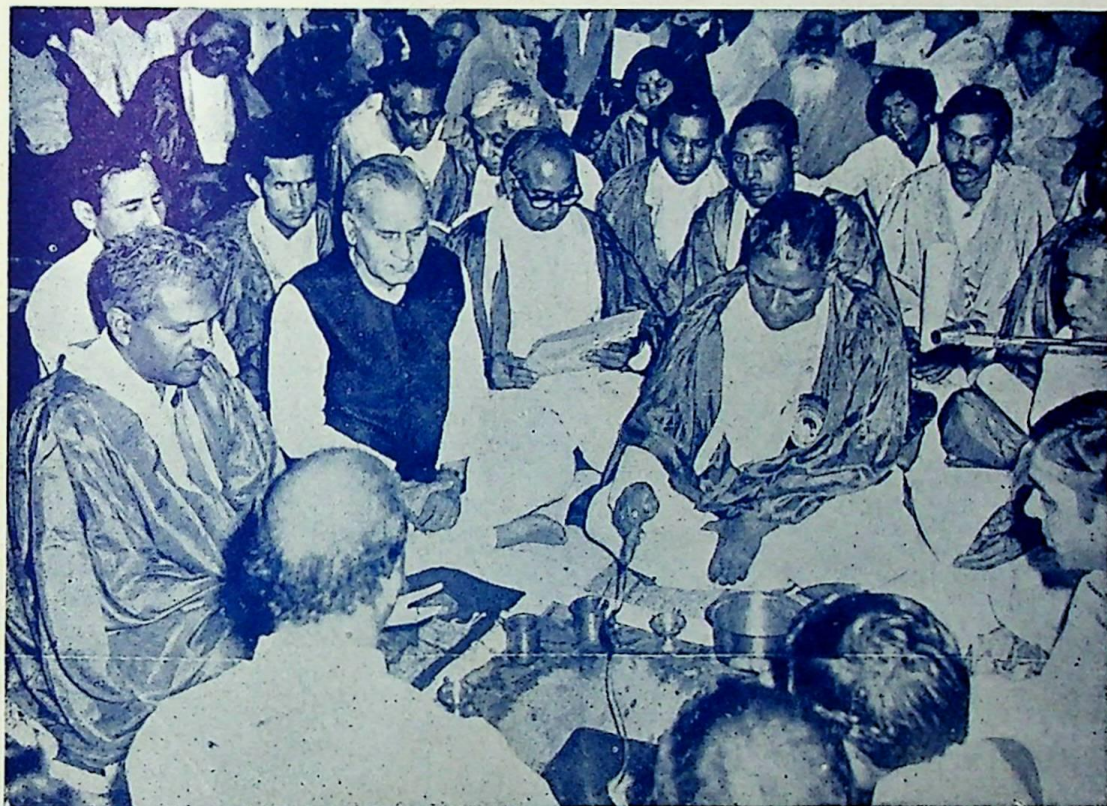
श्री राज्यपाल महोदय दीक्षान्त-यज्ञ में—दांयी ओर, डॉ० गंगाराम गर्ग कुलसचिव, श्री वीरेन्द्र जी सभामंत्री एवं डॉ० रामनाथ वेदालकार आचार्य

उच्च शिक्षा देना एक असंभव बात समझी जाती थी। गुरुकुल ने इसे कार्य रूप में परिणत करके दिखा दिया। उस समय आधुनिक विज्ञान की पुस्तकें हिन्दी में बिलकुल न थीं। गुरुकुल के उपाध्यायों ने पहिले पहल इस क्षेत्र में काम किया और गुरुकुल से अनेक उच्चकोटि के ग्रंथ प्रकाशित हुए। प्रो० महेशचरणसिंह की हिन्दी कैमिस्ट्री प्रो० साठे का विकासवाद, श्रीयुत गोवर्धन की भौतिकी और रसायन, प्रो० राम चरण दास सक्सेना का गुणात्मक विश्लेषण, प्रो० सिन्हा का वनस्पतिशास्त्र प्रो० प्राणनाथ का अर्थशास्त्र, राष्ट्रीय आय–व्यय शास्त्र और राजनीति शास्त्र प्रो० बालकृष्ण का अर्थशास्त्र और राजनीतिशास्त्र और प्रो० सुधाकर का मनोविज्ञान हिन्दी में अपने-अपने विषय के ग्रंथ हैं। हिन्दी में वैज्ञानिक ग्रंथों की रचना गुरुकुल द्वारा ही प्रारंभ हुई। इन वैज्ञानिक ग्रन्थों के अतिरिक्त अन्य बहुत उच्चकोटि के ग्रन्थ गुरुकुल ने प्रकाशित किये। प्रो० रामदेव ने भारतीय इतिहास के सम्बन्ध में मौलिक अनुसंधान कर अपना प्रसिद्ध 'भारतवर्ष का इतिहास' प्रकाशित किया। महात्म मुन्शीराम जी ने विविध धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन कर पारसी आदि अनेक धर्मों पर मौलिक ग्रन्थ लिखे। गुरुकुल की साहित्य परिषद् ने दो दर्जन से अधिक ग्रन्थ प्रकाशित किये। ये सभी ग्रन्थ किन्हीं नये विषयों पर निबन्ध के रूप में थे। साहित्य परिषद् की ओर से गुरुकुल के वार्षिकोत्सव पर सरस्वती सम्मेलन किये जाते थे, जिनमें विविध विषयों पर मौलिक निबन्ध पढ़े जाते थे। उस समय के शिक्षित समुदाय में इन निबन्धों की बड़ी धूम थी। गुरूकुल ने छोटे बालकों के लिए पाठ्य पुस्तकें तैयार करने के लिए भी बड़ा काम किया। संस्कृत की प्राथमिक रीडरें सर्वप्रथम गुरूकुल ने ही प्रकाशित की। सब श्रेणियों के लिए हिन्दी, संस्कृत विज्ञान आदि की बहुत सी पाठ्य पुस्तकें गुरुकुल में तैयार हुई। बाहर के भी अनेक शिक्षणालयों ने इनको अपनाया।

सन् १९०७ ई० में वैदिक मैगजीन का पुनरूद्धार किया गया। इस पत्रिका के संस्थापक पण्डित गुरूदत्त थे। उनके देहान्त के साथ इस पत्रिका का भी अन्त हो गया था। वैदिक मैगजीन अंग्रेजी में निकलती थी। पाश्चात्य संसार को वैदिक धर्म का संदेश देने तथा आर्य समाज के दृष्टिकोण से प्राच्य विद्याओं का अनुशीलन करने के लिए ही इस पत्रिका का बड़ा योगदान था। अब उसका पुनरूज्जीवन किया गया और मा० रामदेव जी उसके संपादक बने। सन् १९०७ ई० से १९३२ ई० तक २५ वर्ष निरन्तर यह पत्रिका गुरुकुल से प्रकाशित होती रही। देश–विदेश के शिक्षित समाज में इस पत्रिका को बड़े आदर की दृष्टि से देखा जाता था।

सद्धर्म प्रचारक पहले जालन्धर से प्रकाशित होता था। महात्मा मुन्शीराम जी का सद्धर्म प्रचारक प्रेस भी जालन्धर में ही था। सन् १९०८ ई० में उसे गुरूकुल लाया गया। तब से सद्धर्म प्रचारक नियत रूप से गुरूकुल से ही प्रकाशित होने लगा। गुरुकुल का प्रचार करने में इस पत्र से बड़ी सहायता मिली। सद्धर्म प्रचारक पत्र और सद्धर्मप्रचारक प्रेस गुरुकुल को साहित्यिक जीवन का एक महत्व पूर्ण केन्द्र बनाने में अत्यन्त सफल हुए।

फल निष्पत्ति

सन् १९१२ ई० में गुरुकुल से दो ब्रह्मचारी हरिश्चन्द्र और इन्द्र अपनी शिक्षा पूर्ण कर स्नातक हुए। वार्षिकोत्सव पर बड़े समारोह के साथ इन का दीक्षान्त संस्कार हुआ। गुरुकुल का यह वार्षि-

कोत्सव अद्वितीय था। जनता के उत्साह की कोई सीमा न थी। गुरुकुल के नव स्नातकों के दीक्षान्त संस्कार का दृश्य आज भी एक अद्भुत आकर्षण रखता है।

गुरुकुल विदेशियों की दृष्टि में

गुरुकुल निरन्तर लोकप्रिय होता जा रहा था। यहां ३०० के लगभग ब्रह्मचारी अपने गुरू-जनों के साथ ब्रह्मचर्य और विद्या की साधना में त्पर थे। यहां अमीर-गरीब और ऊंच-नीच का कोई भेद न था। ऋषि दयानन्द ने शिक्षा के संबंध में जो आदर्श रखे थे वे यहां मूर्त रूप में दृष्टिगोचर होते थे यही कारण था कि गुरुकुल में एक विशेष आकर्षण था जो भी गुरुकुल में आता वह यहां के जीवन से प्रभावित हुए बिना न रहता।

केवल भारतीय जनता ही नहीं अनेक विदेशियों को भी गुरुकुल ने अपनी ओर आकृष्ट किया है। इसे देखने के लिए बहुत से विदेशी विद्वान्, गुरुकुल पधारने लगे। अमेरिका के प्रसिद्ध शिक्षा विशारद श्री युतमारयन फेतस सन्१९२८ में गुरूकुल आये। उन्होंने कई महीने गुरूकुल में रहकर इसके प्रत्येक विभाग का सूक्ष्मता के साथ निरीक्षण किया। गुरूकुल से चले जाने के बाद एक विस्तृत लेखमाला उन्होंनें इलाहाबाद के प्रसिद्ध ऐंग्लो इण्डियन पत्र पायनियर में लिखी। कुछ समय बाद श्रीयुत सी० एफ०एण्ड्रज अपने मित्र श्रीयुत पियर्सन के साथ आकर गुरूकुल में रहे। परिणाम यह हुआ कि गुरूकुल भारत से बाहर युरोप और अमेरिका में भी अधिकाधिक प्रसिद्ध होता गया। इन देशों से जो यात्री भारत आते वे गुरूकुल देखे बिना वापिस न लोटते। ब्रिटिश ट्रेड यूनियन आन्दोलन के प्रसिद्ध नेता श्रीयुत सिडनी वेब गुरूकुल आये और इस संस्था को देखकर अत्यन्त प्रभावित हुए। सन् १९१४ से लेकर पार्टी के प्रसिद्ध नेता और ग्रेट ब्रिटेन के भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री रेम्जे मेकडानल्ड गुरूकुल पधारे। उन्होंन गुरूकुल के सम्बन्ध में एक लेख में लिखा। मेकाले के बाद भारत में शिक्षा के क्षेत्र में जो सबसे महत्वपूर्ण और मौलिक प्रयत्न हुआ, वह गुरूकुल है।

सरकार ने गुरूकुल को पहले राजद्रोही संस्था समझा। सरकारी यूनिवर्सिटियों से सर्वथा सच्ची राष्ट्रीय शिक्षा के लिए किया गया वह अद्भुत प्रयत्न था। गुरूकुल राजद्रोही है, सरकार का यह विचार तब तक दूर नहीं हुआ जब तक संयुक्त प्रान्त के लेफ्टिनेण्ट गवर्नर श्रीयुत जेम्स मेस्टटन इस संस्था को अपनी आंखों से नहीं देख गये। सर जैम्स मैस्टन गुरूकुल में चार बार आये उनकी गुरूकुल यात्रा का उद्देश्य यही था कि वे स्वयं गुरूकुल का अवलोकन कर इस बात का निर्णय करें कि वह कहां तक ठीक है। ६मार्च १९१३ को जब वे पहली बार आये उन्होंने अभिनन्दन पत्र का उत्तर देते हुए अपने भाषण में कहा— न केवल संयुक्त प्रान्त अपितु सम्पूर्ण भारत में शिक्षा के क्षेत्र में जो परीक्षण किये गये हैं गुरूकुल उनमें सबसे अधिक मौलिक और महत्वपूर्ण है।

क्रमशः

भारत का महाज्योतिर्विद् तथा बीजगणित का प्रकाण्ड पण्डित

श्री आर्य भट्ट

इन्द्रसेन आयुर्वेदालंकार

वेदांगों में पाई जाने वाली ज्योतिष् के बाद हमें २०० ई०पू० में लिखा एक ग्रन्थ प्राप्त होता है जिसका नाम है सूर्य प्रजापति। यह जैन ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ के ७०० साल बाद तक हमें नहीं पता कि ज्योतिष् में क्या नई खोज हुई। ५०० ई० में हमें श्री आर्य भट्ट का लिखा ग्रन्थ उपलब्ध होता है। इस ग्रन्थ से यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि इस महान गणितज्ञ ने बीजगणित की आधार शिला रक्खी। जो ज्ञान इस ग्रन्थ में लिखा मिला है उसके सम्बन्ध में यह दावे से नहीं कह सकते कि वह सारा आर्य भट्ट की अपनी ही देन है या इससे पूर्ववर्ती गणितज्ञों को भी उसका श्रेय है। इस ग्रन्थ के अतिरिक्त उस काल के गणित और ज्योतिष् के ज्ञान को बताने वाली कोई और पुस्तक उपलब्ध ही नहीं है। इस ग्रन्थ का नाम है आर्य भट्टीय। यह ४९९ ई० में लिखा गया था। इसके बाद आर्य भट्ट का लिखा हुआ एक दूसरा ग्रन्थ भी मिलता है जिसका नाम है 'तन्त्र'। आर्य भट्ट का जन्म ४७६ ई० में हुआ अर्थात् कलियुग के संवत् ३५७७ में इनका जन्म हुआ। आर्य भट्टीय ग्रन्थ का दूसरा नाम आर्य सिद्धान्त भी है।

आर्य भट्टजी के बाद एक और आर्य भट्ट भी हुए हैं। वे भी बड़े भारी ज्योतिर्विद थे। उनका काल ९५० ई० के लगभग का है। इसलिये जब हमें आर्य भट्ट कहना हो तो प्रथम आर्यभट्ट को जो ४७६ में हुए आर्य भट्ट प्रथम कहते हैं। और दूसरे आर्य भट्ट को आर्य भट्ट द्वितीय कहते हैं। आर्य भट्ट प्रथम के सिद्धान्त को भी प्रथम आर्य सिद्धान्त कहते हैं।

आर्य भट्ट प्रथम के समय एक युग ६० वर्षों का होता था। आर्य भट्ट प्रथम ने अपने जन्म के सम्बन्ध में स्वयं लिखा है कि जब वह २३ वर्ष का हुआ तो तीन युग पाद (अर्थात् सत्ययुग, त्रेतायुग और द्वापर युग) गुजर चुके थे और इतने युग पादों के गुजर जाने के बाद ६० वर्षों वाले ६० युग भी गुजर चुके थे। अर्थात् कलियुग के ६०× ६० = ३६०० साल गुजर चुके थे। इस प्रकार ३६०० में से २३ साल घटाने पर श्री आर्य भट्ट प्रथम का जन्म वर्ष पता चल जाता है।

देखिये आर्य भट्टीय काल क्रिया का दसवाँ श्लोक क्या कहता है--

षष्ट्यब्दानां षष्टिर्यदा व्यतीतास्त्रयश्च युगपादाः।
त्र्यधिकाविंशतिरब्दास्तदेह मम जन्मोऽतीताः।

अर्थ--जब तीन युगपाद और ६० वर्षों के ६० युग व्यतीत हो चुके थे तो मेरे जन्म को हुए हुए तीन अधिक बीस अब्द (वर्ष) हो चुके थे।

आर्य भट्ट ज्योतिष् शास्त्र एवं बीज गणित दोनों विद्याओं के धुरन्धर विद्वान् थे। इन्होंने अपने आर्य भट्टीय नामक ग्रन्थ को कुसुमपुर में बैठकर लिखा था। कुसुमपुर आज कल हम पटना कहते हैं और यह नगर बिहार प्रदेश की राजधानी है। देखिये निम्न श्लोक जो उनका लिखा हुआ है--

ब्रह्मकुशशिबुधभृगुरवि कुज गुरु
कोणभगणान् नमस्कृत्य।
आर्य भट्टस्त्विहंनिगदति,
कुसुमपुरे अभ्यर्चितं ज्ञानम्॥
आर्य भट्टीय गणितम्॥

अर्थ--मैं आर्य भट्ट ब्रह्म, कुशशि, बुध भृगु रवि कुज गुरु कोण और भगणों को नमस्कार

करके कहता हूं कि यह ज्ञान मैंने कुसुमपुर में अभ्यचित किया । अर्थात् इस ग्रन्थ को मैंने कुसुमपुर में लिखा आर्य भट्ट यह भी कहता है कि मैंने अपनी बुद्धि से सद्-असद् ज्ञान के समुद्र में गोता लगाकर जो देवताओं की कृपा से प्राप्त किया उस ज्ञान को इस पुस्तक में लिखता हूं । देखिये निम्न लिखित श्लोक--

क्षिति रवि योगाद्दिनकृत् रवीन्दु योगात् प्रसाधितश्चेन्दुः ।
शशि ग्रह योगात्तश्चैव तारा ग्रहाः सर्वे:
सदसद्ज्ञान समुद्रात् समुद्धृतं देवता प्रसादेन
सद्ज्ञानोत्तमरत्नं मया निमग्नं स्वमतिना ।

खोज द्वारा ऐसा पता लगता है कि आर्य भट्ट प्रथम ने दो माह ग्रन्थ लिखे थे । एक तो उस समय जबकि उस की आयु २३ वर्ष की थी । दूसरा तब जबकि वह अपनी परिपक्व आयु में था । पहले ग्रन्थ में युग का प्रारम्भ सूर्योदय से माना है । दूसरे में युग का प्रारम्भ मध्य रात्रि से माना गया है ।

आर्य भट्टीय शिक्षा परम्परा के अन्य ग्रन्थ जो अन्य ग्रन्थकारों के लिखे हुए हैं वे 'महाभास्करीय' और लघु भास्करीय' हैं । ये ग्रन्थ आर्य भट्टीय विचारों का पोषण करते हैं ।

जो युग सूर्योदय से प्रारम्भ हुआ माना जाता है उसे औदयिक कहते हैं और जो अर्द्ध रात्रि से प्रारम्भ होता है उस युग को आर्द्ध रात्रिक कहते हैं ।

आर्य भट्टीय ग्रन्थ संक्षिप्त है शुद्ध है और बहुत उत्तम शैली में लिखा गया है। सन् १८७४ में डा० एच् कर्न ने इस ग्रन्थ का सम्पादन किया था । उस पर परमाधीश्वर की लिखी हुई भट्टदीपिका नामक टीका भी मिलती है ।

लङ्कार्धरात्र समये दिन प्रवृत्तिं जगाद चार्यभटः ।
भूयः स एव सूर्योदयात् प्रभृत्याह लङ्कायाम् ।

अर्थ--लंका द्वीप में आधी रात से दिन शुरु होता है। ऐसा आर्य भट्ट ने कहा । (हमारा ग्रीनविच, आर्य भट्ट ने लंका माना था) । फिर उसी आर्य भट्ट ने लंका में ही सूर्योदय से दिन का प्रारम्भ कहा । आर्य भट्टीय पर दूसरी टीका सूर्यदेव यज्वन् की है । इस टीका का नाम भट्ट प्रकाशक है, या इस केवल 'प्रकाशिका' कह कर भी सूचित करते हैं ।

इन दोनों टीकाओं की हस्तलिखित प्रतियाँ दक्षिणी भारत की भाषाओं में उपलब्ध हुई थीं। भट्ट दीपिका नामक टीका मलयालम भाषा में मिली थी । इसकी लिपि मलयालम भाषा के 'ग्रन्थम्' अक्षरों मे थी । मलयालम भाषा में संस्कृत की सब ध्वनियों के सूचक अक्षर नहीं हैं । इसलिये मलयालम में कुछ और अक्षर बनाये गये हैं ताकि संस्कृत के सब अक्षरों की ध्वनियों को लिखा जा सके और बोला जा सके । इस लिपि को ग्रन्थम् लिपि कहते हैं । प्रकाशिका नामक टीका उपरोक्त दोनों टीकाओं में से अधिक पुरानी है । दीपिका के कई स्थलों पर प्रकाशिका टीका के उद्धरण दिये गये हैं ।

आर्य भट्टीय के दो भाग हैं । एक गणित स्कन्ध, दूसरा–जातक स्कन्ध ।

शेष ग्रन्थ पर विचार फिर कभी किया जायगा ।

शिक्षा-सम्मेलन की रपट

हरिद्वार–१३ अप्रैल १९७६

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के ७६ वें वार्षिकोत्सव पर आधुनिक परिप्रेक्ष्य में शिक्षा प्रणालियों पर विचार करने के लिये शिक्षा सम्मेलन का आयोजन हुआ। सम्मेलन की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री भूतपूर्व कुलपति कुरुक्षेत्र तथा चण्डीगढ़ विश्वविद्यालय पद्मभूषण डा० सूरजभान जी ने की। गुरुकुल विश्वविद्यालय के कुलपति श्री बलभद्र कुमार जी ने मान्य अतिथि को माल्यार्पण किया तथा उनके शिक्षा-क्षेत्र में की गई सेवाओं का परिचय दिया। सम्मेलन का उद्घाटन प्रयाग विश्वविद्यालय के रसायन विभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष डा० स्वामी सत्यप्रकाशानन्द जी ने किया। प्राचीन भारत में रसायन का विकास की भारतीय परम्परा जैसी अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति की कृतियों के लेखक के रूप में स्वामी जी शिक्षा-क्षेत्र में चर्चा के विषय रहे हैं। स्वामी जी ने उद्घाटन भाषण में कहा–ब्रिटिश सरकार जब शिक्षा के माध्यम से भारत के नव–युवकों को मानसिक पराधीनता की शृंखलाओं में जकड़ रही थी तब आर्य समाज ने बिना किसी भेदभाव के शिक्षा का द्वार सबके लिये खोल देने का आह्वान किया। आज आवश्यकता है कि भारत के पुनर्निर्माण में आर्य समाज के सांस्कृतिक, सामाजिक, चारित्रिक तथा शिक्षा सम्बन्धी विचारों को क्रियात्मक रूप में परिणत किया जाय।

प्रमुख वक्ता के रूप में भूतपूर्व कृषि राज्य मंत्री भारत सरकार प्रो० शेरसिंह ने विषय का विस्तार करते हुए कहा कि आर्य समाज की स्थापना नाना मतों और सम्प्रदायों के कारण फैलने वाले विद्वेष को दूर कर जीवमात्र के कल्याण की कामना के साथ हुई थी। सार्वभौम मनुष्यत्व का निर्माण कर व्यक्ति और समाज के बीच की दूरी को पाटना एवं समस्त मानव जाति की सर्वतोमुखी उन्नति का ध्येय उसका अन्तिम लक्ष्य है।

भारतीय इतिहास, राजतीतिशास्त्र, पुरातत्व और संस्कृति के प्रसिद्ध विद्वान्, मंगला प्रसाद पारितोषिक के समाहृत, गुरुकुल विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति डा० सत्य केतु विद्यालंकार ने गुरुकुल शिक्षा को सांस्कृतिक क्रान्ति का प्रतीक बताते हुए कहा–शिक्षा का उद्देश्य सामाजिक परिवर्तन तथा राष्ट्रीय वातावरण का निर्माण करना है। भारतीय परिवेश को ध्यान में रखते हुए समाज विज्ञान, विज्ञान तथा मानविकी के विषयों पर उत्कृष्ट मौलिक ग्रंथों का सृजन हिन्दी में होना चाहिए तभी शिक्षक–शिक्षार्थी उल्लेखनीय उपलब्धि पा सकते हैं। गुरुकुल ने स्वतन्त्रता से पूर्व ही इस दिशा में सक्रिय कदम उठाया था, अन्य विश्वविद्यालयों के लिए यह अनुकरण का विषय रहा है कि हिन्दी माध्यम से उक्त विषयों पर उच्चतम अध्यापन–अनुसंधान सर्वप्रथम इसी विश्वबिद्यालय में हुआ। गुरुकुल विज्ञान महाविद्यालय के प्राचार्य श्री सुरेशचन्द्र त्यागी ने छात्र-छात्राओं तथा अध्यापकों के निरर्थक लक्ष्य का विश्लेषण करते हुए बताया कि आज वास्तविक ज्ञान की अपेक्षा हम उपाधियों के पीछे दौड़ रहे

हैं, अतः शिक्षा का मूल लक्ष्य पिछड़ गया है।

अन्त में अध्यक्षीय पद से बोलते हुए डा० सूरज भान जी ने कहा—सत्य के प्रकाश के लिए आर्य-समाज ने शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्तिकारी कार्य किया। गुरुकुलों और डी० ए० वी० कालेजों की स्थापना के साथ देश के इतिहास में एक नई चेतना आई। भारतीय संस्कृति के अध्ययन को प्रोत्साहित और प्रचारित करने के साथ अंग्रेजी साहित्य और विज्ञान के क्रियात्मक पक्ष पर भी इन संस्थाओं ने बल दिया। उत्तर भारत के शिक्षण क्षेत्र में आर्यसमाज ने इन संस्थाओं द्वारा अतुलनीय योगदान दिया। भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण में यह भारतीय सचेतना मूलभूत कारण रही है। आधुनिक शिक्षा–प्रणालियों की चर्चा करने का यहां समय नहीं है किन्तु शारीरिक, प्राणिक, मानसिक शिक्षा के साथ अनुभव प्रधान व्यावहारिक और लोकोपयोगी शिक्षा की आवश्यकता हमें दृष्टिगोचर हो रही है। नैतिक और आध्यात्मिक ज्ञान के साथ आधुनिक विषयों की शिक्षा द्वारा देश की सामाजिक और आर्थिक प्रगति में सहायक होना, शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य है।

शिक्षा सम्मेलन के संयोजक डा० विष्णुदत्त राकेश ने अफ्रीकी मुक्ति संघर्ष की चर्चा करते हुए कहा कि शिक्षा आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की उपलब्धियों का पुस्तकीय ज्ञान प्राप्त करना ही नहीं है, उसके द्वारा मानवीय संवेदना का बोध तथा भागवत चेतना का जागरण भी अपेक्षित है। रंग, वर्ग, विचार का भेद समाप्त करना ही शिक्षा का लक्ष्य है और आर्य समाज ने इस दिशा में क्रान्तिकारी कदम उठाया था। वर्तमान भयावह परिस्थितियों में गुरुकुल-शिक्षा-प्रणाली अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

इस परिचर्चा में श्री सच्चिदानन्द शास्त्री, अनुसंधायक लखनऊ विश्वविद्यालय, डा० सत्यदेव प्रसाद वेदालंकार, अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, मगध विश्वविद्यालय, आचार्य प्रियव्रत वेद-वाचस्पति विद्यामार्त्तण्ड, कुलाधिपति श्री पृथ्वी सिंह जी आजाद तथा सभा मंत्री श्री वीरेन्द्र जी भी उपस्थित थे। तदुपरान्त विश्वविद्यालय की क्रीड़ा प्रतियोगिता तथा संग्रहालय सप्ताह सांस्कृतिक कार्यक्रम के पुरस्कृत छात्रों को डा० सूरज भान जी ने पुरस्कार प्रदान किए। मुख्य अतिथि के आशीर्वाद के साथ सम्मेलन समाप्त हुआ।

डॉ० विष्णुदत्त राकेश
संयोजक

व्रत प्रधान भारतीय शिक्षा

स्वामी समर्पणानन्दजी

आज मानव समाज की अत्यन्त दुर्दशा है। प्राकृतिक वैभव अपनी पराकाष्ठा पर पहुंच चुका है। किन्तु उसका फल विध्वंस ही विध्वंस दीख रहा है। इसका कारण क्या है? प्रकृति के जिन तत्वों को मानव ने खोज निकाला है, उनके सदुपयोग के लिए जो सदाचार, भ्रातृभाव तथा जितेन्द्रियता अपेक्षित है, वह आज मानव समाज में नहीं है, इससे बढ़कर दुःख की क्या बात है कि मानव समाज इसका उपाय ठीक नहीं सोच रहा है। आज समाजवादी तथा साम्यवादी लोग कहते हैं, कि यदि भोज्य पदार्थ पर्याप्त मात्रा में उत्पन्न हो तथा उनका वितरण ठीक हो तो मानव समाज के दुःख दूर हो जायेंगे। वह बात कुछ अंश तक ठीक है। जो लोग भूख और दरिद्रता के कारण बुराइयाँ करते हैं, वह इससे दूर हो जायगी, परन्तु भूख और दरिद्रता से बढ़कर तृष्णा और भोगवाद है। उसकी चिकित्सा तो क्या करनी थी, समाजवादी और साम्यवादी दोनों उसको बढ़ाने में लगे हुए हैं।

दरिद्रता और भूख के कारण ही बहुत अंश तक यह भोगवाद है। वितरण के दोष इसी से उत्पन्न होते हैं। आज संसार में अन्न और वस्त्र की इतनी कमी नहीं, जितनी मनुष्यता की है। उसको उत्पन्न करने के साधन हैं, ईश्वर भजन, त्याग, ब्रह्मचर्य, जितेन्द्रियता, सत्संग और इन सबको एक शब्द में कहना हो तो वह हैं उत्तम-शिक्षा। उस की ओर मानव समाज का ध्यान नहीं जा रहा। हमारी सम्मत्ति में उत्तम-शिक्षा मानव समाज की अन्तिम शरण है।

परन्तु उत्तम शिक्षा का लक्षण भी तो कुछ होना चाहिए। यही बात आज हम इस लेख में दिखाना चाहते हैं। आज हम शिक्षाशास्त्र का परम मौलिक, परमोपयोगी, परमापेक्षित, सिद्धान्त संसार के सामने रखना चाहतें परन्तु न जाने इसका शिक्षा शास्त्र में उपयोग क्यों नहीं किया जाता। वह सिद्धान्त है व्रत हम किसी सैनिक को सेना में भर्ती नहीं करते, जब तक उसको झण्डे के सामने खड़ा करके राष्ट्र की उससे शपथ नहीं ले ली जाती। इसी प्रकार राष्ट्रपति, सेनापति, राष्ट्र के मन्त्रिमण्डल, संसद के सदस्य आदि सब लोगों से शपथ ली जाती है। हमारा गृहस्थ आश्रम इसी शपथ के आधार पर खड़ा है। विवाह क्या है? स्त्री, पुरूष के एक दूसरे के सुख-दुःख में जीवन भर साथ देने की शपथ। वह शपथ हवन-कुण्ड के सामने हो, चाहे रजिस्ट्रार के दफ्तर में, इससे कुछ अन्तर नहीं पड़ता, शपथ तो शपथ है।

किन्तु मनुष्य के भविष्य जीवन के मूलाधार शिक्षणालय में कोई शपथ नहीं।

प्राचीन ऋषि मुनियों ने इसी रहस्य को समझ उपनयन संस्कार चलाया था। मानव जाति के तीन महाशत्रु है। (१) अभाव (२) अन्याय (३) अविद्या।

प्राचीन मर्यादानुसार प्रत्येक विद्यार्थी को विद्या आरम्भ से पहले इन तीन महा शत्रुओं में से एक के साथ लड़ने के लिये अपना जीवन समर्पण करना पड़ता था। इसके लिये जो दीक्षा दी जाती है वही उपनयन संस्कार था। इसलिए प्राचीन काल में विद्यार्थी को व्रती या वर्णी कहते थे। वर्णी इसलिए कि वह इन तीनों में से एक शत्रु नाश के लिए व्रत करता था। अभाव दुःख से लड़ने का व्रती वैश्य, अन्याय दुःख से लड़ने का व्रती क्षत्रिय, अविद्या दुःख से लड़ने का व्रती

ब्राह्मण कहलाता था। जो अयोग्यता के कारण इन तीनों में से कुछ न बन सके, वह यदि अपनी अवस्था पर शोक करके इनमें से किसी के पास रहकर अपनी सुश्रुषा द्वारा व्रत पालन का लाभ लेता था, वह शूद्र कहलाता था। वह चुनाव करता था कि दुष्ट की सेवा नहीं करूंगा। किसी न किसी लोक सेवक की ही सेवा करूंगा, यह उसका चुनाव था। इसलिए यह भी वर्णी कहलाता था।

आज की शिक्षा में व्रत का कोई स्थान नहीं, न कोई व्रत की महिमा की ओर ध्यान देता है। अब देखिये कि यदि किसी दुर्बल पर मार पड़े, तो व्रती तो मर मिटेगा, किन्तु व्रतहीन कहेगा मुझे क्या गरज पड़ी है जो मैं इसकी मुशीबत में भाग लूं। बस यह पराई मुसीमत में अपने आपको मिटा देने की दीक्षा ही थी जिसने प्राचीन काल में मानव जाति को इतना ऊंचा उठाया था।

ब्राह्मण कहता था यदि नगर व ग्राम में एक भी विद्याहीन हें तो मुझे धिक्कार है। क्षत्रिय कहता था कि यदि नगर व ग्राम में एक दुर्बल पर भी बलवान अत्याचार करता है तो मुझे धिक्कार है, मेरे जीने से क्या लाभ, वैश्य कहता था कि यदि मेरे नगर व ग्राम में कोई भोजन बिना भूखा मरता है तो मुझे धिक्कार हैं। मनु ने लिखा है यदि कोई मनुष्य जिसे मजदूरी न मिले तो, जिसके घर भोजन पका हो, उससे कह कर उठा कर खालें, उसे चोरी या डाके के अपराध में नहीं पकड़ा जायेगा। बस जो कुछ आज साम्य-वादी चाहते हैं वह इसमें बहुत सुन्दरता से हो जाता था, सच कहिए तो उससे अधिक होता था।

बस हमारी संस्कृति का मूल तत्व है अधि-कतम मात्रा में स्वेच्छा पूर्वक श्रम और बल का न्यूनतम प्रयोग।

इस अधिकतम स्वेच्छापूर्वक श्रम की भावना जागृत करने का उपाय है शिक्षा के पहले की दीक्षा।

यह दीक्षा ही प्राचीन शिक्षा शास्त्र का वह आदर्श सिद्धान्त है, जिसके कारण हम कह सकते है कि इस दु:खी मानव समाज की शिक्षा मान-वता की दीक्षा ही है।

—०—

शिक्षा-सम्मेलन का एक दृश्य—दांयी ओर से प्रो० शेरसिंह, भूतपूर्व कृषि राज्य मंत्री, श्री बलभद्रकुमार जी कुलपति, श्री वीरेन्द्र जी सभा मंत्री, आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति, डॉ० गंगाराम गर्ग कुलसचिव एवं डॉ० विष्णुदत्त राकेश संयोजक

आर्यभट्ट

श्री पदमसिंह देशवाल

१६ अप्रैल १६७५से आर्य भट्ट का नाम बार-बार प्रकाश में आ रहा है। इस दिन भारत के वैज्ञानिकों ने एक उपग्रह छोड़कर इस देश में विज्ञान और तकनीकी क्षेत्र में हो रही प्रगति का परिचय दिया है। इस उपग्रह को छोड़ने के लिये यह दिन विशेष रूप से चुना गया था। इस दिन इस देश में एक महान् गणितज्ञ का जन्म हुआ था। भारत के वैज्ञानिकों ने उसका जन्म-दिवस एक उपग्रह छोड़कर मनाया था और उसे श्रद्धांजलि समर्पित की थी उस महान् गणितज्ञ के नाम पर ही इस उपग्रह का नाम आर्य भट्ट रखा गया है।

प्रसिद्ध गणितज्ञ आर्य भट्ट का जन्म १६अप्रैल४७६ को पाटलीपुत्र (जिसे आजकल पटना कहते हैं) के पास कुसुमपुरा नामक गाँव में हुआ था। भारत में उस समय गुप्तकालीन राज्य था। उस राज्य में साहित्य, ज्योतिष और गणित आदि कलाओं का विशेष विकास हुआ था। कालिदास ने अभिज्ञान शाकुन्तलम् उसी समय में लिखा था। आर्यभट्ट ने भी अपनी सर्वोत्तम उपलब्धि आर्य-भाटियम् नामक पुस्तक की रचना उसी समय में की थी जो उन्होंने सन् ४६६ में लिखी थी। गणित के क्षेत्र में इस देश की देन के रूप में यह पहली पुस्तक थी जो विश्व-ख्याति को प्राप्त हुई थी। इससे पहले इस देश में गणित कोई खास विकसित नहीं समझा जाता था।

साहित्य के क्षेत्र में कालिदास के अभिज्ञान शाकुन्तलम् ने जो विश्व-ख्याति प्राप्त की है ठीक उतनी ही ख्याति आर्यभट्ट के 'आर्यभाटियम्' ने गणित के क्षेत्र में प्राप्त की है। उन्होंने अंक-गणित, बीजगणित और रेखागणित सभी में महत्व-पूर्ण योगदान दिया है। आर्यभट्ट आधुनिक बीज-गणित के जन्मदाता हैं। वे सबसे पहले गणितज्ञ हैं, जिन्होंने द्वितीय कोटिका समीकरण का हल निकाला है। इससे पूर्व केवल प्रथम कोटिका समीकरण तक ही हल निकाला गया था। जिस शून्य के जन्मदाता भारतीय गणितज्ञ 'रामानुजन्' हैं, आर्यभट्ट ने उस शून्य के महत्व का भली-भांति वर्णन किया है। आर्यभट्ट और दूसरे भारतीय विद्वानों ने कुछ विशेष प्रकार के अनिश्चित समीकरण को हल करने का नियम दिया है, जिससे सिद्ध होता है कि उन्हें वितत भिन्न की अच्छी जानकारी थी। रेखागणित में उन्होंने त्रिकोणमितीय फलन की परिभाषा दी है। संसार के पहले गणितज्ञ हैं जिन्होंने 'पाई' (π) जो गणित में एक विशेष अंक है, का चार दशमलव तक सही मूल्यांकन किया है। जिसका मूल्य आज के दूसरे तरीकों से जाँच करने पर सही पाया गया है। दूसरे अनेक विद्वानों ने अपने-अपने तरीकों से 'पाई' का मूल्य निकालने का प्रायस किया, परन्तु सभी के आंकड़े 'पाई' के आज के मूल्य (२२।७) से भिन्न पाये गये हैं। यह उनकी सबसे बड़ी देन रही हैं। उन्होंनें इसके लिये एक विशेष तरीका खोजा था, जिसे बाद में भारतीय और अरब के गणितज्ञों ने अपनाया है। अभी हाल में हुए अनुसंधान कार्यो से 'यह ख्याल कि आर्यभट्ट का 'पाई' का मूल्य यूनानी तरीकों पर आधारित है, निराधार सिद्ध हुआ है। खगोल विज्ञान में भी उनका योगदान महत्वपूर्ण रहा है। उन्होंने पृथ्वी का सूर्य के इर्दगिर्द चक्कर लगाने के महत्त्व

को समझकर अनेक महत्वपूर्ण परिणाम निकाले हैं। अनेक खगोलीय पिन्डों के भौतिक प्राचल ज्ञात किये हैं। उदाहरणार्थ पृथ्वी और चन्द्रमा के व्यास के माप निकाले हैं।

आर्यभट्ट की उपलब्धियों से प्रेरणा लेकर ही अथक परिश्रम के बाद प्रो· एस· धवन और प्रो·यू·आर·राव के नेतृत्व में वैज्ञानिकों ने आर्यभट्ट नामक उपग्रह छोड़ा है और गणितज्ञ आर्यभट्ट के नाम को अमर कर दिया है।

०००००००
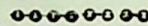
सतगुर सवां न को सगा, सोधी सईं न दाति।
हरि जी सवां न को हितू, हरिजन सईं न जाति॥

× × ×

गुर सिकलीगर कीजिए, ग्यांन मसकला देइ।
सबद छोलना छोलि कै, चित दरपन करि लेइ॥

× × ×

सतगुर की महिमां अनंत, अनंत किया उपगार।
लोचन अनंत उघारिया, अनंत दिखावन हार॥

× × ×

वलिहारी गुर आपकी, द्यौहाड़ी सौ बार।
जिन मानिख तैं देवता, करत न लागी बार॥

——कबीर
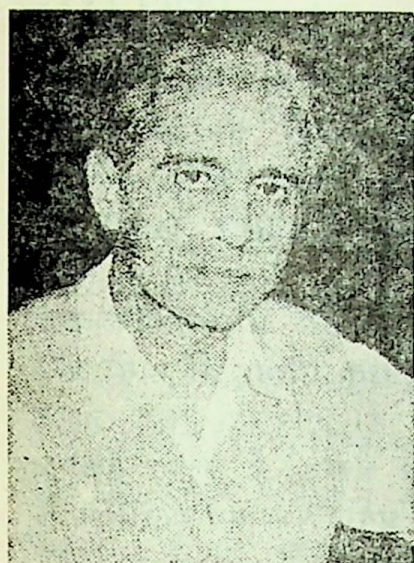
प्रो० सतीश धवन
व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रो० रामाश्रय मिश्र, हिन्दी विभाग
गु० कां० विश्वविद्यालय, हरिद्वार !

भारत की वैज्ञानिक उपलब्धियों के इतिहास में १९ अप्रैल, १९७५ का दिन स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा । उसी दिन भारतीय उपग्रह आर्यभट ने लगभग ३० हजार किलोमीटर प्रति घण्टे की गति से पृथ्वी की परिक्रमा करना प्रारम्भ किया था । इस उपग्रह का आर्यभट नाम क्यों रखा गया ? यह भी बहुत महत्वपूर्ण घटना है ।

मास्को रवाना होने के ठीक पहले प्रो· सतीश धवन प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी से मिले और उन्हें इस तथ्य से अवगत कराया कि आर्यभट उपग्रह सम्बधी परियोजना अन्तिम चरण में है । उस समय प्रधान मन्त्री ने इस बात पर विशेष बल दिया कि भारतीय विज्ञान देश के विकास और भविष्य के लिए अत्यधिक महत्व वाली एक महान् घटना की दहलीज पर है । साथ ही श्रीमती इन्दिरा गांधी ने सुझाव दिया कि उपग्रह का नाम पूर्व के महान् ज्योतिर्विद और गणितज्ञ आर्यभट्ट के नाम पर रखा जाये । उनका जन्म १५ शताब्दी पहले पाटलिपुत्र जिसे आजकल पटना कहते हैं के गंगा-तटवर्ती ग्राम कुसुमपुर में हुआ था । उनकी जन्मस्थली प्राचीन पाटलिपुत्र से ज्यादा दूर नहीं थी । आर्यभट्ट ने तेइस वर्ष की आयु में विज्ञान में असाधरण सफलता पायी । उन्होंने गणितीय विधि से इस बात को सिद्ध कर दिया कि पृथ्वी सूर्य के चतुर्दिक घूमती है और बीजगणित एवं त्रिकोणमिति सम्बन्धी उनकी कृतियाँ गौरव ग्रन्थ बन गयी हैं । आर्यभट्ट-पूर्व के कोपर्निकस-अपने समय से सदियों आगे थे । उनका कार्य-कलाप उन वैज्ञानिकों के लिए प्रेरणा दायक रहा है जिन्होंने उपग्रह पर काम किया है । प्रसंगवश इसका उल्लेख वांछनीय होगा कि अधिकांश वैज्ञानिकों की आयु उतनी ही है जितनी आर्यभट्ट की उस समय थी जब वह अपनी अमर कृतियाँ लिख रहे थे ।

ऐसे अपूर्व वैज्ञानिक की जन्म-दिवस शताब्दी को कार्य रूप में परिणत कर जहां विश्व के सामने हमारे आधुनिक वैज्ञानिकों ने एक कीर्तिमान स्थापित किया है वहीं उस दिवगंत आर्यभट्ट की जन्म शताब्दी पर आर्यभट का प्रक्षेपण कर १९ अप्रैल, १९७५ एवं आर्यभट्ट को सदा-सदा के लिए अमर कर दिया है ।

सन् १९७० में स्पर्गीय डॉ० विक्रम साराभाई ने प्रो· यू० आर० राव की अध्यक्षता में त्रिवेद्रम में अन्तरिक्ष केन्द्र के अंग के रूप में

उपग्रह प्रणाली प्रभाग की स्थापना की थी। १० मई १९७२ को भारतीय अन्तरिक्ष अनुसन्धान संगठन और सोवियत अकादमी ऑफ साइंसेस के बीच आर्यभट के प्रक्षेपण के समझौते पर हस्ताक्षर हुए। इसी वर्ष सितम्बर मास में उपग्रह निर्माण कार्य शुरू करने के लिए पीन्या बंगलोर के इन्डस्ट्रियल क्षेत्र में कुटीरों को लिया गया तथा बंगलोर में प्रथम सिस्टम का रिव्यू हुआ। इसी वर्ष प्रो. सतीश धवन भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन के अध्यक्ष बने। सन् १९७३ पहला रोहिणी राकेट छोड़ा गया और एक वर्ष द भारत और सोवियत संघ में मॉडल उपग्रह । परीक्षण किया गया। दो महीने बाद परीक्षण मॉडल को सोवियत संघ ले जाया गया तथा १९ अप्रैल, १९७५ को उपग्रह आर्यभट का प्रक्षेपण किया गया।

इस महान् कार्य के इतने शीघ्र सम्पन्न करने का श्रेय भारतीय अन्तरिक्ष शोध संगठन के अध्यक्ष प्रो. सतीश धवन एवं सोवियत संघ की विज्ञान अकादमी की अन्तर्ब्रह्माण्डीय परिषद के अध्यक्ष अकादमीशियन बी० एन० पेत्रोव को है।

भारत की साहसिक युवा पीढ़ी के निष्ठावान् वैज्ञानिक अत्यन्त सरल एवं आध्यात्मिक जीवन यापन करने वाले प्रो० सतीश धवन के कारण ही यह महान् उपलब्धि सम्भव हो सकी। ऐसे महान् वैज्ञानिक का जीवन परिचय लिखने की प्रबल कामना इस विशेषांक हेतु हुई। सौभाग्य या दुर्भाग्य से कुछ कह नहीं सकता, आपका जो चित्र मुझे प्राप्त हुआ उससे मैं आश्चर्य चकित ही रहा। खुला हुआ कॉलर वह भी नीली चैक्ड खिलाड़ियों की सामान्य आधी बांह की कमीज, भूरे रंग का स्वैटर, घड़ी में लगा हुआ लाल-काला आकर्षक फीता, लहराते हुए बाल मानो कातो हुई चाँदी हों आदि का समन्वित दृश्य जहाँ सादा जीवन उच्च विचार की प्रतिमूर्ति बना हमारे सम्मुख खड़ा था वहीं मैं इस महान् वैज्ञानिक के चित्र को देखकर विस्मृत ही हो गया। क्योंकि मुझे तो यह आर्यभट का ही चित्र दृष्टिगोचर हो रहा था। हो भी कैसे न, आर्यभट में अस्थि पंजर का काम तो वैज्ञानिक कल-पुर्जे ही कर रहे हैं किन्तु आत्मा तो मानो प्रो० धवन की ही पृथ्वी की परिक्रमा कर रही है अन्यथा ६ मास की अवधि के लिए प्रक्षेपित आर्यभट दूना समय अर्थात् पूरा वर्ष व्यतीत करके भी गतिमान कैसे होता ?

प्रो. सतीश धवन का जन्म २५ सितम्बर, १९२० को श्रीनगर काश्मीर में हुआ। आपने राजकीय विद्यालय लुधियाना एवं लाहौर में शिक्षा ग्रहण करके सन् १९३८ में गणित एवं भौतिकी विषय लेकर बी.ए. की उपाधि प्राप्त की। स्नातकोत्तर अध्ययन पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ में किया। जहाँ से सन् १९४१ में अंग्रेजी साहित्य में एम०ए० की उपाधि प्राप्त की। सन् १९४४ में मैकेनिकल इन्जीनियरिंग लेकर बी०एस– सी० आनर्स की उपाधि प्रथम श्रेणी एवं प्रथम स्थान में प्राप्त की।

कुछ समय हिन्दुस्तान एयर क्राफ्ट लि० के के हैवी बॉम्बर्स डिवीजन में कार्य किया। तत्पश्चात् वैमानकीय अभियांत्रिक (एयरोनाटिकल इन्जीनियरिंग) की उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए भारत-सरकार से छात्रवृति लेकर अमेरिका चले गये। इन्होंने सन् १९४६-४७ तक 'मिनेसोटा' विश्वविद्यालय में अध्ययन किया एवं एम०ए० की उपाधि प्राप्त की। सन् १९४७–५१, तक कैलीफोर्निया औद्योगिकी संस्थान (इन्स्टीटयूट ऑफ टेक्नालॉजी) में सहायक स्नातक अनुसंधित्सु (ग्रेजुएट रिसर्च असिस्टेण्ट) के रूप में

कार्य किया। जहाँ आपने सन् १६४६ में वायुगतिकी (एयरो डायनेमिक्स) का विशेष अध्ययन करके वैमानिकीय अभियांत्रिक (एयरोनाटिकल इन्जीनियर्स) की उपाधि प्राप्त की। सन् १६५१ में वैमानिकी (एयरोनाटिक्स) एवं गणित में पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त की।

सन् १६५१ में अमेरिका से भारत लौटे तथा भारतीय विज्ञान संस्थान बंगलोर के वैमानकीय अभियांत्रिक विभाग में कार्य प्रारम्भ किया। जिससे आज तक आपका सम्बन्ध बना है। जहाँ आपने सन् १६५१–५२ तक वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी, सन् १६५२–५५ तक सहायक आचार्य (असिस्टैण्ट प्रोफ़ेसर), सन् १६५५–६२ तक आचार्य एवं अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। सन् १६६३ से आप भारतीय विज्ञान संस्थान के निदेशक के रूप में कार्यभार संभाले हुए हैं। साथ ही वैमानकीय अभियांत्रिक विभाग के आचार्य पद पर भी कार्य कर रहे हैं। सन् १६७१–७२ में कैलीफोर्निया के प्रौद्योगिकीय संस्थान (इन्स्टीट्यूट ऑफ टैक्नालॉजी) में विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में कार्य किया। उसके पश्चात् आप पुनः भारत आ गये और उपग्रह आर्यभट के प्रक्षेपण कार्य में दत्तचित हो गये। जिसका उल्लेख हम ऊपर कर आये हैं।

गत दशक से भारतवर्ष में वैमानिकी के विकास में आप लगे हुए हैं। आप ने अनेक शोध-निबन्ध (रिसर्च पेपर्स) लिखे हैं तथा तरल पदार्थ की यांत्रिकी और वैमानिकी विशेषकर तीव्र गतिवाली समस्याओं, सीमा सतह, ट्रान्सोनिक तथा सुपर सोनिक सुरंगों, क्षुब्धता, संक्रमण प्रपंच आदि की जानकारी से अवगत कराया है। आप रॉयल एरोनाटिकल सोसायटी एवं भारतीय विज्ञान अकादमी के फेलो तथा भारतीय वैमानकीय सोसायटी के सदस्य हैं। इसके अतिरिक्त फिजिकल रिसर्च लैबोरेटरी मैनेजमेंट कौंसिल, इण्डियन नेशनल कमेटी फॉर स्पेस रिसर्च, दी एटामिक एनर्जी कमीशन, दी बोर्ड ऑफ पोस्ट ग्रेजुएट इन्जीनियरिंग एण्ड रिसर्च ऑफ ऑल इण्डिया कौंसिल फॉर टेक्निकल एजूकेशन तथा इण्डो-सोवियत ज्वाइण्ट कमेटी फॉर साइंटीफिक कोआपरेशन के सदस्य भी हैं। सन् १६६८ में 'एक्सप्लोरेशन एण्ड पीस फुल यूज़ेज़ ऑफ आउटर स्पेस' पर होने वाली युनाइटेड नेशन की कान्फ्रेंस में भारतीय प्रतिनिधि मंडल के सदस्य थे।

भारत के राष्ट्रपति ने सन् १६६६ में पद्म-श्री एवं १६७१ मे पद्म-भूषण की उपाधि देकर आपको ही नहीं अपितु भारत को गौरान्वित किया। इस महान् वैज्ञानिक की रुचि भी अनोखी है। जिसमें बच्चों के लिए खिलौने बनाना आपका मुख्य शौक है। इस प्रकार आपके व्यक्तित्व में साहित्य, विज्ञान एवं कला आदि का अपूर्व समन्वय दृष्टिगोचर होता है। भारत सरकार ने परिवार-नियोजन पर कुछ दिनों से विशेष बल दिया है किन्तु आपने अपने परिवार को बहुत पहले से ही सुनियोजित कर रखा है अर्थात् आपके दो पुत्रियाँ एवं एक पुत्र है। भारत के ही नहीं, विश्व के इस महान् वैज्ञानिक को मेरा शत-शत नमन है ॥ अस्तु ॥

गुरुकुल की यज्ञस्थली से—

दीक्षान्त समारोह पर कुलपति द्वारा सम्बोधन

बलभद्र कुमार

परम सम्मानीय महामहिम राज्यपाल महोदय ! माननीय कुलाधिपति जी ! विश्वविद्यालय शिक्षा एवं प्रवन्ध में सहभागी समस्त बन्धुजन ! संरक्षकगण ! देवियो ! सज्जनों ! छात्रजन ! एवं नवउपाधिप्राप्तकर्त्ता स्नातकवर्ग !

आज अपने बीच में महामहिम राज्यपाल महोदय को पाकर हम सब कुलवासी अत्यन्त उल्लास का अनुभव कर रहे हैं। हमारा निमंत्रण पाकर, शासकीय कार्यों में अत्यन्त व्यस्त होते हुये भी आपने दीक्षान्त संस्कार में सम्मिलित होना तथा नव स्नातकों को आशीर्वाद देना स्वीकार किया, एतदर्थ विश्वविद्यालय के कुलपति होने के नाते मैं उनका अत्यन्त कृतज्ञ हूं।

इससे पूर्व कि मैं महामहिम राज्यपाल जी से दीक्षान्त भाषण के लिये प्रार्थना करूं संक्षेप में इस संस्था का परिचय एवं गत वर्ष की रिपोर्ट आपके सम्मुख प्रस्तुत करना चाहता हूं।

जब-जब देश का कोई भाग दुर्भिक्ष, जल विप्लव, महामारी या विदेशी आक्रमण आदि से आक्रान्त हुआ, तब-तब इस संस्था ने तन-मन-धन से अपना सहयोग अर्पित किया। भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के इतिहास में भी गुरुकुल की भूमिका उल्लेखनीय है। जब-जब देश की पुकार हुई तब-तब यहाँ के अधिकारियों, स्नातकों कर्मचारियों तथा छात्रों ने तत्संबंधी कार्यक्रमों में सक्रिय भाग लिया।

गुरुकुल काँगड़ी के शैक्षणिक स्तर को देखते हुए जून, १९६२ में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने इसे विश्वविद्यालय की मान्यता प्रदान की। गुरुकुल की विद्यालंकार, वेदालंकार, सिद्धान्तालंकार, आयुर्वेदालंकार, वेदवाचस्पति तथा विद्यावाचस्पति उपाधियां पहले से ही विश्व विश्रुत थीं। इनके अतिरिक्त अब हिन्दी, अंग्रेजी वेद, संस्कृत, दर्शन, मनोविज्ञान, प्राचीन भारतीय इतिहास और गणित जैसे प्रमुख विषय स्नातकोतर स्तर पर खोले गए और भौतिक विज्ञान, रसायन-शास्त्र, जीवविज्ञान, वनस्पतिशास्त्र तथा गणित को लेकर बी० एस-सी० कक्षाएं प्रारंभ की गई। शोध-कार्य को भी प्रोत्साहन दिया गया। वेद संस्कृत, हिन्दी और प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व में उच्च स्तरीय मौलिक अनुसंधान करके अनेक छात्र पी-एच० डी० उपाधि प्राप्त कर चुके हैं। वेद महाविद्यालय, विज्ञान महाविद्यालय, आयुर्वेद महाविद्यालय, द्रव्य विज्ञान संग्रहालय तथा पुस्तकालय अपनी महत्तम उपलब्धियों एवं उल्लेखनीय कृतियों के कारण इस जनपद में अग्रगण्य है।

गुरुकुल शिक्षा पद्धति में जो प्रधान मूलभावना निहित है वह गुरु-शिष्य का अन्तरंग सम्बन्ध है। ऋषियों की मर्यादा के अनुसार जब बालक गुरुकुल में प्रवेश करता है तब उसका उपनयन संस्कार किया जाता है। उपनयन का अर्थ ही है—समीप लाना। अथर्ववेद के अनुसार आचार्य शिष्य का उपनयन संस्कार करके उसे इतना अधिक अपने निकट ले जाता है, मानो माता-पिता के समान उसे अपने गर्भ में ही स्थापित कर लेता है। इसके अतिरिक्त विविध विद्याओं का शिक्षण, ब्रह्मचर्य,

सादा जीवन और उच्च विचार, तपस्या, धनी-गरीब सबके साथ समान व्यवहार, जाति-पांति का भेद न होना, प्राचीन और नवीन विद्याओं का गुरुकुल शिक्षण-प्रणाली के आधार-भूत अंग हैं। इन्हीं आदर्शों पर यह गुरुकुल विश्वविद्यालय चलने का यत्न कर रहा है। कभी हम लड़खड़ाते भी हैं, गिरते-पड़ते हैं, तो भी हमारी आगे बढ़ने की दिशा उन्हीं आदर्शों के अनुसार निर्धारित है और उन्हीं आदर्शों की पूर्ति के लिए हम प्रभु का, देश के कर्णधारों का और जनता-जनार्दन का आशीर्वाद चाहते हैं।

इस विश्वविद्यालय की नींव है हमारा विद्यालय विभाग। इसमें हम छः वर्ष से दस वर्ष की आयु के बालकों को प्रविष्ट करते हैं। तथा सभी प्रान्तों से और कभी-कभी विदेशों से भी बालक आश्रम जीवन यापन तथा शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते है। शारीरिक व्यायाम, खेलकूद स्काउटिंग आदि की शिक्षा ग्रहण करते हैं।

यहां का वेद महाविद्यालय भी अपनी एक पृथक् विशिष्टता रखता है। इस महाविद्यालय में वेदालंकार परीक्षा में वेद,-वेदांग, संस्कृत साहित्य तथा भारतीत दर्शनशास्त्र की अनिवार्य उच्च शिक्षा के साथ-साथ अंग्रेजी भाषा, हिन्दी साहित्य, मनोविज्ञान, इतिहास आदि के शिक्षण का प्रबन्ध है। इस प्रकार प्राचीन और नवीन का सुन्दर समन्वय है। इसके अतिरिक्त इस महाविद्यालय में वेद तथा संस्कृत विषयों में एम० ए० तथा पी-एच०डी० का भी प्रबन्ध है।

कला महाविद्यालय में विद्यालंकार परीक्षा में संस्कृत तथा प्राचीन भारतीय संस्कृति का सामान्य ज्ञान अनिवार्य रूप से कराया जाता है। इसके अतिरिक्त छात्र कोई तीन विषय अपनी इच्छानुसार चुनते हैं। आगे विभिन्न विषयों में एम० ए० तथा पी-एच० डी० की भी व्यवस्था है। विज्ञान का क्रियात्मक शिक्षण देने के लिए हमारे पास सुसज्जित एवं सुव्यवस्थित प्रयोगशालाएं विद्यमान हैं।

आयुर्वेद महाविद्यालय में पांच वर्ष का पाठ्यक्रम है, जिसमें आयुर्वैदिक तथा एलोपैथिक दोनों चिकित्सा प्रणालियों का ज्ञान कराया जाता है। छात्रों को चिकित्सा का क्रियात्मक ज्ञान कराने के लिए तथा समीपस्थ ग्रामवासियों की सेवा के लिए रोगी, सुश्रुषा-गृह भी विद्यमान है। जिनमें लगभग १०० रोगियों के लिए शैयाएं है। यहाँ एक प्राचीन संग्रहालय भी है जिसकी स्थापना १९५० ई० में की गई थी। इस संग्रहालय में प्राचीनतम सोने, चाँदी, तांबे, अष्टधातु आदि के सिक्के, पाण्डुलिपियाँ, मूर्तियां, मृणमूतियाँ, पुरातन चित्रकला आदि के नमूने विद्यमान हैं।

इस संस्था में एक विशाल पुस्तकालय है जिसमें विभिन्न विषयों की लगभग ९२,००० पूस्तकें हैं। पुस्तकालय में इस विश्वविद्यालय के छात्रों के अतिरिक्त बाहर से भी शोधार्थी आते हैं जो यहां के संदर्भ ग्रंथों का लाभ उठाते हैं। मैं इस बात का भी उल्लेख करना चाहूंगा कि गुरुकुल पुस्तकालय में हम आर्य समाज के सम्पूर्ण साहित्य का संग्रह करने जा रहे हैं, ताकि भविष्य में यह सामग्री शोधार्थियों को आसानी से सुलभ हो सके।

इसके अतिरिक्त हमारे पुस्तकालयध्यक्ष श्री जबरसिंह सैंगर के नेतृत्व में गुरुकुल के समीपस्थ ग्रामीण क्षेत्र में गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय पुस्तकालय की १० शाखाएं खोलने का भी

निर्णय लिया गया है, ताकि ग्रामीण जनता को उनके लिए उपयोगी साहित्य उपलब्ध कराया जा सके। यह योजना राजा राममोहन राय फाउण्डेशन के सहयोग से आरंभ की जा रही है।

उन्हीं ग्रामों में मेरे सहयोगी डा० अनन्तानंद के नेतृत्व में आयुर्वेद चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने की भी योजना है।

श्रीमन् !

अब मैं आपके समक्ष इस संस्था ने गतवर्ष जो कार्य किया है उसका संक्षिप्त ब्यौरा प्रस्तुत करना चाहूंगा। सबसे पहले मैं श्रद्धानन्द शोध स्थान का जिक्र करूंगा। आर्ष साहित्य में शोध की आवश्यकता को दृष्टिगोचर रखते हुए इस संस्थान की स्थापना की गई है। इसके निर्देशक मेरे सुयोग्य अग्रज डा० सत्यकेतु विद्यालंकार हैं।

जैसा कि विद्वद्जनों को विदित ही है कि प्रो० गुरुदत्त ने पिछली शताब्दी में वैदिक मैगजीन का का प्रकाशन प्रारम्भ किया था। उनके देहान्त के बाद यह बन्द हो गया था। पुनः प्रो० रामदेव ने इसका प्रकाशन गुरुकुल से १९०७ ई० में प्रारंभ किया। एवं यह पत्रिका १९३६ ई० तक सफलता पूर्वक प्रकाशित होती रही। इस पत्रिका के माध्यम से टालस्टाय एवं रोमियाँ रोलां का राम देव जी से पत्र व्यवहार हुआ। अब हमने वैदिक पाथ, के नाम से, वैदिक मैगजीन को पुनर्जीवित किया है। यह पत्रिका अंग्रेजो में है और इसके माध्यम से भारत के अहिन्दी भाषी प्रदेशों एवं अंग्रेजी भाषा-भाषी जगत् में भारतीय संस्कृति के प्रसार को बढ़ावा मिलेगा। इसके संपादन का भार भी डा० सत्यकेतु ने संभाला है। हम उनके बहुत आभारी हैं।

इसी प्रकार इन्हीं दिनों, शोध भारती, के नये इस्यू का भी प्रकाशन होने जा रहा है। इनके अतिरिक्त यहाँ से गुरुकुल पत्रिका, प्रकाशित होती है। वैसे तो यह पुरानी पत्रिका है पर कई कारणों से उसका नियम पूर्वक प्रकाशन नहीं हो पा रहा था अब ऐसी व्यवस्था कर दी गई है कि उसका नियम पूर्वक प्रकाशन हो। इसके मुख्य संपादक पहले पं० भगवद्दत्त थे। उनके अवकाश ग्रहण के बाद अब श्री रामाश्रय ने यह भार संभाला है। इसी प्रकार यहाँ के अध्यापक गण की देख-रेख में विद्यालय के बच्चों ने ध्रुव, और विश्वविद्यालय के छात्रों ने प्रह्लाद पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ करने का निश्चय किया है। प्रह्लाद पत्रिका में इस प्रकार की जानकारी उपलब्ध की जायगी जिससे कि छात्रों को रोजगार ढूढने में सुविधा हो, बच्चों के ये दोनों प्रोजेक्ट श्लाघनीय हैं।

जैसा कि मैं ऊपर कह चुका हूं गुरुकुल शब्द ही एक पारिवारिक भावना का प्रतीक है। इस भावना को सुदृढ़ करने हेतु हमने यहाँ बारह परिवार बनाये हैं। वर्ष में बारह मास होते हैं। अतः जन्म के मास के अनुसार हमने छात्रों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों को बारह परिवारों में संगठित किया है। एवं इन परिवारों के नाम आधुनिक भारत के निर्माता – नेताओं के नामों से जोड़ दिए हैं। जैसे– नेहरू परिवार, श्रद्धानन्द परिवार, लाजपत परिवार, दयानन्द परिवार, भगतसिंह परिवार, आदि। उसी के अनुसार यह निश्चय किया है कि गुरुकुल पत्रिका के भी उन्हीं नायकों के नाम पर बारह अंक निकाले जायें अभी तक नेहरू अंक (नवम्बर १९७५) श्रद्धानन्द अंक (दिसम्बर १९७५), लाजपतराय अंक (जनवरी १९७६), दयानन्द अंक (फरवरी

१९७६), एवं भगतसिंह अंक (मार्च १९७६) निकल चुके हैं। इसके बाद आर्य भट्ट अंक (अप्रैल), रवीन्द्र अंक (मई), तिलक अंक (जुलाई) अरविन्द अंक (अगस्त), विनोबा अंक (सितम्बर) गाँधी अंक (अक्टूबर) निकालने की योजना है। तात्पर्य यह है कि प्रत्येक कुलवासी इन महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा प्राप्त करता हुआ अपने कर्तव्य पथ पर अग्रसर हो।

श्रीमती इन्दिरा गाँधी के २० सूत्रीय कार्यक्रम को क्रियान्वित करने के सम्बन्ध में यहाँ के आचार्यों ने फरवरी में एक गोष्ठी की। उसकी रिपोर्ट गुरुकुल पत्रिका में छप गई है। इस प्रोग्राम के अन्तर्गत विश्वविद्यालय में बुक बैंक की व्यवस्था की जा रही है, ताकि छात्रों को पाठ्य पुस्तकें आसानी से सुलभ हो सकें।

छात्रों के आश्रमों अर्थात् होस्टलों में निवास एवं भोजनादि की व्यवस्था के लिये हमने आश्रमाध्यक्षों को नियुक्त किया है। उनसे अपेक्षित है कि वे आश्रम में ही रहें और छात्रों की आवश्यकताओं, दिनचर्या आदि की समुचित देखरेख करें। श्री क्रान्ति कृष्ण मुख्य आश्रमाध्यक्ष है।

छात्रों के स्वास्थ को बढ़ावा देने हेतु हम यहां एक शारीरिक प्रशिक्षण विभाग एवं योग संस्थान स्थापित करना चाहते हैं। विश्वविद्यालय में घुड़सवारी और संगीत की कक्षाएं प्रारम्भ करने की भी योजना है। इसके साथ-साथ यहाँ स्टेडियम, बोट क्लब आदि खोलने का भी प्रस्ताव है लेकिन ये सभी योजनायें धनाभाव के कारण रुकी हुई हैं।

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि हमारे एक छात्र ब्र० देवकेतु ने कार रोकने का अभ्यास किया है तथा अन्य छात्रों ने यौगिक आसनों में दिलचस्पी दिखलाई है। इनके चित्र आपने गुरुकुल पत्रिका के दयानन्द अंक में देखे होगें। ब्र० देवकेतु को १९७६ के 'अभिमन्यु श्री' सम्मान से सुशोभित किया गया है। इसी कार्यक्रम के अर्न्तगत राजेन्द्र कुमार को उत्तरकाशी में हो रहे पर्वतारोहण शिविर में भेजा है। आशा है कि वह वापसी पर यहां के छात्रों को इस दिशा में प्रेरणा दे पायेगें।

गुरुकुल की एन० सी० सी० यूनिट ने प्रो० वीरेन्द्र के नेतृत्व में सराहनीय सफलता प्राप्त की है। आर्य समाज शताब्दी जलूस में उनके प्रदर्शन की सब ओर से सराहना की गई थी।

गुरुकुल के भावी विकास के लिये तथा वर्तमान दशा को सुधारने के लिये माननीय कुलाधिपति महोदय ने पिछले मास एक उच्चस्तरीय समिति का गठन किया है। इसके अध्यक्ष पंजाब विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति पद्मभूषण डा० सूरजभान हैं। इनके अन्य सदस्य श्री सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, भूतपूर्व कुलपति गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, पं० अमरनाथ विद्यालंकार, संसद सदस्य, श्री भक्तदर्शन जी, कुलपति, कानपुर विश्वविद्यालय, श्री मसूद हुसैन खां, कुलपति, जामियां मिलिया डा० हरवंशलाल शर्मा, निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, श्री अनिल बोर्डिया सहसचिव शिक्षा मंत्रालय, श्री आर० के० छाबड़ा, सचिव, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग हैं। इसकी पहली मीटिंग ६ अप्रैल, ७६ को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के कक्ष में हुई।

जनरल बहस के बाद कमेटी ने निम्नलिखित

तीन सब कमेटियां नियुक्त की हैं । वह अपने-अपने विषयों पर गहराई से विचार करके अपनी रिपोर्ट बड़ी कमेटी के सम्मुख विचारार्थ प्रस्तुत करेंगी ।

१—विधान उप-समिति
२—शिक्षा उप-समिति
३—वित्तीय उप-समिति

इनके अध्यक्ष क्रमशः डा० सूरजभान, पं० सत्यव्रत तथा पं० अमरनाथ हैं । इनको अन्य सदस्य सहवरण करने के अधिकार दे दिये गये हैं ।

मैं अपनी और गुरुकुल की ओर से इन महानुभावों के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ कि उन्होंने गुरुकुल के हित में अपना अमूल्य समय देना स्वीकार किया है ।

पिछले दिनों मुझे आचार्य विनोबा भावे द्वारा बुलाये गये आचार्य सम्मेलन में भाग लेने का अवसर मिला । मेरी प्रार्थना पर हमारी संस्था के आचार्य गण एवं विद्यार्थी गण के नाम आचार्य ने जो संदेश दिया है वह गुरुकुल पत्रिका के दयानन्द अंक में प्रकाशित हुआ है । वह है—

शान्तं, शिवं, अद्वैतम् ।

मैं इसकी यहां व्याख्या करके आपका अमूल्य समय नहीं लेना चाहता । इतना जरूर कहूँगा कि हमें इस भावना को कार्य रूप में लाना है । इसी उद्देश्य से हमने गत वसन्त पंचमी को अपने यहाँ भी आचार्य कुल की स्थापना की है । यह समारोह गुरुकुल की पुण्य भूमि स्वामी धर्मानन्द सरस्वती के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ । सत्रह अध्यापकों ने आचार्य कुल के संकल्प लिये । श्री हरगोपाल सिंह इसके संयोजक हैं ।

गत जनवरी में जो कुलपति सम्मेलन हुआ था उसमें शिक्षा के क्षेत्र में दो सुधार विशेषकर उभर कर सामने आये । एक था दस+दो+तीन की शिक्षा योजना को अपनाने के बारे में दूसरा था परीक्षाफल में लेटर ग्रेडिंग सिस्टम लागू करने के बारे में । इन सुझावों को गुरुकुल में कब कैसे अपनाया जाय इसके बारे में हमारी शिक्षा पटल की पिछली बैठक में चर्चा हुई थी । निर्णय यह हुआ था हम अपने अध्यापकों की टीम इन सुधारों की क्रिया पद्धति को समझने के लिए पिलानी, रुड़की तथा अन्य विश्वविद्यालयों में भेजें । साथ में जैसा कि श्रीमन् आप द्वारा बुलाये गये उत्तर प्रदेश के कुलपतियों के सम्मेलन में वर्कशाप होल्ड करने का निर्णय हुआ उसमें भी हम अपने अध्यापकों को भेजने का इरादा रखते हैं ।

बिला शक आज सभी स्वीकार करते हैं कि सामान्य शिक्षा को जीवनोन्मुख बनाये बिना देश का कल्याण नहीं है । साथ में शिक्षा के क्षेत्र को व्यापक करने के बारे में भी अब दो राय नहीं है । हर सम्मेलन में इंटर डिसीप्लिनैरी शिक्षा पद्धति की चर्चा होती है । यह बात शायद कइयों के लिए नई होगी कि स्वामी दयानन्द ने तो आज से १०० वर्ष पहले इन्टर डिसिप्लिनैरी शिक्षा पद्धति लागू करने पर जोर दिया था । सत्यार्थ-प्रकाश में शिक्षा के जिस पाठ्यक्रम का जिक्र किया गया है उसके अनुसार एक शिक्षित युवक के लिए जहाँ यम-नियम के पालन एवं वेदाध्ययन का प्रावधान है, वहाँ ४ वर्ष तक आयुर्वेद तथा दो वर्ष तक धनुर्वेद अर्थात्- कवायद, आदि सीखने का भी आदेश है । इसके बाद गान विद्या सीखने का कार्यक्रम है । साथ ही दो वर्ष तक ज्योतिष शास्त्र, सूर्य सिद्धान्त बीजगणित, अंक, भूगोल, खगोल, आदि विद्याओं को सीखने का प्रावधान है।

तत्पाश्चात् हस्तक्रिया, यन्त्रकला भी सिखलावें। स्वामी जी कहते हैं कि ऐसा प्रयत्न पढ़ने और पढ़ाने वाले करें जिससे बीस व इक्कीस वर्ष के भीतर समग्र विद्या प्राप्त कर, मनुष्य कृत-कृत्य हो, एवं सदा आनन्दमय रहे।

कई हलकों में आरोप लगाया जाता है कि आर्यसमाज एक रूढ़िवादी एवं ज्ञान-विज्ञान विरोधी संस्था है। पर यदि कोई भी निष्पक्ष व्यक्ति आर्य समाज के नियमों पर दृष्टिपात करे तो उसे मानना होगा कि आर्य समाज एक प्रगतिशील एवं क्रान्तिकारी संस्था है। जो प्रत्येक नागरिक की अध्यात्मिक, मानसिक और शारीरिक उन्नति चाहती है। आर्य समाज का लक्ष्य धर्म, जाति, देश से उठकर समानता पर आधारित शोषण रहित विश्व समाज का निर्माण करना है। आर्य समाज के पिछले १०० वर्षों के इतिहास पर किसको गर्व न होगा? गुरुकुल की स्थापना भी इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति के लिए काम करने वाले व्रतधारी ब्रह्मचारी पैदा करने हेतु की गई थी। जैसा कि मैं ऊपर कह चुका हूं गुरुकुल से निकले हुए ब्रह्मचारियों ने देश की विभिन्न प्रगतिशील प्रवृत्तियों में भाग लेकर जहां देश की प्रगति एवं कल्याण में अपना योगदान दिया है वहां गुरुकुल का नाम भी उज्ज्वल किया है। आज के सुअवसर पर हम अपने उन लब्धप्रतिष्ठ अग्रजों को पुनः याद करते हैं और उनके चरणचिह्नों पर निर्भय होकर चलने का संकल्प लेते हैं।

जवाहरलाल नेहरू के शब्दो में—

"विश्वविद्यालय का उद्देश्य मानवता, सहिष्णुता, विवेक, नये—नये विचार और सत्य की खोज एवं मानव जाति को उच्चतर लक्ष्य की ओर अग्रसर करना है। जिस राष्ट्र के विश्वविद्यालय अपने कर्त्तव्य का सही अर्थ में पालन करते है वह राष्ट्र धन्य है और उसकी प्रजा का कल्याण सुनिश्चित है। परन्तु यदि विद्या के ये मन्दिर संकीर्णता और तुच्छ लक्ष्यों के गढ़ बन जायें तो ऐसे राष्ट्र और जनपद उन्नति और विकास की ओर अग्रसर नहीं हो सकते।"

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि गुरुकुल के गुरुजन इन लक्ष्यों को सामने रखकर उन्नति के पथ पर अग्रसर होंगे। क्योंकि अन्ततोगत्वा किसी भी विश्वविद्यालय का स्तर उसके अध्यापक वर्ग के स्तर से ऊंचा नहीं उठ सकता।

श्रीमन्।

मैं एक बार फिर यहां उपस्थित विद्वजनों का अभिनन्दन करता हूं। मैं विद्वान गुरुजनों को प्रणाम करता हूं। मैं प्रशासकों के कार्य—कौशल और कर्त्तव्यनिष्ठा की प्रशंसा करता हूं, शोधार्थियों एवं उनके विद्वान निर्देशकों की सत्यानुसंधान के लिए किये गये सतत् परिश्रम की सराहना करता हूं एवं संरक्षक—सभा के पदधिकारियों का भी कृतज्ञ हूं जिन्होंने समय समय पर सुझाव देकर हमारा मार्ग-दर्शन किया है, और प्रार्थना करता हूं कि भगवान हमको सद्बुद्धि दे ताकि हम स्वामी श्रद्धानन्द की वसीयत के अनुसार गुरुकुल की रक्षा करने में सफल हों।

श्रीमन्,

राष्ट्रीय विचारधारा से ओतप्रोत इस विश्वविद्यालय को विश्व कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर, पं० मदन मोहन मालवीय, महात्मा गांधी, मोतीलाल नेहरू, बाबू राजेन्द्र प्रसाद, सरदार पटेल, डा० राधाकृष्णन, जवाहरलाल नेहरू, श्रीमती इन्दिरा

गांधी का आशीर्वाद प्राप्त होता रहा है। इसी शृंखला में आज आपने इस तपोभूमि में पदार्पण कर हमारा उत्साह बढ़ाया है। इसके लिये हम आपके अत्यन्त आभारी हैं तथा इस संस्था के उपर्युक्त संक्षिप्त परिचय के साथ इस श्रद्धानन्द नगरी में हम आपका हार्दिक स्वागत करते हैं। आप का सारा जीवन देश सेवा में व्यतीत हुआ है तथा इस समय आपने हमारे उत्तर-प्रदेश का नेतृत्व संभाला हुआ है और इसे सब सुख-सुविधाओं से समन्वित एवं उन्नत करने के लिये आज सर्वान्त-मना प्रयत्नशील हैं। अब मेरी आपसे प्रार्थना है कि नव स्नातकों को आशीष प्रदान करें और हमारा मार्ग-निर्देशन करें।

टिप्पणी:—"दीक्षान्त समारोह पर कुलपति द्वारा सम्बोधन—बलभद्र कुमार, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार—१४ अप्रैल, १९७६" भाषण के पृष्ठ ९ पंक्ति २४ पर छपे 'अंग्रेजों' को 'अग्रजों' पढ़ें।

—सम्पादक

हमारे गुर बड़े भ्रिंगी।
आंनि कीटक करत भ्रिग सो आपतैं रंगी।।
पाइं औरै पंख औरै और रंग रंगी।
जाति पांति न लखै कोई भगत भौ भंगी।।१।।
नदी नाला मिले गंगा कहावै गंगी।
समांनीं दरियाव दरिया पार ना लंघी।।२।।
चलत मनसा अचल कीन्हीं मांहि मन पंगी।
तत्त में निहतत्त दरसा संग मैं संगी।।३।।
बंध तैं निर्बंध कीया तोरि सब तंगी।
कहै कलीर अगम किया गम रांम रंग रंगी।।४।।

कबीर

गुरुकुल समाचार

श्री महावीर 'नीर' विद्यालंकार

ऋतु-रंग

अप्रैल मास के मध्य तक का ऋतु-चक्र इस प्रकार रहा । दिन के तापमान में उष्णता बढ़ चली । प्रातः और सायं की हलकी सी ठण्ड रह गई । हवा के झोंकों से वृक्षों की डालियां झूमने लगी । नये पत्तों का उद्भव एवं पके पत्तों का पतन साथ-साथ चलता रहा । आंधी व तूफान का भय बना रहा । शीतलपेय की लालसा बढ़ चली । विद्युत्त पंखे घूमने लगे । ब्रह्मचारियों ने नहर-स्नान का आनन्द उठाना प्रारम्भ कर दिया । शहतूत पक गए । कटहल वृक्ष फूल उठे । नन्ही-नन्ही अम्बियों का अभाव रहा । परीक्षा की तैयारी में लगे छात्रों के झुण्ड इतस्ततः दिखाई देने लगे । मच्छरों व मक्खियों का प्रभाव बढ़ चला ।

विद्यालय-विभाग

विद्यालय-विभाग में आश्रम की सुव्यवस्था एवं अध्ययन व अध्यापन का कार्य सुचारु रुपेण चलता रहा ।

मुख्याध्यापक-की नियुक्ति—'विद्यालय-विभाग में १२ अप्रैल से श्री ओमप्रकाश जी राजपाल ने मुख्याध्यापक पद का कार्यभार सम्भाल लिया है । आप पहले भी कई वार गुरुकुल आ चुके हैं । प्रथम बार १९३१ तथा १९३३ में एवं तृतीय बार १९४२ में एक आर्य युवक के रूप में गुरुकुल आये थे । आपको शिक्षा क्षेत्र का लगभग २२ वर्ष का अनुभव है । आप अभी पिछले दिनों सेना से सेवा मुक्त हुए हैं । आप एक सहृदय, सुयोग्य तथा अनुशासन प्रिय व्यक्ति है ।" आशा है हमारे नये मुख्याध्यापक जी गुरुकुलीय परम्पराओं की आधार शिला पर विद्यालय को उन्नति, अनुशासन और गतिशीलता की की ओर ले जाने का प्रयास करेंगे । सहयोगी अध्यापकों एवं अधिष्ठाताओं की शुभ कामनाएं एवं पूर्ण सहयोग आपके साथ हैं ।

टेकचन्द नागिया आश्रम में गति शीलता

डा० जसवीरसिंह जी (आश्रम अधि०) के अनुसार आयुर्वेदिक टी० एन० छात्रावास का वातावरण शाँत और सौम्य है । सारे आश्रम में सफेदी कर दी गई है। समस्त आश्रमवासी छात्र नियमित रूप से संध्या-हवन में भाग लेते हैं । सभी छात्र अपने अध्ययन में लगे हैं । ज्ञात हुआ है कि आयुर्वेद महाविद्यालय में वार्षिक परीक्षाएं निकट भविष्य में प्रारम्भ होने वाली हैं ।

श्री पं० भगवद्दत्त जी का अभिनन्दन

परमादरणीय पं० भगवद्दत्त जी वेदालंकार का आर्य समाज गुरुकुल काँगड़ी के प्रधान पद से निवर्तमान होने पर आर्यसमाज के समस्त सदस्यों ने ३।४।७६ के एक भव्य-समारोह में आर्य समाज मन्दिर में अत्यन्त शालीनता पूर्ण एवं सहृदयतापूर्ण अभिनन्दन किया । समारोह की अध्यक्षता मान्य कुलपति श्रीबलभद्रकुमार जी ने की । समारोह का प्रारम्भ ब्र०गणेशप्रसाद विद्यालंकार के ईश्वर-स्तुति परक भजन से हुआ । आर्यसमाज के मन्त्री श्री श्रीचन्द जी तथा कार्यालय के श्री वाचस्पति जी ने पण्डित जी को माला पहना कर सम्मान दिया । तदनन्तर पं० जी की सेवाओं के लिए उन्हें एक प्रशास्ति-पत्र भेंट किया गया । डा० वासुदेव जी चैतन्य, डा० निगम जी, प्रो. भारत भूषण जी, श्री शिवचरण जी ने समान रूप से पण्डित जी के जीवन के विभिन्न कार्यों की सराहना की : श्री सुरेशचन्द्र जी (प्रिन्सिपल वि० महा०) ने आपको अजात शत्रु बताया । डा० अनन्तानन्द जी आयुर्वेदालंकार (प्रिन्सि० आयुर्वेद महा०) ने पं० जी को वेदों का गहन अध्येता, तथा गुरुकुल की विशेष विभूति बतायी । डा० गंगाराम जी (कुलसचिव) ने कहा कि–आपकी 'स्वप्न विज्ञान' एक मौलिक कृति है । जिसका अंग्रेजी अनुवाद हो तो, पश्चात्य विद्वानों में इसका सम्मान होगा । आचार्य डा० रामनाथ जी वेदालंकार ने कहा कि–पंण्डित जी जैसी विभूति पर गुरुकुल गर्व कर सकता है । वैदिक-संस्कृत में गति होने के साथ आपकी लौकिक संस्कृत में अबाध गति है । मान्य कुलपति जी ने कहा––मेरी पण्डित जी के प्रति हार्दिक स्नेह और श्रद्धा है । मैं कभी यह नहीं सोच सकता कि पण्डित जी कभी गुरुकुल से अलग हो सकते हैं ।

अन्त में अभिनन्दन के प्रत्युत्तर में पण्डित जी ने सबका हार्दिक आभार प्रकट करते हुए कहा कि मेरे जीवन में त्रुटियाँ भी है । परमात्मा ने मुझे वेद पढ़ने की ओर प्रेरित किया है । अध्यात्म में मेरी सदा रुचि रही है । कुल माता सदा मेरे साथ है ।" शान्ति पाठ और मिष्ठान वितरण के पश्चात् समारोह समाप्त हुआ ।

कुलपति जी का मौन-यज्ञ

पिछले दिनों अकस्मात् गुरुकुलीय सागर में विक्षोभ सा आ गया । कुलपति जी ने उस विक्षुब्ध सागर में शांति-यान चला कर कुछ स्थैर्य लाने की कोशिश की । लगभग ४ दिन के मौन एवं अनशन यज्ञ के द्वारा मान्य कुलपति श्री बलभद्रकुमार जी ने, गुरुकुल से हिंसा, प्रमाद, अनुशासन हीनता तथा भय इन चार दुष्प्रवृत्तियों को दूर करने के लिए अपनी अन्तर्मुखी सात्विक आहुतियां डाली । जिससे परस्पर के मनोमालिन्य में स्नेह और सहयोग के अंकुरों का प्रस्फुटन दृष्टिगत हुआ ।

गुरुकुल के ७६ वें वार्षिकोत्सव की कुछ झांकियां

गुरुकुल का ७६ वां वार्षिकोत्सव बड़े हर्षोल्लास पूर्ण वातावरण के साथ समाप्त हो गया । दूर-दूर से ज्ञान-पिपासु अपनी श्रद्धा-भक्ति का भाव लेकर गुरुकुल पधारे तथा यहां ४ दिन ज्ञान

गंगा में स्नानकर अपने-अपने घरों को लौट गये । गुरुकुल उन सभी महानुभावों का धन्यवाद करता है तथा सदा ही प्रेम भाव की आशा करता है । यदि किसी को भोजन व निवास आदि का कोई कष्ट हुआ हो तो वह उसकी क्षमा चाहता हुआ भविष्य में आपके सहयोग की पुनीत एवं पूर्ण आशा करता है । समस्त जनता के सहयोग से उत्सव का जो कार्यक्रम-चला उसकी संक्षिप्त झलक हम यहाँ दे रहे हैं--

११ अप्रैल:--प्रातः संध्या, प्रार्थना तथा यज्ञ आदि के पश्चात् स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने कुलपता का आरोहण किया । तदन्तर खेमचन्द जी और श्यामसिंह हितकर के मनोहर भजन हुए । स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का वेद-विषय को लेकर सदुपदेश हुआ । उन्हों ने कहा कि-"वेदों में जो धर्म है वह सब मतों से उत्तम है । स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती (पं० धर्मदेव जी) ने कहा कि अब आर्यसमाज के नेताओं को प्रचार की अपेक्षा आचार पर बल देना चाहिए ।

आयुर्वेद सम्मेलन:--मध्याह्न में आयुर्वेद सम्मेलन हुआ । अध्यक्षता भूतपूर्व कृषि राज्य मन्त्री प्रो० शेरसिंह जी ने की । श्री ओमानन्द जी महाराज ने उद्घाटन भाषण में आयुर्वेदिक औषधियों के महत्त्व को प्रदर्शित करते हुए अनेक अनुभूत योग भी बताये । स्वामी सर्वानन्द जी, श्री योगेन्द्रपाल जी शास्त्री, कु० ज्योत्स्ना एम० ए०, डा० अनन्तानन्द जी आदि अनेक वक्ताओं ने आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति के गुणों का बखान किया । सम्मेलन का संचालन पंचपुरी के प्रसिद्ध वैद्य एवं गुरुकुल आयुर्वेद के उपाध्याय, रामनाथ जी ने बड़ी कुशलता पूर्वक किया ।

रात्रि में स्वामी ओमानन्द जी महाराज का ओजस्वी व्याख्यान हुआ । तदन्तर सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री ओमप्रकाश जी पुरुषार्थी ने वैदिक समाजवादी विचार धारा का सुन्दर निरूपण किया ।

१२ अप्रैल-दूसरे दिन प्रातः संध्या, प्रार्थना तथा यज्ञ के पश्चात् श्री वीरेन्द्र जी 'वीर' भजन मण्डली के भजनोपदेश हुये । स्वामी रामेश्वरानन्द जी का धार्मिक प्रवचन हुआ । तदन्तर चित्तौड़ गढ़ गुरुकुल के आचार्य तथा गु० कां० के स्नातक स्वामी व्रतानन्द जी महाराज का 'ओ३म्' पर सारगर्भित और आनन्दायी प्रवचन आ ।

आर्य सम्मेलन:--मध्यान्ह में वीरेन्द्र जी 'वीर' शोभाराम जी प्रेमी, खेमसिंह आदि के मनोहर भजनों के पश्चात् आर्य सम्मेलन का कार्यक्रम चला । अध्यक्षता आचार्य पृथ्वीसिंह जी आजाद ने की । सम्मेलन का उद्घाटन-लाला रामगोपाल शालवाले ने किया । संचालन श्री जयदेव वेदालंकार ने किया । श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री, आचार्य प्रियव्रत जी विद्यामार्तण्ड, श्री वीरेन्द्र जी (मन्त्री आ. प्र. स. प.) श्रीमती ईश्वरी देवी आदि वक्ताओं ने महत्त्वपूर्ण विचार प्रकट किए ।

रात्रि में-पन्नालाल जी पीयूष के संगीत के पश्चात् श्री ओमानन्द जी महाराज एवं पं० क्षितीश जी वेदालंकार के विचारोत्तेजक भाषण हुए । स्वामी ओमानन्द जी ने जहाँ आर्यसमाज की गति-विधियों पर मार्मिक उद्गार प्रकट किए, वहां श्री क्षितीश जी ने अपने विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान में वाल्मीकीय रामायण के उद्धरण देकर पुष्ट किया कि 'राम' कपोल कल्पित पात्र नहीं है, अपितु

वह एक ऐतिहासिक पुरुष-रत्न है। भारतीय संस्कृति की जड़ों को कुरेदने वाले व्यक्तियों को उन्होंने पूर्ण रूप से चुनौति दी।

१३ अप्रैल––तीसरे दिन संध्याप्रार्थना व यज्ञ के पश्चात् वीरेन्द्र जी वीर मण्डली के भजन हुए तदनन्तर आचार्य डा० रामनाथ जी वेदालंकार की अध्यक्षता में नवीन ब्रह्मचारियों का वेदारम्भ संस्कार हुआ। स्वामी व्रतानन्द जी महाराज ने धर्मोपदेश किया।

शिक्षा सम्मेलन––मध्यान्ह में बलबीर सिंह जो बेधड़क के भजनोपदेश के पश्चात् शिक्षा सम्मेलन की कार्यवाही प्रारम्भ हुई। गुरुकुल के वरिष्ठ हिन्दी प्राध्यापक डा० विष्णुदत्त जी राकेश ने सम्मेलन का संचालन किया अध्यक्षता-भारतीय शिक्षा शास्त्री डा० सूरजभानसिंह जी ने की। उद्घाटन भाषण प्रसिद्ध वैज्ञानिक विद्वान् स्वामी सत्यप्रकाशानन्द जी महाराज ने किया। सर्व श्री डा० सत्यकेतु जी विद्यालंकार, सुरेशचन्द्रजी (प्रिन्सिपल वि० विद्यालय), पं० कपिलदेव जी शास्त्री आदि प्रमुखवक्ताओं ने शिक्षा सम्बन्धी विविध परिचर्यायें प्रस्तुत करते हुए आधुनिक परीक्षा प्रणाली का भी विवेचन किया। अध्यक्ष पद से डा० सूरजभान जो ने कहा––"आवश्यकता इस बात की है कि "विद्यार्थी विद्याध्यन करें तथा अध्यापक दत्तचित्त हो विद्या-दान करें।

रात्रि में श्री वीरेन्द्रजी 'वीर' तथा खेमसिंह जी के भजनोपरान्त आचार्य प्रियव्रत जी ने गुरुकुल शिक्षा-पद्धति की उत्कृष्टता बताते हुए समस्त गुरुकुल प्रेमी जनता से दान की अपील की। तदन्तर गुरुकुल के विद्वान स्नातक पं० क्षितीश जी वेदालंकार ने 'महाभारत' की ऐतिहासिकता पर खोजपूर्ण व्याख्यान दिया। समस्त जनता रात के १२ बजे तक उनके व्याख्यान को दत्तचित्त हो सुनती रही। उन्होंने कहा कि "आर्यसमाज ने वेदों की रक्षा के लिए जो महान् कार्य किया है वैसा ही अब हिन्दुओं के राम और कृष्ण को बचाने के लिए करना पड़ेगा।"

दीक्षान्त–समारोह

१४ अप्रैल:––प्रात: विश्व विद्यालय के कुलसचिव डा० गंगाराम जी के नेतृत्व में दीक्षान्त समारोह की कार्यवाही का संचालन हुआ। सबसे प्रथम झण्डा चौक से सन्यासी गण, नव स्नातक, मान्य अतिथि, उपाध्याय, छात्रगण, कर्मचारी अन्यअभ्यागत महोदय एक जुलूस के द्वारा मुख्य पण्डाल में प्रविष्ट हुए। शंख ध्वनि की गई। कुलगीत हुआ। पाण्डाल की शोभा द्विगुणित हो उठी। यज्ञ-वेदी से होम का पवित्र धूम स्वर्ग-सोपान बनाता हुआ, मन्त्रों की सात्विक स्वर लहरी के साथ आकाश की ओर लुप्त हो चला।

अब समय आया, दीक्षान्त की मुख्य कार्यवाही का। कुलसचिव जी ने कुलाधिपति की आज्ञा से दीक्षान्त समारोह के प्रारम्भ की घोषणा की। मान्य कुलपति श्री बलभद्रकुमार जी ने वेद एवं हिन्दी साहित्य के कुछ अधिकारी विद्वानों सर्व श्री पं० भगवदत्त जी वेदालंकार, पं. विष्णुमित्र जी, हिन्दी सेवी जैनेन्द्र कुमार जी जैन, पं हरिदत्त जी वेदालंकार आदि को गुरुकुल की सर्वोच्च उपाधि 'विद्या मार्तण्ड से विभूषित किया।
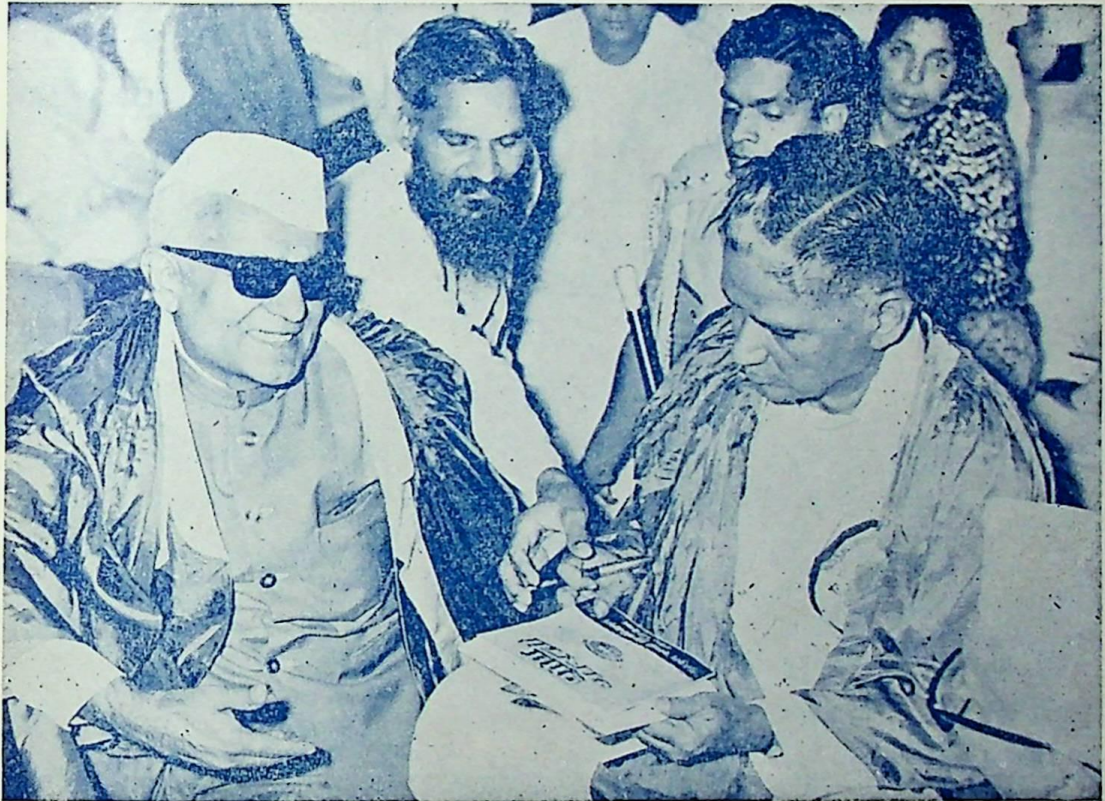
गुरुकुल-पत्रिका के सम्पादक प्रो० रामाश्रय मिश्र डॉ० चेन्नारेड्डी से 'शोध-भारती', 'गुरुकुल-पत्रिका' एवं 'वैदिक-पथ' पर हस्ताक्षर करवाते हुए साथ, प्रसन्न मुद्रा में कुलपति श्री बलभद्रकुमार जी

तदनन्तर कुल के आचार्य डा० रामनाथ जी वेदालंकार ने नवस्नातकों को प्राचीन ऋषि-मुनियों व आचार्यों द्वारा दिया जाने वाला गरिमामय उपदेश देते हुए सभी नव स्नातकों को पी-एच० डी०, एम०ए० एम-एस-सी०, विद्यालंकार, वेदालंकार तथा बी० एस० सी० की उपाधियां बितीर्ण की ।

दीक्षान्त के तीसरे चरण में मान्य कुलपति जी ने गुरुकुल का प्रगति सम्बन्धी परिचय-पत्र समस्त जनता के सामने प्रस्तुत किया तथा गुरुकुल के समस्त विभागों के उत्तम कार्य कर्त्ताओं को विशेष पुरस्कृत किया । (जिनकी नामावली अगले अंक में दी जाएगी) ।

महामान्य राज्यपाल डा० चेन्नारेड्डी के उद्गार

दीक्षान्त-समारोह के अन्तिम चरण में नव स्नातकों का आशीर्वाद देते हुए समारोह के मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश के महामहीम राज्यपाल डा० चेन्नारेड्डी ने अपने स्पष्ट एवं ओजस्वी तथा विचारोत्तेजक भाषण में गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली का आलोचनात्मक विश्लेषण किया । अपने भाषण में राज्यपाल महोदय ने कहा कि--"गुरूकुल हमारे देश की आदर्श शिक्षा प्रणाली का आधार बना हुआ था। हम विश्वविद्यालय-स्तर पर बच्चों को सुधारने की कोशिश करते हैं किन्तु कामयाब नहीं हो पाते । परेशान हैं अतः गुरूकुल शिक्षा एक आधार है । बुनियाद को छोड़कर हम कभी मजबूत नहीं हो सकते एमरजेंसी ने कुछ सुधार किया है किन्तु हमें तो आगामी बातों पर विचार करना है । मुझे १७ विश्वविद्यालयों का वाइसचांसलर होने का कठोर अनुभव है । मैं यहाँ इसलिए आया कि वर्तमान में फैली व्यापक समस्याओं का समाधान आपके पास मिलेगा । हमें चाहिए कि हम गुरूकुल की जो बातें हैं उन्हें लाये । हम अंग्रेजों की तरह सोचते है । अपनी महत्त्वपूर्ण बातों को छोड़ बैठते हैं । आपके यहां जितने विभाग हैं, उन्हें और विस्तार देना होगा । आयुर्वेद जीवन विज्ञान है । आयुर्वेद के विद्वान् अपने अनुभूत योगों को मरते दम तक छिपाते हैं । यही कारण है कि दूसरे लोग हम पर हावी होते जा रहे हैं ।" उन्होंने कहा--

"हमारी गुरूकुल परम्परा गुरू को महान् पद देती है । अध्यापक पद संकीर्ण है । मैं गुरू शब्द को महत्त्व देता हूं । गुरू के कुल में गन्दगी कैसी ? हम बच्चों में लीन हो जाएं । वस्तुतः शिक्षक और पत्रकार वर्तमान और भविष्य के बनाने वाले होते हैं । मैं तो इस गुरूकुल में आदर्श देखना चाहता हूं । हम यहां के वाताबरण को स्वच्छ और आदर्श बनायें । यह गुरूकुल यहाँ बैठी समस्त जनता की धरोहर है । इसकी हमें पूर्ण रूप से रक्षा करनी ही होगी । हर गिरावट ऊपर उठने का संकेत देती है। मुझे प्रसन्नता है कि--यहां शरीक होने का योग मिला । नव स्नातकों का स्वागत करता हूं । मुझे खुशी है कि आपके विश्व विद्यालय ने कुछ विद्वानों को बिशिष्ट उपाधियाँ दी । मैं विश्वविद्यालय को बधाई देता हूं । कुलाधिपति, कुलपति को बधाई देता हूं । और आशा करता हूं । कि गुरूकुल अपने आदर्शों को अपनाता हुआ आगे गढ़ेगा ।"

तदन्तर पुराने स्नातकों द्वारा नव स्नातको का स्वागत श्री पं० पूर्णचन्द जी विद्यालंकार ने किया । नव स्नातकों की ओर से ब्र० वीरदेव जी ने प्रत्युत्तर दिया ।

कुल सचिव डा० गंगाराम जी ने दीक्षान्त-समारोह की समाप्ति की घोषणा की। शान्ति-पाठ के पश्चात् समारोह समाप्त हुआ।

वेद सम्मेलन

मध्यान्ह भजनोपरान्त वेद सम्मेलन का कार्य क्रम चला। अध्यक्षता-स्वामी सत्यप्रकाशानन्द जी ने की। उद्घाटन श्री पं० प्रियव्रत जी विद्यामार्तण्ड ने किया। संयोजन प्रो· रामप्रसाद जी वेदालंकार ने किया। वैदिक-समाजवाद विषय पर प्रमुखवक्ताओं—सर्वश्री ब्र· अशोक कुमार जी ब्र· विक्रमकुमार जी, ब्र· हरिदेव जी, डा० सत्यकेतु जी, डा० विष्णुदत्त जी राकेश स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती ने ने विचार प्रस्तुत किए।

आचार्य डा० रामनाथ जी का अभिनन्दन—इसी सम्मेलन में डा० रामनाथ जी का उनके विद्वत्ता-पूर्ण ग्रन्थ 'वेदों की वर्णन शैलियां' का विमोचन डा० सत्यप्रकाशानन्द जी ने किया। गुरुकुलीय विद्वानों ने माल्यार्पण द्वारा आचार्य जी का सम्मान किया। आचार्य जी ने सभी का धन्यवाद करते हुए विशेष रूप से गुरूकुल प्रेस के कार्यकर्त्ताओं तथा डा० हरिप्रकाश जी आदि का अत्यधिक हार्दिक आभार प्रकट किया।

व्यायाम-सम्मेलन

ब्र० देवकेतु द्वारा बल प्रदर्शन:—१४ अप्रैल को व्यायाम सम्मेलन के प्रथम चरण में कुल के उदीयमान छात्र अभिमन्यु और कुलीय भीम की प्रशस्ति से विभूषित ब्र० देवकेतु ने विपरीत दिशा में जाती हुई दो कारों को रोक कर, थाली चीर कर, समस्त जन समुदाय को आश्चर्य चकित कर दिया। कुलपति जी ने अपने स्नेह की बौछार से वातावरण को स्निग्ध कर दिया। समस्त जन समूह ने छात्र के शारीरिक बल प्रदर्शन से प्रभावित होकर दान भी दिया। सम्मेलन की अध्यक्षता वैद्य हरनाम दास जी ने की।

व्यायाम सम्मेलन के दूसरे चरण में रात्रि में विद्यालय के ब्रह्मचारियों ने पी· टी·, डम्बिलस, लेजिम स्तूप निर्माण, योगासनों आदि का स्फूर्तिदायक सुन्दर प्रदर्शन किया। इसके लिए विद्यालय के व्यायाम शिक्षक श्री रणजीत सिंह जी बधाई के पात्र हैं। ब्रह्मचारियों के इन उत्साह वर्धक खेलों के हर्षोल्लासमय वातावरण के मध्य वार्षिकोत्सव के क्रिया-कलापों का नव-संकल्प व नयी योजनाओं के साथ पटाक्षेप हुआ।

सेवा और त्याग की मूर्ति

स्वर्गीय श्री लक्ष्मणसिंह जी 'यती'

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पुस्तकालय की ऊपरी मंजिल पर एक कक्ष में बैठे दो सधे हुए हाथ फटी-पुरानी पुस्तकों को नया रूप देने में लगे हैं। वृद्ध-कलाकार अपनी साधना में जुटा है। उसकी साधना एक दो वर्ष की नहीं वर्षों की है। ६० वर्ष का वह वृद्ध-युवक उसी लय और तान में अपनी साधना को गति देता रहा। गुरुकुल के प्रति सच्ची सेवा-भावना क्योंकि उसके तन-मन में रच-बस गयो थो। अगर यह कलाकार चाहता तो किसी भी नगर अथवा कस्बे में जिल्दसाजी का कारोबार कर सकता था। प्रसिद्धि प्राप्त कर सकता था। किन्तु स्वामी श्रद्धानन्द जी के अनन्य भक्त, कांगड़ी ग्राम में जन्मे एवं संगोत के प्रेमी श्री लक्ष्मणसिंह जो यती ने कभी भी इस प्रकार के विचारों को मन में स्थान नहीं दिया। प्रतिदिन कांगड़ी गांव से गुरुकुल आने और जाने के लिए गंगा के तीव्रतम प्रवाह और तूफान को भी कुछ नहीं समझा। आपने वर्षों से पुण्य-भूमि में तथा गुरुकुल प्रेस में कार्य किया तदनन्तर श्री राम रखामल जी आपको पुस्तकालय में लाये। कलाकार के जीवन का ध्येय होता है कला की साधना, कर्तव्य के प्रति निष्ठा। यहो आपके जीवन के अंग थे। मृदुता और सरलता, निष्कपटता आपके स्वभाव को धरोहर थो। इसी लिए तो आपके असलो नाम लक्ष्मणसिंह को न जानकर लोग आपको 'यती' जी के नाम से हो जानते थे। गुरुकुल के नगण्य कार्यकर्ता होते हुए भो आपकी स्मृति अमर है। आपका निधन ६ अप्रैल १९७६ को सायं ७ बजे कांगड़ी में हुआ। स्वामो श्रद्धानन्द जी के तथा पुराने गुरुकुल के न जाने कितने संस्मरण आपके साथ ही लुप्त हो गये। ऐसे पुण्यात्मा के प्रति हम सब कुलवासी शोक श्रद्धाञ्जली अर्पित कर प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करें। परिवार जनों के प्रति हमारा हृदय द्रविभूत है।

गुरुकुल की डायरी १५ अप्रैल ७६ तक

२. सायं ५ बजे कुलपति जी का उपवास समाप्त एवं वेद मन्दिर में यज्ञ।

४. (क) कुलपति निवास पर स्थानीय न्यायाधीश एवं पुलिस अधीक्षक की बैठक।

(ख) अंग्रेजी द्वितीय वर्ष के छात्रों की विदाई।

६. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग भवन में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की उच्च-स्तरीय समिति की बैठक।

९. (क) वेद महाविद्यालय, कला महाविद्यालय एवं विज्ञान महाविद्यालय के प्राध्यापकों की श्री पृथ्वीसिंह आजाद, कुलाधिपति की अध्यक्षता में बैठक।

(ख) विज्ञान महाविद्यालय के वनस्पति शास्त्र के छात्रों की विदाई।

(ग) आर्य समाज में रामनवमी महोत्सव।

१०. सिण्डीकेट की बैठक।

११. (क) प्रधान मंत्री इन्दिरा गाँधी द्वारा आमंत्रित अखिल भारतीय शिक्षा विदों के सम्मेलन में कुलपति श्री बलभद्र कुमार जी सम्मिलित।

(ग) सायंकाल वेद मन्दिर में विद्या सभा की बैठक।

(छ) पंडाल में आयुर्वेद सम्मेलन।

१२. (क) वेद मन्दिर में विद्या सभा की बैठक।

(ख) पंडाल में आर्य सम्मेलन।

(ग) पुस्तकालय में सीनेट की बैठक।

(छ) विद्यालय के प्रार्थना भवन में स्नातक मंडल की बैठक।

१३. (क) वेदारंभ संस्कार पंडाल में।

(ख) डा० सूरजभान की अध्यक्षता में पंडाल में शिक्षा सम्मेलन।

१४. (क) दीक्षांत समारोह।

(ख) पंडाल में वेद सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण।

(ग) व्यायाम सम्मेलन सायंकाल एवं रात्रि।

रामाश्रय मिश्र
जन-सम्पर्क अधिकारी
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार।

उत्तर-प्रदेश के महामहिम राज्यपाल डॉ० चेन्नारेड्डी दीक्षान्त-भाषण क[illegible]ते हुए

--गुरुकुल पत्रिका का मूल्य--

	देश	विदेश
[illegible]षिक	१२ रुपये	२० रुपये
[illegible] प्रति	१ रुपया २५ पैसे	१ रुपया ७५ पैसे

हमारी कुछ स्वर्ण निर्मित व अन्य विशिष्ट औषधियां

★ **बसन्त कुसुमाकर**

मधुमेह तथा शारीरिक निर्बलता के लिए उत्तम ।

★ **बृहद् वात चिन्तामणि**

घबराहट, बेचैनी, कमजोरी में सेवन करें ।

★ **अमृत रसायन**

गर्मियों में सेवनीय उत्कृष्ट शक्तिवर्धक रसायन है ।

★ **आंवला तैल** (विशुद्ध तिल तेल से निर्मित)

बालों को मुलायम व काला रखता है। दिमाग को ताजा व ठण्डा रखता है। शक्ति को बढ़ाता है।

प्रकाशक : डा० गंगाराम कुलसचिव : गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
: सुरेशचन्द्र वैराग्य, मैनेजर : गुरुकुल कांगड़ी प्रिंटिंग प्रेस, हरिद्वार ।

गुरुकुल-पत्रिका

सरदार भगतसिंह-अंक

अर्चन्नु स्वराज्यम् ॥ ऋ० १. ८०

स्वराज्य की हो अर्चना : स्वराज्य की हो वन्दना ॥

मार्च १९७९ चैत्र २०

विषय-सूची

--गुरुकुल पत्रिका का मूल्य--

	देश	विदेश
वार्षिक	१२ रुपये	२० रुपये
एक प्रति	१ रुपया २५ पैसे	१ रुपया ७५ पैसे

प्रधान सम्पादक--भगवद्दत्त वेदालंकार

सम्पादक मण्डल--डा० क्रान्तिकृष्ण, प्रो० रामाश्रय मिश्र, प्रो० वेद प्रकाश, पं० महावीर 'नीर'

छात्र सम्पादक-- ब्र० बलवीरसिंह ब्र० सत्यवीरसिंह

संदेश

भगतसिंह परिवार के समस्त सदस्यों के मंगलमय जीवन की परमपिता परमात्मा से कामना करता हूँ और आशा करता हूँ कि अहिंसा, अनुशासन, अप्रमाद एवं अभय का व्रत धारण करेंगे एवं गुरुकुल की महान् मर्यादानुसार जीवन बिताते हुए राष्ट्र-सेवा के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

भगतसिंह ने खून दिया कि हमें आजादी मिले। आओ हम पसीना और स्नेह दें कि हमारी आज़ादी कायम रहे।

इन्कलाब जिंदाबाद।

कुमार
कुलपति
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

★ एक ही जादू

★ कड़ी मेहनत

★ दूर दृष्टि

★ पक्का इरादा

★ अनुशासन

—इन्दिरा गाँधी

ओ३म्

गुरुकुल-पत्रिका

[गुरुकुलकांगड़ीविश्वविद्यालयस्य मासिक पत्रिका]

चैत्र : २०३२, मार्च १९७६, वर्षम्-२८, अङ्कः ५, पूर्णाङ्कः ३२६

ऋ० ९ मं०, ११३ सूक्त.

पवमान सोम

पवमान पवित्र हुआ सोम रस–(भौतिक क्षेत्र)

उपासक के हृदय में पवमान–शान्त प्रवाह रूप में सोमरूप परमातमा (आध्यात्मिक क्षेत्र)

सत्यमुग्रस्य बृहतः संस्रवन्ति संस्रवाः ।
संयन्ति रसिनो रसाः पुनानो ब्रह्मणा हर इन्द्राय ....॥५॥

(हरे) हे दुखों को हरने वाले सोम ! जब तू (ब्रह्मणा पुनानः) ब्रह्म वेद-मन्त्रों से स्तूयमान होता है तब (बृहतः) तुझ महान् तथा (सत्यं उग्रस्य) सत्य के उच्चशिखर से उद्‌गीर्ण हुए के (संस्रवाः संस्रवन्ति) आनन्द के स्रोत प्रवाहित होते हैं (रसिनः रसाः संयन्ति) तुझ रसभरे के रस सम्यक् प्रकार से प्राप्त होते हैं । शेषं पूर्ववत्

—०:०—

स्वामिनः श्रीविद्यानन्दसरस्वतयः

विद्याभूषणः, श्रीगणेशराम शर्मा, डूंगरपुरम् (राजस्थान)

स्वामिमहाभागानां रचनाद्वयम्

स्वामिवर्याणामेतेषां श्रीविद्यानन्दसरस्वतीनाम् मौखिकानि भाषणप्रवचनकाव्यपाठव्याख्यानादीनि तु बहुधा श्रुतानि परन्तु तद्विरचितं केवलं रचनाद्वयमेवास्माकं दृष्टिपथमगच्छत् । एकं तु तावद् भुवनेश्वरनवरत्नस्तोत्रमास्तेऽपरं च श्री धनेश्वराष्टम् । तदत्र तावदधस्ताद् भुवनेश्वरनवरत्नस्तोत्रमविकलमवतार्यते --

श्रीमच्छैलपुराभिधाननगरात् क्रोशत्रये पश्चिमे,
जाता श्रीभुवनेश्वरस्य महती मूर्तिः स्वयं दृश्यते ।
देव्याश्चैव गजाननस्य च बलीवर्दस्य वै मारुते-
स्त्वेतन्मौर्तिकपञ्चकं भुवि नरानव्यान्महापातकात्।।
वाणी यत्र न याति यत्र मनसो वृत्तिर्न संगच्छते,
बुद्ध्या निश्चयशक्तिरप्रतिहता संलीयते यत्र वै ।
यस्यापाङ्गविलोकनेन निखिलं स्थूलायते सूक्ष्मकं,
वन्देऽहं भुवनेश्वरं हरिहराद्वैतात्मकं शाश्वतम्।।२।।
या संवित्त्रिगुणात्मिकासुसकलास्वत्यन्त मालोक्यते,
या माया विशदीकरोतिसकलं यस्यैकया सत्तया ।
यत्सत्तामवलम्ब्य शांतहृदया योगीश्वरामन्वते,
वन्देऽहं भुवनेश्वराभिदमहो तेजोमयं धामतत् ।।३।।
भूतानामनुकम्पया परमया यः प्रादुरासीत् स्वयं,
लिङ्गाकारतया प्रववर्द्धनतया पौरस्त्यसंदृष्टया ।
तेषामुद्धरणाय नास्तिकमताम्भोधौ निमग्नात्मनां,
वन्देऽहं भुवनेश्वरं कलिमलप्रध्वंसकं निष्कलम् ।।४।।
सर्वं नश्वरमित्यवेक्ष्य मतिमान् वैराग्ययुक्तः स्वयं,
सन्न्यस्येव वनान्तरं गतवद्वित्याभाति यस्येक्षणे ।
सर्वाभीष्टफलप्रदं सुमनसां ध्यानास्पदं योगिनां,
वन्देऽहं भुवनेश्वरं श्रुतिशिरोवेद्यं विभुं निर्गुणम्।।५।।
भक्तानां भयशोकमोहहरणं शान्तं शरण्यं नृणां,
स्वान्तःस्थं परमं प्रसन्नवदनं सौहार्दभावं गतम् ।
म्लेच्छोच्छेदकरं निरीश्वरमनो मातङ्गपञ्चाननं,
वन्देऽहं भुवनेश्वरं गिरिजया संसेवितं निर्मलम्।।६।।
यो गङ्गां जटया भगीरथमनःसिद्ध्यर्थमाबद्धवान्,
दैत्यानामहिताय पर्वतसुतां गौरीं मुदोदूढवान् ।
यो लोकभयरक्षणाय सकलं हालाहलं पीतवान् ।
वन्देऽहं भुवनेश्वरं सदसदात्मानं सदा भास्वरम्।।७।।
येन श्रीभुवनेश्वरः प्रतिदिनं सम्पूजितः सत्वरं,
येनाभीष्टसुसिद्धये मतिमता संस्मारितः सादरम् ।
यं मोक्षास्पदमामनन्ति मुनयो ये चैकदा शंकरं,
तेषां शंकरएव शं प्रकुरुते नान्यस्त्वृते शंकरम् ।।८।।

नन्द्येकदन्त गिरिजाबटुकाञ्जनेयै-
र्जातैः स्वयं निजगणैरभिपूज्यमानम् ।
संस्तूयमानमनिशं मुनिभिः सदारै-
र्वन्दे महेश्वरमहं भुवनेश्वराख्यम् ।।९।।
नवरत्नमिदं स्तोत्रं कृतं तुष्टेन चेतसा ।
विद्यानन्दसरस्वत्या प्रीयतां भुवनेश्वरः ।।१०।।

स्तोत्रमेतत् श्रीअच्युतमुद्रणालयः २२३-कालबादेवीरोड-बम्बई इत्याख्यये मुद्रणालये श्रीस्वामिचरणैर्मुद्रापितमास्ते । स्तोत्रस्यास्यपठनात् स्वामिवर्याणाम् भगवति सच्चिदानन्दघने श्रीभुवनेश्वरे नैष्ठिकी भक्तिः,शास्त्रज्ञानं, रचनापटुत्वं, वेदान्तप्रतिपाद्य ब्रह्मैकनिष्ठत्वं, श्रद्धाप्रवणत्वमास्तिक्यं चैतदादयो भावाः सुस्पष्ट सुस्फीतं च साक्षाद्भवन्ति भावुकानां सहृदयानां पाठकानाम् ।

एवमेव श्रीविद्यानन्द स्वामिमहाभागैर्विरचितं श्री धनेश्वराष्टकमपि मुद्रितरूपमुपलभ्यते । तदपीहोद्धरणस्य लोभं संवरीतुं न पारयामहे, ततोऽविकलमवतार्यतेऽधस्तात्-

मार्कण्डगौतमपराशरयाज्ञवल्क्य-
गर्गादितापसवरैरुपसेव्यमानम् ।।
भक्ताम्बुजाम्बरमणिं भजनीयवृत्तं

श्रीमद्धनेश्वरमुमेश्वरमाश्रयेऽहम् ।।१।।
पुष्पायुधो वितनुतां गमितोऽद्ययेन
यस्यागमच्छत्रगुरुतां नगरद्विडमाद्रिः।।
यं सर्वहृत्कमलमध्यगतं वदन्ति
श्रीमद्धनेश्वरमुमेश्वरमाश्रयेऽहम् ।।२।।

व्याघ्राम्बरस्य वसनं कटिभागलग्नं
कर्पूरगौरसितभस्मविभूषिताङ्गम् ।।
गौरीगणेशगुहनन्दियुतं महेशं
श्रीमद्धनेश्वरमुमेश्वरमाश्रयेऽहम् ।।३।।

त्रैलोक्यपूज्यसुरवदन्तिपादपद्मं
पाखण्ड पादपकुठारमनन्तशक्तिम् ।।
शीर्षावरूढसरिदार्द्र विशालभालं
श्रीमद्धनेश्वरमुमेश्वरमाश्रयेऽहम् ।।४।।

यत्रास्ति भूतनिलयःपरिवारयुक्तो
धर्मार्थकामफलसाधनमुक्तियुक्तः ।।
ध्यायन्ति यं द्विजवरा निजकर्मशुद्ध्यै
तं श्रीधनेश्वरमुमेश्वरमाश्रयेऽहम् ।।५।।

आलोडय शास्त्रमखिलं निगमागमोक्तं,
उन्मुच्य कैतवधियं परिगृह्य तथ्यम् ।।
भोः भूसुराः शृणुतमद्वचनं पृथिव्यां
मुक्तिप्रदोऽस्ति न धनेश्वरमान्तरेण।।६।।

सर्वेर्धनेश्वर इति प्रथितं पृथिव्यां
तापत्रयापहरणं शरणं नराणाम् ।।
तस्माद्भज त्रिविधताप निवारणाय
यद्यस्ति सर्वसुखशांतिकरी मनीषा।।७।।

विद्याविनोदहृदयैक निकेतनस्य
संसारताप परिदग्ध महौषधस्य।।
दिग्वाससः शशिकलाधरशेखरस्य
पूज्याङ्घ्रिपद्मयुगलं विमलं भजामि।।८।।

स्तव्यं शिवस्तवनतद्गतमानसानां
मान्यं धनेश्वरगुरुस्तवनं यशस्यम् ।
येषां हृदि स्फुरति नित्यमनन्यभक्तया
तेषां भवत्सकलसिद्धिरितीह सत्यम् ।।९।।

स्वामिमहाभागानां श्रीविद्यानन्दसरस्वतीनामनेन स्तोत्रद्वयेन भगवन्निष्ठा, शास्त्रज्ञानं, व्युत्पत्तिर्भक्तिभावनाप्रवणत्वं, रचनाचातुर्यं, भाषाधिकारादयस्तेतेगुणा, विशालहृदयता, बुद्धिवैभवं च प्रत्यक्षं भवन्ति सहृदयानां पाठकानाम् ।

भोक्तृत्वशक्तिः

स्वामिमहोदयोऽयं श्रीविद्यानन्दसरस्वतिमहाभागःसर्वसुखनिर्व्यपेक्षोऽपरिग्रहशीलस्त्यागैकव्रतोऽपि च यदाकदा राजसिकान भव्यभोगान् भोक्तुं व्यवस्यतिस्म । भुवनेश्वरमण्डलपरिसरे निवसन्तो ग्रामीणाः प्रजाजनाः स्वामिवर्यं,सीतारामममहात्मानं च विवाहगंगोद्यापनादिषु शुभप्रसङ्गेष्वामान्त्रयन्ति स्म । तेऽपि च सरलहृदयानामास्तिकानां ग्रामिणानां निश्छलमानसानामकृत्रिमस्नेहानुरोधात्तत्र गच्छन्ति स्म । ग्रामेषु यातायातसौविध्याकांक्षया स्वामिवर्योऽश्वमेकमपालयत् । तस्याश्वस्य स्वामिवर्यः सुग्रीव-इतिनामकरणमकरोत् । स्वामिमहाभागस्य यात्राविधिश्चापि सर्वतन्त्रस्वतन्त्रो यथेच्छं प्रावर्तदिने वा रात्रौवा मध्याह्ने सायाह्ने प्रातर्वायदापि तन्मनोरुचिर्भवति स्म तदैव सुग्रीवमारुह्य ग्रामान्तरं व्रजन्तिस्म। बाराँप्रान्तस्य प्रत्येकं ग्रामं सोऽटतिस्म यथेच्छम् । अश्वस्य तस्य सुग्रीवस्य परिपालनं साधुः सीताराम एव हि विशेषतस्तत्रागतानां भिल्लानां सहयोगेन संसाधयन्नासीत् । स्वामिमहाभागोऽसौ विद्यानन्दो ज्ञाननिष्ठां द्रढयन्नपि समये राजर्षिरिव दिव्यान् भव्यान् राजसिकांश्च भोगान् बुभुजे । कतिचिद्वर्षाणि स भंगारसं शर्करामरीचिबादाममिश्रितं सिषेवे। कानिचिद्वर्षाणि यावत् सताम्बूलानि सुधाखदिरसारलवङ्गैलाकेशरकस्तूरिकासहितानिचर्वणररो मुमुदे । तमालपत्रमपि सुगन्धयुक्तं बहून्

वर्षान सेवता कदाचित् क्षीरापूपमोदकादीन् पदार्थान् साधयित्वा भुवनेश्वर प्रसादरूपं तत्रागतै ब्राह्मणैरन्यैश्च भक्तैः सह विना पंक्तिभेदं स्वयमसेवतान्यांश्चाभोजयत् । एवमेव स खलु प्रायेण नित्यमेव हि नवनवान् भोगान् राजसिकान् भुक्त्वा-भुक्त्वान्ते स्वयमेव हि स्वेच्छया पर्यत्यजत् । न हि कस्याप्येकस्य भोगस्य व्यसनस्य वाधीनोऽभूद्यद्यपि स प्राप्तावसरं यदृच्छोपनतान् भोग्यपदार्थानभुङ्क्त । स खल्वतीव व्यवस्थाप्रिय. स्वच्छतापवित्रताभिलाषुकोऽभूत । ततः सः स्वाश्रमे विद्यमानं प्रत्येकं वस्तु स्वच्छं सुन्दरं शुद्धं च यथास्थानं निधाय रक्षति स्म । तस्य प्रचण्डं व्यक्तित्वमेव तादृगभूद् यत्तत्पुरतो न कोऽपि च प्राकृतो जनो, विद्वान् विशेषज्ञो ब्राह्मणोऽथक्षात्रो वणिग्जनो भिल्लो वा कर्षको वा मनागपि स्वेछाचारं धृष्टतां कुचेष्टां च कर्तुं शक्नोति स्म । मर्यादानुरोधाद्भुवनेश्वरमागतो जनसाधारणः स्वामिवर्याणां प्रभाववशगस्तन्मनोवृत्तिसमनुकूलमेव चेष्टितुं बाध्यो भवति स्म ।

यदा कदा स्वामिचरणाः श्रीदिद्यानन्द महाभागाः सप्रयोजनं निष्प्रयोजनं वा डूँगरपुरमपि श्रायान्ति स्म । अत्र नगरे केचन वैश्याः केचित् स्वर्णकाराः केचन ब्राह्मणाश्च तद्भक्ता आसँस्तेषामेव गृहेषु ते स्वावासमकल्पयन् । परन्तु भोजनंतुते ब्राह्मणानामेव गृहे स्वीकुर्वन्ति स्म । द्विजजनेषु तेषां श्रद्धा, पूज्यताभावो, गौरवं च जागर्ति स्म । भुवनेश्वरस्य कापि राज्यकृता साधीयसी व्यवस्था नासीत् । स्वामिवर्यैरेव तैरेतैर्विद्यानन्द सरस्वतिमहाभागैस्तीर्थस्यास्य प्राकृतिकीं स्थितिं संरक्षद्भिर्जीर्णोद्धारो विहितः । धर्मशाला नद्याघट्टो, वनवृक्षसंरक्षणं, स्थानशुद्धिः, शङ्करादीनां स्वयम्भूदेवविग्रहाणां नित्यपूजनस्य व्यवस्थाऽखण्डदीपज्योतिः संस्थापनं, परिचारकनियोजनं, गोपालनमित्यादिकं सर्वमप्यद्यत्वे सुचारु शोभनं सुव्यवस्थितं च भुवनेश्वरतीर्थे दरीदृश्यते तत्सर्वं स्वामिनामेवैतेषां विद्यानन्द महाभागानां पुरुषार्थविलसितं तत्प्रयत्नानां महोद्यमस्य च फलमिवाभाति । एतत् सर्वं विधातुं धनस्य महतीखल्वावश्यतासीत् । ततः स गुर्जरादिप्रदेशेषु गत्वा सात्त्विकोपायैर्धनिकेभ्यो यथा श्रद्धं प्रदत्तं धनमानीयानीय यत्सम्भवमभूत्तत्सर्वमनुतष्ठौ ।

संग्रहविधिः

यद्यपि स्वामिमहाभागः सर्वथा त्यागैकलक्ष्योऽपरिग्रहे स्वास्थां निष्ठां द्रढयन्नभूत्तथापि पुस्तकसंग्रहे घटिकादियन्त्राणां सुधारणे तस्य निसर्गप्रेरितेवरुचिः समभूत् । ततस्तस्य सविधे संस्कृतहिन्दीपुस्तकानि, यन्त्रोपकरणादीनि च प्रभूतानि विद्यमानान्यासन् । स हि सर्वानपि संग्रहोचितान् सम्भारान् स्वच्छान् शुद्धान् कार्योपयुक्तान् भास्वरांश्चररक्ष । कानिचिद्वस्तूनितु तत्सविधे तथाविधान्यप्यासन् यानिसामान्यतो महानगरेषु राजभवनेषु धनिनां गृहष्वपि दुर्लभानि स्युः । स्वामिवर्योऽसौ विद्यानन्दमहाभागः प्रायेण सदासर्वदैव कर्मतत्परः किमपि किमपि नव्यं वस्तु निर्मातुमुद्युक्तः स्थिरासनो विविधोपकरणपरिवृत एव तस्थौ । संन्यासिनोऽपिसेयं कर्मठता स्पृहणीयैवासीत् ।

केचिद्विचित्राः प्रसङ्गाः

अथैकदा कश्चनैको वंशपुर (बाँसवाड़ा) राज्यस्यग्रामीणो जनो भुवनेश्वरतीर्थमागच्छत् । नद्यां कृतस्नानो दर्शनपूजनविधिं परिसमाप्य नैवेद्यं साधयित्वा भगवते भुवनेश्वराय विनिवेद्य स्वयमपि प्रसादं भुक्त्वा यथा गतस्तथा पुनः स्वस्थानं प्रति प्रतस्थे । तत्प्रस्थानानन्तरं स्वामिमहोदयेनालोकितम् यत्तत्रत्याया धर्मशालायानवनिर्मितस्यलिन्द भित्तौ तेन नवागन्तुकेन कृष्णाङ्गारेण स्वनामधाम-

तिथिवारादिकं लिखितमासीत्तथा सा स्वच्छाभित्तिर्मलिनीकृतासीदिति। तद्वीक्ष्यैव सहसा स्वामिमहाभागोऽन्तः कोपाविष्टो बभूव। तत्कालं स्वासने निषण्णाः क्षणं किमपि विचिन्त्य भित्तौ लिखेतेन तस्य ग्रामीणस्य नामधामसङ्केतस्थलं लक्ष्यीकृत्य पत्रमेकमलेखीत्—"महाशय। त्वं भुवनेश्वरस्य भक्तोऽसि तत एवत्वमत्रागतः। श्रीभुवनेश्वर स्त्वामत्रागन्तुं पुनराज्ञापयति। अन्यत् सर्वं परित्यज्यत्वरितमेवात्रागम्यताम्।" स यात्री स्वगृहं प्राप्तो यावद्विश्राम्यति तावदेवतेन डाकद्वारा तदेनत्पत्रमुपलब्धम्। भगवदाज्ञागौरवं परिपालयन् स ग्रामीणोऽन्येद्युः पुनर्भुवनेश्वरमागतः। स्वामिमहाभागं प्रणम्योपविष्टः। तं दृष्ट्वैव स्वामी समवोचत्। 'आम् त्वमागतः। साधु कृतम्। त्वं तु सत्यमेव हि भुवनेश्वरस्य नैष्ठिकोऽसि भक्तः। अस्तु तावत्। त्वमेतां वालटिकाँ गृहाणानदीं गच्छ। स्नानं कृत्वा तामेतां वालटिकां मृदास्वच्छीकृत्यजलेनापूर्यात्रानय। गच्छ, गच्छ,- त्वरस्व। शीघ्रं बालटिकामत्रानय।" स यात्री पृष्टवान्--'स्वामिवर्य। तत्कार्यं किमासीद्यदर्थमहं पुनरत्राहूतोऽस्मि?' स्वामिमहाभागो गाम्भीर्येणावदत् 'अये, त्वमादौ शीघ्रमेव हि नदीं गत्वा सचैलं स्नात्वा बालटीमेताँ शुद्धजलेनापूर्यात्रानय। ततः सर्वं ज्ञास्यसि यदर्थमत्र पुनराहूतोऽसिभुवनेश्वरेण।' सग्रामीणः शीतर्तावपि सचैलं स्नात्वा जलभरितां वालटिकामानीय यावद्भुवनेश्वरदेवालयस्य प्राङ्गणे स्वपदं निधत्ते तावदेव स्वामिवर्यः श्रीविद्यानन्दमहाभागः ससम्भ्रमं स्वासनादुत्थाय तस्य समीपं गत्वादीत्--'आम्, आगच्छ मया साकम्!' इत्युक्त्वा तं धर्मशालाया अलिन्दमनैषीत्। भित्तौ तल्लिखितं सर्वं तस्मै प्रदर्श्य स्वामिनोक्तम्–'अपि तदे तत्त्वयात्र ह्योलिखितम्?' सोऽब्रूत–'आम् महाराज! मयैवैतल्लिखितम्!' एतदाकर्ण्य किञ्चित् क्रोधारक्तेक्षणं तं गभीरदशावलोक्य स्वामिवर्योऽवदत् 'तवोष्णीषमुत्तार्य बाटलिकायामस्यां निःक्षिप।' तेन भक्तेन तथैव कृतम्। पुनस्तमब्रवीत् स्वामिमहाभागाः 'वस्त्रेणानेन जलार्द्रेण तान्येतानिह्यस्त्वया लिखितान्यक्षराणि प्रोञ्छय! प्रोञ्छय, अरे! शीघ्रं प्रोञ्छय!! त्वर्यताम्! त्वर्यताम्!! स खलुवराको भक्तः स्वामिवर्यस्य प्रभाववशगो मन्त्र कीलितो भुजङ्गम इव स्वोष्णीषवस्त्राञ्चलेन मुहुर्मुहुः सम्प्रोञ्छय सम्प्रोञ्छय सर्वाण्यक्षराणिता तां भित्तिं सर्वथा स्वच्छां शुद्धां पवित्रां चाकरोत्। अन्ते स्वामिमहाभागस्तं भक्तोत्तमं परमया शांत्यागाम्भीर्येणावोचत्--'आम्, अधुना त्वं स्वगृहं गन्तुमर्हसि। यदि च ते मनस्यत्र धर्मशालायां स्वानामधामादिलेखनस्य बलवती चेदिच्छा भवति तदा त्वमत्र स्वधनेन स्वारिश्रमेण चैकं नव्यं कक्षं निर्मापय। तत्र कक्षे शिलापट्टिकायां ते नामोल्लेखोऽवश्यमेव हि कृतः स्यात्। इदानीं सुखेन त्वं स्वगृहं गन्तुमर्हसि।' श्रुत्वैतत् स्वामिनोवचः स भक्तस्ततः शनैः शनैरपागच्छत्।

अथैकदा स्वामिनो विद्यानन्द महाभागः स्वासने स्थिता अपश्यन् यद्धिकश्चनैकः काको भुवनेश्वरस्य मन्दिरान्तः प्रविश्य तत्र प्रज्वलतोऽखण्डदीपकस्य पात्रतो घृतं भक्षयन्नास्त इति। सहि स्वासनादुत्थाय तं काकं प्रधर्ष्यापातायत् स च काकः प्रोड्डीय पलायितः। परन्तु नैतावता स काकस्तत्रागमनं दीपकस्य घृतभक्षणं चत्याक्षीत्। स हि वायसो नित्यमेव दिने वार द्वयं त्रिवारं वापकौशलान्मन्दिरान्तः प्रविश्य लीलया दीपक घृतं भक्षयत्येव नूनम्। काकस्यानयाविरतस्वभावचेष्टया स्वामिमहोदयः श्रीविद्यानन्दमहाभागो मार्मिकं किमपि विघ्नमिवापतितं भावयन्नखण्डदीपज्योतिः खण्डनाशङ्कया स्वहृदि भृशमक्षुभ्यत्। स्वामिमहाभागेन प्रायः सदासर्वदैव काकस्य तत्रागमनशङ्कया सावधानेन-

जागरूकेण च स्थातव्यमापतितम् । चिन्ताशल्य-शङ्कुना मर्माहत इव स्वामिमहाभागो विद्यानन्दसरस्वतिर्लोहशलाकाः संयोज्य काष्ठ पट्टिका वस्त्रतिरस्करिणीराच्छाद्याच्छाद्य काकस्यतस्य घृतभक्षणायान्तः प्रवेशमवरोद्धुं नानोपायाः प्रयत्नाश्च विहिताः परन्तु स सर्वभक्षः काकहतकोऽपि धृष्टो धूर्तशिरोमणिर्येन केन प्रकारेण छिद्रमाप्य देवालयान्तः प्रविश्य घृतभक्षण पर एव तत्स्थौ । काककृते नानेनाकाण्डताण्डवोपद्रवेण चिराय परिश्रान्तः स्वामिमहाभागः सप्ताहमेकं यावन्मन्दिरं सर्वतो जालपाशमायोज्य धूर्तवायसराजस्य तस्य तत्रागमनगतिविधीन् सूक्ष्मेक्षिकया निभृतं परिपश्यन् सावधानं तस्थौ । सर्वां स्थितिं निपुणं ज्ञात्वाऽन्तत एकदा केवलमेकमेव काकस्य तस्य मन्दिरान्तः प्रवेशयोग्यमवकाशद्वारं विवृतमुन्मुच्य जोषमास्थितः स्वामिवर्यः । अथ च मध्याह्नोत्तरं घृतभक्तः स धूर्तवायसस्तत्राययौ । यावत् स काको विवृतछिद्रद्वारा मन्दिरान्तः प्रविष्ठस्ताव देव स्वामिमहोदयेन स्वयमन्तः प्रविश्य काकस्य तत्प्रवेशद्वारछिद्रं वस्त्रादिभिः पिहितम् । पुनस्तत्र तन्वीमेकाम् वेत्रयष्ठिकां स्वहस्तेनोद्धुत्य तं काकं मन्दिरान्तरमेव चक्रावर्तमन्त्रामयत् । घण्टाप्रायं समयमेवमेव बंभ्रम्यमाणौ स्वामिवायसावतीव पर्यश्राम्यताम् । श्रन्ते स्वामिमहाभागः कम्वलं समाच्छाद्यतं घृतभक्षकं धूर्तदिगम्बरं वायसराजं निरग्रहीत् । तं च कृतापराधं धृष्टं काकं दृढसूत्रेण चरणयोर्निबध्यतस्म । आहारं जलं च समर्पयत् । ततः स्वामिवर्यस्तमित्थमवदत्—'जानेऽहं त्वां काकमहर्षिम् । भोः त्वमतीव धूर्तोऽसि । धृष्टोऽसि ! शठोऽसी ! ध्वाङ्क्षापसद ! अधुना त्वं महद्भि रायासप्रयासैरुपायानांशतैः परिश्रमेण च महता कष्टेन कौशलेन च निगृहीतोऽसि । घृतं तु तेऽतीव रुचिकरमास्ते भोः ! साधु, साधु; विरसस्व भोः काकमहर्षे !' एवमुक्त्वा स्वामिवर्यः सव्यङ्ग्यं साट्टहासं चोमुक्तकण्ठमुच्चैर्जहास । ततः पूर्वत एव संसाधितं तैलमिश्रितं दुग्धधवलं लेपं पात्रेनिधाय कूर्चिकया स काकाधमो लेपेन तेन सर्वाङ्ग चित्रितः । वायु प्रकाशाभ्यां शुष्कतामुपगते काकस्य देहलेपे स्वामिमहाभागो मन्दं मन्दं हसन्नब्रूत 'काकवर्य ! त्वं निःसंशयमतीव धूर्तोऽसि, शठोऽसि, घृतचौरोऽसि, एकचक्षुरपित्वं क्रान्तदृष्टा वर्तसे । यदि त्वं सत्यमेव चतुरशिरोकणिरसि तदा न कदाप्य च पुनर्भुवनेश्वरस्य प्रभोर्दीपकघृतभक्षणायात्रागमनपरिश्रमं कुर्याः । यदि च त्वं स्वभाव वशाद्भूयोऽप्यत्रागत्य घृतं भक्षितुमयचेष्टिष्यसे तदा त्वामहं कृष्णामपि शुक्लवर्णं महर्षिलीलयैव क्षणात्परिचेष्यामि नूनम् । मया चित्रितो लेपोऽयं ते तनुमिमां वर्षभरं शुक्लवर्णामेव रक्षेदिति मम विश्वासोऽस्ति । इदानीं त्वं यथेच्छं स्वच्छन्दं सर्वतन्त्र स्वतन्त्रं विहर्तुमर्हसि काकाधियत्ते ।' एवमुक्त्वा स्वामिना रज्जुबन्धनान्मुक्तः स काकस्तत उड्डीय पलायितः ससम्भ्रममम् वटवृक्षस्य शिखशाखां निषण्णः । तत्र च सः काकः स्वदेहं चित्रविचित्रवर्णं पश्यन् स्वात्मनो विचित्रां दशां प्रति साश्चर्यं निरीक्षणाणः 'काका' इति शब्दं भूयः प्रजल्पँस्तस्थौ । तत्र तस्य तच्छव्दध्वनिश्रवणादन्येऽपि च परसहस्त्राः काकास्तत्रागच्छन् परन्तु तं श्वेताङ्गं विचित्रवर्णं चित्रितं काकं स्वजातीयमपि तथाविधामवेक्ष्य तं नाभ्यनन्दन् केवलं कोलाहलैर्दिग्दिगन्ताना पूरयन् । एतत् सर्वं विलोक्य स्वामिवर्योऽन्तर्गूढं हसन् विहसन् सन् मुहुर्मुहर्मुमुदे ।

अथैकदा ग्रीष्मर्तावहं श्रीभुवनेश्वर मगच्छम् । प्रातः स्नानसन्ध्यापूजनभोजनादिकं परिसमाप्य मध्याह्ने स्वामिवर्योविद्यानन्द महाभागोऽहं च विश्रामाय वामकुक्षि-अस्वपाव । यावदावां द्वावपि निद्रासमाधिसुख मनुभवावस्तावदेव मया दृष्टम्—

(क्रमशः)

"कवयः कालिदासाद्या भवभूतिस्तु महाकविः"

(मुक्तं वृत्तम्)

डा० राजमणिपाण्डेयः, कुरुक्षेत्रविश्वविद्यालयः

न हि कवीनां काव्यप्रतिभा जातु तुलया तोल्यते ।
रीतिध्वनिवक्रोक्तिगुणनेत्रैर्न सकलं दृश्यते ।।१।।
सदा वै उड्डीयमाना मुक्तमुक्ता वक्रगाः ।
महाप्रतिभाकाशमार्गे कविविहङ्गा यान्ति ते ।।२।।

लोकमार्गं परिहरन्तो नैव गृह्यन्ते हि ते ।
रीतिध्वनिवक्रोक्तिगुणदोषादिकारापञ्जरे ।।३।।
सन्ति यद्यपि तत्र आचार्या महात्मानो हि ते ।
दण्डिवामनविश्वनाथाभिनवगुप्ताद्या ननु ।।४।।

किन्तु तेषां काव्यविहगग्रहणयत्ना भान्ति मे ।
क्वचित्सफलाः क्वचिदसफलाः क्वचिद् भ्रान्ताः सर्वथा ।५।
नियतिनियताः कष्टकष्टा नीरसाः प्रायेण ते ।
दोषगुणबन्धनगता आचार्ययत्ना भान्ति मे ।।६।।

अतः तुलना कालिदासस्य कवेर्भवभूतिना ।
जातु सफला जात्वसफला जातु भ्रान्ता भाति मे ।।७।।
अत्र तुलना कालिदासस्य कवेर्भवभूतिना ।
केवलमालोचनादृष्ट्या मया तु विधीयते ।।८।।

कालकर्तृकमन्तरं वै वर्तते महदन्तरम् ।
कालिदासस्य च भवभूतेश्च कविवर्यस्य हि ।।९।।
कालिदासस्य हि कालः खृष्टकालात् प्राक्तने ।
प्रथमशतके मन्यते प्रायेण पौरस्त्यैर्जनैः ।।१०।।

तस्य भवभूतेश्च कालः खृष्टकाले मन्यते ।
सप्तमे शतके अहो कालस्य तन्महदन्तरम् ।।११।।
प्रथमशतके खृष्टपूर्वे बहुमता शैली हि या ।
सप्तमे शतके न सा बहु मन्यते स्म कविजनैः ।।१२।।

अतः शैल्या अन्तरम् उभयोर्हि यद्वै दृश्यते ।
तत्र कालः कारणं नो जातु कव्योः प्रातिभम् ॥१३॥
कालिदासस्य हि काले सरलसंग्लाऽकृत्रिमा ।
बहुमता शैली अनाडम्बरमयी प्रासादिकी ॥१४॥

महाकविभवभूतिकाले किन्तु या शैली मता ।
सा हि पाण्डित्यप्रधाना कृत्रिमालङ्कारिकी ॥१५॥
सहजसहजा सुप्रसन्ना कालिदासस्य कृतिः ।
महाकविभवभूतिकाव्यं तेन पाण्डित्येन१ हि ॥१६॥

स महाकविकालिदासो विविधकाव्यं रचितवान् ।
महाकाव्ये खण्डकाव्यं मुक्तकं नाट्यत्रयम् ॥१७॥
महाकविभवभूतिना तु निर्मितं रूप्यत्रयम् ।
काव्यभेदकृतो हि भेदो वर्तते उभयोरयम् ॥१८॥

कवेर्भवभूतेश्च तस्य कालिदासस्य तथा ।
तादृशं सम्बन्धनं वै संस्कृते ननु वर्तते ॥१९॥
यादृशं वै ग्रीकसाहित्ये तयोः खलु दृश्यते ।
ईसकाइलसनाम्नो यूरीपिडीजनाम्नस्तथा ॥२०॥

इति मतं यच्छ्रूयते रायडरमहोदयसम्मतम् ।
तत्तु बेरिडेलकीथनाम्ना पण्डितेन खण्डितम् ॥२१॥
कालिदासो भारतीये नाट्यसाहित्ये महान् ।
ग्रीकसाहित्ये च सोफोक्लीजनामा बुद्धिमान् ॥२२॥

इति तु कथयति ततः कीथः ग्रीकसंस्कृतवाङ्मये ।
तथा पश्यन् सकलदृष्ट्या जीवनं सकलं ननु ॥२३॥
कालिदासस्य तु वैदर्भी मता शैली हि सा ।
कवेर्भवभूतेस्तु शैली सा तथा गौडी मता ॥२४॥

"माधुर्यव्यञ्जकैर्वर्णै रचना ललितात्मिका ।
अवृत्तिरल्पवृत्तिर्वा वैदर्भी रीतिरिष्यते ॥२५॥

१—इत्थम्भूतलक्षणे तृतीया ।

"ओजःप्रकाशकैर्वर्णैर्बन्ध आडम्बरः पुनः । समासबहुला गौडी"

कालिदासे हि प्रसादः स गुणः सार्वत्रिक ।
किन्तु भवभूतौ कवौ ओजो नु बहुतं दृश्यते ॥२६॥
कलिदासे व्यञ्जना भूम्ना सदा ह्युपलभ्यते ।
किन्तु भवभूतौ कवौ अभिधैव प्रायः श्रूयत ॥२७॥

कालिदासे जीवनस्य पूर्णता ननु लक्ष्यतं ।
किन्तु भवभूतौ हि गाम्भीर्यं नु प्रायो लक्ष्यते ॥२८॥
ततो भवभूतौ न हास्यं नाटकेषु लभ्यते ।
नो च पात्रं हास्यकारी स विदूषक आप्यते ॥२९॥

पदे वाक्ये च प्रमाणे स कविः पारङ्गतः ।
महादार्शनिकः स भवभूतिः स भाषायाः प्रभुः ॥३०॥
तेन दार्शनिकेन दार्शनिकैः पदैः काव्यं कृतम् ।
सरससरसं महागम्भीरं तथा भवभूतिना ॥३१॥

महाकारुणिकर्महाशयकविर्भवभूतिर्महान् ।
करुणरसकाव्ये पराकाष्ठां गतो नाट्ये तथा ॥३२॥
यत्र व्यङ्ग्योऽर्थोऽतिशेते वाच्यमर्थं काव्यके ।
उत्तमं काव्यं ध्वनिः स कथ्यते ध्वनिवादिभिः ॥३३॥

यत्र वै करुणो रसो भवभूतिनाट्ये रस्यते ।
तत्तु उत्तमकाव्यमिति ननु व्यंजनत्वान्मन्यते ॥३४॥
उत्तमं काव्यं तु वाच्येऽर्थे प्रधाने सत्यपि ।
जायते इत्यत्र भवभूतिः कविः स निदर्शनम् ॥३५॥

न हि सदा व्यङ्ग्योऽर्थ एव उत्तमत्वे कारणम् ।
आदिकाव्यं च महाभारतमत्र निदर्शनम् ॥३६॥
सरलसरलोऽभिधाबोध्योऽर्थोऽपि उत्तमकाव्यकृत् ।
आङ्ग्लजर्मनफ्रेञ्चहिन्दीप्रभृतिसाहित्ये यथा ॥३७॥

तथा संस्कृतवाङ्मये भवभूतिकृतनाट्यत्रयम् ।
सरलसरलैर्मधुरमधुरैः सुप्रसन्नैश्च पदैः ॥
महाकविभवभूतिकाव्ये जायते ननु चारुता ॥३८॥

तस्माद्रीतिवैशिष्ट्याद्भवभूतिर्महाकविः ।
एककाले स्थितोऽपि स सनातनायते ननु ॥३९॥ ×

तज्जीवनं यच्च सुसंस्कृतं स्यात्

वैद्य रामस्वरूप शास्त्री, सम्पादकः, बालसस्कृतम्,

तज्जीवनं कर्मपरायणं यत् तज्ज्जीवनं धर्मपरायणं यत् ।
तज्जीवनं यत्र च यत्नपूजा तज्जीवनं यत्र विधिप्रवृत्तेः ।।

तज्जीवनं यद् विद्याधिपाठं तज्जीवनं शास्त्रविचारभूयम् ।
तज्जीवनं यत्र गुणप्रशंसा तज्जीवनं यद्धरिभक्तिसक्तम् ।।

तज्जीवनं यत्र सुबुद्धियोगः तज्जीवनं यत्र धनप्रयोगः ।
तज्जीवनं यत्र फलं कृतस्य तज्जीवनं यत्र विभा श्रुतस्य ।।

तज्जीवितं यच्छीलेन शोभितं तज्जीवनं यद्विनयेन भूषितम् ।
तज्जीवनं यद्व्यवहारविज्ञं तज्जीवनं यद्ध्यनुशासितं स्यात्।।

तज्जीवनं यत्र विशेषताऽस्ति तज्जीवनं यत्पुण्यं क्रियासु ।
तज्जीवनं यत्र नवीनताऽस्ति तज्जीवनं यत्र मनः प्रसन्नम् ।

तज्जीवनं यत्र च सत्यतास्ति तज्जीवनं यत्र च मित्रताऽस्ति ।
तज्जीवनं यत्र मनस्विताऽपि तज्जीवनं यत्र जयः परेषाम् ।।

तज्जीवनं यत्र च शौर्यमस्ति तज्जीवनं यत्र च धैर्यमस्ति ।
तज्जीवनं यत्र न चौर्यमस्ति तज्जीवनं यच्चसुनिर्भयं स्यात् ।।

तज्जीवनं यत्र हि देवपूजा तज्जीवनं यत्र गुरोः समर्चा ।
तज्जीवनं यत्र गवां सुरक्षा तज्जीवनं यद्भू देवपूजितम् ।।

तज्जीवनं यत्र रतिः स्वधर्मे तज्जीवनं यत्र च देशनीतिः ।
तज्जीवनं यत्र मिथः प्रतीतिः तज्जीवनं यत्र गतिर्जगत्याम् ।।

तज्जीवनं यत्र पितुः प्रसादः तज्जीवनं यन्मातुः शुभाशम् ।
तज्जीवनं यत्र गुरोः शुभाशिषः तज्जीवनं यत्र हरेःकृपाऽस्ति।

तज्जीवनं यज् ज्ञानेन सुन्दरं तज्जीवनं यद्विज्ञानचर्चितम् ।
तज्जीवनं यच्चसुसंस्कृतंस्यात् तज्जीवनं यत्र हि संस्कृतंस्यात्।।

—:०:—

साम्प्रतं तन्न साम्प्रतम्

वैद्य रामस्वरूप शास्त्री, सम्पादकः बालसंस्कृतम् बम्बई–८६

स्वतन्त्रे भारतेऽस्माकं गणतन्त्रं विराजते ।
तथापि पीडिता लोकाः साम्प्रतं तन्न साम्प्रतम् ॥१॥

आङ्गली वर्धते शिक्षा नैजी नश्यति संस्कृतिः ।
धर्मे न वर्तते स्थैर्यं जनानाँ तन्न साम्प्रतम् ॥२॥

मुद्रायाः ह्रीयते मूल्यं वस्तूनाँ तद्वर्धते ।
महर्घो याति चाकाशं साम्प्रतं तन्न साम्प्रतम् ॥३॥

अन्नं वस्त्रं गुडं तैलं नेन्धनं चापि लभ्यते ।
नगरेषु निवासाय न गृहं तन्न साम्प्रतम् ॥४॥

गेहे स्नेहो न स्वीयेषु नास्ति शालासु शासनम् ।
नास्ति मित्रेषु सत्प्रीतिः साम्प्रतं तन्न साम्प्रतम् ॥५॥

कार्यार्थाः स्वामिनः सन्ति सेवकाश्च धनार्थिनः ।
लोके नीतिभयं नास्ति साम्प्रतं तन्न साम्प्रतम् ॥६॥

प्रभवः सन्ति लुण्टाकाः साधवः सन्ति पीडिताः ।
नीतिभ्रष्टाश्च नेतारः साम्प्रतं तन्न साम्प्रतम् ॥७॥

छात्रेषु विनयो नास्ति विश्वासः स्वसुतेष्वपि ।
पितरौ नापि चादर्शौ साम्प्रतं तन्न साम्प्रतम् ॥८॥

दीनाहीनामलीनाश्च कार्यचौरा दिने दिने ।
ग्रामीणा नगरं यान्ति साम्प्रतं तन्न साम्प्रतम् ॥९॥

स्वतन्त्राः साक्षराः नार्यः कार्यायविचरन्ति याः ।
संस्थानेषु च भृत्याय साम्प्रतं तन्न साम्प्रतम् ॥१०॥

पण्डिताः खण्डिताः सर्वे संस्कृतं समुपेक्षितम् ।
संस्कृतिः मन्दतां याति साम्प्रतं तन्न साम्प्रतम् ॥१॥

—:०:—

नैष धर्मः सनातनः

वैद्य रामस्वरूप शास्त्री, सम्पादकः, बालसंस्कृतम् बम्बई–८६

वानप्रस्थो गृहस्थो वा सन्यासी वा भवेज्जनः ।
देवं न पूजयेन्नित्यं नैष धर्मः सनातनः ॥

सोसिलिष्टः कम्यूनिष्टः काँग्रेसी वा भवेज्जनः ।
न देशस्य हितं कुर्यान्नैष धर्मः सनातनः ॥

जापानं जर्मनं वापि लण्डनं वा व्रजेन्नरः ।
न देशं पुनरागच्छेत् नैष धर्मः सनातनः ॥

उत्कोचग्राहको वापि बलेकमार्केटगोऽपि वा ।
भीतो न जायते, धर्मान्नैष धर्मः सनातनः ॥

अटेदार्यो विदेशेषु गुणानन्यानवाप्नुयात् ।
वृत्तं च हापयेन्नैजं नैष धर्मः सनातनः ॥

होटलं प्रातरुत्थाय गत्वोच्छिष्टं पिबेन्नरः ।
सर्वभक्षी दिने शायी नैष धर्मः सनातनः ॥

बी·ए·वा एम.ए·वापि कृत्वा न विनयी भवेत् ।
शिष्यो विद्यागुरुं हन्ति नैष धर्मः सनातनः ॥

धनिकस्य गृहं गत्वा वेतनी भृतको भवेत् ।
कार्यं मन्दगतिः कुर्यान्नैष धर्मः सनातनः ॥

धार्म्यः कार्यक्रमो भावी इति कृत्वा शुल्कं हरेत् ।
नर्तयेत् कन्यकारङ्गे नैष धर्मः सनातनः ॥

पाठे वर्गे किशोराणाँ किशोरीभिरलं भवेत् ।
सङ्गो रङ्गे च नृत्ये च नैष धर्मः सनातनः ॥

कोटं च पतलूनं च वाचं च धरते जनः ।
पामरोऽपि परं वीक्ष्य नैष धर्मः सनातनः ॥

खादेत् पित्रार्जितं भक्तं माता दत्तं पयःपिबेत् ।
कार्यं वीक्ष्य व्रजेद् दूरं नैष धर्मः सनातनः ॥

भ्राता च भ्रातरं वीक्ष्य क्रुद्धो भूत्वा शपेन्नरः ।
सम्मतो न भवेज्जातु नैष धर्मः सनातनः ॥

मित्रं मित्रमितिब्रूयात्तेन खादेत् पिबेदपि ।
कार्यकाले छलं कुर्यान्नैष धर्मः सनातनः ॥

यावनीं वा पठेद् भाषामाङ्गलां वा पुनः पठेत् ।
न पठेत् संस्कृतं क्वापि नैष धर्मः सनातनः ॥

—:०:—

सूली पर सोते हैं जो"

श्री कौशल सिखौला

अखण्ड हिन्दुस्तान के उज्ज्वल ललाट से दासता रूपी कालिमा धोने के लिए पंजाब ने अपना लहू खूब बहाया है। इस धरती ने यूं तो अनेक वीरों को जन्म दिया है पर कुछ ऐसे हैं जो जन्म के क्षणों को अमरत्व दे गए हैं। अश्विन शुक्ला त्रयोदशी सं. १९६४ वि० तदनुसार २८ सितम्बर १९०७ शनिवार का दिन प्रातः लगभग ९ बजे का समय श्री भगत सिंह को जन्म देकर धन्य हो गया। देश-प्रेम की दीप-शिखा पर चमकने वाले क्रांतिकारी पतंगों में भगत सिंह का नाम सर्वोपरि है। जब भगत सिंह का जन्म हुआ तो बंगा ग्राम (जिला लायलपुर, पाकिस्तान) खुशियों से झूम उठा। निश्चय ही काल भी एक ओर खड़ा मन ही मन मुस्कुरा रहा होगा·· यह सोचकर कि जिस जन्म पर एक छोटा सा समुदाय खुशियां मना रहा है वही भविष्य में राष्ट्र की गतिविधियों का केन्द्रबिन्दु होगा।

भगत सिंह युगद्रष्टा थे। परतन्त्रता के बोझ से दबी जनता के निष्प्राण चेहरे·· भूखा पेट·· जीर्ण काया·· सभी ने भगत सिंह को झकझोर दिया। इस से छटपटा कर घर का मोह त्याग भारत माता के चरणों में पड़ी दासता की भारी लोह-शृंखलाओं पर प्रहार हेतु भगत सिंह रण-भूमि में कूद पड़े। उनमें अद्‌भुत संगठनक्षमता थी। आजाद-गणेशशंकर, राजगुरु आदि के साथ मिलकर भगत सिंह ने देश में विद्रोही गतिविधियों को तेज कर दिया। जब साइमन कमीशन का सम्पूर्ण देश में बहिष्कार किया जा रहा था तभी भगत सिंह का अभौतिक स्वरूप चमक कर सामने आया। सन् १९२८ में साइमन कमीशन लाहौर आया। विराट जन समूह विरोध में उठ खड़ा हुआ। लाला लाजपतराय जुलूस का नेतृत्व कर रहे थे। जैसे ही कमीशन के नेता सर जान साइमन स्टेशन पर उतरे, आकाश "गो बैक" के नारों से गूंज उठा। पुलिस अधिकारी स्काट के आदेश पर आफीसर जे०पी० साण्डर्स तिलमिला कर आगे बढ़ा और लालाजी सहित भीड़ पर डंडों के प्रहार करने लगा। लालाजी को चोटें आईं पर शारीरिक कम मानसिक अधिक। उन्होंने सोचा भी नहीं था कि पुलिस उन पर भी डंडे बरसा सकती है। बस यही सदमा उनके प्राण ले गया। भगत सिंह का खून खौलने लगा। साण्डर्स की हत्या करके उसने न सिर्फ लाला लाजपतराय का प्रतिशोध ही लिया वरन अंधे अंग्रेजी शासन को हिला डाला। इसके बाद असेम्बली में वायसराय की उपस्थिति में बम फेंक कर भगतसिंह ने इतिहास के पृष्ठों को गतिवान कर दिया। बाहरी सत्ता धड़ाकों से काँप उठी। भगत सिंह चाहते तो भाग सकते थे परन्तु वे अपना जीवन राष्ट्र को सौंप चुके थे। वे गिरफ्तार हो कर मुकदमे और अदालत को अपने विचारों के प्रचार का मंच बनाना चाहते थे।

फांसी की सजा होने पर उन्होंने बड़ी शांति से जेल में दिन व्यतीत किए। अध्ययन का उन्हें बड़ा शौक था। कार्ल-मार्क्स, बुखारिन और रसेल की युद्ध सम्बन्धी पुस्तकों का उन्होंने गहन अध्ययन किया। जेल में रहते हुए भगत सिंह ने स्वयं भी चार महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखीं जिनमें "समाजवाद का आदर्श" तथा 'मृत्यु के द्वार पर" बड़ी प्रेरक थीं। दुःख यही है कि सुरक्षा की दृष्टि से इस हाथ से उस हाथ होती हुई अन्ततः नष्ट हो गईं और विश्व एक क्रांतिकारी के विचारों से वंचित रह गया।

आखिर भगत सिंह को फांसी हो गई उनकी मृत्यु पर गांधी जी ने 'नव जीवन' में लिखा, "भगत सिंह अहिंसा के पुजारी नहीं थे पर वह हिंसा को धर्म नहीं मानते थे। अन्य उपाय न देखकर वे रक्तिम क्रान्ति को तैयार हो गए। इन वीरों ने मृत्यु के भय को जीता था। इनकी वीरता के लिए इन्हें हजारों नमन हो···।" भगत सिंह में धैर्य और कर्म की प्रधानता थी। उनमें अद्भुत चिंतन प्रतिभा थी। प्रेम के विषय में वे लिखते हैं, "जहाँ तक प्यार का नैतिक सम्बन्ध है, यह कहा जा सकता है कि यह अपने आप में कुछ नहीं. सिवाय एक आवेग के, लेकिन पाशविक वृत्ति नहीं, एक मानवीय अत्यन्त सुन्दर भावना..। प्यार तो हमेशा चरित्र को ऊँचा उठाता है। सच्चा प्यार कभी गढ़ा नहीं जा सकता। यह तो अपने ही मार्ग से आता है। कोई नहीं कह सकता—कब? लेकिन यह प्राकृतिक है। मैंने एक आदमी से प्यार की निंदा की है पर वह भी एक आदर्श स्तर पर। यह एक इंसानी कमजोरी है पर इसके होते हुए भी मनुष्य में प्यार की गहरी भावना होनी चाहिए जिसे वह एक आदमी में सीमित न करदे बल्कि विश्वमय रखे।"

सच ही तो है आज विकासशील भारत को फैशनपरस्त रुमानियत भरी जिन्दगी की क्या जरूरत है..? दकियानूसी विचारों और धार्मिक रूढ़ियों की क्या अहमियत है ? शायद कुछ भी नहीं। स्वतन्त्रता के परिधान में राष्ट्र आज शैशव से गुजर रहा है ..क्रांति को रचनात्मक रूप देकर यदि इस शताब्दी के बचे हुए अढ़ाई दशकों में गली-सड़ी मान्यताओं एवं जीर्ण-शीर्ण प्रथाओं को समाप्त कर दिया जाय तो यह जीवट शहीदों के प्रति श्रद्धांजलि होगी। आइए बसंत में गुंथी सभ्यता का निर्माण कर नए राष्ट्र को लय दें। कल्याण कुमार शशि के शब्दों में—

साहसी को बल दिया है मृत्यु ने मारा नहीं है,
राह ही हारी सदा, राही कभी हारी नहीं है।

श्रद्धा–सुमन

दिनेश्वर नाथ त्रिपाठी

बदल दिया सौभाग्य मनुज का,
जिसकी व्यक्त क्रिया ने।
दिया नया इतिहास देश को,
जिसके स्वच्छ हिया ने ॥१॥
जन-जीवन में सौम्य सूर्य सा,
जो व्यापित दीपित था।
राष्ट्र-प्रेम की दिव्य भावना से—
प्रतिक्षण – पूरित था ॥२॥
जिसके विमल कृत्य से युग में,
नव जीवन लहराया।
मातृ भूमि की यशः पताका –
का गौरव फहराया ॥३॥
कण–कण में जिसकी गरिमा का,
महक रहा शतदल है।
श्रान्त पथिक का दिशा विधायक,
जो जीवन सम्बल है ॥४॥
युग मानव उस भगत सिंह की,
पुण्य तिथि पावन है।
बाल-वृद्ध स्थावर जङ्गम हित,
मन भावन सावन है ॥५॥
जीवन का व्रत मित्र आज हो,
शान्ति, दया, समरसता।
युग युग से शोषित मानव हित,
क्रान्ति–कर्म तत्परता ॥६॥
पुण्य श्लोक, निश्छल निरीह के,
प्रेम – पुष्प स्वीकार करो।
भारत के भास्वर गौरव हित,
इस मिट्टी से प्यार करो ॥७॥

शिशु का जातकर्म संस्कार

स्वस्थ जीवन एवं सुखी आदर्श समाजका मूलाधार

आचार्य ब्रह्मदत्त शर्मा आयुर्वेदालंकार, २८५।१३।सी–४बी, जनकपुरी, नयी दिल्ली–५८)

'संस्कार': —

यह शब्द 'सम्'-उपसर्ग-पूर्वक 'डुकृञ् करणे'-धातु से बना है। 'सम्'-उपसर्ग का अर्थ है–समीचीन, अर्थात् अच्छा इसकी युक्ति विशेषण-'क्रिया-विशेषण दोनों रूपों में होती है, अतः दो अर्थ बनेंगे, तद्यथा––समीचीन (अच्छा' : विशेषण), और समीचीनतया-सम्यक्तया ('अच्छे प्रकारसे': क्रिया-विशेषण)। 'डुकृञ् करणे'-धातुका अर्थ है, 'करना' जिससे कर्म-कार्य-कर्तव्य-आदि शब्द बनते हैं। दोनों का संयुक्त अर्थ बना–अच्छा कर्म; तथा अच्छे प्रकार से करना बनाना, सँवारना, सुधारना, आदि।

इनमें से दूसरा, अर्थात् क्रिया विशेषण-परक, अर्थ अधिक ठीक है। विशेषण-परक अर्थ के लिए तो सत्कर्म-सत्कार्य-आदि शब्द अधिक उपयुक्त हैं। और, उपसर्गों की युक्ति तो विशेषतया, एवं अधिकता, होती ही क्रिया विशेषण-परक है। अतः, 'संस्कार' का समीचीनतर यौगिक अर्थ बना ––अच्छे प्रकार से करना, बनाना, सँवारना, सुधारना, आदि।

वस्तुतः, उपसर्ग (प्रादि) के योग से धातु का अर्थ बिल्कुल ही बदल जाता है। उदाहरणार्थ ––'हृञ् हरणे' (हरना, छीनना चुराना)-धातु में क्रमशः प्र आङ-सम्-वि-परि-उपसर्गों के योग से बने प्रहार (=आघात, चोट मारना), आहार (=भोजन जुटाना), संहार (=विनाश, नाशन; उपसंहार=समेटना), विहार (=भ्रमण, भ्रमण-स्थल), परिहार (=बचाव, निकास, बचना) शब्दों के अर्थ बिल्कुल ही भिन्न प्रकार के हो गये हैं।[2] इसी प्रकार, गत्यर्थक 'गम्'-धातु के सोपसर्ग परागम-अपगम-सँगम-अनुगम-अवगम निर्गम-दुर्गम-आगम-आगमन-निगम-अधिगम-अतिगम-सुगम-उद्गम-अभिगम-प्रतिगम-परिगम-उपगम-उपगमन-आदि शब्दों के अर्थ बिल्कुल भिन्न-भिन्न हैं।

'संस्कारो गुणान्तराधानम्':-----

'संस्कार' का योग रूढि-अर्थ, है 'गुणान्तराधान, अर्थात् नये गुणों का आधान। पूर्ववर्ती गुण-दोषों का निराकरण करके नये गुणों का समावेश करना। अर्थात्, नवीकरण। इस प्रक्रिया के दो अंग होते हैं––प्रथम, पूर्ववर्ती गुण-दोषों का निराकरण या निष्कासन; और द्वितीय, नये गुणों का आधान। यथा––मैले कपड़े का प्रथम तो मैल धो डालना और फिर उस पर पीला आदि रंग इच्छानुसार चढ़ाना। ये दोनों क्रियाएँ जिसमें विद्यमान हों, वह 'पूर्ण' संस्कार बनेगा। परन्तु, व्यवहार में पहली-दूसरी दोनों क्रियाएँ पृथक्-पृथक् रहने पर भी 'संस्कार' कहाती हैं। यथा––मैले कपड़े का मैल प्रक्षालन-आदि द्वारा दूर करना भी 'संस्कार' ही है; तथा मैल-रहित स्वच्छ वस्त्र हो तो उसे पीला रंग डालना भी 'संस्कार' ही है। तब पहली क्रिया को एक विशेष संज्ञा दे दी जाती

---

१ 'प्र-परा-अप-सम्-अनु-अव-निस्-निर् दुस्-दुर्-वि-आङ्नि-अधि-अपि अति-सु-उत-अभि-प्रति-परि-उप–एते प्रादयः (=उपसर्गाः)।'

२ 'उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते (. . . . ., बलादन्यः प्रतीयते)। प्रहाराहारसंहारविहा-परिहारवत्।।,

है, 'शोधन'। यथा—पारद, गन्धक, अभ्रक, ताम्र, लौह, स्वर्ण, रजत आदि खनिज द्रव्यों का शोधन। वत्सनाभ, धत्तूर, अहिफेन, मल्ल, कारस्कर सर्प-विष, आदि विषद्रव्यों का विविध द्रव्यों एवं विधियों-द्वारा शुद्धीकरण भी 'शोधन'-संस्कार है। पारद के आठ प्रचलित संस्कारों में से स्वेदन, मर्दन, मूर्च्छन, पातन, आदि प्रथम कोटि के हैं; और उत्थापन, बोधन प्रभृति द्वितीय कोटि के। वस्तुतः मूर्च्छन-बोधन' एवं 'पातन-उत्थापन' ये दो युग्म प्रथम-द्वितीय कोटि वाले मिश्रित' पूर्ण संस्कार' हैं, जिसमें दोनों क्रियाएँ परस्पर-पूरक रूप में सम्पन्न करायी जाती हैं।

जीवन में संस्कार—

केवल वस्त्र-पारद-आदि निर्जीव द्रव्यों में ही नहीं, सजीव शरीर में भी संस्कार किये जाते हैं। केवल किये ही नहीं जाते, और परिवर्ती वातावरण एवं परिस्थितियों में से स्वयमेव आ ही नहीं जाते, अपितु उत्तरोत्तर अनुवृत्त एवं प्रवृद्ध भी होते हैं। जिस प्रकार, गाड़ी के पहिये को ठीक पटरी पर चला देने का 'संस्कार' करने पर वह उसी पटरी पर आगे-आगे बढ़ता जाता है, तथा स्टीयरिंग एवं गियर-द्वारा मोटर के पहिये को सही राजमार्ग पर कर देने से एवं किये रखने से वह उसी सीध में मोटर को भगाये लिये जाता है, और शोधन-संस्कारित पारद प्रयोग में अपने अविकारी उपकारी गुणों को प्रत्यक्ष करता जाता है; इसी प्रकार, सद्वृत्त-सदाचार-सत्संग-सद्वातावरण-सत्परिवेश-आदि-द्वारा संस्कारित जीवन भी अपने कौलीन्य-अभिजात्य-साद्गुण्य-आदि को प्रकट करता रहता है, बल्कि आगे-आगे अनुवृत्त करता जाता है। इसी लिए, किसी साधु-सन्त या सद्गुणी-सदाचारी-परोपकारी व्यक्ति के सम्पर्क में आते ही हम निस्संकोच कह उठते हैं, 'इस व्यक्ति को संस्कार अच्छे मिले हैं, तभी यह इतना अच्छा है।' यहाँ तक कि अबोध बालक में अच्छी आदतों को देखते ही हमें उसके अच्छे 'संस्कार' का विचार होता है, जैसे फल को देखकर हमें उसके बीज का अनुमान हो जाता है, इसी तथ्य को उपमा बनाकर ही महाकवि कालिदास ने 'रघुवंश' में रघुवंशियों का वर्णन किया है कि उनके सत्कर्मों का अनुमान उन के कर्म-परिणाम को देखकर ही होता था (—'फलानुमेयाः प्रारम्भाः संस्काराः प्राक्तना इव'—रघुवंश)। प्रसंगवश आज के सन्दर्भ में यह भी ध्वनि इस वाक्य से निकलती है कि रघुवंशी महापुरुष आज के खड्यन्त्री-डाकापन्थी-गद्दीतन्त्रियों के समान ढिंढोरची नहीं थे, अपितु मितभाषी-सत्यव्रती-कर्मठ एवं संस्कारी होते थे। वे आज के-से गद्दी-लोलुप अलीक-' जनसेवक' नहीं, अपितु प्रजारंजक ('राजा प्रकृतिरंजनात्') एवं जन-उन्नायक सज्जन होते थे।

जीवन में संस्कारों को महत्ता तथा आवश्यकता:—

ऊपर हमने देखा है कि संस्कार के द्वारा हम किसी भाव में नवीन गुणों का आधान-आविर्भाव करते हैं जो उत्तरोत्तर अनुवृत्त होते हैं और निर्जीव-सजीव दोनों में यह क्रिया प्रतिफलित होती है। इस दृष्टि से, साद्गुण्य एवं योग्यत्व के सम्पादनार्थ निर्जीव-सजीव दोनों के लिए 'संस्कार' न केवल उपादेय, अपितु आवश्यक भी, होता है। विशेषतः, सजीव पात्रों या भावों के लिए तो 'संस्कार' की महत्ता एवं आवश्यकता अनिवार्यतया अपेक्षित होती है। कारण स्पष्ट है। निर्जीव भाव या पात्र निर्बोध होता है और उसे जिस प्रकार से संस्कारित करके जो गुण या कर्म उसमें समाविष्ट या

आविर्भूत कर दिया जाता है, वह उसी ढर्रे पर चलता जाता है, बशर्ते कि मार्ग में कोई "नयी" बाधा न आ जावे। और, 'नयी' बाधा का प्रतिकार प्रतिषेध-संस्कार कर देने पर वही पूर्वनिर्धारित ढर्रा-गमन यथा पूर्व चालू रहता है। उदाहरणार्थ-शोधित पारद अपने संस्कारलब्ध एवं संस्काराविर्भूत गुणों का प्रभाव दिखाता जायेगा, बशर्ते कि किसी नये दोष या बाधा का संसर्ग न हो जावे। शोधित वत्सनाभ अपने अवसादक दोष से रहित हो जाने के कारण उपकारी प्रभाव दिखायेगा। इत्यादि। यह बात 'निर्जीव' भावों या पात्रों में हम देखते हैं। उनमें, जो नवनवोन्मेष-बुद्धि वाले नहीं होते। और, सजीव बैल को भी यदि कोल्हू में जोतने तथा नेत्रों पर खोपे बाँधने वाला संस्कार करके हम 'निर्बोध' अविवेकी बना डालें तो वह भी हाँकने से कोल्हू चलने के अनन्त ढर्रे पर लग जाता है ('पक्षान्तं नैव गच्छन्ति तिलपीडकवद् गतौ'—चरक)। वह मशीन की तरह बँधा—बँधाया सधा—सधाया काम करता जाता है।

परन्तु, सजीव-सबोध-विवेकी पात्र की बात दूसरी है। उसकी दसों इन्द्रियाँ अपने परिवेश में खुली हुई हैं जो उसको यत्र-तत्र-सर्वत्र भटकाती रहती हैं और प्रायः दुष्प्रवृत्त करती रहती हैं। जड़ प्रकृति के साथ सम्पर्क एवं रमण तो उसे अनन्त भटकन प्रदान करता है तथा निरन्तर 'नचैया' बनाये रखता है ('अब मैं नाच्यौ बहुत गुपाल')। सत्-चित्-गुणों वाला आत्मा जब सत्-चित्-आनन्द मय परत्मामा की ओर न जाकर केवल सत्ता-गुण वाली भोगमय जड़ प्रकृति की ओर भागता है तो दसों इन्द्रियाँ स्वतन्त्र होकर क्षणिक-अवास्तविक दुःख परिणामी सुखाभास के लिए अपने-अपने विषयों में रत हो जाती हैं। प्रत्येक इन्द्रिय की यह विषयभोग-स्वच्छन्दता व्यक्ति को 'दशमुख' (जिसकी दसों इन्द्रियाँ अपनी-अपनी स्वच्छन्द अनियन्त्रित विषयोन्मुख-प्रवृत्ति रखती हों) अर्थात् 'रावण'- राक्षस बना डालती हैं; यह स्थिति उस अवस्था से विपरीत है जब मन-रूपी सारथी नियन्त्रण-रूपी लगाम द्वारा शरीररूपी रथ में दसों इन्द्रियों को बाँधकर-जोत कर रखता है तथा शरीर के लिए उपकारी-उपयोगी विषयों में ही प्रवृत्त होने देता है जिसके कारण वह 'दशरथ' कहलाता है।

----और, समाज में भी--

अनियन्त्रित-स्वच्छन्द-विषयोन्मुख इन्द्रियों की 'दशमुख'-प्रवृत्ति के कारण राग-द्वेष-काम-क्रोध-लोभ-मोह-आसक्ति-वितृष्णा-राग-विराग-ईर्ष्या-असूया-भय-द्रोह-परिग्रह-स्मय-मत्सर-दम्भ-अहंकार-आलस्य-आदि के द्वारा नानाप्रकार के मानसिक-शारीरिक रोगों की उत्पत्ति होती है। व्यष्टि ही नहीं, समष्टि में भी विविध व्याधियाँ एवं अत्यवस्थाएँ उत्पन्न हो जाती हैं। असत्य-हिंसा-अन्याय-अत्याचार-तस्करी-चोरी-डकैती-लूट-मार-बलात्कार-अवैध व्यापार-आदि सामाजिक व्याधियाँ भी इसी प्रक्रिया से उत्पन्न होती हैं। ऐसा अविवेकी दशमुख-व्यक्ति मैला, कुचैला, गाली गलौज करने वाला, फूहड़, कलहप्रेमी, दुर्व्यसनी होता है। वह स्वार्थी होने के कारण स्वार्थ के लिए दूसरों का अहित करने वाला 'राक्षस' तो होता ही है, बल्कि उस में दुष्टता' कभी-कभी इतनी अधिक होती है कि वह स्वार्थ के बिना भी निरर्थक ही परहानि करता है ('तेऽमी मानुषराक्षसा परहितं स्वार्थाय निघ्नन्ति ये, ये निघ्नन्ति निरर्थकम् परहितं ते के न जानीमहे' --भर्तृहरि)। मांस न खाना हो तो भी प्राणियों को मारता फिरता है। और, यह तो ऐसों के लिए आम बात है कि अपने घर की गन्दगी दूसरों के घर के सामने डालदें, अपने पाप जबरन दूसरों पर थोप दें।

आज विश्वभर के समाज में राजनीति के क्षेत्र में जो भारी असामाजिकता अनैतिकता एवं दुराचारिता व्याप्त है, उसके कारण एसे ही 'दशमुख' व्यक्ति हैं। ये चोरी-तस्करी-हत्या करने वाले एवं निपटनग्न अपराधी होते हैं। खाने-पीने के द्रव्यों में, बल्कि प्राणरक्षक औषधों में भी मिलावट करके या नकली औषधादि प्रस्तुत करके ये लोग काला व्यापार करते हैं तथा जनता को व्याधि एवं मृत्यु के घाट पहुँचाते हैं। तस्करी के द्वारा राष्ट्र एवं देश की भयंकर हानि करते हैं, बल्कि अपने ही देश एवं राष्ट्र को बेच खाते हैं। राजनीति के क्षेत्र में, झूठी जनसेवा का दम भरने वाले ये 'दशमुख'-राक्षस पूरे 'बगुला-भगत' होते हैं; रिश्वत-फ़रेब और भ्रष्टाचार से चुनाव जीतते हैं; तस्करों-भ्रष्टाचारियों-कालाबाज़ारियों से साँठ-गाँठ रखकर और लाइसेंस-पर्मिट का काला धन्धा करके, बल्कि स्वयं भी तस्करी-चोरबाज़ारी-चोरी-जारी करके, करोड़ों-अरबों की काली कमाई करते हैं; राष्ट्रीय आर्थिक-औद्योगिक विकास के नामपर भाई-भतीजे बेटों को राष्ट्रीय भूमि मिट्टी के दाम सौंपते-सौंपवाते हैं; बैंकों से लाखों की चोरी करवाते हैं और सबूत नष्ट करने के लिए चोरी के माध्यमों की हत्या करवा देते हैं; शेयर होल्डरों की पूंजी बनाकर अपने नाम पर विदेशों में व्यवसाय, होटल-निर्माण एवं पूंजी-विनियोग करते हैं और राष्ट्रसेवा जनसेवा-विश्व सेवा के नाम पर निरीह जनता को पूरा उल्लू बनाते हैं; टैक्स-चोरी विविध निजी तथा सार्वजनिक व्यापारिक प्रतिष्ठानों से भारी रिश्वतें लेकर घरेलू निजी जेवरात एवं सम्पत्ति का निर्माण, राष्ट्रीय धन से निजी सम्पत्ति का निर्माण विरोधी दलों के यहां डाके डलवाकर मामले को अवैधानिक रूप से दबाना, अपहरण-व्यभिचार-सतीत्वभंग, वेश्यालयसंचालन, आदि दुष्कर्म करते हैं। विविध देशों के शासकों की ऐसी काली करतूतों की चर्चाएँ जनता में बहुत प्रचलित हैं, परन्तु स्पष्ट बोलने में सबको स्वभावतया भय लगता है। लाइसेंस-घोटालों वाली तथा पर्मिट-लाइसेंस की रिश्वतों वाली कुछ घटनाएँ हाल ही में भी आयी हैं तथा उनमें ग्रस्त 'दशमुख'-महापुरुषों को बचाने के लिए सार्वजनिक जाँच नहीं होने दी जा रही है।

बड़े खेद की बात है कि सामाजिक-सार्वजनिक एवं प्रशासनिक क्षेत्र की प्रत्येक इकाई में आज भ्रष्टाचार व्याप्त हैं। रिश्वत एवं भ्रष्टाचार के बिना कोई भी व्यक्ति काम नहीं करता। क्लर्क-चपरासी-मुन्शी-अफसर-पुलिस-इंजीनियर-यहाँ तक कि अध्यापक-परीक्षक-डाक्टर भी इस काजल कोठरी में कालिख-पुते होते जा रहे हैं (काजल की काठेरी में कैसो हू सयानों जाय, एक रेख कालिख की लागि है पै लागि है')। रेल-डाक-कस्टम-आयकर-बिक्रीकर सार्वजनिक निर्माण-सप्लाई-आदि सभी विभागों में, यहाँ तक कि विद्यामन्दिरों-विश्वविद्यालयों-देवमन्दिरों-न्याय-मन्दिरों लोकसेवा आयोगों तक में, यही हाल है। क्यों न हो?—यथा राजा तथा प्रजा।—जब उच्च शासक एवं अधिकारी ही भ्रष्टाचार-पंक में आकण्ठ-मग्न हैं तो बेचारे लल्लू-पंजू-नत्थू-कल्लू की क्या बिसात है! हम-आप-सभी कालिख-काले हुए पड़े हैं और परस्पर-हानिकर सिद्ध हो रहे हैं।

परन्तु ऐसी स्थिति स्पष्ट ही समाज एवं राष्ट्र तथा विश्व के लिए हानिकारक है। और, हमें इसे ठीक करना ही होगा। समाज-राष्ट्र एवं विश्व को हमें निरीह-से-निरीह व्यक्ति के लिए भी ईमानदारी तथा इज्ज़त के साथ जीने योग्य बनाना होगा। राक्षस युग को बदल कर देवयुग नहीं तो मानवयुग तो बनाना ही होगा।

ओ! आजादी के बटमारो–

महावीर, 'नीर' विद्यालंकार

क्यों बलिदान हुए इतने सिर, क्यों घर का कुंकुम बिखरा।
क्यों सूली पर चढ़ा 'भगतसिंह' क्यों 'गांधी' दर-दर भटका॥
किसके लिए जवानों ने यह, मिटा जिन्दगी दी पल में।
किसके लिए 'वीर सावरकर' कूदा था खारे जल में॥
इसका उत्तर तुम क्या दोगे, ओ! गद्दी के ठेकेदारो ---

बोलो क्यों 'पंजाब केसरि', अंग्रेजों की भेंट चढ़े।
बोलो-बोलो 'तिलक' देवता, क्यों मांडले जेल सड़े॥
रानी लक्ष्मी क्यों जूझी थी, क्यों तांत्याटोपे भड़का।
क्यों सत्तावन का गदर मचा, फिर क्यों नूनाजी कड़का॥
इसका उत्तर तुम क्या दोगे, ओ! नारों के ठेकेदारों -----

किसके कारण नेता सुभाष ने, आजादी की फौज बनाा।
किसके कारण दीवानों ने, आजादी की अलख जगाई॥
बोलो-बोलो क्यों नन्हा सा, 'खुदीराम' फांसी लटका।
बोलो-बोलो क्यों 'ऊधमसिंह' लन्दन में जाकर गरजा॥
इसका उत्तर तुम ही दोगे, ओ! राष्ट्र के गद्दारों ----

बोलो-बोलो क्यों 'नेहरु' ने, सेज फूल की त्यागी थी।
बोलो-बोलो क्यों वीरों में, वीर-भावना जागी थी॥
'अंडमान' में कटी जिन्दगी, फिर भी जो मुस्काते थे।
किस कारण से कष्टों को वे, अमृत-सम सह जाते थे॥
इसका उत्तर हमें चाहिए, ओ! मनुता के रखवारो-------

बोलो-बोलो क्यों भूखे वे, दर-दर भटके फिरते थे।
क्यों सुमनों को ठुकरा करके, शूलों का पथ चुनते थे॥
वे असीम सागर थे नेह के, फिर भी विस्मृत रहे सदा।
बोलो शहीदों की मज़ार पर, कितने दीपक रहे जला॥
इसका उत्तर ढूंढ रहा मैं, ओ! भटके रचनाकारो-----

–o–

आर्य समाज की भाषायी क्रांति

प्रो०नरेश मिश्र प्राध्यापक, हिन्दी-विभाग, गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार,

स्वामी दयादन्द का जन्म उस समय हुआ जब देश गुलामी की जंजीर में जकड़ा जा चुका था। हम जीने तक का अधिकार खो बैठे थे। पैरों में पड़ी दासता की बेड़ी हमें अपने पथ पर चलकर कर्तव्यों की पूर्ति करने से भी वंचित कर रही थी। परतंत्रता के उस वातावरण में चारों तरफ अन्धकार ही अन्धकार फैला हुआ था। ऐसे निराशाभरे वातावरण में भटके हुए पथिकों का पथ-प्रदर्शन करने वाला, गिरतों को सहारा देने वाला और पद-दलितों को उठाकर गले लगाने वाला कोई न था। इस महाविभूति ने आर्य जगत में पदार्पण कर केवल हमारा खोया हुआ पथ ही नहीं दिखाया वरन् हमारी भाषा, वैदिक संस्क्रतिक तथा सभ्यता को नवजीवन प्रदान किया। आज जब विश्व के कौने-कौने में आर्य समाज की शताब्दी मनायी जा रही है तो हिन्दी-साहित्य को आर्य समाज तथा स्वामी जी की देन पर विचार कर उसकी सराहना भी की जा रही है। ऐसे ही अवसर पर अपेक्षा है 'हिन्दी-भाषा को स्वामी जी की देन' पर चिन्तन और विचार करने की किन्तु अभी तक मेरी दृष्टि में किसी विद्वान् का तद्विषयक विचार सामने नहीं आया। इस प्रकार विषय पर ही दो शब्द लिखना अधिक उपयुक्त लग रहा है।

लगभग ६००वर्ष के मुसलमानी शासन के कारण हिन्दी-भाषा पर मुसलमानी प्रभाव ने अपना रंग जमा लिया जिसके कारण हिन्दी-भाषा में अरबी-फारसीतथा तुर्की के शब्दों की भरमार हो गयी। हिन्दू धर्म की उदारता की भाँति हिन्दी-भाषा ने भी सभी विदेशी भाषाओं के शब्दों का खुले हृदय से स्वागत किया। यह हिन्दी-भाषा की अपनी विशेषता है। समय के परिवर्तन के साथ मुसलमानी शासन का अवसान हुआ किन्तु इसका लाभ हमे न मिल सका। मुसलमानों के बाद अंग्रेज हमारे शासक बन बैठे। 'आये थे व्यापार करन को बन गये ठेकेदार।' वे ठेकेदार बनकर अपनी भाषा नीति द्वारा हमारी भाषा पर सीधा प्रहार करना प्रारम्भ कर दिये क्यों कि उनका सिद्धान्त था 'यदि किसी देश को नष्ट करना है तो उसकी भाषा को नष्ट कर दो, देश स्वतः ही नष्ट हो जायेगा।"

अंग्रेजी शासन की ओर से जहाँ अंग्रेजी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए सशक्त प्रयत्न किया जा रहा था वही हिन्दी को घृणा की दृष्टि से देखा जाता था। एक तरफ मुसलमानी प्रभाव से हिन्दी-भाषा की गतिमयता पर गहरा आघात लगा तो दूसरी तरफ यूरोपीय प्रभाव ने अपने बोझ से बोझिल कर दिया। इस प्रकार हिन्दी के मूलाधार तत्सम शब्दों की उत्तरोतर कमी से हिन्दी-संस्कृत के निकट सम्बन्ध को ही धुंधला करने लगा। संस्कृत के शब्द जो ज्यों के त्यों हिन्दी भाषा में स्थान पालेते हैं उनमें संस्कृति तथा आदर्शों के विशेष भाव को वहन करने की क्षमता होती है। उन शब्दों के अभाव में भाषा को ऐसे भाव वहन का कार्य दुष्कर हो जाता है। जब स्वामी जी ने देखा कि हिन्दी-भाषा में तत्सम शब्दों का अभाव बढ़ता जा रहा है और अंग्रेजी, तथा अरबी आदि भाषा के शब्दों की अतिसयता हो जा रही है तो हिन्दी के साथ संस्कृत-भाषा का प्रचार प्रारम्भ कर दिया। कितना महान् था उद्देश्य हिन्दी-भाषा में तत्सम शब्दों के आगमन के लिए संस्कृत तथा हिन्दी का साथ-साथ प्रचार। इस प्रकार हिन्दी में

तत्सम शब्दों के आगमन तथा महत्वपूर्ण स्थान के प्रचार के साथ अनेक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण सफलता मिली ।

१ संस्कृतनिष्ठ हिन्दी-भाषा

स्वामी जी के अदम्य साहस से हिन्दी-संस्कृत के साथ प्रचार से सामान्य जनता पर प्रशंसनीय प्रभाव पड़ा । सामान्य जनता के अतिरिक्त अपनी रचना में हिन्दी-साहित्य के तत्सम शब्दों को अपेक्षाकृत अधिक स्थान देने लग गये । जब विचार का प्रभाव बढ़ा तो हिन्दी-भाषा में तत्सम शब्दों का प्रभावशाली आगमन हुआ । इसी का प्रभाव है कि सुमित्रानन्दन पन्त, जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा आदि कवियों ने ऐसी ही भाषा का प्रयोग कर हिन्दी-साहित्य की श्रीवृद्धि की । इस प्रकार की भाषा का उदाहरण द्रष्टव्य है ।

हिम गिरि के उतुंग शिखर पर,
बैठ शिला की शीतल छाँह,
एक पुरुष, भीगे नयनों से,
देख रहा था प्रलय प्रवाह! —प्रसाद

२ राष्ट्रीयता की भावना

भारत वर्ष की लगभग समस्त भाषाओं में तत्सम शब्दों को उपयुक्त स्थान प्राप्त है । स्वामी दयानन्द के प्रयत्न से जब हिन्दी-भाषा में ऐसे शब्दों को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ तो भारत का जन-जन इन शब्दों में छिपे राष्ट्रीयता के भाव से प्रभावित हो हिन्दी का श्रद्धालु बन बैठा । भाषा के ऐसे शब्दों में राष्ट्रीयता की भावना सर्वाधिक होती है जो देश के संस्कृति के अनुरूप भाव रखते हुए देश की अधिकतम भाषाओं में प्रचलित हों । तत्सम शब्द इसी प्रकार की श्रेणी का प्रतिनिधित्व करते हैं । इसी प्रकार राष्ट्रीयता की भावना के जागरण के साथ देशवासी राष्ट्र के उन्नयन में लग गये और स्वामी दयानन्द का सपना साकार होने लगा ।

३ खड़ी बोली का प्रचार

भारत वर्ष ही नहीं विश्व के प्रत्येक देश में क्षेत्रीय भाषाओं का अपना महत्व है किन्तु कभी-कभी एक क्षेत्र के सामान्य भाषा-भाषी को दूसरे क्षेत्र की भाषा का समझाना कठिन हो जाता है ऐसे समय भाव के आदान-प्रदान की समस्या आ खड़ी होती है । हिन्दी-भाषी क्षेत्र में पहले अवधी, ब्रज, भोजपुरी आदि क्षेत्रीय भाषाएँ ही प्रचलित थीं और उसी में साहित्य सृजन होता था । हिन्दी-भाषा क्षेत्र में भी कभी-कभी भाव के आदान-प्रदान की समस्या बन जाती थी । हिन्दी-भाषा में तत्सम शब्दों को महत्वपूर्ण स्थान मिल जाने से खड़ी बोली का विकास हुआ और उपर्युक्त समस्या का बहुत कुछ हल हो गया ।

४ हिन्दीत्तर भाषी-प्रदेश में हिन्दी प्रचार आसान

हिन्दी भाषा में तत्सम शब्दों को महत्वपूर्ण स्थान मिल जाने से हिन्दीत्तर भाषी-प्रदेश में भी प्रचार सुगम हुआ । इसका एक मात्र कारण यह है कि उन सभी प्रदेशों की भाषाओं में भी ऐसे शब्दों का प्रचलन पहले से ही है और उनके विषय में अच्छी जानकारी रखते हैं । इसके पूर्व जब हिन्दी-भाषा में तत्सम शब्दों की संख्या बहुत कम थी तो उनके लिए हिन्दी-भाषा समझना अपेक्षाकृत अधिक कठिन था । इस प्रकार तत्सम शब्दों के माध्यम से एक समस्या का हल हो गया ।

५ सांस्कृतिक उत्थान

आर्य समाज के प्रचार-प्रसार से हिन्दी-भाषा संस्कृतनिष्ठ हुई और इस प्रकार की भाषा के प्रयोग से प्रयोगकर्ता या साहित्यकार के मन में वैदिक संस्कृति के आदर्शों के प्रति अटूट श्रद्धा उमड़ने लगी। वैदिक आदर्शों के प्रभाव से प्रभावित होने पर जन-जन का पग उस पथ पर बढ़ चला जिस पथ से समय-बेसमय हट गया था। तत्सम शब्दों में वैदिक भावों का पूर्ण वहन होता है यथा-हिन्दी में प्रातः के जलपान के दो शब्द प्रचलित हैं-प्रथम नाश्ता' द्वितीय प्रातराश'। जब हम नाश्ता' शब्द का प्रयोग करते हैं तो विदेशी संस्कृति पर आधारित प्रातः के जलपान का भावार्थ ग्रहण करते हैं 'प्रातराश' से अपनी वैदिक संस्कृति पर आधारित सात्विक बुद्धि के विकास वाले प्रातः के जलपान का।

इस प्रकार उस महाविभूति के महान लाघव से हिन्दी को तत्सम शब्दों की अपार धरोहर प्राप्त हुई जिससे अनेक उपलब्धियाँ हुई। यह सर्व विदित है कि तत्सम शब्दों के आधार पर बनी हिन्दी भाषा स्वयं में कितनी गतिशील है, फिर ऐसी गतिशील भाषा को अंग्रेजी अथवा अन्य भाषा के शब्दों की बैशाखी के सहारे की क्या आवश्यकता है? इस प्रकार मेरे कहने का यह अर्थ नहीं है कि अन्य भाषाओं के सारे शब्दों को निकाल फेंका जाय वरन् जहाँ तत्सम शब्दों से अभिव्यक्ति सम्भव हो वहाँ विदेशी शब्दों का प्रयोग अनुपयुक्त है। जहाँ तत्सम शब्दों के माध्यम से अभिव्यक्तीकरण सम्भव न हो वहाँ तद्भव और उससे भी समस्या न हल हो तो देशी भाषाओं के शब्दों का सहारा लेना चाहिए। जब देशी भाषा के शब्द भी समस्या की पूर्ति न कर सके तब विदेशी भाषा के शब्दों के लेना चाहिए। इस प्रकार समस्या-हल हेतु शब्दों का ग्रहण अथवा भाषा में शब्दों के आगमन को 'भाषा विश्व बंधुत्व' की संज्ञा दे सकते हैं।

आज जब वह महा पुरुष हमारे बीच नहीं है तो भी उसकी यह महान् देन हमारे लिए वरदान स्वरुप है। हम भारतवासियों का यह कर्त्तव्य है कि हिन्दी भाषा को अधिक से अधिक संस्कृत-निष्ठ बनाएँ जिससे वैदिक संस्कृति तथा सभ्यता की उन्नति हो और हिन्दी विश्व भाषा के रूप में उभर कर सामने आवे। अस्तु।

'ऋषि दयानन्द जाज्वल्यमान नक्षत्र थे जो भारतीय आकाश पर अपनी आलौकिक आभा से चमके और गहरी निन्द्रा से सोए हुए भारत को जागृत किया। 'स्वराज्य' के वे सर्व-प्रथम सन्देश वाहक तथा मानवता के उपसाक थे। —लोकमान्य तिलक

—०—

स्मृति संग्रह से उद्धृतः-

काले पानी जाते समय

कुछ स्वतन्त्रता सेनानियों के उद्गार

श्री डा० चम्पत स्वरूप

(१)

हैफ़ हम जिसपे कि तैयार थे मर जाने को,
यकायक हमसे छुड़ाया उसी काशाने को।
आसमाँ बाकी यही था क्या ग़ज़ब ढाने को,
लाके गुरबत में हमें रक्खा जो तड़पाने को।
क्या कोई और बहाना न था तड़पाने को?

(२)

अब न गुलशन में हमें लायेगा सैयाद कभी!
क्यों सुनेगा तू हमारी कोई फ़रियाद कभी?
याद आयेगा किसे यह दिले नाशाद कभी?
हम भी इस बाग में थे कैद से आज़ाद कभी,
अब तो काहे को मिलेगी वह हवा खाने को!

(३)

दिल फ़िदा करते हैं कुरबाने जिगर करते हैं,
पास जो कुछ है वह माता की नजर करते हैं।
इस जिन्दगी में तो कोई खुशी आई न नजर,
खुश रहो अहले वतन हम तो सफर करते हैं.
जाके आबद करेंगे किसी वीराने को।

(४)

हम सरेदार बसर शौक जो घर करते है,
ऊँचा सर क़ौम का हो अपना नज़र करते हैं?
सूख जाये न कहीं पौदा यह आज़ादी का,
ख़ून से अपने इसे इसलिए तर करते हैं।
इस ज़िन्दगी में तो कोई खुशी आई न नज़र,
ख़ुश रहो अहले वतन हम तो सफर करते हैं,
जाके आबाद करेंगे किसी वीराने को।

(५)

कोई माता की उम्मीदों पे न डाले पानी
जिन्दगी भर को हमें भेज के काले पानी,
मुंह में जल्लाद हुए जाते हैं छालेपानी,
आबे खंजर को पिला करके दुआ ले पानी,
भरने क्यों जायें हम इस उम्र के पैमाने को।

(६)

हम भी आराम उठा सकते थे घर पे रह कर,
हमको भी पाला था माँ बाप ने दुःख सह-सह कर,
वक्ते रुख़सत उन्हें इतना भी न आये कह कर,
गोद में आँसू कभी निकलें जो रुख से बह कर
तिफ्ल उनको ही समझ लेना जी बहलाने को।

(७)

देखिये कब ये असीराने मुसीबत छूटें,
मादरे हिन्द के अब भाग खुले या फूटें,
देश सेवक सभी अब जेल में मूझें कूटें,
हम यहाँ ऐश से दिन रात बहारें लूटें,
क्यों न तरजीह दें इस जीने पे मरजाने को।

(८)

देश सेवा का ही बहता है लहू नस नस में।
अब खा बैठे चित्तौर के गढ़ की क़समें।
सर फ़रोशी की अदा होती यूँ ही रस्में,
भाई खंजर से गले मिलते हैं सब आपस में,
बहनें तैयार चिताओं पे हैं जल जाने को

(९)

अपनी क़िस्मत में अजल से ही सितम रक्खा था,
रंज रक्खा था महीन रक्खा था ग़म रक्खा था,
किसजो परवाह थी और किसमें ये दम रक्खा था,
हमने जब वादिये ग़ुरबत में क़दम रक्खा था,
दूर तक यादे वतन आई थी समझाने को ।

(१०)

अपना तो गम है नहीं पर यह ख्याल आता है,
मादरे हिन्द पे कब तक यह ज़वाल आता है।
हरदयाल आता है यूरोप से न अजीत आता है,
कौम अपनी पे रह रह के मलाल आता है,
मुन्तजिर रहते हैं हम खाक में मिल जाने को,

(११)

मैक़दा किसका है ये जाने सबू किसका है ?
वार किसका है मेरी जाँ ये गुलू किसका है ?
जो बहे कौम की खा़तिर वह लहू किसका है ?
आसमाँ साफ़ बतादे तू उदू किसका है ?
क्यों नये रंग बदलता है ये तड़पाने को ?

(१२)

दर्दमन्दों से मुसीबत की हालत पूछो
मरने वालों से ज़रा लुत्फे शहादत पूछो,
चश्मे मुश्ताक़ से कुछ दीद की हसरत पूछो,
दश्तचे नाज़ से ठोकर की कयामत पूछो,
सोज़ कहते हैं किसे पूछो तो परवाने को।

(१३)

न मुअस्सर हुआ राहत में भी कभी मेल हमें।
जान पर खेल के भी आया न कोई खेल हमें।
एक दिन को भी न मंजूर हुई बेल हमें,
याद आयेगा बहुत लखनऊ का जेल हमें,
लोग तो भूल ही जायेंगे इस अफ़सेन को ।

(१४)

अब तो हम डाल चुके अपने गले झोली,
एक होती है फ़कीरों की हमेशा बोली,;
खू़न से फाग मचायेगी हमारी टोली ;
जब से बंगाल में खेले हैं कन्हैया होली,
कोई उस दिन से नहीं पूँछता बरसाने को।

(१५)

नौजवानो यही मौक़ा है उठो खुल खेलो,
अदक़ मे देश के माता की जवानी दे दो
ख़िदमते क़ौम में जो बला आये खु़शी से झेलो,
फिर न मिलंगी ये माता की दुआएँ लेलो,
देखें कौन आता है इरशाद बजा लाने को ।

—०—

सत्यं शिवं सुन्दरम्

श्री कुमार हूजा

मेरी पांडीचेरी यात्रा के संस्मरण बहुत मधुर हैं। तिरुपति से आते हुये ही बस में एक सज्जन से सम्पर्क हो गया जो अपने आपको वहां के असिस्टैंट डायरेक्टर बतलाते थे। वंदीवाश में हमने एक भोजनालय में सांवर डोशा खाया। उस भोजनालय में कई चित्र लगे थे। तीन चित्र देख कर महसूस हुआ कि यह भोजनालय सब धर्मावलम्बियों की सेवा करता है। एक था तिरुपति की वेङ्कटेश्वर की प्रतिमा का, दूसरा ईसा मसीह का और तीसरे पर अंकित था "या मुहम्मद"। वंदीवाश का नाम इतिहास में पढ़ा था यह वही स्थान है जहां दो सौ वर्ष पहिले १७६० में अंग्रेज जनरल आयरकूट ने फ्रेंच जनरल लाली को हराया और ब्रिटिश सत्ता की धाक जमा दी थी। लाली को बाद में अपने हम वतनों ने प्राण दण्ड दिया था।

रात के दस बजे के करीब हमने समुद्र तट के समीप स्थित किशोरीलाल जी के घर पर दस्तक दी। हेलो कि देर हो गई थी फिर भी मालती बहिन ने हंसते-हंसते स्वागत किया और जितने दिन वहां रहना हुआ, हर प्रकार की सुविधा का ध्यान रखा। प्रातः चार बजे ही मधुर सुप्रभाती संगीत के हल्के-हल्के स्वर आने लगे। ऐसा महसूस हुआ जैसे सचमुच यह दिव्य लोक है। थोड़ी देर बाद पूर्व वाली खिड़की से एक चमचमाती रोशनी की किरण आ कर दिमाग पर टकराई। अन्तरात्मा आलोकित हो उठा। क्या किसी पड़ौसी ने अपने बैडरूम की लाइट जलाई थी या फिर यह दिव्य ज्योति की किरण थी? जब मैंने बाद में नवजात भाई से इसका जिक्र किया तो वह कहने लगे कि यदि अनुमान ही लगाना है तो दिल पसंद अनुमान ही क्यों न लगाया जाय?

उन्होंने एक सज्जन को मेरे साथ घुमाने के लिये नियोजित कर दिया था। उन्होंने मुझ से पूछा कि क्या मैं साईकिल चला सकता हूं? मेरे हां में उत्तर देने पर वह दो साइकिलें ले आये और हमने पांडेचेरी आश्रम की विभिन्न संस्थाओं का साईकिल पर घूम कर भ्रमण आरम्भ किया। आश्रम की संस्थाएँ नगर में जगह-जगह बिखरी पड़ी हैं। आश्रम-वासी भी इधर-उधर अनेक मकानों में रहते हैं। नगर का समुद्रतट पास का सिविल लाइन वाला भाग बड़ा ही सुन्दर साफ और कायदे से बना हुआ है।

सबसे पहले हम सुन्दरम् जी को मिलने गये। उनका कार्यस्थल प्रेस है। वह गुजराती के सुविख्यात कवि हैं। अभी अभी गुजरात विद्यापीठ ने उन्हें सम्मानित किया है। वह भी पवनार आश्रम में हो रहे आचार्य सम्मेलन में जा रहे थे। सो तय हुआ कि हम यहां से इकट्ठे ही जायेंगे। वह प्रेस के श्रमिकों को टाफियां बांटते हुये मिले। कुछ टाफियां हमारे हिस्से भी आई।

प्रेस में खटाखट काम हो रहा था। सारा वातावरण स्वच्छ अनुशासनमय एवं क्रियाशीलता का था। यहां देश विदेश की कितनी ही भाषाओं में अरविन्द साहित्य छपता रहाता है। यहां से निकले पैम्फलैट, पत्र, ग्रन्थ न जाने कितने हजारों लाखों भूखे प्यासे जिज्ञासुओं की क्षुधा पिपासा शान्त करते हैं। यह प्रेस सचमुच एक लाइट हाउस, प्रकाश स्तम्भ है, जो भटकते राहगीरों का

मार्गप्रदर्शन करता है।

फिर हम लोग श्री अरविन्द जी की समाधि पर गये और बाद में श्री अरविन्द जी का निवास स्थान भी देखा। यह वह स्थान है जहां श्री अरविन्द ने १९२६ में एकान्तवास ग्रहण किया और फिर वहाँ से बाहर निकले ही नहीं। वहीं उन्होंने अपनी अनथक साधना के अन्तिम पच्चीस वर्ष गुजारे।

प्रातः मधुर संगीत ने तो प्रभावित किया ही था पर अब जिधर भी जाना हुआ, रंग-बिरंगे फूलों, गुलदस्तों बेलों को देख कर मन सहज ही प्रफुल्लित हो उठा। कहीं बोगल विला थे, कहीं गेंदे थे तो कहीं फ्लाक्स। सर्वत्र सौन्दर्य की उपासना हो रही थी। नन्हीं नन्हीं कौंपल से झांकते हुए फूल मुस्करा रहे थे। यह थी मां की देन। उन्होंने आश्रम वासियों के मन में पुष्प प्रेम का ऐसा बीज बो दिया है कि सर्वत्र फूलवाड़ियों ही फुलवाड़ियों की बहार है। इस के बाद पुस्तकालय में जाना हुआ तो यहाँ हर उम्र एवं कौमों के नर नारी पुस्तकाध्ययन में दत्तचित्त थे। शान्त मननशील वातावरण था। सभी जिज्ञासु सत्य की खोज में लगे रहते थे। चुप चाप खामोश, उत्सुक।

श्री अरविन्द सदा स्वाध्याय और मनन पर जोर देते रहे। दूसरों को उपदेश देने पर तो सभी तैयार रहते हैं। पर अपने आप को उपदेश देना सब से कठिन है। यह जितना कठिन है, उतना ही जरूरी भी है। स्वाध्याय और मनन की रोशनी से ही मानव अपने अन्दर बैठे हुये परमात्मा के दर्शन कर पाता है। वरना मानव और दानव में अन्तर ही क्या है? सदा से स्वाध्याय और मनन की सीढ़ी के द्वारा ही मानव ऊपर उठता आया है। मुझे बतलाया गया कि सप्ताह में दो तीन शाम को पांच बजे नियमित रूप से आश्रम में चुपचाप सम्मिलित मनन के सेशन लगते हैं। इनमें कितने ही आश्रमवासी शामिल होते हैं। फिर जहाँ तहां साधक लोग स्वाध्याय और मनन के सैशन लगाते रहते हैं। इन दिनों शाम को छः बजे श्री एम० पी० पण्डित के यहाँ श्री अरविन्द की मशहूर पुस्तक सावित्री का पाठ चल रहा था। उसमें भी कोई बीस के करीब देशी-विदेशी नर-नारी सम्मिलित होते थे। श्री पण्डित सावित्री की चन्द पंक्तियाँ पढ़ते थे और उनकी व्याख्या करते थे। उन्होंने कृपा करके मुझे भी एक सैशन में शामिल होने की आज्ञा प्रदान की। बाद में वहाँ आध घण्टा मौन मनन का दौर चला। प्रातः समुद्र तट पर घूमते हुए तो मैंने कितने ही देशी-विदेशी साधकों को सूर्योन्मुख बैठे चिन्तन मनन करते पाया था। नीचे समुद्र की एक के ऊपर दूसरी तरंग चढ़ी आ रही थी, ऊपर से भगवान अंशुमाली की सुनहरी रश्मियों की बौछार हो रही थी। इधर आकाश में तैरती हुई रुई जैसे बादलों की मण्डलियाँ भगवान से और साधकों से लुकाछिपी खेल रही थी।

यहाँ गुरुकुल काँगड़ी के तीन स्नातकों सर्व श्री धर्मवीर, रवीन्द्र और हरिकृष्ण से भी मुलाकात हुई। श्री धर्मवीर ने श्री अरविन्द की एक पुस्तक का अनुवाद वैदिक रहस्य नाम से किया है। श्री रवीन्द्र भोजन भण्डार के अध्यक्ष हैं। इनकी देख रेख में प्रतिदिन लगभग दो हजार आश्रम वासी एवं विजिटर चार बार खाना खाते हैं केवल तीन रुपये प्रतिदिन में। लंच और डिनर केवल डेढ़ घंटे में सुचारु रूप से निपट जाता है। आप क्यू में खड़े हो जाइये। परसने वाले आपको आलू दाल सब्जी दही रोटी, चावल, फल जो चाहें परस देंगे। जा कर टेबिल

पर या पंक्ति में बैठ जाइए। आराम से थाली कटोरा धोने के स्थान पर ले जाइए। वहाँ ड्रम रखे हैं। धोने वाले साधक बैठे हैं। उन्हें दे दीजिए। वे धोते जाते हैं। फिर बरतन स्टीम में से निकाल कर पोंछते जाते हैं। एक गोरी सी नारी तीन वर्ष से थालियाँ पोंछने का काम कर रही थी।

उसके आगे हरिकृष्ण जी का महकमा है। वह ६ क्विंटल चावल ४० मिनट में बड़े बड़े डेगचों में पका देते हैं।

रवीन्द्र जी भोजन भण्डार की व्यवस्था के अतिरिक्त यहाँ से निकलने वाली हिन्दी पत्रिकाओं अग्निशिखा और पुरोधा का सम्पादन भी करते हैं। उनको यदि हंसी का फुवारा कहा जाय तो अतिशयोक्ति न होगी। एक मिनट में ५ बार खिलखिला कर हंसते हैं। बाल ब्रह्मचारी हैं। कहने लगे आर्य-समाज शिथिल इसलिए पड़ गया है कि इसने सारा बल खण्डन पर लगा दिया सत्यार्थ प्रकाश में अन्तिम चार समुल्लासों पर। मंडन से पहिले दस समुल्लासों की अवहेलना की गई। हालाँ कि जीवन की कला का निर्देश तो पहिले दस समुल्लासों से ही मिलता है।

शाम को पाँच बजे खेल-कूद का समय था। तीन स्थानों पर आश्रमवासी छात्र नवयुवक और नवयुवतियाँ खेल में व्यस्त थे। एक स्थान तो समुद्र तट पर ही था। म्यूनिसिपैलिटी से लेकर इसे छात्रों ने स्वयं ही साफ किया और अब यह बड़ा सुन्दर स्थान बन गया है और इसकी सुन्दरता को चार चाँद लगाते हैं सुन्दर सुडौल शरीरों वाले सुन्दर उत्साही नवयुवक और नवयुवतियां। वहां मैंने लड़के-लड़कियों को टैनिस खेलते देखा। वालीबाल बास्केटबाल खेलते देखा। बाक्सिंग करते, कुश्ती लड़ते देखा, लड़कियों को भी योगासन करते देखा। अन्य दो स्थानों पर मैंने लड़के-लड़कियों को फुटबाल - हाकी खेलते देखा। तैरते देखा। दौड़ते भागते देखा। हाई जम्प, लाँग जम्प लगाते देखा। गोला, जेवलेन फेंकते देखा। हरेक इस तरह मग्न था जैसे कल को ही ओलम्पिक के मैदान में प्रतियोगिता में शामिल होना हो। मुझे बतलाया गया कि हरेक इसी लगन से मस्त है कि मेरा जो कल स्तर था, उससे आज आगे बढ़ जाऊं। हरेक व्यक्ति अपना स्तर ऊंचा करने को कोशिश में था। यही शिक्षा का मुख्य लक्ष्य है। इसी चीज की आज शिक्षालयों में कमी है। युवक देश का धन है। पर तभी जब उन्हें ऐसी सही शिक्षा मिले वरना यह धन धुन में परिवर्तित हो सकता है। यदि शिक्षा संस्थानों मे आत्मानुशासन का मोटिवेशन मुखरित हो जाता है तो देश के उत्थान को कोई भी शक्ति नहीं रोक सकती।

मुझे जिस चीज की तलाश थी वह पाँडीचेरी में मिली। मुझे यहाँ मिली सत्य शिव और सुन्दर की साधना। अनायास, अचानक यहाँ आश्रम के बड़े-बूढ़े नर-नारी नवयुवक और नवयुवतियाँ अपना-अपना स्तर ऊंचा करने में एकाग्रता से दत्तचित्त थे। उनको देख कर मानो हमारे पूर्वज स्वर्ग से पुष्प वर्षा रहे हों।

यहाँ अरीब करीब में जो गरीब, निर्धन समुदाय है। गलियों नालियों में खेलते बच्चे ही हैं, नङ्गे धड़ङ्गे। उनके लिए आश्रम क्या कर रहा है? यह प्रश्न चिन्ह बना ही रहा।

गुरुकुल कांगड़ी–संक्षिप्त परिचय

डा० गंगाराम, कुलसचिव, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार ।

जैसे ही बीसवीं शताब्दी की उषा–लालिमा ने अपने तेजस्वी रूप की छटा बिखेरनी प्रारम्भ की, एक नई आशा, एक नये जीवन, एक नयी स्फूर्ति का जन्म हुआ । ४मार्च सन् १६०२ ई० में स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने अपने कर कमलों से एक पौधे का रोपण किया । किसको यह ज्ञान था कि यह नन्हा सा पौधा एक समय ऐसे वृक्ष का रूप ले लेगा जिसकी छत्र-छाया में हजारों श्रान्तयात्री तो अपनी थकान मिटायेगें ही पर साथ ही जिसके फलों का आस्वादन करते हुए सहस्त्रों खग-वृन्द भी अपनी क्षुधा निवृत्त कर पायेगें । यह ऐसा वृक्ष सिद्ध हुआ जिसने अपनी शाखाओं को पुनः धरती में संजो लिया और फिर इन्हीं शाखाओं से नयी-नयी टहनियां फूट आई । यह वृक्ष था गुरुकुल कांगड़ी जिसकी स्थापना हरिद्वार के निकट गंगा पार कांगड़ी ग्राम के समीप हुई थी ।

सूर्योदय–

१६०० शताब्दी में लार्ड मैकाले ने भारत में शिक्षा के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण परीक्षण किया । उन्होंने भारतीय शिक्षा को वही पद्धति एवं दिशा प्रदान की जो उनके अपने देश में प्रचलित थी । पर मुख्य अन्तर यह था कि जहां इंगलैंड में शिक्षित युवक अपनी ही भाषा के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करके सम्मान जनक नागरिक बनने का स्वप्न देखते थे वहां भारत में विदेशी भाषा के माध्यम से पढ़े हुए युवक ब्रिटिश शासन के सचिवालयों में नौकरी की खोज करते थे । एक ओर तो शासन द्वारा समर्पित शिक्षा-पद्धति का यह स्वरूप था, दूसरी ओर वाराणसी आदि प्राचीन शिक्षा स्थलों पर पाठशालाएं चल रही थीं जहां पर विद्यार्थीगण पुरानी पद्धति से अपने साहित्य अध्ययन कर रहे थे ।

स्वामी श्रद्धानन्द ने दोनों शिक्षा-पद्धतियों की न्यूनताओं को अनुभव किया और उनका स्वप्न था –––एक ऐसी शिक्षा-पद्धति का आविष्कार जिसमें उपर्युक्त दोनों शिक्षा-पद्धतियों का समन्वय हो सके अर्थात् दोनों के गुण ग्रहण करते हुए दोषों को तिलांजली दी जा सके । निस्संदेह स्वामी जी के मन में शिक्षा के क्षेत्र में आई हुई इस मानसिक क्रांति का स्रोत महर्षि दयानन्द सरस्वती के वे विचार थे जो उन्होंने प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के विषय में अपने अमर ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश में लिपिबद्ध किये थे । महर्षि के वे विचार इस प्रकार है–

१–यह राजनियम और जातिनियम होना चाहिए कि आठवें वर्ष से आगे कोई अपने लड़के और लड़कियो को घर में न रख सकें । पाठशाला में अवश्य भेज देवें जो न भेजे वह दण्डनीय हों ।

२–लड़कों और लड़कियों के गुरुकुल पृथक-पृथक हों ।

३–विद्यार्थी लोग गुरुकुलों में ब्रह्मचर्य पूर्वक जीवन व्यतीत करें । २५ वर्ष पूर्व बालक का और १६ वर्ष पूर्व कन्या का विवाह न हो सके ।

४–गुरुकुल में सबको तुल्य वस्त्र, खान, पान, आसन दिये जावें । चाहे वह राजकुमार व राजकुमारी हो, चाहे दरिद्र की सन्तान हों सबके साथ एक समान व्यवहार किया जावें ।

५–गुरुकुल में गुरु और शिष्य पिता-पुत्र के समान रहें ।

६–विद्या पढ़ने के स्थान शहर व ग्रामों से दूर एकान्त में हों ।

७-शिक्षा में वेद-वेदांग तथा सत्यशास्त्रों को प्रमुख स्थान दिया जाय, परन्तु साथ ही राज-विद्या, संगीत, नृत्य, शिल्पविद्या, गणित, ज्योतिष, भूगोल, भूगर्भविद्या, यन्त्रकला, चिकित्सा शास्त्रादि का भी यथोचित रूप से अभ्यास कराया जावे।

स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रतिपादित गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के उपर्युक्त सिद्धान्तों के अनुसार स्वामी दयानन्द जी ने गुरुकुल के लिए सर्वप्रथम आन्दोलन सन् १८९७ ई०प्रारम्भ किया। उन दिनों स्वामी श्रद्धानन्द जी जालन्धर से सद्धर्म प्रचारक साप्ताहिक पत्र निकालते थे जिससें उन्होंने गुरुकुल के विषय में कई आन्दोलनात्मक लेख लिखे। शिक्षा के क्षेत्र में आर्य जनता को कार्य की एक नई दिशा दी और इस प्रकार से गुरुकुल खोलने के लिए एक आन्दोलन सा बन गया। नवम्बर १८९८के आर्य प्रतिनिधि सभा के अधि-वेशन में गुरुकुल खोलने का प्रस्ताव स्वीकृत हो गया। परिणाम स्वरूप १६ मई सन् १९००को सर्वप्रथम गुजरांवाला में जो कि अब पाकिस्तान में है गुरुकुल की स्थापना हुई। पर स्वामीजी गुरुकुल की स्थापना ऐसे स्थापन पर करना चाहते थे जो कि हिमालय की गोद में किसी नदी के समीप हो। उनके मन को यजुर्वेद का निम्न मंत्र बार-बार आप्लावित कर रहा था।

उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदी नाम्।
धिया विप्रो अजायत ।।—यजुर्वेद २६ १५

सौभाग्य से स्वामी जी के इस विचार को मूर्त रूप देने लिए उन्हें नजीबाबाद जिला बिजनौर के दानवीर जमींदार मुंशी अमनसिंह मिल गये। हरिद्वार से पूर्व में गंगापार ४कि०मी०की दूरी पर एक कांगड़ी ग्राम है जहां पर मुंशी जी की १४०० बीघे भूमि थी। उन्होंने अपनी यह सारी भूमि स्वामी जी के चरणों में अर्पित करदी। ४मार्च सन् १९०२ को गुरुकुल, गुजरांवाला से कांगड़ी ले आया गया।

गुरुकुल की स्थापना से पूर्व एक और महत्व-पूर्ण घटना घटी जिसका उल्लेख करना उपयुक्त रहेगा। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने नवम्बर १८९८ में यह प्रस्ताव पारित कर दिया था कि गुरुकुल की स्थापना की जाय पर साथ में यह शर्त भी लगा दी थी कि इसके लिए ३००००रू० एकत्र किया जाय। उस समय इतनी बड़ी राशि एकत्र करना कोई सरल कार्य न था। परन्तु यह भार महात्मा मुंशीराम जी ने अपने कन्धों पर लिया और उन्होंने यह प्रतिज्ञा की कि जब तक ३००००रू० एकत्र नहीं हो जायेंगे वे अपनी कोठी में प्रवेश नहीं करेंगे। इस कार्य में उन्हें लग-भग ८ माह का समय लग गया पर उन्होंने ३००००रू० की राशि एकत्र करली। उस समय को देखते हुए ३००००रू० की राशि एकत्र करना एक दुष्कर कार्य था।

जब गुरुकुल प्रारम्भ हो गया तो समस्या छात्रों की थी। पंजाब के आर्य समाजियों के एक बड़े भाग का यह मत था कि जंगलों में पढ़ने के लिए अपनी सन्तान को कौन भेजेगा। स्वामी जी महाराज ने ही इस कार्य में पहल की। उन्होंने अपने दोनों पुत्रों को गुरुकुल में प्रविष्ट कर दिया और ये दोनों पुत्र ही गुरुकुल विश्व-विद्यालय के पहले दो स्नातक बने। एक थे हरिश्चद्र और दूसरे इन्द्र-जिनका बाद में गुरुकुल कांगड़ी के साथ जीवन पर्यन्त किसी न-किसी रूप में सम्पर्क बना रहा। ★

क्रमशः

आचार्य कुल शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक मासिक के सौजन्य से ।

आचार्य–सम्मेलन

आचार्य सम्मेलन परंधाम आश्रम, पवनार :१६, १७, १८ जनवरी १९७६

सर्वसम्मत निवेदन

आचार्य विनोबाजी द्वारा बुलाया गया अखिल भारतीय आचार्य सम्मेलन पवनार आश्रम में १६. १७, १८ जनवरी, १९७६ को सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन में राजनैतिक दलों से संबंध न रखने वाले २६ आमंत्रितों ने भाग लिया, जिसमें कई उपकुलपति, वरिष्ठ प्राध्यापक ख्याति-प्राप्त न्यायशास्त्री, विशिष्ट रचनात्मक कार्यकर्ता एवं प्रसिद्ध साहित्यकार शामिल हुए। विचार-विमर्श के दौरान विभिन्न अवसरों पर सम्मेलन को आचार्य विनोबा की बहुमूल्य सलाह और मार्गदर्शन पाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

देश के अल्पकालीन एवं दीर्घकालीन हितों को ध्यान में रखते हुए सम्मेलन ने भारत की वर्तमान स्थिति के विभिन्न पहलुओं पर निष्पक्षता एवं सतर्कता से विचार किया। सर्वसम्मति से निम्न प्रस्ताव स्वीकृत हुए :

१. विगत घटनाओं के लिए किसी पर दोषारोपण न करते हुए, सम्मेलन मानता है कि अब देश की आन्तरिक स्थिति को सामान्य रूप देने की प्रक्रिया का आरम्भ करना एवं एकता और परस्पर सहयोग के वातावरण का निर्माण करना अति आवश्यक है, ताकि प्रधान मंत्री के शब्दों में 'प्रजातन्त्र की गाड़ी पुनः पटरी पर लाई जा सके।' वर्तमान गतिरोध का उचित, सम्मानयुक्त एवं शीघ्र हल प्राप्त करने के लिए हर सम्भव प्रयत्न किये जाने चाहिए। प्रजातांत्रिक मूल्यों, तरीकों एवं संस्थाओं से ही हमारे देशवासियों के सही हितों का संरक्षण हो सकता है और वे ही सम्भाव्य बाह्य खतरों का मुकाबला करने के लिए बड़े पक्के साधन है। समय अति महत्वपूर्ण है, क्योंकि अनुचित विलम्ब से स्थिति बिगड़ सकती है और अनिष्टकारी परिणाम हो सकते हैं। वर्तमान स्थिति के चालू रहने से युवा-पीढ़ी पर होने वाले परिणामों के विषय में सम्मेलन ने विशेष रूप से चिन्ता व्यक्त की।

२ विचार-विमर्श के दौरान संकटकालीन स्थिति की घोषणा के बाद जनसंख्या के गरीब वर्ग की आवश्यकताओं के प्रति विशेष चिन्ता, शिक्षा संस्थाओं में शांति औद्योगिक सम्बन्धों में सुधार, मुद्रास्फीति पर रोक, तस्करी जमाखोरी एवं काले धन के विरुद्ध सफल कार्यवाही, साम्प्रदायिक, क्षेत्रीय एवं भाषा सम्बन्धी तनावों का अभाव, आर्थिक व्यवस्था तथा प्रशासन में सुधार आदि विगत कुछ महीनों में प्राप्त अनेक रचनात्मक उपलब्धियों को सम्मेलन ने सराहना की। साथ ही सम्मेलन ने यह भी महसूस किया कि अहिंसा और सर्वधर्म-समभाव में पूर्ण आस्था रखने वाले तमाम सामाजिक एवं राजनैतिक कार्यकर्ताओं की नजरबन्दी, नागरिक स्वतन्त्रताओं की काट-छांट संदीय कार्यवाहियों सहित प्रेस-सेंसर व्यवस्था, राष्ट्र के स्वास्थ्य, की दृष्टि से अनिश्चित काल तक जारी रखना वांछनीय नहीं है।

३ सम्मेलन का यह मत है कि सम्पूर्ण राष्ट्र के हित में हाल की कुछ प्रवृत्तियों को पलटने का

समय आ गया है। आपात् स्थिति की समाप्ति के लिये तथा उससे प्राप्त फायदों को संगठित करने के लिए एक नवीन शुरूआत की आवश्यकता है। उदाहरणार्थ तस्करी, कालाबाजारी एवं कर-चोरी जैसी समाज-विरोधी क्रियाओं को रोकने के लिये प्रभावपूर्ण प्रयत्न चालू रहने चाहिए। यथा शीघ्र सामान्य चुनाव कराने के लिए उचित परिस्थितियों के निर्माण हेतु एवं सामान्य स्थिति की स्थापना के लिए क्रमबद्ध कदम उठाना जरूरी है। निर्वाचन-प्रणाली में महत्वपूर्ण सुधारों के लिए सर्व-सामान्य एवं व्यापक इच्छा को नजर में रखते हुए सम्मेलन आशा करता है कि चुनावों को हर स्तर पर निष्पक्ष, भ्रष्टाचार-रहित एवं कम खर्चीला बनाने के लिए सभी सम्बन्धित लोगों से आपसी विचार-विनिमय द्वारा आवश्यक सुधारों के लिए निश्चित प्रस्ताव किये जायेंगे।

४ सम्मेलन का निश्चित मत है कि हिंसा एवं प्रजातांत्रिक समाजवाद साथ साथ नहीं चल सकते। महात्मा गांधी के प्रेरक मार्गदर्शन में भारतवर्ष ने अपनी स्वतन्त्रता भी अहिंसात्मक आन्दोलन के जरिये पाई थी अतः हमारे देशवासियों को आत्मानुशासन के रूप में हिंसा को त्यागने और विध्वंसात्मक वृत्तियों को रोकने का फिर से व्रत लेना होगा। राजनैतिक दल, प्रेस व्यापारी-वर्ग एवं अन्य लोगों को आत्मानुशान पर आधारित सर्वमान्य अचार-संहिताए' बनाने को प्रामाणिक प्रयत्न करना चाहिए। वस्तुतः राष्ट्र जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उच्च साध्यों की प्राप्ति के लिए केवल नैतिक साधनों का ही इस्तेमाल होना चाहिए।

५ समय-समय पर संविधान में सुधार करने के लिए प्रस्ताव सामने आये हैं। यह सभी मानते हैं कि संविधान तेजी से सामाजिक एवं आर्थिक विकास के लिए सुविधा प्रदान करे, खासकर हमारे समाज के कमजोर वर्गों के लिए। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए पहले ही कई संशोधन किये जा चुके हैं। अन्य संशोधनों के साथ 'मूलभूत कर्तव्यों' के प्रावधान पर भी विचार किया जा सकता है।

जैसा कि प्रधान मंत्री ने हाल ही में घोषणा की है, संविधान में बुनियदी परिवर्तन देशव्यापी विभिन्न स्तरों पर पूर्ण विचार-विनिमय एवं चर्चा के बाद ही किये जाने चाहिए। सम्मेलन आशा करता है कि केन्द्रीय सरकार इस विषय का गहराई से अध्ययन करने के लिए एक व्यापक स्वरूप वाली समिति के गठन पर विचार करेगी और इसकी सिफारिशों एवं रचनात्मक रूप की राष्ट्रव्यापी चर्चाओं को प्रोत्साहन देने की दृष्टि से, जनता के सम्मुख प्रस्तुत करेगी। इस सन्दर्भ में एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य यह होना चाहिए कि सत्ता और जिम्मेवारी को निम्नतम स्तर तक विकेन्द्रित करने के लिए प्रभावशाली साधनों को विकसित किया जाय।

६ यह बड़ी चिन्ता का विषय है कि स्वतन्त्रता के २८ साल बाद भी हमारे देश के करोड़ों लोग गरीबी की सीमा रेखा के नीचे रहते हैं और आवश्यक जीवनोपयोगी चीजें भी नहीं पा रहे हैं। अतः सरकारी एवं सार्वजनिक संस्थाओं को सम्मिलित रूप से सभी लोगों को निश्चित काम दिलाने और गरीबों के जीवन-स्तर को ऊंचा उठाने का तुरन्त प्रयत्न करना चाहिए।

'अन्त्योदय'—निम्नतम व्यक्तियों के विकास की विचारधारा को, जिसे गाँधीजी सदैव महत्त्व देते थे, हमारे राष्ट्रीय नियोजन का मूल आधार बनना चाहिये।

सम्मेलन महात्मा गाँधी द्वारा प्रतिपादित

—शेष पृष्ट ६०८ पर

एक महान् क्रान्तिकारी परिवार

शहीदे आज़म सरदार भगतसिंह के बुज़ुर्गों की मुख्तसर कहानी

अज़ श्रीमती वीरेन्दर सिन्धू, एम०ए०—

श्रीमती वीरेन्दर सिन्धू एम०ए० सरदार भगतसिंह जी के छोटे भाई श्री कुलतार सिंह मेम्बर, यू०पी० विद्यान सभा की सुपुत्री हैं। आजकल लन्दन की ब्रिटिश ब्राडकास्टिंग कारपोरेशन बरतान्वी रेडियो टेलीविजन कारपोरेशन में काम करती हैं। क्रान्तिकारी बुज़ुर्गों के मुतालिक उनका यह लेख उस परिवार की कहानी सुनाता है जिस में हर आदमी शमे वतन का परवाना था। —सम्पादक

सन् १८५७के अजीम इन्सलाब से अंग्रेज बहुत घबड़ा गये। उन्होंने सारे देश को निहत्था कर दिया। इस पर भी वह मुतमईन न हुए और उन्होंने जुल्म व सितम का दर्द शुरू किया। भारत की अजमत नाकाबिले तसखीर। उस नाजुक जमाने में भारत ने एक अजीम इंसान को जन्म दिया। वह थे महर्षि दयानन्द। उन्होंने सिर्फ मायूसी के अंधेरे में उम्मीद का दिया ही नहीं जलाया बल्कि खुद ऐतमादी का पैगाम भी दिया। कांग्रेस के वजूद में आते ही आर्य समाज की बुनियाद रखी गई और इस तरह नई बेदारी के दर्द का आगाज़ हुआ।

श्री अरजन सिंह ने ऋषि दयानन्द के दर्शन किये तो बहुत मसरूर व बेखुद हो गये। ऋषि दयानन्द का भाषण सुन कर नई बेदारी के समाजी लशकर में शामिल हो गये। वह आर्य समाजी बन गये। महर्षि जी ने उनको जेनेऊ पहनाया। उन्होंने मांस खाना छोड़ दिया और शराब की बोतल तोड़ दी। सरदार अरजन सिंह की जिन्दगी ही तब्दील हो गई थी। वह इन्कलाब के रास्ते पर चल पड़े। वह पहले जाट सिख थे जिन्होंने अपने बड़े और मंझले बेटे किशन सिंह और अजीत सिंह को साईं दास ऐंग्लो संस्कृत हाई स्कूल जालन्धर में तालीम हासिल करने केलिये भेज और खुद भी वहां रायजादा भगतराम के मुंशी हो गये। वह दीक्षा लेकर मुतमईन न हुए बल्कि उन्होंने अपने आपको इस काबिल बनाया कि वह दूसरों को दीक्षा दे सकें। वह कचहरी और आर्य समाज का काम करते हुए यूनानी तिब्ब के कामयाब हकीम बन गये थे।

जब अंग्रजों ने बार (जंगली इलाका) को आबाद करने के लिए वहां जाने वालों को एक मुरब्बा जमीन देने का एलान किया तो वह लायलपुर जिले के बंगा गांव में जा बसे। वहां खेती बाड़ी के साथ साथ हिकमत भी करते रहे। यह १९०० ई०की बात है।

कुछ अरसे के बाद इनका एक बेटा भरी जवानी में शहीद हो गया। दूसरे को जलावतन कर दिया गया। तीसरी उम्र भर कैद व बन्द की मुसीबत झेलता रहा। और जब इनके बड़े पोतों जगत सिंह और भगत सिंह का यज्ञोपवीत संस्कार हुआ तो इन्होंने एक को अपने बाईं बाजू और दूसरे को दायें भर कर प्रतिज्ञा की कि मैं इन दोनों पोतों को यज्ञवेदी पर खड़े हो कर देश की भेंट चढ़ने के लिये दान करता हूं। जब इनके दोनों पोतों का यज्ञोपवीत हुआ और दोनों के सिर पर बाल थे और हिन्दु रीति के मुताबिक इनका मुंडन होना था इसकी मुखालफत उनकी धर्म पत्नी जयकौर ने की और वह मान गये।

सन् १९१५ और १९१६ की बात है कि भगतसिंह को सरसाम हो गया। डाक्टर के इलाज के बाद उन्होंने अपने पोते का खुद इलाज किया मगर दवा कारगर न हुई। जगजीतसिंह का स्वर्गवास का स्वर्गवास हो गया। इनकी दवा स इनके पोते को फायदा नहीं हुआ था इसलिए उन्होंने हिकमत छोड़ दी।

फाँसी से २०, २२ दिन पहले जब भगतसिंह से मलाकात के लिए उनके परिवार के लोग गये तो सरदार अरजनसिंह भी साथ गये। वह वहाँ कोई बात न कर सके कुछ दूरी पर खड़े होकर आँसू बहाते रहे।

एक दिन वह गांव की दुकान पर अखबार पढ़ रहे थे कि वहीं गिर गये। उन पर फालिज का हमला हुआ। उन्होंने दवा लेने से इन्कार कर दिया और जौलाई १९३२ में स्वर्गवाशी हो गये। इस तरह से इन्कलाब का वह चिराग बुझ गया। जिसन जिन्दगी भर अपने खून से नये-नये चिराग जलाये। उनकी हडि्डयाँ चिता में अगरबत्तियां बनकर इस तरह जलीं कि वह राख हो गई पर हमेशा के लिए एक महक छोड़ गए

सरदार किशनसिंह

२६ जनवरी, १९५०, को आजाद हिन्दुका आईन लागू हुआ। उसके ठीक एक साल चार माह बाद सरदार किशनसिंह भी परलोक सिधार गये। वे तो पैदायशी बागी थे। अपने जन्म-दिन से ही वह इन्कलाबी थे और आखिरी दिन तक इन्कलाबी रहे। इनका जन्म सन्१८७८ में हुआ था। बचपन में इनका नाम गोविन्दसिंह था। गांव के बच्चे उन्हें गोविन्द कह कर बुलाते थे। लेकिन कुछ लोग कहते थे कि इससे सिक्खों के दसवें गुरु श्री गोविन्दसिंह जी का अपमान होता है। जब वह आठ वर्ष के हुए तो उन्हें आनन्दपुर साहब ले जाया गया। जहाँ उन्होंने अमृत चखा और उनका नाम बदल कर किशन सिंह रखा गया।

जालन्धर से साईदास एंग्लो हाई स्कूल में तालीम पाने के बाद सरदार किशनसिंह की पब्लिक जिन्दगी महात्मा हंसराजजी के साथ शुरू हुई। इनकी जिन्दगी के इस हिस्से को सेवा काल कहा जा सकता है। हिन्दूस्तान भर में जहाँ भी कोई मुसीबत आई, जलजला, तूफान, कहत, भूखमरी, सैलाब से तबाह होने वाले लोगों की मदद के लिए वह हर जगह पहुंचे। दूरभ में गुजरात में अकाल पड़े तो वहाँ मदद के लिए गये। सन् १९०४ में कांगड़ा में भूचाल आया तो सरदार किशनसिंह वहाँ पहुंचे। सन् १९०५ में शहर झेलम में बाढ़ आई, श्रीनगर और वादी कश्मीर म नुकसान हुआ तो सरदार जी जनता की सेवा के लिए वहाँ पहुंचे गये।

सियासत में

ऐसे मौकों पर इनके दिल में कई तरह के सवाल उठे। क्या मुसीबत की इन घड़ियों में सरकार का कुछ फर्ज नहीं? अगर कोई फर्ज है तो सरकार इसे पूरा क्यों नहीं करती? जब इन सवालात का उन्हें कुछ जवाब न मिला तो वह बहुत दुखी हुए। इस सूरत हाल ने उन्हें गुलामी का अहसास शिद्दत से कराया। आहिस्ता आहिस्ता इनके दिमाग़ पर यह अहसास बोझ बनने लगा और इसी बोझ ने इन्हें सियासत की तरफ रागिब किया। आजादी ही सब बीमारियों का इलाज है। यह बात इनके मन में बैठ गई।

क्रमशः

प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी
के
बीस सूत्रीय आर्थिक कार्य-क्रम पर संगोष्ठी

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार में ८, ९, १०, ११, फरवरी १९७६ को प्रधानमन्त्री इन्दिरा गाँधी के बीससूत्रीय आर्थिक कार्य-क्रम के क्रियान्वयन हेतु श्री बलभद्र कुमार हूजा कुलपति की अध्यक्षता में वेदमन्दिर में संगोष्ठियाँ हुई जिसमें गुरुकुल विश्वविद्यालय एवं गुरुकुल के विद्यार्थियों, कर्मचारियों, प्राध्यापकों-अध्यापकों एवं अधिकारियों के अतिरिक्त एक गोष्ठी में श्री ब्रह्मदत्त जी स्नातक, प्रसार एवं सूचना विभाग, केन्द्रीय सचिवालय तथा ग्राम प्रसार प्रशिक्षण के प्राचार्य श्री कैलाश प्रकाश गुप्त भी सम्मिलित हुए।

सर्व प्रथम श्री ब्रह्मदत्त जी ने २० सूत्रीय कार्य-क्रम को सूत्र की संज्ञा दी तथा इसकी आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि कार्य में तेजी नहीं आई थी, योजनाओं से जो विकास एवं विस्तार हुआ था उसके मूल्यांकन से ज्ञात हुआ कि उससे समाज के विशिष्ट वर्ग को ही लाभ होरहा है। निर्धारित समय में गतिमयता लाना ही परम उद्देश्य है। क्योंकि लोकतान्त्रिक गतिमंथरता की जनता कब तक प्रतिक्षा करे? सर्वहारा वर्ग को लाभ देना, न्यूनतम क्रम एवं साधन से साध्य की पूर्ण प्राप्ति करना, पिछड़ी–निम्न जातियों को विकास पूर्ण अवसर प्रदान करना, निर्धनता निवारण, ऋण मुक्तता आदि ऐसी आवश्यकताएं थीं जिसके लिए २० सूत्री कार्य-क्रम का प्रकाश में आना एवं इसका क्रियान्यवन अत्याश्यक हो गया।

कुलपति ने इसके कार्यन्यवन पर बल देते हुए कहा कि समाज की दिशा में गुरुकुल का बहुत ही बड़ा योगदान रहा है। आज हम मोड़ पर खड़े हैं। यह महान यज्ञ है। गत २५ वर्षों में हम पूर्ण विकास नहीं कर पाये। जो हुआ भी वह बढ़ती हुई जनसंख्या को देखकर नगण्य है। शिक्षा की स्थिति डांवाडोल है। भूमि सुधार की आवश्यकता है। उद्धार केवल धन से नहीं हो सकता, जब तक आर्थिक कार्य-क्रम न बढ़ाये जाँय! अपना व्यक्तित्व निखारने का समय आगया है। क्रान्तिकारी गुरुकुल को इस दिशा में क्रान्तिकारी कदम उठाने चाहिए।

सर्व सम्मति से यह तय हुआ कि प्रधानमन्त्री इन्दिरा गाँधी के बीससूत्रीय आर्थिक कार्य-क्रम में हम पूर्ण विश्वास करते हैं तथा इसके क्रियान्यवन हेतु पूर्ण सहयोग देने का संकल्प करते हैं।

१– आवश्यक उपभोक्ता वस्तुओं के मूल्यों में गिरावट के रुझान बनाये रखने एवं उपभोक्ता पदार्थों की उपलब्धि तथा वितरण की व्यवस्था को प्रभावशाली बनाने के लिए हम आवश्यकता से अधिक वस्तुओं का संचय नही करेंगे। ऐसा करनें वाले की सूचना देंगे।

२– छात्रावासों में रहने वाले छात्रों के लिए नियंत्रित मूल्य पर आवश्यत वस्तुओं की व्यवस्था करेंगे। छात्रावासों को पूर्ण सुविधा प्रदान करने के साथ-साथ विश्वविद्यालय प्रांगण से बाहर रहने वाले छात्रों को सुविधा देने के लिए उपयुक्त आवासों की व्तवस्था करेंगे।

३– (क) शिक्षा को ग्राम विकास हेतु ग्रामोन्मुखी बनाया जाय। क्योंकि भारतवर्ष कृषि प्रधान देश है और इसकी ८०प्रतिशत जनसंख्या ग्रामवासिनी है जिसमें ७५ प्रतिशत

कृषक हैं। इसलिए देश के उत्थान को दृष्टिगत रखते हुए शिक्षा को विशेष रूप से गांवों से सम्बन्धित किया जाय। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थिति इसको यह सौभाग्य प्रदान करती है क्योंकि इसकी दो सीमाओं पर ग्राम स्थित हैं। इस दृष्टि से आर्थिक विकास में यह महत्वपूर्ण योगदान होगा। ऐसा निश्चय हुआ कि विश्वविद्यालय के छात्र एवं प्राध्यापक ग्रामों में जाकर कृषकों, जुलाहों, एवं कुम्हारों के कार्यों को सीखेंगे तथा उन्हें आवश्यक शिक्षा प्रदान करेंगे।

(ख) सामूहिक कार्यक्रमानुसार सड़क-निर्माण, सफाई एवं प्रौढ़-शिक्षा आदि के आर्थिक कार्य-क्रमों को क्रियान्वित करेंगे।

(ग) राष्ट्रीय छात्र सेना एवं स्वयं सेवकों का निर्माण जिससे शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् ग्रामीण क्षेत्रों में कार्य कर सकें।

(घ) दीमक नियंत्रण, वृक्षारोपण एवं गोबर गैस संयंत्रादि के पुरोगम चलाये जायेंगे। ये कार्य-क्रम कृषि, वनस्पति एवं रसायनशास्त्र विभागों द्वारा चलाये जायेंगे। जिसमें निकटस्थ ग्राम प्रशिक्षण प्रसार केन्द्र से सहयोग लिया जायेगा।

(ङ) खाद्यान्न उत्पादन, मिलावट विरोध, परिवार-नियोजन, दहेज निषेध, निर्धनता निवारण एवं ऋण मुक्ततादि से संबंधित शिक्षा ग्रामीणों को देकर उनकी समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करें।

इसप्रकार ग्रामों से संबंध बनाकर आर्थिक व्यवस्था लाकर प्रधान मन्त्री इन्दिरा गांधी के बीस सूत्रीय कार्यक्रम को सफल बनायेंगे।

४– छात्रों ने दहेज न लेने का संकल्प किया।

५– गाँवों में लोगों को आवासीय भूमि मिली या नहीं ? इसकी सूचना देने हेतु अपनी सेवाएं जिलाधीश को प्रदान करने। तथा मानवता की विभदेक धारा के सेतु बनने का संकल्प लेते हैं।

रामाश्रय मिश्र

संयोजक

२० सूत्रीय आर्थिक कार्यक्रम संगोष्ठी

गु० कां० विश्वविद्यालय, हरिद्वार

श्री पं. भगवद्दत्त जी वेदालंकार
व्यक्तित्व एवं कृतित्व
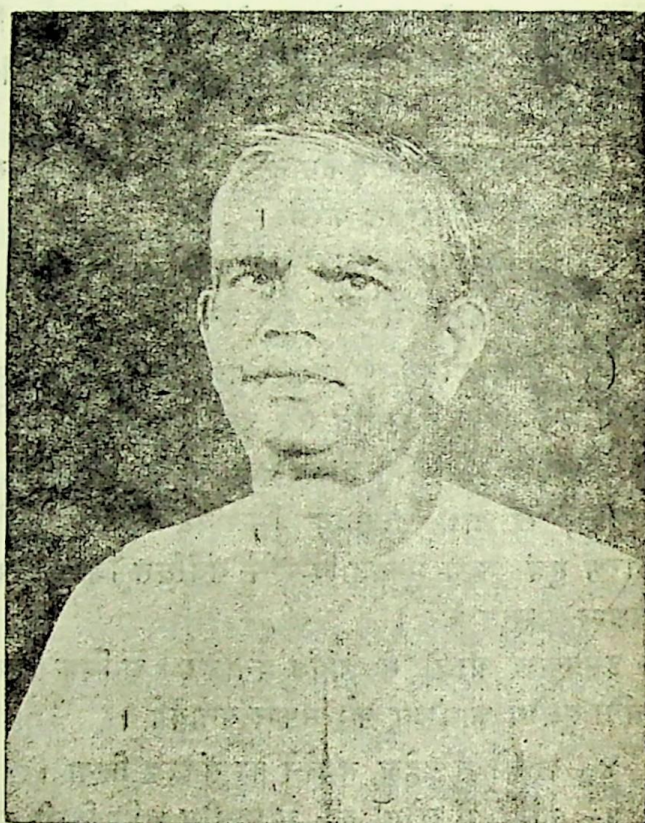
त्याग एवं वैदिक निष्ठा की प्रतिमूर्ति
निवर्तमान सम्पादक, गुरुकुल पत्रिका
एवं अनुसंधित्सु वेद-विभाग
पं० भगवद्दत्त वेदालंकार

जन्म स्थान : उत्तर-प्रदेश के मेरठ जिला-अन्तर्गत ग्राम – नेक, पिता जी का शुभ नाम श्री रिसालेसिह।

बाल्य काल–ग्राम्य जीवन होने के कारण खान-पान में अव्यवस्था, अनियमितता के कारण दस्त, पेचिश के बीमार तथा अन्य अनेक फोड़े-फुन्सियों से युक्त होने से शरीर की दृष्टि से अत्यन्त क्षीण। इनके पिता ने यह सोचा कि यहाँ तो इसका जीवन सुरक्षित नहीं है। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में दाखिल कराया। वहाँ भी अगली परीक्षा में फेल होने के कारण गुरुकुल में प्रविष्ट न हो सके। परन्तु न जाने किस की प्रेरणा से इन्हें गुरुकुल में प्रविष्ट कर लिया गया।

गुरुकुलीय जीवन –– भोजन में नियतकाल तथा नियमितता का विशेष ध्यान रखने और नियमित रूप से प्रतिदिन योगासन तथा दण्ड-बैठक करने से शरीर स्वस्थ हो गया। उन दिनों आश्रम ध्यक्ष ब्राह्ममुहूर्त में उठना, शौच, दन्तधावन योगासन तथा व्यायाम आदि विद्यार्थी नियमित रूप से करते हैं कि नहीं, इसका विशेष ध्यान रखते थे। दोनों समय सुचारु रूप से संध्या-हवन सबको करना पड़ता था। कभी १५वें दिन तथा कभी मासान्त में परीक्षा होती थी। एक बार दूसरी श्रेणी में संस्कृत की परीक्षा में इनका प्रथम नम्बर आ गया। इन्हें पुरस्कार स्वरूप एक जामुनी पेंसिल तथा एक नोटबुक मिल गई। इसका इन पर ऐसा

प्रभाव पड़ा कि पुरस्कार के लोभ से संस्कृत में रुचि आरम्भ हो गई और इनकी गणना अच्छे विद्यार्थियों में होने लगी। बचपन में गायत्री जाप के लिये इन्हें प्रेरणा दी गई थी, जिसका प्रभाव यह हुआ कि ये धार्मिक तथा आध्यात्मिक वृत्ति के हो गये।

क्रीड़ा—प्रारम्भ में हाकी, लाठी, गतका, कुश्ती आदि का भी शौक रहा परन्तु सबसे अधिक, इन्हें तैराकी का शौक रहा। वर्षा ऋतु में भरी गंगा इन्होंने तैर कर पार की। गुरुकुल के तैराकी मैच में यह प्रथम आते थे। गढ़मुक्तेश्वर के मेले में तैराकी मैच में गुरुकुल की ओर से ये गये थे और वहां ४ मील की तैराकी में सर्व प्रथम रहे।

कार्यक्षेत्र--सन् १६३५ में स्नातक होने के बाद आर्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाब, लाहौर में ८ वर्ष तक कार्य किया। तत्पश्चात् ये गुरुकुल काँगड़ी में वेदानुसन्धान के लिए श्री ठाकुरदत्त अमृतधारा द्वारा प्रदत्त तीस सहस्र रुपये से स्थापित निधि में वेदानुसन्धान का कार्य किया, आयुर्वेद कालेज में कई वर्ष तक वेदाध्यापन का कार्य किया एवं कालिज में कई वर्ष तक आश्रमाध्यक्ष का कार्य, गुरुकुल पत्रिका का सम्पादन कार्य, इस प्रकार गुरुकुल में अनेक पदों पर इन्होंने कार्य किया।

साहित्य निर्माण--इनकी वेद सम्बन्धी खोजपूर्ण लगभग दस पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं और कई अप्रकाशित भी हैं। पत्र-पत्रिकाओं में शास्त्रीय खोजपूर्ण लेख लिखते रहे हैं।

आपकी निम्न पुस्तकों पर उत्तर-प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं—

वैदिक स्वप्न विज्ञानम्	१०००)
विष्णु देवता	५००)
ऋषि रहस्य	५००)
पुरुषोत्तमदास मेमोरिल ट्रस्ट हैदराबाद	२२५)

,, आपकी आध्यात्मिक वृत्ति है, आत्मिक भूख के शमन के लिए दो बार पाँडिचेरी की यात्रा भी कर चुके हैं एवं कई साधु महात्माओं से भी समय-समय पर सम्पर्क करते रहे हैं। अध्यात्म और वेद की सेवा ही अब आपके जीवन का ध्येय है।

रामाश्रय मिश्र
सम्पादक

भूतपूर्व सम्पादक पं० भगवद्दत्त जी वेदालंकार के
सेवा निवृति-उपलक्ष में

कुलपति का शुभ कामना-पत्र

बलभद्र कुमार   १ अप्रैल, १९७६

परम आदरणीय भगवद्दत्त जी,

आज आप गुरुकुल की लम्बी सेवा से निवृत हो रहे हैं। आपने जिस निष्ठा और लगन से वेदाध्ययन एवं वेदप्रचार किया है वह अत्यन्त सराहनीय एवं अनुकरणीय है।

आपकी सौम्य वृति का प्रत्येक पर प्रभाव पड़ता है। भगवान आपको चिरायु एवं स्वस्थ बनाए रखे यही प्रार्थना है। मैं आशा करता हूं कि आप गुरुकुल से सम्बन्ध बनाये रखेंगे और आप सौ वर्ष तक जीते हुये सत्कर्मों में जुटे रहेंगे। आपकी प्रेरणा लम्बे अर्से तक गुरुकुल वासियों को मिलती रहे।

मुझे आपकी सेवा करने का मौका मिले तो मैं अपना अहोभाग्य समझूंगा। शुभ कामनाओं सहित,

आपका—
ह० (बलभद्र कुमार)

श्री भगवद्दत्त वेदालंकार
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पृष्ट ६०१ का शेष

ट्रस्टीशिप के आदर्श के अभ्युदय एवं धनी-वर्ग के उपभोग्य स्तर को नियंत्रित करने की आवश्यकता पर बल देता है।

७ इसमें दो राय नहीं हैं कि भारत में जन-संख्या वृद्धि की तेजी से बढ़ती हुई गति को तीव्रता से रोका जाय। अन्य उपायों के अतिरिक्त देश में सर्वव्यापी जनशिक्षण के द्वारा आत्म-नियन्त्रण के वातावरण का निर्माण करने पर आचार्य विनोबाजी ने कई बार जोर दिया है।

८ आचार्य विनोबा प्रायः कहते हैं "विज्ञान में शक्ति है, गति है और क्रियाशीलता है, लेकिन दिशा नहीं है। यह बिलकुल स्पष्ट है कि विज्ञान को अध्यात्म ही दिशा-दर्शन प्रदान कर सकता है।" देश को, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में, संतुलित विकास की ओर ले जाने के लिए वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का समुचित समन्वय अति आवश्यक है।

९ राष्ट्र को उचित मार्ग से विकसित करने के लिए शिक्षा की वर्तमान पद्धति को जीवन-केन्द्रित बनाना चाहिए, जिससे युवा-पीढ़ी को महात्मा गाँधी के विचारों के अनुसार उत्पादक और विकासशील कार्यों में प्रवृत्त किया जा सके।

व्यापक गरीबी से संबंधित व्यापक निरक्षरता को आगामी दशक में एक महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय-कार्य के रूप में खत्म करना है। हमारी शिक्षा-संस्थाओं को चाहिए कि वे नैतिक-मूल्यों तथा भारत की समृद्ध एवं सामाजिक सांस्कृतिक परम्परा को आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण स्थान दें।

राष्ट्र के सभी स्तरों पर भ्रष्टाचार-उन्मूलन के लिए भी प्रयत्न किया जाना जरूरी है। सम्मेलन आचार्य विनोबा की इस जोरदार दलील का समर्थन करता है कि शिक्षा को सरकार के कड़े नियंत्रण एवं राजनैतिक दलों के हस्तक्षेप से सर्वथा मुक्त होना चाहिए।

१० यह सम्मेलन राष्ट्रीय सामंजस्य एवं रचनात्मक सहयोग की प्रक्रिया को गति देने के लिए किसी भी प्रकार से उपयोगी होने में अपने को गौरवान्वित समझेगा।

सम्मेलन आचार्य विनोबाजी से अनुरोध करता है कि इस निवेदन में दिये गये सुझावों को आगे बढ़ाने के लिए जैसा वे उचित समझें, पथ-दर्शन करें

—०—

गुरुकुल समाचार

—महावीर' नीर विद्यालंकार

ऋतु-रंग

नवपलाशपलाशवनं पुरः स्फुटपरागपरागतपङ्कजम् ।
मृदुलतान्तलतान्तमलोकयत् स सुरभिं सुरभिं सुमनोभरैः ।। (माघः ।

मार्च मास का लुभावना मौसम गुरुकुल-नगरी की शोभा को द्विगुणित करने लगा । गगन-मण्डल पर मेघों की परतें जमी रही । गडगडाहट और चमचमाहट के बीच वर्षा की बौछार पड़ी । चहुँ ओर फागुनी बयार बहने लगी । वृक्ष और लतायें झूम-झूमकर प्रकृति नटी का अभिनन्दन करने लगी । युकलिपटास (तैलपर्णी)पर सफ़ेद २ फूलों के गुच्छे लटक गये । आम्रमञ्जरियाँ फूल उठी। बौर की मादक-गंध से वातावरण महक उठा । शहतूत फूल उठे । टेसूओं का रंग बिखर गया । अमरुद, आम, जामुन, नीबू, शीशम, सभी पर नव-पत्र शोभित हो उठे । गेहूँ-बालों में योवन का उभार स्पष्ट दिखने लगा । बांस, पलास, ढाक, सभी फूल उठे । फुलो से मरकन्द झरने लगा । मधुपों की गुंजार होने लगी । मधु कोष लटकने लगे । चिड़ियों ने घोंसले बनाने शुरु कर दिये। प्रकृति नये रंग में रंग गयी । धरा मग्न हो गयी । आबाल-वृद्ध सभी मस्ती से झूमने लगे । होली का रंगीला त्यौहार अबीर-गुलाल की फुहारे छोडता हुआ विदा हो गया । विविध रंग-बिरंगे फूल अपनी सुरभि से दिग्दिगन्त को सुवासित करने लगे । चैत-चांदनी की सुधावर्षिणी ज्योत्सना कुल पर छिटक गयी । सर्वत्र अपूर्व सौन्दर्य निखर गया । शीत की प्रधानता समाप्त हो चली । दोपहर की धूप में बैठना एकदम अप्रिय लगने लगा । कुलवासियों ने रंगबिरंगे ऊनी परिधान उतारने प्रारम्भ कर दिये । मच्छरों व मक्खियों का प्रभाव बढ़ चला। कुलवासी स्वस्थ तथा प्रसन्न है ।

विद्यालय-विभाग

विद्यालय-विभाग में आगामी वार्षिक-परिक्षाओं को दृष्टि में रखते हुए अध्ययन व अध्यापन का कार्य द्रुत गति से चल पड़ा है । नवमव दशम के ब्रह्मचारियों को परीक्षा की तैयारी के लिए अवकाश दिया गया है । व्यायाम व खेल कूद साथ-साथ चलते रहे ।

अध्यापकों की बैठक:— ६।३।७६ को समस्त अध्यापकों व अधिष्ठाताओं की विद्यालय की प्रगति-सम्बन्धी बैठक हुई ।

ध्रुवका प्रथम अंकः—पूर्व योजना के अनुमार ब्रह्मचारियों द्वारा हस्तलिखित ध्रुव' पत्रिका का अंक श्री अरविन्द कुमार जी तथा विजय कुमार जी के सम्पादकत्व में बड़ी सजधज के साथ प्रकाशित

हुआ । मान्य कुलपति श्री बलभद्र कुमार जी ने विद्यार्थियों को इस पत्रिका का विमोचन किया । इस पत्रिका को मुद्रित किये जाने का भी विचार हो रहा है एतदर्थ स० मुख्याधिष्ठाता श्री प० धर्मवीर जी ने आर्थिक स्वीकृति प्रदान कर दी है । शीघ्र आगामी अंक भी निकल रहा है ।

आश्रम अधिष्ठाताओं के वेतन में वृद्धि:—संरक्षक-सभा की संस्तुति पर श्री आचार्य डा०रामनाथ जी वेदालंकार ने अधिष्ठाताओं का वेतन ६०) से १५०)कर दिया है। इसी प्रकार विद्यालय-अध्यापकों को भी २८ प्रतिशत महंगाई जनवरी से दे दी गई है ।

प० लेखराम स्मृति कबड्डी टूर्नामेंट:—६व७ मार्च को विद्यालय-विभाग में ६-७ श्रेणियों के ब्रह्मचारियों की ओर से अमर शहीद प०लेखराम जी आर्य मुसाफिर की स्मृति में एक हरिद्वारीय कबड्डी टूर्नामेंट का सफल आयोजन किया गया । लगभग १२ टीमों ने भाग लिया । कुल के मान्य कुलपति श्री बलभद्र कुमार जी ने टूर्नामेंट का उद्घाटन कर ब्रह्मचारियों के उत्साह को द्विगुणित किया । ६+७व अष्टम श्रेणी का स्फुर्तिदायक फाइनल मैच हुआ । ६×७ ने अपने साहस और कौशल से अष्टम श्रेणी को पराजित कर प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया । ब्र० अशोक कुमार पंजाब ६ष्ठ)ने सफलता के साथ संयोजन किया । ब्र० राजेन्द्र १०म का आंखो देखा हाल सुनाने का ढंग ड़ा आकर्षक रहा । श्री विजय कुमार जी, श्री ज्ञान चन्द्र जी (आश्रमध्यक्ष व अधिष्ठाता) तथा तलकराज जी रणजीतसिंह जी व अरविन्द कुमारजी, 'नीर'जी आदि अध्यापकों तथा स०मुख्या० श्री धर्मवीर जी विद्यालंकार तथा आयुर्वेद-महाविद्यालय के बड़े छात्रों ने छात्रों के मध्य उपस्थिति देकर उनके उत्साह को द्विगुणित कर विशष उल्लसित व हर्षित किया । वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर के लोकप्रसिद्ध वैद्य श्री हरनामदास जी बी०ए० न पुरस्कार वितरित किए तथा व्यायाम के महत्व पर सारगर्भित भाषण दिया । श्री विजय कुमारजी ने आर्यमुसाफिर पं०लेखराज जी के वीरोचित जीवन-चरित्र पर दो शब्द कहे (हर्षोल्लास के बीच टूर्नामेंट समाप्त हुआ ।

विद्यालय में होली-महोत्सव:—१६ मार्च को प्रातः ८बजे आश्रम यज्ञशाला में सामूहिक यज्ञ हुआ । कार्यवाहककुलपति श्री सुरेश चन्द्रजी त्यागी (वि०महा०)स०मुख्या ०श्री पं० धर्मवीर विद्यालंकार तथा स्वामी चिदानन्द जी ने होली-त्यौहार पर अपने २विचार प्रकट किये । तदनन्तर सभी अधिकारी वर्ग, अधिष्ठातागण परस्पर गले मिले । छात्रों ने भी सभी को गुलाल आदि लगाया। आनन्द और उल्लास के बीच त्यौहार मनाया गया ।

विद्यालय-विदाई-समारोह:—विद्यालय के छोटे छात्रों ने दशम श्रेणी के बड़े भाइयों को विदाई दी । विदाई समारोह की अध्यक्षता आचार्य श्री डा०रामनाथ जी वेदालंकार ने की । कुलपति श्री बलभद्र कुमार जी, कुलसचिव डा०गंगा राम जी, मु०मुख्याधिष्ठाता श्री पं०धर्मवीरजी विद्यालंकार ने विदाई लेने वाले ब्रह्मचारियों को आशीर्वाद देते हुए सत्य, ईश्वर प्रेम देश-प्रेम तथा पुस्तकों स प्रेम करने की ओर प्रेरित किया । अध्यक्ष पद से आचार्य जी ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि

वे अपना मार्ग सोच समझकर चुने। ब्र०गणेश ब्र०प्रदीप९म, नरेन्द्र ९म ने विदाई गीत गाया। श्री पं० हरिवंश जी वेदालंकार, श्री विजय कुमार जी शास्त्री, श्री आनन्द कुमार जी श्री तिलक राज जी आदि ने भी छात्रों को आशीर्वचन कहे। ब्र० नरेन्द्र ९म ने विद्यालय-छात्रों की ओर से विदाई पत्र पढ़ा तथा ब्र०मनजीत १०म ने भावपूर्ण शब्दों में विदाई का प्रत्युत्तर दिया। शान्तिपाठ, चायपान एवं फोटोग्रुप के पश्चात् कार्यक्रम समाप्त हुआ।

डा० हरिप्रकाश जी स्वस्थ

परम प्रसन्नता और सौभाग्य की बात है कि गुरुकुल फार्मेसी के व्यवसायध्यक्ष भूतपूर्व मन्त्री आर्य प्र० स० पंजाब तथा गुरुकुल के वरिष्ठ स्नातक डा० हरिप्रकाशजी आयुर्वेदालंकार जो पिछले दिनों पेट की बीमारी के कारणण गम्भीर रूप से रूग्ण हो गये थे अब पुनः स्वास्थ्य लाभ करके अपने कार्य पर लोट आये हैं। हम डा०जी के पूर्ण स्वस्थ होने की कामना करते हैं।

कविराज हरनामदास जी बी०ए०द्वारा दान व सन्देश

वर्तमान समय में आर्य वान प्रस्थाश्रम, ज्वालापुर के निवासी तथा भारत के प्रसिद्ध वैद्यराज श्री हरनाम दास जी ने गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के खेलों से प्रसन्न होकर १०१) का प्रेम भरा दान दिया। गुरुकुल उनका अत्यन्त आभारी है। साथ ही कविराज के हृदय मे कुल के प्रति क्या भाव है तथा अधिकारियों, कार्यकर्ताओं आदि से उनको क्या आशाये हैं। इस विषय में उनके पत्र का सारांश हम नीचे दे रहे हैं-

(१)आदरणीय प्रिय कुलपति जी, श्री सेवा में एक लोकल चैक १०१) का खेलों की छोटी-मोटी आवश्यकताओं के लिए प्रेषित है।

(२)में उसदिन आपके स्टाफ की 'अपने क्षेत्र में कार्य-कुशलता, सूझ-बूझ और शालीनता" से बहुत प्रभावित हुआ। वें और आप बधाई के पात्र है।

(३)उसदिन पारितोषक प्राप्त करने वाले दो विद्यार्थियों के बाल इतने लम्बे देखे कि माथा और नेत्र बहुत ढके हुए थे।

(४)एक नोट-बुक भेजता हूँ। ऐसी नोट बुक जो आपके सम्पर्क में आते हैं अथवा जिन्हें आप आदेश देते है, सभी के पास होनी चाहिए।

(५)आपके कुशल प्रशासक होने की धाक बैठी हुई है। यह महान् संस्था आपके आगमन से धन्य हो गई है।

आशा है कविराज जी कु के प्रति अपना सर्वदा प्रेम-भाव व दान-भाव बनाये रहेंगे।

गुरुकुल नगरी में वेद-मन्त्रों की गूंज

मान्य कुलपति श्री बलभद्र कुमार जी की प्रेरणा से कुल में प्रसुप्त सात्विक भावों के पुनःजागरण के लिए एक नयी परम्परा को क्रियान्वित किया गया है। इस योजना के अनुसार 'अमृत-वाटिका' की 'यज्ञ-वेदी से प्रतिदिन 'ध्वनिप्रसारक यन्त्र' द्वारा कुल-भूमि में वेद मन्त्रों की सात्विक-स्वर-लहरी प्रसारित की जा रही है। यह एक उत्तम प्रयास है।

कार्यालय-विभाग में गतिशीलता

गुरुकुल के मुख्य कार्यालय विभाग में विगत तीन मासों से निरन्तर गति शीलता दिखलाई पड़ रही है। गुरुकुल-विभागीय कार्यालय में अनेक परिवर्तन किये गए। जिससे अनेक वर्षों से रुका हुआ महगाई भत्ता, वेतनमान, दिया जा चुका है तथा लगभग सभी विभागों को वार्षिक वेतन वृद्धियां भी उचित रूप से प्रदान कर दी गई है। बिलों आदि के भुगतान भी क्रमशः किए जा रहे हैं। अनेक आर्थिक आदि कठिनाईयों के होते हुए भी कार्य में सुचारुता आ रही है। इस कार्य में विशेष योग वरिष्ठ लिपिक श्री रामेश्वर जी का रहा है। सामान्य सभी कार्यकर्ता अपने कार्य को शीघ्र निपटाने में लगे है।

सुरक्षा-व्यवस्था

स० मुख्याधिष्ठाता श्री प० धर्मवीर जी के अनुसार कुल की सुरक्षा व्यवस्था (पहरेदारी) को एन०सी०सी० विभाग के आधीन कर दिया गया है। कम्पनी कमाण्डर लै०श्री वीरेन्द्रसिंहजी अरोड़ा तथा विश्वविद्यालय के प्रोक्टर श्रीओमप्रकाश जी मिश्र से यह कार्य सम्बन्धित रहेगा।

एन० सी० सी० विभाग

विश्वविद्यालय एन० सी० सी० कम्पनी कमाण्डर लै० श्री वीरेन्द्र जी अरोड़ा के अनुसार आगामी सत्र से एन० सी० सी० में घुड़सवारी तथा तीरन्दाजी के प्रशिक्षण आदि देने की योजना को क्रियान्वित किये जाने की पूर्ण सम्भावना है।

२० सूत्री कार्यक्रम पर विचार

कुल के सभी प्राध्यापकों तथा कुलपति जी, स० मुख्याधिष्ठाता जी, कुलसचिवजी आदि सभी ने निरन्तर द्विदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन कर सरकार के २०सूत्री कार्यक्रम पर विचार किया।

सांस्कृतिक—कार्यक्रम

२।३।७६को वेदएवं साधारण महाविद्यालय के छात्रों ने पूर्व प्रदर्शित नाटकों एवं प्रहसनों का कार्यक्रम श्री राजेन्द्र कुमारजी जिलाधीश सहारनपुर को अध्यक्षता में बड़े कलात्मक ढ़ंग से प्रस्तुत किया ।

होली का रंगीला त्यौहार

पूर्व वर्षों की भांति इस वर्ष भी सभी कुलवासियों ने १६मार्च को हर्षोल्लासपूर्ण वातावरण के बीच होली का रंगीला त्यौहार मनाया । गुलाल अबीर और रंग बिरंगे गुब्बारों, पिचकारियों की रंगीली फुहारों तथा परस्पर प्रेम-पूर्वक लगाये गये गुलाल अबीर के तिलक से स्नेह युक्त वातावरण की सृष्टि रही । श्रद्धानन्द-द्वारस्थ परिवार के मैदान में एक गल्प-गोष्ठी भी हुई ।

अमर शहीद सरदार भगतसिंह की पुण्य तिथि का आयोजन

२३।३।७६को प्रा०भा० इतिहास विभाग की ओर से सरदार भगत सिंह की पुण्य तिथि पर एक सभा का समायोजन हुआ । समारोह की अध्यक्षता कुल के आचार्य श्री डा० रामनाथ जी वेदालंकार ने की । अनेक विद्यार्थियों ने कविता-पाठ किया । प्रो० जे० एस० सेंगर तथा प्रो० जयदेव वेदालंकार ने सरदार भगत सिंह जी के कृत्यों पर प्रकाश डाला । सभा का संयोजन इतिहास विभाग के अध्यक्ष डा० विनोद चन्द्रजी सिन्हा ने किया ।

कुलीयभीम ब्र० देवकेतु का शक्ति प्रदर्शन

२१वर्षीय संस्कृत एम० ए०(२१वर्ष)के छात्र ब्र०देवकेतु ने कुम्भा खेड़ा हिसार की लगभग १५,२० हजार जनता को अपने बहुबल से दो कारों को एक साथ रोककर आश्चर्य चकित एवं रोमांचित कर दिया । इसी प्रकार १७ मार्च को फजलपुर, मेरठ मै एक कार रोक कर ढ़ाई सूत मोटी जंजीर तोड़कर, थाली चीरकर अपने शक्ति प्रदर्शन द्वारा जनता मोहित को किया । ब्रह्मचारीजी से गुरुकुल को बहुत आशायें हैं । आशा है अधिकारी अपने इस उभरते नवयुवक किशोर छात्र के उत्साहवर्धनार्थ विशेष वृत्ति देने की कृपा करेंगे ।

'देव मुनि' जी द्वारा सन्यास-ग्रहण

समीपस्थ 'आर्यवानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर में १मार्च ७६के एक भव्य समारोह में कुल के पुरान सुयोग्य स्नातक, वेद भाष्यकार,आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान्सौम्यमूर्ति श्री०पं०धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड (देवमुनिजी)को वृद्ध आर्य सन्यासी श्री आनन्द स्वामी जी महाराज ने सन्यास–दीक्षा दी । अब पण्डितजी 'धर्मानन्द सरस्वती'के नाम मे पुकारे जायेंगे ।

डा० राकेश जी द्वारा विद्वत् परिषद् का उद्घाटन

गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग वरिष्ठ प्राध्यापक तथा हिन्दी साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान् डा० विष्णुदत्तजी राकेश, ने 'श्री दयालु संस्कृत महाविद्यालय वाराणासी की रजत जयन्ती पर आयोजित विद्वत् परिषद का उद्घाटन करते हुए कहा कि "संस्कृत ने भारतीय-संस्कृति और भारतीय चिन्तन की उस प्रतिभा का निर्माण किया है जिसका साक्षात्कार जीव के पशुत्व को समाप्त कर शिवत्व प्रदान करता है समारोह की अध्यक्षता संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणासी के कुलपति डा० करुणापति त्रिपाठी ने की।

शिक्षा-पटल के लिए चुनाव

२३मार्च। शिक्षा पटल के लिए चुनाव हुआ। जिसमें श्री प्रो० जबरसिंह सैंगर ने २३ मत, श्री प्रो० अमर नाथ द्विवेदी ने १६मत तथा श्री मती भगवती दवी (कन्या गु०देहरादून) ने ११मत प्राप्त किए। इस प्रकार प्रो० जबरसिंह जी पटल के लिए चुनेगाए।

एम० ए० (२यवर्ष) के छात्रों को विदाई

३०।३।७६ को इतिहास विभाग के एम० ए० प्रथम वर्ष के छात्रों ने २य वर्ष के छात्रों को विदाई दी। एम०ए० (प्र० वर्ष) की ओर से श्री ललित जी ने अपने सहपाठियों की ओर से उद्गार प्रकट किए। २य वर्ष की ओर से विदाई का उत्तर श्री धनपाल सिंह ने दिया। उपाध्यायों की ओर से प्रो० जबरसिंह जी तथा प्रो० विनोद चन्द्र जी सिन्हा ने आशीर्वचन कहे। मान्य कुलपति श्री बलभद्र कुमार जी ने विदाई लेने वाले छात्रों को एक २ पुष्प भेंट करते हुए कहा कि तुम्हारा जीवन फूलों की तरह सर्वत्र अपने यश की सुगन्ध फैलाये। उपाध्यायों को देश और समाज के लिए कार्य करने को प्रेरित किया हम अपने जीवन में कुल के प्रति प्रेम भावना और गरिबों के प्रति सेवा भावना को उजागर करें। शान्ति पाठ के पश्चात् समारोह समाप्त हुआ।

आर्य-समाज गुरुकुल कांगडी की गतिविधियां

आर्यसमाज गुरुकुल कांगडी में इस मास प्रधान श्री पं०भगवद्दत्त जी वेदालंकार तथा मन्त्री श्री चन्द्र जी के नेतृत्व में अनेक गतिविधियां दृष्टि गत हुई--

(१) आर्य समाज में अब साप्ताहिक वृहद्-यज्ञ के अतिरिक्त प्रतिदिन ६बजे प्रातःयज्ञ का शुभारम्भ हुआ।

(२) साप्ताहिक सत्संगों में अनेक विद्वानों के भाषण आदि हुए।

(३) गुरुदत्त दिवसः—२९ मार्च सायं ६बजे आर्य समाज मन्दिर में पण्डित गुरुदत्त जी का दिवस मनाया गया। कुलपति बलभद्र कुमार जी ने अध्यक्षता की। आचार्य डा०रामनाथ जी वेदालंकार, डा० हरगोपाल सिंह जी (उपप्रधान आ०स०) श्री पं०भगवद्दतजी वेदालंकार (प्रधान आ० स०)

डा० वासुदेव जी, आयुर्वेदालंकार डा० गंगाराम जी कुलसचिव, श्री चैतन्य जी आदि समस्त महानुभावों ने गुरुदत्तजी के जीवन पर प्रकाश डाला।

आवश्यक सूचना

समस्त अध्यात्म प्रेमी महानुभावों को ज्ञात हों कि लगभग ४मास से प्रति सप्ताह सोमवार एवं वृहस्पतिवार को 'वेदमन्दिर' में सांय काल ६बजे से अध्यात्मिक-चिन्तन' हेतु मौन का आयोजन किया जा रहा है। इच्छुक महानुभाव एवं कुलवासी इसमें भाग ले सकते है। इस कार्यक्रम के संयोजक प्रो० जे० एस० सेंगर है।

विविध खेल-कूद

(१) १मार्च से 'रोपड़ पंजाब'टूर्नामेंट में जाने के लिए वि० वि० हाँकी प्रशिक्षक श्री जीतसिंहजी द्वारा विशेष हाँकी प्रशिक्षण।
(२) ६।३।७६ को विद्वान् महाविद्यालय गु०कां० तथा श्रवणनाथ म०नेहरु डिग्री कालेज का क्रीकेटमैच।
(३) ६।३।७६ से विद्यालय-विभाग में कबड्डी टूर्नामेंट।
(४) आयुर्वेद छात्रावास में प्रतिदिन वाली बॉल का खेल होता रहा।
(५) विद्यालय-विभाग में उत्सव की तैयारी के लिए पी० टी० डम्बिल व लेजिम का विशेष सामूहिक-अभ्यास।

शोक—समाचार

यह समाचार देते हुए अत्यन्त हार्दिक दुःख है कि गु०कु०के वरिष्ठ प्राध्यापक डा० हरगोपाल सिंहजी के पिता जी का इस मास लम्बी विमारी के कारण स्वर्गवास हो गया है हम शोक-समाचारसंतप्त परिवार में शामिल होते हुए प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शांति दे और परिवार जनों को शोक-संताप सहने की शक्ति दे।

—o—

१– (क) आचार्यों की बैठक– सीनेटहाल ।
(ख) सांस्कृतिक कार्य-क्रम– वेदमन्दिर

२– (क) जिलाधीश श्री राजेन्द्र कुमार के स्वागतार्थ सांस्कृतिक कार्य-क्रम– वेद मन्दिर ।
(ख) वार्षिकोत्सव सम्बन्धी बैठक ।

३– सम्पादक मंडलों की बैठक– सीनेटहाल ।

४– आचार्य लेखराम दिवस– आर्य समाज मन्दिर ।

८-१५– कुलसचिव– विश्वविद्यालय अनुदान आयोग एवं शिक्षा मन्त्रालय अनुदान एवं नये वेतन मान हेतु ।

१३-१५– कुलपति– लखनऊ दीक्षान्त भाषण हेतु राज्यपाल-उत्तर-प्रदेश डा० चन्नारेड्डी को निमन्त्रित करने हेतु ।

२२– कुलपति– उदयपुर विश्वविद्यालय उदयपुर के दीक्षान्त समारोह में सम्मिलित ।

२३– शहीदे आजम भगतसिंह दिवस– वेदमन्दिर ।

२७– वार्षिकोत्सव सम्बन्धी विभिन्न बैठकें– कुलपति निवास ।

२८– शिक्षा पटल की बैठक– सीनेटहाल ।

२९– (क) वार्षिकोत्सव सम्बन्धी विभिन्न बैठकें– सीनेटहाल
(ख) गुरुदत्त दिवस समारोह– आर्य समाज मन्दिर ।

रामाश्रय मिश्र
जन-सम्पर्क अधिकारी
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

–०–

गुरुकुल कांगड़ी आयुर्वेद कालेज, हरिद्वार

(हाकी टीम १९७५-७६)
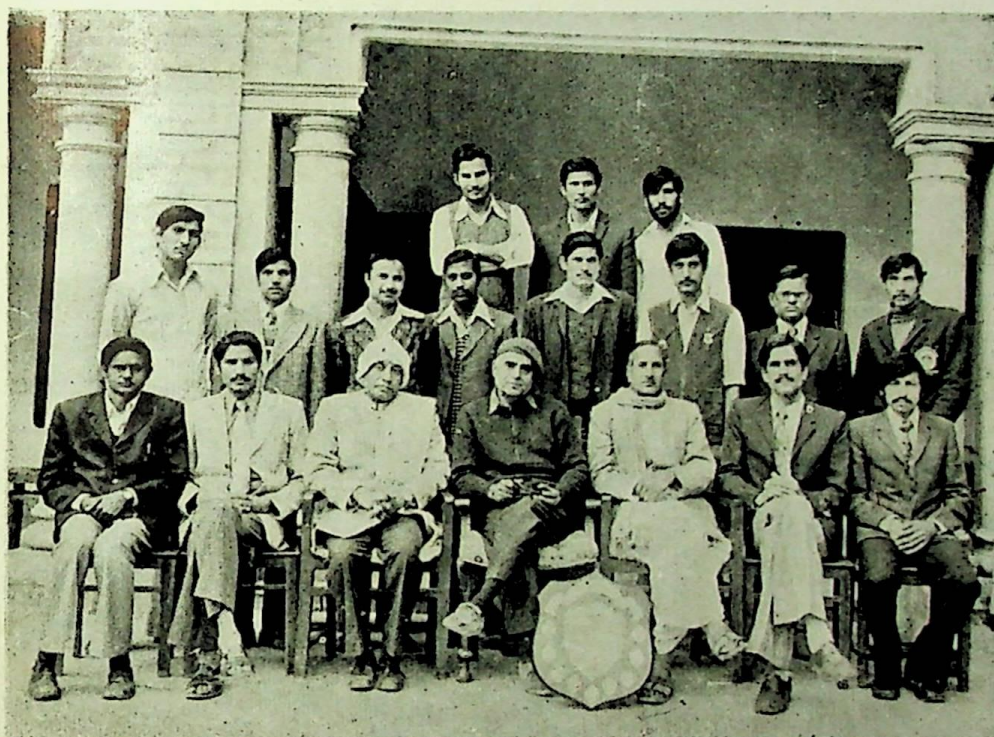
बैठे हुये (बायें से दायें :—डॉ० हरपालसिंह, डॉ० जसवीरसिंह (क्रीड़ाध्यक्ष), डॉ० कान्तिकृष्ण (उपाचार्य एवं चीफ़ वार्डन), श्री वलभद्रकुमार (कुलपति), डॉ० अनन्तानन्द (प्राचार्य), विनोदकुमार (कप्तान), नीरजकुमार ।

प्रथम पंक्ति (बायें से दायें):—श्री सुरेशपाल, राजेन्द्रप्रसाद, ध्रुवसिंह, वीरेन्द्रपाल, कुलदीप राज, धर्मवीर मान, मदन मोहन, नरेन्द्र कुमार ।

द्वितीय पंक्ति (बायें से दायें):—श्री धर्मवीर सिंह, कृष्णपाल, ओमप्रकाश ।

हमारी कुछ स्वर्ण निर्मित व अन्य विशिष्ट औषधियां

★ **बसन्त कुसुमाकर**

मधुमेह तथा शारीरिक निर्बलता के लिए उत्तम ।

★ **बृहद् वात चिन्तामणि**

घबराहट, बेचैनी, कमजोरी में सेवन करें ।

★ **अमृत रसायन**

गर्मियों में सेवनीय उत्कृष्ट शक्तिवर्धक रसायन है ।

★ **आंवला तैल** (विशुद्ध तिल तेल से निर्मित)

बालों को मुलायम व काला रखता है । दिमाग को ताजा व ठण्डा रखता है । शक्ति को बढ़ाता है ।

प्रकाशक : डॉ० गंगाराम कुलसचिव : गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

गुरुकुल-पत्रिका
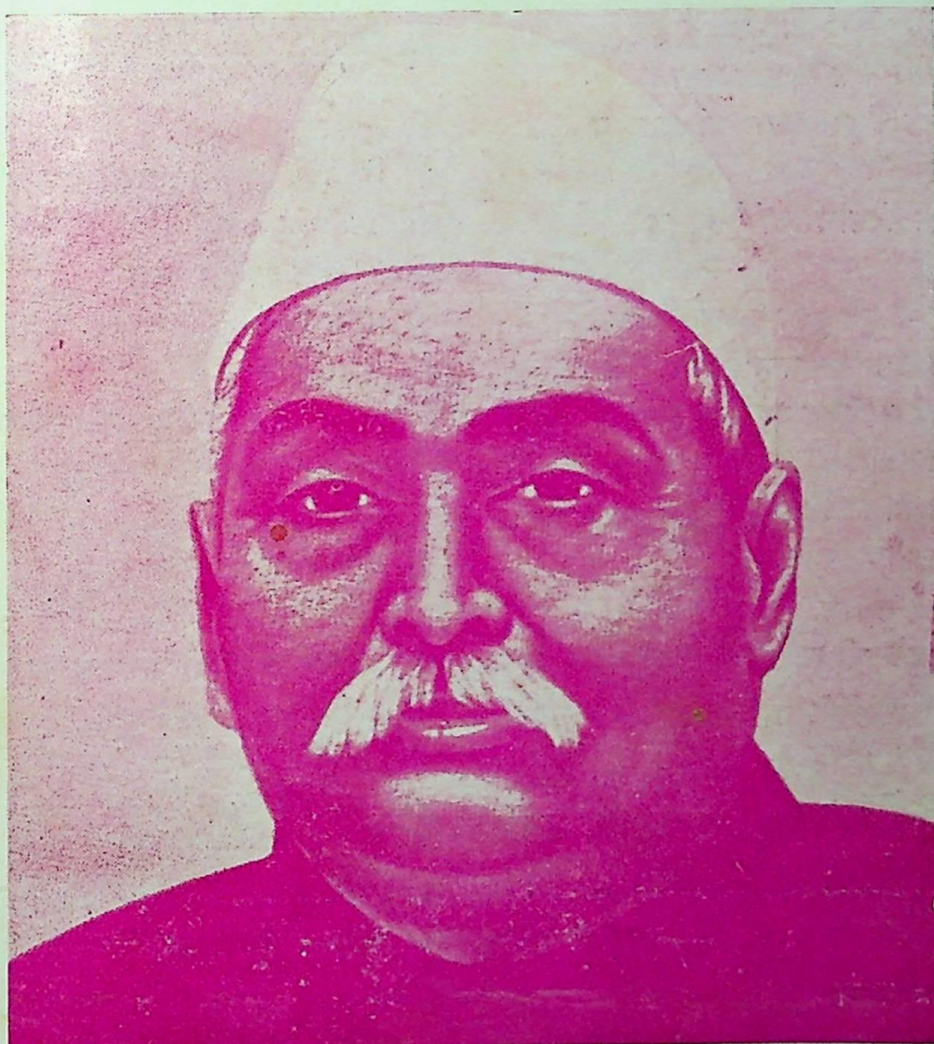
लाजपतराय-अंक

मेरे शरीर पर पड़ी एक-एक लाठी ब्रिटिश राज के लिये कफन का कार्य करेगी —ला० लाजपतराय

जानवरी १९७६

माघ २०३

विषय-सूची

——गुरुकुल पत्रिका का वार्षिक मूल्य——

देश में ८ रुपये   विदेश में १२ रुपये

प्रक

ओ३म्

गुरुकुल-पत्रिका

[गुरुकुलकांगड़ीविश्वविद्यालयस्य मासिक पत्रिका]

माघ : २०३२, जनवरी १९७६, वर्षम्-२८, अङ्कः ३, पूर्णाङ्कः ३२४

ऋ० ९ मं०, ११३ सूक्त.

पवमान सोम

पवमान पवित्र हुआ सोम रस—(भौतिक क्षेत्र)

उपासक के हृदय में पवमान—शान्त प्रवाह रूप में सोमरूप परमात्मा (आध्यात्मिक क्षेत्र)

पर्जन्यवृद्धं महिषं तं सूर्यस्य दुहिता भरत् ।

तं गन्धर्वाः प्रत्यगृभ्णम् तं सोमे रसमादधुरिन्द्राय..........।।३।।

(तं महिषं) उस महान् (पर्जन्यवृद्धं) मेघतुल्य प्रवृद्ध हुए सोम को (सूर्यस्य दुहिता) सूर्य की दुहिता अर्थात् श्रद्धा ने (आभरत्) धारण कर लिया (तं) उस सोम को (गन्धर्वाः प्रत्यगृभ्णन्) गन्धर्वों—इन्द्रियादि अन्तःकरण ने ग्रहण कर लिया (तं रसं सोमे आदधुः) उस सोमरस को सोमरूपी मस्तिष्क में धारण कर दिया ।

१ महिषो महन्नाम । निघ० ३।३

२ श्रद्धा वै सूर्यस्य दुहिता । शत० १२।७।३।११

३ मनो गन्धर्वः । शत० ९।४।१।१२

४ सोमो राजामस्तिष्को० । अथर्व ९।७।२

गां धरति इति गन्धर्वः=इन्द्रिय आदि के केन्द्र (सप्तद्वारावकीर्णां न वाचमनृतां वदेत् ।) मनुस्मृति

श्रीसुभाषचन्द्रः !

विद्याभूषणः श्रीगणेशरामशर्मा डूंगरपुरम् (राजस्थानम्)

श्रीकीर्तिध्वज इव राष्ट्रसंस्कृतेर्यो,
विद्वान् भारतगगनाङ्गणे विरेजे ।
श्रद्धेयो मतिमहतां सतां वरेण्यो,
धन्योऽसौ जयतितमां सुभाषचन्द्रः ॥१॥

यस्यान्तर्हृदि सततं स्वदेशभक्ते-
र्भावैः संचरति स्म राष्ट्रधर्मधारा ।
धीमान् सद्धृतिगुणशालिनां धुरीणो,
भास्वद्भारतकुलनन्दनस्सुभाषः ॥२॥

यो देशोद्धृतिपुरुषार्थसिद्धिसाध्ये,
स्वाधीनां व्यवहरतिस्म राजनीतिम् ।
क्रान्तिं तामिह जनयञ्जनेष्वदम्यां
दुर्द्धर्षो जगति ययोज्ज्वलं दिदीपे ॥३॥

यश्चोग्रैर्भुवि रणताण्डवप्रकाण्डै-
रुत्कर्षैरिह च रराज शूरवीरः ।
शत्रूणां समदमखर्वगर्वभेत्ता
नेता जित्वरबलसक्षमः सुभाषः ॥४॥

या भीष्मे हनुमति रामकृष्णयोर्या
द्रोणे भार्गवमुनिपुङ्गवे च पार्थे ।
विस्फूर्जद्‌वलनयनैपुणी जयश्रीः,
सा वीरात्मनि ददृशे सुभाषचन्द्रे ॥५॥

सर्वस्वार्पणकृतधीस्तृणाय मेने,
यः प्राणानपि च हुतात्मनां शरण्यः ।
प्रेष्ठो भारतजननीकुलप्रदीपो
निष्ठावाञ्जयति महामनाः सुभाषः ॥६॥

यो वैज्ञानिकबलजास्त्रशस्त्रयन्त्रै-
र्विध्वंसं व्रजति समस्तराष्ट्रसङ्घे ।
धीरो भारतविजयस्य वैजयन्तीं
स्फारं प्रास्फुरयदसौ सुभाषचन्द्रः ॥७॥

यः सत्यानृतमयकूटनीतिविद्यां
आनन्दुर्जनदमनीं कुशाग्रबुद्धिः ।
अन्ताराष्ट्रियकितवाधिनायकानां
मायाकौशलमभिनत्सुभाषचन्द्रः ॥८॥

दस्यूनां परिषदि यो हि मातृभूमेः
सम्माने बत विमनायितेऽग्रदर्शी ।
तेजस्वी व्यरचयदेव वामपक्षं,
प्रायाद्दिग्विजयपथे सुभाषचन्द्रः ॥९॥

नष्टायामहह ! हितात्मचेतनायां
निर्भीको भुवि विचचार जागरूकः ।
पर्यन्ते प्रबलतरां चमूं चकल्पे
योद्धा संघटनपटुः सुभाषचन्द्रः ॥१०॥

जीवन् वा सुभटगतिं गतो द्युलोकं
दीर्घायुः स्वयमपरोऽष्टमो महात्मा ।
आकल्पं कविकुलकीर्तनीयकीर्ति-
श्चारित्र्याद्ध्रुवमजरामरः सुभाषः ॥११॥

—०:०—

वैदिक-साहित्य-सौदामिनी

श्री वागीश्वरो विद्यालंकार: साहित्याचार्य:

इह द्वितीयं जीवतीति पदं सर्वै: श्लाघ्यमानो जीवतीति श्लाघनीयताविशिष्टजीवनानुकूल-व्यापारस्वरूपे स्वकीय एव अर्थान्तरे संक्रान्तम्। प्रथमं जीवति' पदं तु 'जीव प्राणधारणे' इति धातो: शतृ प्रत्यये सप्तम्येकवचने रूपम्। इह वैधर्म्यमूलको दृष्टान्ताऽलंकार:। तल्लक्षणम्—दृष्टान्तस्तु सधर्मस्य वस्तुन: प्रतिबिम्बनम्। साहित्य द०, परि०१०, कारि ५०। अत्र विभिन्नयो: उपमानोपमेयवाक्ययो भिन्नावेव धर्मौ बिम्बप्रतिबिम्बभावेन निर्दिष्टौ। न चेयं प्रतिवस्तूपमा तत्र उपमानोपमेयवाक्ययो र्वस्तुत एकोऽपि धर्म: कथितपदत्वदोषपरिजिहीर्षया विभिन्नशब्दैरभिधीयते। इह तु प्राणधारणस्य उदरभरणस्य च नैवम्। नाऽप्यर्थान्तरन्यास: तत्र सामान्यं विशेषेण विशेषो वा सामान्येन समर्थ्यते। न चात्र समर्थनमेकस्याऽन्यरेण किन्तु केवलं बिम्बप्रतिबिम्बभाव एव। बिम्बं शरीरम्, प्रतिबिम्बं दर्पणादौ तस्यच्छाया। तयोर्भाव: बिम्बप्रतिबिम्बत्वम्।

यथा वा मम--

उपकुर्वन्ति येनाऽन्यान् धनिनां तद्धनं धनम्।
निधनं तत्तु नाशाय यत् परस्यात्मनस्तथा॥

इह द्वितीयं धनपदं वित्तरूपे स्वकीये सामान्येऽर्थे पुनरुक्तमतोऽनुपपन्नं सत् सफलधनरूपे स्वकीयविशिष्टार्थे संक्रान्तम्। किंच-यद्धनं धनिन: परेषां वा निधनाय नाशाय तन्न धनं किन्तु निधनं मरणमेवेति "प्रकृतं प्रतिषिध्यान्यस्थापनं स्यादपह्नुति:" इत्युक्त स्वरूपाऽपह्नुति:। सा च मरणहेतोर्मरणेन अभेदप्रतिपादनात् हेत्वलङ्कार:। अभेदेनाऽभिधा हेतोर्हेतु हेतुमता सह॥ सा० द० परि० १०। कारि० तेन अपह्नुतिहेत्वलङ्कारयोरङ्गाङ्गिभाव सङ्कर:॥

अपि च—

स्वच्छन्दा: परितो भ्रमन्तु विपिने सिंहा: कुरङ्गाशना:
पुंसां रक्तपिपासवो जनपदे नाम्नैव सिंहाश्च ये।
कस्माच्चिन्न मनागपि स्पृशति यच्चित्तं कदाचिद् भयं
भो जानीत जना यदस्मि स दयानन्द: परिव्राडहम्॥

इदं पद्यं मम॥

इह श्री दयानन्दे वक्तरि स्वोपस्थित्या वक्तृत्वेनैव च लभ्ये दयानन्दपदं महर्षे निर्भयताविशिष्टे स्वीय एवाऽर्थान्तरे संक्रान्तम्।

तथा--

तद् ब्रूहि वचनं देवि राज्ञो यदभिकांक्षितम्।
करिष्ये प्रतिजाने च रामो द्विर्नाभि भाषते॥

वाल्मीकिरामायणेऽयोध्याकाण्डेऽष्टादशसर्गे ३० श: श्लोक:॥

अत्रापि श्री रामे स्वोपस्थित्यैव वक्तृत्वेन च लभ्ये पुना राम इति पदमनुपयुक्तं सत् तस्य पितृभक्तिसत्यप्रतिज्ञत्वदु:साध्यतमकार्यसाधकत्वादिगुणविशिष्टे स्वकीय एवाऽर्थान्तरे संक्रान्तम्। श्री काव्यप्रकाशकारास्तु--

यस्य मित्राणि मित्राणि, शत्रव: शत्रवस्तथा।
अनुकम्प्योऽनुकम्प्यश्च स जात: स च जीवति॥

का० प्र० उल्ला० ४।

पद्यमिदमर्थान्तरसंक्रान्तध्वनेः पदगतत्वेनोदाजहार । तथाहि—"अत्र द्वितीयमित्रादि शब्दाः पुनरुक्तत्वादनुपयुक्ता अतएव अविवक्षितवाच्याः सन्तः आश्वस्तत्व-नियन्त्रणीयत्व-स्नेहपात्रत्वे संक्रमित वाच्याः । . . . तेन नायकस्योचितव्यवहारित्वादिकं व्यङ्ग्यम् उपादानलक्षणायाः फलमिति ।" तदुक्तमुद्योते–अत्रार्थान्तर-संक्रमित वाच्यैर्मित्रादिशब्दैराश्वस्तत्वादेर्याविज्जीवस्थायित्व-रूपतदतिशयव्यञ्जनद्वारा नायकदृढ़प्रकृतिकत्वं व्यङ्ग्यम् । अत्र त्रयाणामपि (उप) वाक्यार्थानां (यस्य मित्राणि विश्वसनीयानि सन्ति, यस्य शत्रवो दमनार्हाः यस्य अनुकम्प्याः कृपार्हाश्चेति) रूपाणाम्, प्रत्येकविश्रान्तत्वेन नैकवाक्यता 'त्वामस्मि वच्मि विदुषाम्" इत्यत्रवत् । तेन तत्तद्वाक्यगतस्य एकैकपदस्यैव (मित्राणीत्यादिकस्य) व्यंजकता नतु समग्रस्य वाक्यस्येति पदप्रकाश्योऽयं ध्वनिः । उक्तं च विवरणे–अत्र हि मित्रादि प्रत्येकमेव पदं लक्षकं सत् नायकस्योचितव्यवहारित्वादिकं प्रकाशयतीति यथोक्तोदाहरणत्वमिति । त्वामस्मि वच्मीत्यादौ तु व्यङ्ग्यार्थस्योपस्थितिः एक वाक्यस्थैः सर्वैरेव पदैरिति ध्वने र्वाक्य प्रकाश्यत्वमिति ।"

अस्माकं मते तु–यस्य शत्रवः शत्रव एव न तु मित्रत्वशत्रुत्वयोर्मध्ये कस्मिंश्चिदनिश्चितेऽन्तरालेऽवलम्बमानाः कदाचित् मित्रत्वाभिलाषका अपि क्षणादूर्ध्वं प्रत्यक्ष प्रतिपक्षाः । इत्यनिर्दिष्टस्वरूपाः। यथाऽस्माकं प्रतिवेशिनः पाकिस्ताननेतारः । परत्र भारतीयनेतारोऽपि कदाचित् - पाकिस्तानस्य निर्माणमेव परस्परघृणां विद्वेषमविश्वासं चाधारीकृत्यैव अजायत इत्युद्घोषयन्तोऽपि शान्तिसद्भावमृगतृष्णाऽऽकुलाः कदाचिच्छिमलायोजनाम् अन्येद्युरिन्द्रप्रस्थवार्तामिस्लामाबादसम्मेलनादिकं योजयन्तः क्षणे प्रसीदन्तः क्षणे विषीदन्तः स्वराजनीतिपाटवं प्रकटयन्ति । अत एवोच्यते––

ध्वस्तं कीटपतङ्गवद्रिपुबलं, शेषं च बन्दीकृतम् ।
पञ्चक्रोश सहस्र सम्मित महीभागो बलान्निर्जितः
टैङ्का जङ्गमदुर्गदुर्गमदृढा नीता क्षयं लीलया
शान्त्याशा मृगतृष्णया युधि जितं वार्तासु भूयोऽर्पितम्
।। इदं पद्यं मम ।

भगवद्गीतामधीतवतोऽप्यस्मान् स एवार्जुनविषादयोगो नाद्यापि मुञ्चतीति चित्रम् । अयं पदगतोऽर्थान्तरसंक्रान्तो ध्वनिर्वेदेऽपि––

अहमिन्द्रो न पराजिग्य इद्धनं
न मृत्यवेऽवतस्थे कदाचन ।
सोममिन्मा सुन्वन्तो याचता वसु,
न मे पूरवः सख्ये रिषाथन ।।
ऋ. १०।४८।५।।

देवता-इन्द्रः । ऋषिः-वैकुण्ठः । छन्दः-जगती । अहमिन्द्र इति–इह वक्तरि इन्द्रे स्वोपस्थित्यैव लभ्ये पुनरपि अहमिन्द्र इति पदं तस्याऽलोकसामान्यमैश्वर्यम् तेजस्वित्वम् आत्मविश्वासादिकं च लक्षयति, तस्मिन्नेतेषां गुणानामतिशयप्रकाशनं च फलम् । "इन्द्रः-इरां दृणातीति वा, इरां ददातीति-वा, . . . इन्धे भूतानीति वा । तद्यदेनं प्राणैः समैन्धँस्तदिन्द्रस्येन्द्रत्वमिति विज्ञायते । . . . इन्दते वैश्वर्यकर्मणः । इन्दन् छत्रूणां दारयिता या द्रावयिता वा ।आदरयिता च यज्वनाम् । इति (निरुक्ते-अ० १०।पा०१।) श्रीयास्कः । "इरा भूवावसुराऽम्बुषु ।" इति मेदिनी । इन्द्रः आत्मा (पुरुषः) आत्माऽहमस्मीति तत्त्ववित् । अथवा इन्द्रः नृपः । इन्द्रः परमात्मा वा । "इन्द्रः शक्रेऽन्तरात्मनि । आदित्ये योगभेदे चेति" श्री हेमचन्द्रा अनेकार्थसंग्रहे । 'इन्द्रियमिन्द्रलिङ्गमिन्द्रदृष्टमिन्द्रजुष्टमिन्द्रदत्तमिति वा ।" (पाणि. ५।२।६३) । 'इन्द्र आत्मा तस्य लिङ्गमिन्द्रियम् । करणेन कर्तुरनुमानात्," इति तत्सूत्रव्याख्यायां सिद्धान्त-

कौमुद्यां दीक्षिताः । यतोऽहमिन्द्रः, अतः कस्माचिन्न पराजिग्ये पराजयमनुभवामि । मम इद्धनम् सर्वमैश्वर्यं ममैव । इत् पदमेवार्थे निपातः । अहं कदाचन मृत्यवे नावतस्थे मृत्योर्ग्रासो न भवामि । सुशासकः आत्मज्ञानी वा मरणस्य शरीरधर्मत्वात् कदाचित्प्रकृतिभावमापन्नोऽपि यश.शरीरेण जीवत्येव । सोमं सुन्वन्तः यूयं मामेव वसु याचत । इह सोमसवनं सर्वेषां लोकाभ्युदयिकसत्कर्मणामुपलक्षकम् । पूरवो मानुषा इति निघण्टौ मनुष्यनामसु पठितम् । मम सख्ये वर्तमाना यूयं न रिषाथन न विनङ्क्ष्यथ । रिष हिंसायामिति धातोर्लोटि तप्त नप्तनथनाश्च (पाणि·७।१।४५) इति सूत्रेण तस्य स्थाने थनादेश रूपम् । इह एकमेव इन्द्र पदं तत्तद्गुणातिशयविशिष्टव्यक्तिरूपे स्वीय एवार्थान्तरे संक्रान्तम् । किंच-यतोऽह 'मिन्द्रः' इत्येकस्य पदस्यैवाऽर्थेन शेषमन्त्रस्थानां- न पराजिग्ये, न मृत्यवेऽवतस्थे, मम सख्ये न रिषाथनेति वाक्यानां सोपपत्तिकीकरणात् काव्यलिङ्गमलङ्कारः । इन्द्रव्यतिरिक्तस्य यस्य कस्यचिन्मानवस्य पराजयाऽभावादिकमनुपपन्नम् । हेतोर्वाक्यपदार्थत्वे काव्यलिंगमुदीरितम् । सा·द., परि० १०।कारि.।

अथ स एव लक्षणामूलकोऽर्थान्तरसंक्रान्तो ध्वनि र्वाक्यगतः——

क्रियाकारकरूपाणां बहूनां तु तदुद्भवे
निमित्तत्वं पदानां चेद् ध्वनिर्वाक्यगतो मतः ।।
चूड़ामणिः शिरस्येव कर्णयोरेव कुण्डले
शोभते हृदये हारो मध्ये काञ्ची च कांञ्चनी ।।
प्रकृतिप्रत्यया एवमुपसर्गा व्यवस्थिताः
पदांशाश्च निपाताश्च ध्वनन्ति विविधान् ध्वनीन् ।।

यथा काव्यप्रकाशे–

त्वामस्मि वच्मि विदुषां समावायोऽत्र तिष्ठति ।
आत्मीयां मतिमास्थाय स्थितिमत्र विधेहि तत् ।।
चतुर्थोल्लासे ।

अत्र संबोध्यस्य पुत्रस्य शिष्यादेर्वा स्वोपस्थित्यैव लभ्यत्वे त्वामिति वचनं तस्योपदेश्यत्वे अस्मि (अहम्) इति पदं-तवाऽहमत्यन्तहिताभिलाषीतिरूपे वच्मीति क्रियापदमुपदिशामीति रूपे, विदुषां समवाय इति पदयुगलं तेषामुपदेशस्तव नितरां हितकरइतिरूपे आत्मीयां मतिमास्थायेति पदकदम्बकं नितरां सावधानो भूत्वेति रूपे स्वकीय एवाऽर्थान्तरे संक्रान्तम् । अस्मीति पदम् अहमित्यर्थको तिङन्तप्रतिरूपको निपातः ।

यथा वा——

रे श्रद्धाजड जीव जीव, वचनं पथ्यं मदीयं श्रृणु
जीवन्तं मनुजं क्वचिद् घटयितु देवं मतिं मा कृथाः ।
तुच्छा ते क्षमता, मतिः परिमिता, तादृक् प्रयत्ने कृते
देवो नैव स दानवो हि भविता त्वामेव योऽन्तेऽत्स्यति।
पद्यमिदं मम ।

रे श्रद्धाजड जीव–रे श्रद्धान्धविवेकविकल प्राणिन् जीव सुखी सन् चिरं जीव । पथ्यं तवैव हितकरं मदीय मिदं वचनं मनोयोगपूर्वकमाकर्णय अवधारय च । किं तद्वचनम् ? जीवन्तं मनुजं मानवं क्वचित् देवं परमेश्वरं परमेश्वरवत् सर्वाधिकारसंपन्नं निरङ्कुशं घटयितुं मतिं कुमतिं मा कृथाः । यतः स्वल्पा ते क्षमता मतिश्चाति दभ्रा । त्वया तादृक् प्रयत्ने कृते यो भविता उत्पत्स्यते स देवः परमात्मा देवोचितसद्गुणगणान्वित. सद्गुरुः सुशासको वा न, प्रत्युत दानवो राक्षसप्रकृतिको निरंकुशो नृशंस एव भविता । यश्चान्ते स्वनिर्मातारम् स्वानुयायिनं जनप्रजाजनं वा अत्स्यति भक्षयिष्यति नितराँ पीडयिष्यति । श्रीरामकृष्णादयो महापुरुषास्तेषां परलोकगमनानन्तरं तत्कृतानुपकारान् स्मरद्भिस्तान् प्रति स्व कृतज्ञतां प्रकाशयितुं ते देव पदे परमात्मावतारपदे वा प्रतिष्ठापिताः ये पुनर्हिटलरादयो जीवन्त एव संविधानादुपरि पदं लम्भिता स्तैः कनिष्ठिकाग्रहणे प्रकोष्ठग्रहण-

न्यायात्पर्यन्ते प्रजानां सर्वाधिकारानात्मसात्कृत्य अत्याचाराणां पदकाण्डताण्डवं व्यधायि तत्स्मारं स्मारमद्यापि हृदयं कम्पते। पद्येऽस्मिन् जीव, शृणु, देव, दानवादयोऽनेके शब्दाः स्वकीय एवाऽर्थान्तरे संक्रान्ता इत्यतिस्फुटतया प्रतिपदयोजनां नापेक्षन्ते।

किञ्च देवं निर्मातुं प्रवृत्तस्य पुंसः प्रयत्नवैकल्यस्य अनर्थोत्पत्तेश्च वर्णनात् विषयाऽलङ्कारः। गुणौ क्रिये वा चेत् स्यातां विरुद्धे हेतुकार्ययोः यद्वाऽऽरब्धस्य वैकल्यमनर्थस्य च संभवः। विरूपयोः संघटना वा च तद्विषयं मतम्॥ इति तल्लक्षणात्। मानवो यदि सम्मानवोचितगुणसंपन्नं मानवं जनयति सैव तस्य महत्युपलब्धिः। अतस्तेन देवस्य अतिमानवस्य वा जननाय प्रयत्नो न विधेय इति वस्तुध्वनिः।

यथा वा--

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्तात्च्छुक्रमुच्चरत्।
पश्येम शरदः शतम्, जीवेम शरदः शतम्,।
शृणुयाम शरदः शतम् प्रब्रवाम शरदः शतम्
अदीनाः स्याम शरदः शतम् भूयश्च शरदः शतात्॥

यजु० अध्या. ३६।मं० २४।

देवता—सूर्यः। ऋषिः दध्यङ्ङाथर्वणः। छन्दः-भुरिग् ब्राह्मी त्रिष्टुप्।

तच्चक्षु रिति—मन्त्रस्याऽस्य ब्रह्मयज्ञे सन्ध्योपासनकर्मणि विनियोगाद् उपासको नैत्यिकस्नानादिविधेरनन्तरं पूर्वाभिमुखस्तिष्ठन् उद्गच्छन्तं सूर्यं दृष्ट्वा तमपि भगवतो विभूतेरंशं मन्यमानः स्तौति-तत् पुरोवर्ति आदित्यात्मकं लोकचक्षुः पुरस्तात् उच्चरत् उच्चरति उदेति। "इतश्च लोपः परस्मैपदेषु" (पाणि०३।४।९) इति सूत्रेण इकारलोपः। कीदृशं तत्? देवहितम् देवेभ्यो हितकरम्। इन्द्रियेभ्यः प्राणेभ्यश्च बलप्रदम्। "देवो मेघे सुरे राज्ञि स्यान्नपुंसकमिन्द्रिये।" इति मेदिनी। शुक्रं शुक्लम्। अस्य प्रसादात् संजातनवजीवनसंचाराः समासादितनूतनशक्तयो वयं शरदः शतम् शतवर्षपर्यन्तम्। कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे (पाणि. २।३-५) इति द्वितीया। पश्येम अप्रतिहतदृष्टिशक्तयः सम्यक् पश्येम। अक्षतश्रवणशक्तयः शृणुयाम। सम्पूर्णं पुरुषायुषं सुखेन जीवेम। अस्खलितवाचो वदेम। शरदः शतमदीनाः सर्वकार्येषु स्वयं समर्थाः, न पराश्रिताः स्याम। न केवलं वर्षशतम् यावत् किन्तु तत्परतो पश्येम जीवेमेत्यादि। अत्र विषयं सूर्यं निगीर्य तत्र विषयिणो नेत्रस्याऽभेदतादात्म्यारोपात् अतिशयोक्तिः। अथवा तदिति पदेन पुरोवर्ति सूर्यमण्डलं विषयं निर्दिश्य तत्र नेत्रत्वारोपात् रूपकम्। किंच— जीवेम पश्येमेत्यादीनि सर्वाणि क्रियापदानि अप्रतिहतशक्तयो वयम् पश्येम, ससुखं जीवेम, सम्यक् शृणुयामेत्यादि स्वविशिष्टार्थे संक्रान्तानीति अर्थान्तरसंक्रान्तो ध्वनिर्वाक्यगतः। परत्र अध्यात्मपक्षे निरन्तराऽभ्यासवशात् भगवत्कृपया च साधकः क्रमेणेषदीषत्समुन्मिषदान्तरज्योतिःप्रकाशो हृदयाऽऽकाशे प्रादुर्भवन्तीं प्रभोः प्रभामनुभवन् तत्रैकतानो भवति वदति च अयं लोक चक्षु रध्यात्मभानुरुदेति यो मदन्तर्निहित देवानां दिव्यशक्तीनां परमहितः। अस्य कृपया वयं निरन्तरमूर्ध्वां गतिं कुर्वाणा दिव्यप्रकाशमध्यात्मदृशा सदा पश्येम। किं च सायं समये निम्लोचत्यादित्ये वाह्य सूर्यपरकस्य उच्चरतीति पदस्य मुख्यार्थबाधः। तदा सन्ध्योपासनप्रवृत्तः साधारणउपासकः कल्पनोपनीतं सूर्यं पश्यन् उच्चरतीति वदति। अध्यात्मज्योतिः साक्षात्कुर्वतस्तु साधकस्य कृते तु ज्ञानसूर्यः सर्वदोदेतीति न मुख्यार्थबाधः।

यथा वा--

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।
एवं त्वयि नाऽन्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥

यजु० अ० ४०।मं० २॥

देवता–आत्मा । ऋषिः-दीर्घतमाः । छन्दः-भूरिगनुष्टुप् ।

कुर्वन्नेवेति– मा गृधः कस्य स्विद्धनम् इति प्रथममन्त्रप्रसङ्गसङ्गतो भगवानुपदिशति–धनादीनामेषणात्यागः समुचितो न हि शास्त्रविहित-सत्कर्मणामपीति । फलेच्छात्यागपूर्वकं कर्तव्यधिया वेदोक्तानि सत्कर्माणि कुर्वन्नेव समाचरन्नेव नरो वर्षशतं जिजीविषेत् जीवितुमिच्छेत् । न तु मरणं कामयेत । एवमाचरत्येव हे नर त्वयि कृतमपि कर्म न लिप्यते, न वज्रलेपायते । बन्धनहेतुर्न भवतीति । इतोऽन्यथा एतद्विपरीतमाचरतः पुंसः कृते कश्चिदन्य उपायो नास्ति येन सः कर्मणा न लिप्येत बन्धनमुक्तश्च स्यात् । इह कर्मपदं फलेच्छात्याग-पूर्वकं कृते विहितसत्कर्मरूपे स्वविशिष्टार्थे संक्रान्तम् कुर्वन्निति पदं सम्यक् समाचरन्निति रूपे । किंच लेपन कर्म मूर्त्ते द्रव्ये कुड्यादौ मूर्तस्यैव द्रव्यस्य वज्रलेपादेः संभवति, न त्वमूर्ते आत्मनि अमूर्तस्य कर्मणः । तेन 'लिप्यते' इति पदं लोकप्रसिद्ध-लेपनरूपमर्थं सर्वथा परित्यज्य सुदृढ बन्धनव्यापार-रूपे अर्थान्तरे परिणतम् इति लक्षणलक्षणा । जन्म-मरणादि बन्धनहेतुर्न भवतीति वस्तु व्यज्यते । एव-मिह कर्माणि कुर्वन्नेवेति द्वयोः पदयोः स्वकीय एव विशेषार्थे संक्रमणात्, अर्थान्तरसंक्रान्ताख्यो ध्वनि-भेदः । लिप्यते इत्यत्र स्वार्थस्य, अत्यन्त तिरस्कारात् उभयोः परस्परनिरपेक्षतयाऽवस्थितेश्च तयोर्द्वयोः संसृष्टिरपि ।

अपि च—

ज्यायस्वन्तश्चित्तिनो मा वियौष्ट,
संराधयन्तः सधुराश्चरन्तः ।
अन्योअन्यस्मै वल्गु वदन्त एत
सध्रीचीनान् वः संमनसस्कृणोमि ॥

अथर्व० का· ३। सूक्त ३०।मं०५।

ज्यायस्वन्त इति–कश्चित्कुलवृद्धः स्वपरिवार-जनान् उपदिशति- हे वत्साः अस्माकं परिवारस्य सर्वे सदस्याः पुरुषायुषजीविनो भूयासुः येन यूयं ज्यायस्वन्तः प्रकृष्टकुलवृद्धवन्तः पूजनीयान् पूज-यन्तः । चित्तिनः युक्ताऽयुक्तविवेचनचतुराः सम्यक् चिन्तनपराः । संराधयन्तः सहोद्योगेन कार्याणि साधयन्तः । सधुराश्चरन्तः समानकार्य-भाराः "धूर्यानमुख-भारयोः" इति हेमचन्द्रा-चार्याः । तथा-"धूः स्त्री क्लीबे यानमुखम् ।" इत्यमरः । अथवा एकधुरि नियुक्ता अश्वाइव समानगतयो नतु परस्परविपरीतप्रयत्ना इत्यर्थः । अन्योन्यस्मै वल्गु वदन्तः परस्परं मधुरमालपन्तः एत दिवसावसाने समवेता भवत । मां प्रत्या-गच्छत वा । अनेन विधिना व्यवहरतो युष्मान् अहं सध्रीचीनान् समानगतिकान् समानपूजितपूजितव्यान् संमनसः समानभावनावतश्च कृणोमि करोमि । सह पूर्वस्य अञ्चतेः,"सहस्य सध्रिः" (पाणि·६।३।६५) इति सूत्रेण सहेत्यस्य सध्रिरित्यादेशे कृते खप्रत्यये रूपम् । ज्यायस्वन्तः-"वृद्धस्य च" पाणि·५।३।६२) इति सूत्रेण वृद्धपदस्य ज्यादेशे, ततश्च द्विवचन-विभज्योपपदे तरवीयसुनौ (पाणि· ५।३।५७) इति सूत्रेण ईयसुनि प्रत्यये कृते ततश्च मतुप्प्रत्यये मकारस्य च "मादुपधाया०" ८।२-९ इत्यादिना वकारादेशे रूपम् । यस्मिन् कुले परिवारे वा तस्य वृद्धजनानां समुचितः सत्कारः पूजा च विधीयते, यत्र च तादृशाः प्रशस्ताः स्थविराः सर्वसदस्येषु समानवृत्तयो नवयुवकानां सम्यक् पथप्रदर्शनं समा-चरन्ति तत्र सर्वाः सुखसंपत्तयो नवनवाभ्युदयाश्च चिरपरिभ्रमणश्रान्ता अतएव स्थायिनिवासाभि-लाषुका इव स्वयं समवेता भवन्ति । तस्माच्छ्रे-यस्कामै र्मतिमद्भिः स्वकुलवृद्धानां सेवायै सर्वदा तत्परैर्भाव्यमिति वस्तु ध्वनिः । मन्त्रेऽस्मिन् ज्याय-स्वन्तः, चित्तिनः, मा वियौष्ट, संराधयन्तः, सधुरा-

श्चरन्तः, अन्योऽन्यस्मै वल्गुवदन्तः, सध्रीचीनान्, संमनसः इत्यनेकपदानि क्रमेण प्रशस्तवृद्धवन्तः, निरतिशयचारुचिन्तनचतुराः, कदाचिद् विद्वेषादिना विच्छिन्ना न भवत, संभूय कार्याणि साधयन्तः, उदूढसमानकर्तव्यभाराः, नितरां मधुरमालपन्तः, कदाचित् सत्यपि वैमत्ये कटुत्वं दूरतः परिहरन्तः, समानगतिकान्, समानहृदयभावान्-इति स्वकीयमेव अर्थान्तरं लक्षयन्ति । तदतिशयप्रकाशनं च फलम् । इति वाक्यगतोऽर्थान्तरसंक्रान्तवाच्यो ध्वनिः । सधुराश्चरन्त इत्यनयोः पदयोः समानायामेकस्यां धुरि रथादेरग्रभागे नियुक्ताः इति सधुरा अश्वा इति योजनायां लुप्तोपमाना उपमाऽत्र संभवति । अस्मिन् प्रसङ्गे रथस्य धूरूपो वाच्यार्थो वाधितः भोजनावसरे सैन्धवमानयेत्युक्ते हयाऽऽनयनवत् । धूः पदसान्निध्यादिह अश्वाध्याहार उपमानार्थमुपयुक्त एव ।

अथ लक्षणामूलध्वनेः द्वितीयो भेदोऽत्यन्ततिरस्कृतवाच्यार्थः पदगतो वाक्यगतश्च

अस्य लक्षणं ४४, ४५तमकारिकयोः प्राक् प्रदर्शितम्--तयोः, पदगतस्योदाहरणानि, यथा–

रविसंक्रान्तसौभाग्यस्तुषारावृतमण्डलः
निःश्वासान्ध इवादर्शश्चन्द्रमा न प्रकाशते ।।

वाल्मी· रामा· किष्कि० काण्डे।

अत्र अन्धपदं नष्टदृष्टिरूपं स्वमुख्यमर्थं नितरां तिरस्कृत्य प्रकाशरहितरूपमर्थं लक्षयति । अप्रकाशातिशयद्योतनं च फलम् ।

यथा--

ऋजीते परिवृङ्धि नोऽश्मा भवतु न स्तनूः
सोमो अधि ब्रवीतु नोऽदितिः शर्म यच्छतु ।।

ऋ० ६।७५।१२। यजु० अ· २९।मं. ४९।

ऋजीते परीति–ऋजुः सरला ईतिर्गमनं यस्या स्तथाविध हे इषो शर त्वं शत्रुणा अस्मान् अभिलक्ष्य क्षिप्ताऽपि नः परिवृङ्धि वर्जय । वेद इषुपदं प्रायः स्त्रीलिङ्गकम् । अस्माकं तनूर्देहः अश्मा भवतु पाषाणवद् दृढा भवतु । सोमः ओषधीनां राजा सुयोग्यश्चिकित्सको नः अधिब्रवीतु चिकित्साऽवसरे सम्यग् उपदिशतु चिकित्सतु च । अदिति रदीना देवमाता सुजनरक्षिका परमात्मशक्तिः नः शर्म यच्छतु । ऋजीते-ऋजुः ईतिर्गमनं यस्याः इत्यत्र टिलोपश्छान्दसः अत्र अश्मपदस्य वाच्यार्थः पाषाणरूपोऽत्यन्ततिरस्कृतः । गौण्या लक्षणलक्षणया पाषाणवद्दृढा भवत्विति रूपमर्थं लक्षयति । गौरयम् (वाहीकः) इतिवत् दृढत्वातिशयद्योतनं फलम् ।।

यथा वा–

यो नः स्वो अरणो यश्च निष्ठ्यो जिघांसति ।
देवास्तं सर्वे धूर्वन्तु ब्रह्म वर्म ममान्तरम् ।।

ऋ. ६।७५।१९।।

सामवेदे (१८७२) "शर्म वर्म ममान्तरम् ।" इत्यधिकः पाठः ।

देवता–देवा ब्रह्म च । ऋषिः–पायुर्भारद्वाजः । छन्दः अनुष्टुप् ।

यो नः स्व इति–योनः स्वजनः, यो वा अरणः-अपार्णः अपगताऽन्नजलादिसम्बधः शत्रुरित्यर्थः। अर्ण पदम् उदक नामसु पठितं निघण्टौ (१।१२) यो निष्ठ्यो नीचवृत्तिः, निम्नं स्थानमर्हतीति वा। योऽस्मान् जिघांसति हन्तुमिच्छति तं सर्वे देवा देवोचितगुणगणान्विताः सत्पुरुषा धूर्वन्तु नाशयन्तु। सत्पुरुषैः सत्पुरुषाणां सहायकैर्दुर्जनानां संहारकैश्च भवितव्यमेव । प्रभुभक्तोऽहं तेभ्यो दुर्जनेभ्यो न बिभेमि । कुतः ? यतो ब्रह्म ब्राह्मतेजः स्वयं ब्रह्मैव वा मम आन्तरं वर्म मम आन्तरं अन्तर्भवं वर्म कवचभूतमस्ति । रक्षकमस्ति । इह वर्म पदं

आर्यकवीन्द्रमेधाव्रताचार्यस्य हेमन्ततौंशिचत्रणम्

प्रस्तुतकर्त्ता--योगेन्द्र: पुरुषार्थी, वानप्रस्थाश्रम, ज्वालापुर

नानाविपक्व नवधान्यविचित्रितान्तां
कर्वन् धरां तुहिनयन् सरितां जलानि ।
नीहारपुञ्जमलिनाम्बर वेषधारी
हेमन्त एष पुरत: प्रतिहारक: किम् ।।१।

विविधप्रकार के नवीन नवीन अन्नों से विचित्रित एवं सुशोभित बनाता हुआ, नदियों के जलों को बर्फ बनाता हुआ, कुहरे के समूह से मलिन आकाश रूपी परिवेष धारण करने वाला मानों ऐन्द्रजालिक के समान यह सामने हेमन्त ऋतु खड़ा है ।।१।।

जातोऽम्बरेऽम्बरमणी रजनीन्द्रतुल्यो
वारीणि सान्द्रहिमजालशिलातलानि ।
प्राणोऽपि जीवहरण: पवनोन्वयं य—
न्मायाप्रपञ्चनवनाटकसूत्रधार: ।।२।।

इस हेमन्त ऋतु के प्रभाव से आकाश में प्रचण्ड तपने वाला सूर्य चन्द्रमा जैसा हो गया है अर्थात् प्रचण्डता का प्रभाव कम हो गया है। पानी जमकर कठोर हिमशिलाओं में परिवर्तित हो गया है । प्राणशक्ति देने वाला यह वायु जीवहरण करने वाला होगया है, निश्चय ही यह हेमन्त मायाप्रपञ्च अर्थात् प्रकृति की विस्तृत विविधकृतियों रूपी नवीन नाटक का सूत्रधार बन गया है ।।२।।

अम्भोजिनीह मिहिकाहतदेहदीना
जाता भुजङ्गमगणा मदवारिहीना: ।
प्रालेयशीतलजले विकला हि मीना
वह्नयेकमात्रशरणा वत दीनदीना: ।।३।।

इस ऋतु में हिमपात से पीड़ित बेचारी कमलिनी शरीर से जर्जरित हो गई है अर्थात् पत्रविहीन डण्ठलमात्र शेष रह गया है, विषैला सर्पसमूह विषहीन हो गया है, तुषार के कारण शीतल जल में मछलियां व्याकुल प्रतीत होती हैं । दु:ख है कि ऐसे संकट कालीन समय में गरीबों के लिये एक मात्र शरण अग्नि ही है ।।३।।

तुषारजालान्तरितोग्रभासं
भास्वन्तमेतं परिकल्प्य चन्द्रम् ।
सा पद्मिनीयं विरहेण धत्ते
नालावशेषां ध्रुवमङ्गयष्टिम् ।।४।।

हिमकणों के सघनजाल में छिपे हुए उग्रज्योतिवाले इस सूर्य को चन्द्रमा समझकर-सचमुच यह कमलिनी, सूर्य के वियोग के कारण डण्ठलमात्र शेष-दण्डतुल्य शरीर धारण कर रही है ।।४।।

कलितमधुरगीतिर्दन्ततन्त्री जनाना
मविरतहिमपीड़ाबद्ध कम्पाङ्गकानाम् ।
दहनतपनवर्जं नास्ति कोप्याश्रयो व–
स्तदिति भजत तौ सा संब्रवीति प्रभाते ।।५

निरन्तर शीत के प्रकोप से जकड़े तथा कम्पित शरीर वाले मनुष्यों की मधुर स्वरवाली दन्तावली रूपी वीणा मानों प्रात:कालमें कह रही है—मनुष्यों ! अग्नि और सूर्य के बिना तुम्हारा और कोई शरण दाता नहीं है अत: उन्हीं का सेवन करो ।।५।।

हिमवर्षविशेषशीतला
मृदुला अप्यमृदुप्रपातिन: ।
रुचिरा अपि चन्द्रभानवो
न रुचिं ते जनयन्ति साम्प्रतम् ।।६।।

हिमवर्षण से अत्यन्तशीतल ये चन्द्रकिरणें कोमल होती हुई भी चुभने वाली तथा रुचिकर होती हुई भी अब रुचिकर प्रतीत नहीं होती ।।६।।

सुतुषारतुषारवर्षुका
रजनीवल्लभमण्डिता निशाः ।
सुखदा अपि सौख्यदा न ता
निखिलप्राणिजनाय हाधुना ॥७॥

निरन्तर तुषारवर्षाने वाली, चन्द्रमा से सुशोभित, सुखकारिणी रात्रियां भी हा! अब प्राणीमात्र के लिये सुखदायिनी नहीं प्रतीत होती ॥७॥

पतदच्छतुषार-विप्रुषां
कुलकैर्मौक्तिकजालकैरिव ।
विहितं गजमस्तकं ध्रुवं
हिमकालेन विभूषितं सता ॥८॥

हेमन्त ऋतु ने गिरती हुई तुषार की बिन्दुओं को ऐसे सजा दिया है मानों उत्तम शिल्पियों के द्वारा मोतियों की मालाओं से हाथियों के ललाट को सजा दिया है ॥८॥

विहगा जलचारिणो जलं
न विगाहन्त इदं सुकेलयः ।
न विशन्ति वरूथिनीं यथा
समराकौशलधारिणो नरः ॥९॥

जलचारी पक्षी क्रीडाप्रिय होते हुए भी उसी प्रकार जल का विलोडन नहीं करते जैसे-युद्धकला अनभिज्ञ मनुष्य सेना में प्रवेश नहीं करता । ९॥

कान्तारे मृदुशाद्वलाञ्चिततले कान्ता कुरङ्गाङ्गनाः
प्रालेयाकुलिताङ्गकैः स्वपृथुकैः सुस्तन्यसंपायिभिः ।
संसेव्यातपमङ्गपीडनहरं मध्यान्हकालेऽप्यहो
ता अत्यन्तबुभुक्षिता अपि सुखं नात्तुं क्षमन्ते तृणम् ॥१०

कोमल हरी घासों से अलङ्कृत जंगल में मनोहारिणी हरिणियां, शीत से जकड़े हुए अंङ्गों वाले स्तन्यपायी (दुधमुहें) बच्चों के साथ शरीर के कष्ट को दूर करने वाली धूप का सेवन कर, ओह ! मध्यान्ह में भी भूख से पीड़ित होते हुए भी सुख पूर्वक घास नहीं खा सकतीं ॥१०॥

सारङ्गडिम्भो हिमपीडिताङ्गः
स्तन्यं जनन्या इह पातुकामः ।
दृढं मिथस्सम्पुटिताच्छदन्तं
व्यादातुमास्यं प्रभुरेव नासौ ॥११॥

हेमन्त ऋतु में जाड़े से पीड़ित यह हरिणी का बच्चा माता का दूध पीने को चाहता हुआ भी कठोरता से आपस में जुड़े हुए दांतों वाले मुख को खोलने में भी समर्थ नहीं ॥११॥

मध्यन्दिनेऽपि तृषितास्सरितस्तटस्था-
स्स्तम्बेरमा लहरिकासलिलं सुखेलम् ।
शीतं स्पृशन्ति हि करेण पुनर्ग्रहीतुं
नालं कथञ्चिदपि ते प्रभवो न पातुम् ॥१२।

मध्यान्हकाल में भी नदी के किनारे पर खड़े हुए ये प्यासे हाथी, तरङ्गित शीतलजल को खेलते हुए से छूते हैं परन्तु सूण्ड से उसे ग्रहण नहीं कर पाते और पीने को किसी भी प्रकार समर्थ नहीं है ॥१२॥

प्रशस्तिः (महाकविशतकात्)

प्रणेता—कवीशरामकैलाशपाण्डेयः, एम्० ए०, शास्त्री, लब्धस्वर्णपदकः

मन्यन्ते जन्मभूमिं नवमतरचनापाटवेऽतीव दक्षाः ।
केचित्काश्मीरदेशं गुणिगणवसतिं चार्थविद्याप्रदेशम् ।
बङ्गीयं केचिदाहुर्बुधनिकरवराः कालिदासाभिधाना-
न्मन्ये त्वं जन्मभूमौ कविकुलनृपते लेभिषे तूज्जयिन्याः ॥

ऐक्ष्वाकाणां चरित्रं सह रघुतनयेनेन्दुमत्या विवाहः
श्रीर्वासन्ती मनोज्ञा त्रिदशकुलसरित्सूर्यजासङ्गमश्च ।
शोभा शाकुन्तलीया हिमगिरिललितोट्टङ्कनं मेघदौत्यं
नृत्यन्त्यक्ष्णोः पुरोऽमी कविकुलगुरुणा वर्णिता रम्यभावाः ॥

श्रीबाणप्राप्तमाना विलसति सरसा गद्यकाव्याद्यसृष्टि-
रोजः पूर्णा कृतिर्या सहृदयहृदयाह्लादिनी श्लेषयुक्ता ।
तस्याः स्रष्टा सुबन्धुर्ललितपदकविर्गद्यकाव्याद्यकर्त्ता
वक्रोक्त्यध्वप्रवीणो भुवि सुजनहितो गीयते गद्यकारः ॥

प्रासादं संदधाना गुणमतिमधुरैर्भावबन्धैरहीना
भव्या हृद्याऽतिदिव्या खलु कपटपरैर्लोकवृन्दैर्युता च ।
पाण्डित्यानर्घभूमिर्धृतललितपदा चार्थनैर्मल्ययुक्ता
हे काव्यादर्शकार द्विगुणितविभवा भासते भारती ते ॥

वैदर्भः काश्यपो यः करुणरसकविर्भट्टगोपालपौत्रो
वाग्देवी यस्य वश्याभवदिव नितरां नीलकण्ठात्मजश्च ।
आसीद्यश्च श्रुतिज्ञो ह्युपनिषदनुगो जातुकर्णीतनूजः
काव्याकाशे भवाद्यो रविरिव महसा भूतिसूरिः स भाति ॥

रामस्योदात्तवृत्तं लिखितुमिह कविर्नाटके द्वे न्यबध्ना
देकं वीर्यप्रदीप्तं करुणरसभृतं चापरं नाट्यरत्नम् ।
एकं रामस्य पूर्वं हि पठति चरितं तूत्तरञ्च द्वितीयं
प्रेम्णश्चित्रं तृतीयं प्रकरणमुदितं मालतीमाधवञ्च ॥

यद्यप्यस्यां जगत्यां कुटिलविधिवशाद्भर्तृमेण्ठस्य काव्यं
नास्ते विद्वद्वरेण्यैः पुनरपि बहुभिः सूचितं शंसितं तत् ।
वाल्मीकिर्भर्तृमेण्ठ त्वमसि कविपतिर्जातुकर्णीसुपुत्र-
स्त्वं वै यायावरीयः प्रकटयति कथं ते न काव्यं स्वरूपम् ॥

अङ्गस्यातीव दीर्घं बहुविपुलमहो वर्णनञ्चाकरोस्त्वं
दोषाणां हि प्रसङ्गे तव रचनगुणो दूषितो मम्मटेन ।
वक्रोक्तौ भर्तृमेण्ठ त्वमसि सुनिपुणश्चाप्तमानातिरेक-
स्त्वत्काव्यस्य प्रशस्तौ तु विवृतवदनोऽभूत्कवि. सोड्ढलश्च ।।

आसीत्सभ्यः सभायां हरविजयकविः श्रीजयापीडभर्तुः
श्रीकश्मीराधिपस्य त्वलभत सुयशोऽवन्तिवर्माह्वयस्य ।
साम्राज्ये माघकाव्यं निजरचनरुचा निर्गताभं चकार
स्वल्पाख्यानेन शम्भोः खलु विपुलतरं शैवकाव्यं ततान ।।

नीरक्रीडार्तुचन्द्रोदयगिरिविरहापानिधिप्रोद्विलास-
सन्ध्यासम्भोग पुष्पावचयकलितया शोभया कान्तरूपम् ।
श्लेषालङ्कारदीप्तं यमकरुचिभृतं चित्रमार्गोज्ज्वलञ्च
पञ्चाशत्सर्गबद्धं त्विह हरविजयं भाति रत्नाकरस्य ।।

--०--

मन का मीत

भानुदत्त शास्त्री 'मधुरेश' एम० ए०, एल० टी०

मन्दिर धाया मस्जिद धाया न जाने कितने दर हेरे ।
मन का मीत न कोई पाया तन के मीत मिले बहुतेरे ।।

शीत-तप्त झंझायें कितनी, सही कमल ने मुस्कानें तक ।
किन्तु न मतलब इससे कोई, मधुप सनेही मधु पाने तक ।।
मधु पी उड़ा खबर पंकज की लेने कभी न आया नेरे ।
मन का मीत न कोई पाया तन के मीत मिले बहुतेरे ।।

चढ़ते चन्द्र बदन को पाकर, शीस झुका करते अभिनन्दन ।
पूर्णमुखी को बात कहें क्या, बनती सारे जग का नन्दन ।।
किन्तु उतरते दिवस देख कर कोई न सन्मुख आया तेरे ।
मन का मीत न कोई पाया तन के मीत मिले बहुतेरे ।।

दन्ती मरे, मरे या पन्नग, किसको है परवाह यहाँ पर ।
मुक्ता-मणियों के पाने की, सबको रहती चाह यहाँ पर ।।
विरला दुख की सुनें कहानी धन के चाहन हार घनेरे ।
मन का मीत न कोई पाया तन के मीत मिले बहुतेरे ।।

गतांक से आगे--

महर्षि दयानन्द की विश्वदर्शन को देन

(*Contribution of Dayananda to world philosophy*)

जयदेव वेदालंकार

४-तितिक्षा-हर्ष तथा शोक, हानि और लाभ इत्यादि विषमावस्थाओं में समान रहने का प्रयास करना तितिक्षा कहलाता है। ५-श्रद्धा-योग-साधनों और ऋषियों के वचनों में आस्था रखने का नाम श्रद्धा है। क्योंकि जब तक मुक्ति के सभी साधनों को श्रद्धापूर्वक नहीं किया जाएगा, तब तक उनकी सिद्धि नहीं हो सकती। ६-समाधान-चित को बाह्य विषयों से हटा कर पूर्ण रूपेण एकाग्र करने का नाम समाधान है।

मुक्ति का अगला साधन मुमुक्षुत्व है। जैसे कि हम देखते हैं कि जब हमें भूख, प्यास का अनुभव होता है, उस समय भोजन और जलादि के अतिरिक्त हमें कुछ भी अच्छा नहीं लगता। ठीक इसी प्रकार मुक्ति के साधनों को करते हुये संसार के सभी विषयों से घृणा होकर मुक्ति के अतिरिक्त कुछ भी अच्छा नहीं लगना चाहिए। संसार के विषय तो साधक को विष के समान समझने चाहिए। अतः साधक ईर्ष्या, द्वेष काम और अभिमान आदि दोषों से हमेशा शान्त-प्रकृति, सात्विकता और सदैव चित्त को पवित्र रखने का प्रयास करे, उसको इन चार प्रकार के गुणों को धारण करना चाहिए। १-मैत्री-अच्छे लोगों से मित्रता करने का नाम मैत्री है। २-करुणा-दुःखी जनों पर दया करना। ३-मुदिता पुण्यात्माओं को देखकर प्रसन्न होना। ४-उपेक्षा दुष्ट लोगों में न प्रीति करना और न ही बैर करना। यदि साधक इन उपरोक्त गुणों के अनुसार साधना करेगा। तो उसका चित्त प्रसाद-गुण को प्राप्त कर सकेगा।

महर्षि दयानन्द जी का कथन है कि जो मुक्ति की इच्छा करते हों, उनको कम से कम दो घण्टा पर्यन्त प्रभु-ध्यान में मग्न रहना चाहिए१।

संक्षिप्त-रूप से मुक्ति के साधनों का वर्णन इस प्रकार है :-

पूर्व पक्ष—आपने मुक्ति के सम्बन्ध में जैसा लिखा है वैसा अन्य कोई नहीं मानता। जैसे देखो जैनी लोग शिवपुर में मोक्ष-शिला के ऊपर चुपचाप बैठ जाना मुक्ति मानते हैं। ईसाई-लोग चौथे आसमान में, जहां पर लड़ाई बाजे--गाजे अच्छे वस्त्र आदि के आनन्द को भोगते हैं। मुसलमान सातवें आसमान, जहां पर कि शराब और सुन्दर सुन्दर हूरों की प्राप्ति होती है। वाममार्गी श्रीपुर। इसी प्रकार पौराणिक ये लोग (रामानुज आदि) सालोक्य, सायुज्य, सारूप्य और सामीप्य ये चार प्रकार की मुक्ति मानते हैं, वेदान्ती-लोग ब्रह्म में लय होने को मोक्ष समझते हैं।

उत्तर पक्ष—मुक्ति कोई स्थान-विशेष का नाम नहीं है। ये मतवादियों की मुक्तियां संसार के भोग्य-पदार्थों के सदृश ही हैं। जैसे-वाममार्गी लोग श्रीपुर में जाकर लक्ष्मी के सदृश स्त्रियां और दूसरे मांसादि के भोग-विलास में लिप्त

१- नित्यप्रति न्यून से न्यून दो घण्टा पर्यन्त मुमुक्षु ध्यान अवश्य करे जिस से भीतर के मन आदि पदार्थ साक्षात् हों।
(स० प्र० ९ वां समु०)

रहने को मुक्ति का साधन मानते हैं जब सभी शास्त्र इस सिद्धान्त को स्वीकार करते हैं, कि मुक्ति में शरीर नहीं रहता, तब स्त्रियां और सभी भोग्य-पदार्थ व्यर्थ हो जायेंगे। और यदि दुर्जनतोष न्याय से इन भोग्य पदार्थों की कल्पना की भी जाये तो जिस प्रकार संसार में अधिक विलासी लोग नाना व्याधियों से ग्रसित देखे जाते हैं, तो वहां भी उनकी वही दशा होगी। ऐसी मुक्ति की भला मनुष्य क्या कामना कर सकता है ? वह मुक्ति क्या, वह तो वैश्यालय है। इसी प्रकार उन सभी मतवादियों की मुक्ति के विषय में समझना चाहिये जो इस प्रकार के भोग्य पदार्थों की वहां कल्पना करते हैं। पौराणिक जो चार प्रकार की मुक्ति मानते हैं, वैसी मुक्ति तो पशु-पक्षियों आदि को भी स्वतः सिद्ध हो जायेगी। जैसे-ये जितने लोग हैं। वे ईश्वर के ही अन्तर्गत हैं। जीव भी उन्हीं में निवास करते हैं। तो सालोक्य मुक्ति अनायास ही सबको प्राप्त हो जायेगी। ईश्वर सब जीवों में व्यापक है, अतः सामीप्य मुक्ति के प्रयास करने की आवश्यकता नहीं रहेगी। जीव ब्रह्म से छोटा है और चेतन होने से उसका बन्धुवत् है, अतः सानुज्य-मुक्ति भी बिना प्रयत्न के सिद्ध है। इसी प्रकार सारूप्य मुक्ति की अवस्था समझनी होगी। इस प्रकार सब मतवादियों की मुक्तियां मुक्ति नहीं, अपितु कपोलकल्पित ढोंग मात्र हैं।

पूर्व पक्ष—मुक्ति एक जन्म में प्राप्त होती है अथवा अनेक जन्मों में ?

उत्तर पक्ष—मुक्ति एक जन्म में प्राप्त नहीं हो सकती, अपितु अनेक जन्मों के सतत प्रयास के पश्चात प्राप्त होती है[1], क्यों कि हम देखते हैं, कि हमारे मन में अनेक जन्मों के दूषित संस्कार विद्यमान हैं। उनको दूर करने के लिए अनेक जन्मों में योगाभ्यास आदि साधनों को करने की आवश्यकता है। मुक्ति को प्राप्त करने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि हमारा अन्तःकरण पूर्णतया निर्मल होवे। अन्तःकरण में हमारे अनेक जन्मों और अनेक योनियों के कुसंस्कार समाविष्ट हैं। उन्हें दूर करने के लिये परम-पुरुषार्थ की आवश्यकता है।

मुक्ति से पुनरावर्तन

मुक्ति से जीवात्मा वापिस लौट आता है, इस विषय में कहा जाता है कि यह मान्यता स्वामी दयानन्द जी की अपनी ही थी। अन्य किसी दर्शनकार की नहीं। परन्तु ऋषि दयानन्द जी स्वयं ऐसा नहीं मानते हैं कि मुक्ति से वापिस आने के बारे में उन्होंने प्रमाण भी उपनिषदों और दर्शन आदि के दिये हैं। हां इतना अवश्य है कि जिस समय ऋषि दयानन्द जी का प्रादुर्भाव हुआ, उस समय के प्रायः भाष्यकार और सभी मतवादी दार्शनिक मुक्ति को सदा के लिये ही मानते थे। वे दर्शन और उपनिषदों का भाष्य भी उसी प्रकार करते थे। अस्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि प्राचीन ऋषि, वेद और उपनिषदें भले ही पुनरावर्तन के इस महत्वपूर्ण सिद्धान्त को मानते रहे हों, परन्तु इस ससय तो आदित्य ब्रह्मचारी ब्रह्मनिष्णात महर्षि दयानन्द जी ने ही हमारे सम्मुख रखा है भारतीय दर्शन में इस दृष्टि से महर्षि की अद्भुत देन है।

मुक्ति से जीवात्मा वापिस लौट आती इस विषय में सबसे पूर्व जीव के स्वभाव पर विचार करना होगा। जीव का स्वभाव चल ही प्रतीत होता है। हम देखते हैं कि यदि हमारे शरीर का

१- अनेकजन्मसंसिद्ध. ...... (गीता)

हाथ कट जाता है तो वह अचर यदि हाथ जीवात्मायुक्त शरीर में रहता है तो चर। हम देखते हैं कि यदि शस्त्र हमारे हाथ में हैं तो चर यदि नहीं तो जड़। इस सिद्धान्त के अनुसार फिर मुक्ति अवस्था में जीवात्मा को अचल माना जावे इसे हम विकसित अवस्था नहीं कह सकते हैं।

परन्तु कुछ लोग मुक्ति में जीवात्मा की सत्ता को ही स्वीकार नहीं करते हैं, उनका मत है कि जैसे दीपक बुझ जाता तो उसका अस्तित्व समाप्त हो जाता है उसी प्रकार आत्मा भी नष्ट हो जाता है तो, मुक्ति से वापिस आने का प्रश्न ही समाप्त हो जाता है। इस पर महर्षि दयानन्द जीका कथन है,जिस मुक्ति में जीवात्मा का अस्तित्व ही नहीं रहता ऐसी मुक्ति जीवात्मा क्यों चाहेगा, वह तो मुक्ति नहीं अपितु जीवात्मा की प्रलय समझनी चाहिये। तत्व मीमांसा प्रकरण में हम जीवात्मा को पृथक सिद्ध कर आये हैं अतः उन्हीं युक्तियों को यहां पुनः लिखना पुनरावृत्ति मात्र होगा। कुछ लोग मुक्ति में जीवात्मा का लय मानते हैं, इस लय का अभिप्राय: क्या है ? यह तो नहीं कहा जा सकता है। वे कहते हैं कि जैसे समुद्र में जाकर नदियां अपना नाम रूप छोड़ देती हैं, उसी प्रकार विद्वान् अपना नाम और रूप को छोड़ कर ईश्वर को प्राप्त हो जाता है१। इस उपरोक्त वचन में भी अस्तित्व नष्ट होने का वर्णन तो है नहीं, केवल नाम और रूप छोड़ने का कथन है। उपनिषद का अभिप्राय: तो यह है कि विद्वान् लोग नाम आदि के झंझटों से पृथक् होकर ईश्वर को प्राप्त कर लेते हैं क्योंकि उपमा एक देशी होती है। लय का अर्थ भी भौतिक लय नहीं लेना चाहिए।

पूर्व पक्ष—मुक्ति वही है जिससे जीवात्मा निवृत हो पुनः जन्म नहीं लेता है२। जहां जीवात्मा जाकर वापिस नहीं आते वह मेरा परम धाम है३।

उत्तर पक्ष—यहां वापिस न आने का अभिप्राय: यह है कि जब तक मुक्ति की अवधि समाप्त नहीं हो जाती तब तक वे वापिस नहीं आते हैं। क्योंकि यह जो जन्म और मरण का चक्कर (जो निरन्तर चला आ रहा है, वह बहुत समय के लिये बन्द हो जाता है। जैसे कि एक व्यक्ति किसी के घर प्रतिदिन आता हो परन्तु वह बहुत समय के लिये विदेश चला जावे, तो साधारणतया हम कह देते हैं कि वह अब नहीं आयेगा। केवल प्रतिदिन के आने की अपेक्षा से हम ऐसा कह देते हैं। ऐसे ही इन उपरोक्त वचनों का आशय समझना चाहिये। आप लोग जो मुक्ति को अभाव रूप मानते हो सो ठीक नहीं क्योंकि आपका कहना है कि मुक्ति दुःखप्रध्वंसाभाव है। जैसे घर टूट जाता है, टूट जाने पर वह घर नहीं आ सकता इसी प्रकार दुःखों का नाश होने पर उनका उदय नहीं हो सकता। इस प्रकार ही आप लोग मुक्ति को अभाव रूप मानकर पुनरावर्तन का खण्डन करते हो। परन्तु आप लोगों को ऐसा मानना ठीक नहीं क्योंकि मान लो एक समय घर

१– यथा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रेऽस्तंगच्छन्ति नामरूपे विहाय। तथा विद्वान् नाम रूपाद् विमुक्तः परात्परं पुरुषमुपैति दिव्यम्। (मुण्डकोपनिषद् ३।२।८)

२– न च पुनरावर्तते न च पुनरावर्तते इति। (छान्दोग्य ८।१५)

३– यद् गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम (गीता १५।६) (स० प्र० ९ समु०)

का अत्यन्ताभाव है। परन्तु दूसरे समय कोई वहां घर लाकर रख देता है तो वहां पर घर का अत्यन्ताभाव कहां रहा ? न्याय दर्शन में जो दुःख का अत्यन्त छूट जाना मोक्ष कहा वहां पुनरावृत्ति का निषेध तो नहीं होता है। शांकर भाष्य की टीका करते हुये श्री आनन्दगिरि जी भी लिखते हैं कि कल्पान्तर में मुक्ति से आवृत्ति हो जाती ऐसा सूचित होता है१।

पूर्व पक्ष–वह जीवात्मा मुक्ति को प्राप्त कर पुनः जन्म नहीं लेता है२।

उत्तर पक्ष–इसका अभिप्रायः भी वही है जो पूर्व लिख आये हैं क्योंकि वेद मुक्ति से वापिस लौटना मानता है। वेद में आता है कि किसका नाम पवित्र है ? कौन इस संसार में व्याप्त हो रहा। हमें मुक्ति के आनन्द को देकर कौन फिर माता पिता के दर्शन कराता है३। महर्षि दयानन्द जी का अर्थ भी यहां द्रष्टव्य है४।

उपरोक्त मन्त्र का उत्तर इस प्रकार दिया है कि वह प्रकाश स्वरूप परमेश्वर है जो मोक्ष का आनन्द देता है,वही पुनः मातापिता का जन्म देकर दर्शन कराता है५। इन उपरोक्त दोनों वेद मंत्रों की व्याख्या में देखा कि जीवात्मा मुक्ति से वापिस आकर माता पिता के पुनः दर्शन करता है पुनः जन्म लेता है।

प्राचीन दार्शनिक ऋषि भी इस पुनरावृत्ति के सिद्धान्त को अंगीकार करते थे ऐसा उनके दर्शनों से स्पष्ट ज्ञात हो जाता है। उन दार्शनिकों के समक्ष भी तो यह समस्या थी कि यदि जीवात्मा मुक्ति के अनन्तर वापिस नहीं आयेंगे तो बहुत मौलिक समस्यायें उत्पन्न हो जायेंगी। संसार से एक जीवों का उच्छेद मानना पड़ेगा। ऐसे ही सब प्रश्न का उत्तर महर्षि कपिल जी अपने दर्शन में देते हैं उनका कहना है कि यद्यपि जीव मुक्ति को प्राप्त होते आ रहे हैं, अब भी हो रहे हैं और आगे भी मुक्त होंगें परन्तु जीवों का उच्छेद भविष्य में कभी भी नहीं होगा६। यह संसार अनादि काल से चला आ रहा है। यह ठीक है कि चला आ रहा है, और चलता रहेगा भी परन्तु जीव मुक्त होते हुये भी उनका उच्छेद नहीं होगा७। परन्तु यदि जीव परिगणित हो उनका उच्छेद अवश्य होगा। इससे तो यही सिद्ध होता है कि जीवात्मा मुक्ति से वापिस आते रहते हैं, और अनेक लोक लोकान्तर हैं।

—क्रमशः

१– कल्पान्तरे त्वावृत्तिरिति सूच्यते (स० प्र०-९ समु०) (टीका)

२– स तु तत् पदमाप्नोति यस्माद् भूयो न जायते।

३– कस्य नूनं कतमस्यामृतानां मनामहे चारु देवस्य नाम।
को नो मह्या अदितये पुनर्दात् पितरं च दृशेयं मातरंच (ऋग्वेद १।२४।१)

४– हम लोग किस का नाम पवित्र जाने ? कौन नाशरहित पदार्थों के मध्य में वर्तमान देव सदा प्रकाश स्वरूप है, हमको मुक्ति का सुख भुगाकर पुनः इस संसार में जन्म देता और माता पिता का दर्शन कराता है।
(स० प्र० ९ समु०)

५–अग्नेर्वयं प्रथमस्यामृतानां मनामहे चारु देवस्य नाम।
स नो मह्या अदितये पुनर्दात् पितरं च दृशेयं मातरञ्च। ऋग्वेद १।२४।२)

६– अनादावद्य भावादभविष्यादप्येवम्
(१।१५ वेदान्तदर्शन)

७– इदानीमिव सर्वत्र नात्यन्तोच्छेदः१।१५९

आज यह कैसा अभिनन्दन है

--महावीर 'नीर' विद्यालंकार

आज यह कैसी सुबह हुई 'ओ',
आज यह कैसा परिवर्तन है
सोच तनिक भारत के शिल्पी
आज यह कैसा अभिनन्दन है।

अभी न डाली महकी कोई,
अभी न बगिया में हलचल है।
मुझे बता माली उपवन के
आज यह कैसा मधु-गुंजन है।

सिसक-सिसक कर जब मानवता,
तोड़ रही दम किसी गली में।
सोच जरा धन्वन्तरि देश के
आज कहां वह संजीवन है।

सजा हुआ आलोक-युक्त यह,
सुन्दर राज भवन दिल्ली का।
सोच तनिक नैय्या के खेवक,
कहां पर तेरा आज चरण है।

तू तम-जाल हटाने के हित,
दिनकर सम बन जा मतवाले।
सोच, अमां से घिरा है तू तो,
आज कहाँ फैली पूनम है।

फूलों के ये हार देश ने,
तुझे पहना कर गले लगाया।
ओ शुभ चिन्तक मेरे राष्ट्र के,
आज कहाँ पर देख वतन है।

'जय गांधी' की, 'जय नेहरू' की,
यह जय, कोरी जय न रहे अब।
सोच तनिक मेरे विश्वासी,
आज कहाँ तेरा तन-मन है।

ये 'झुग्गी' ओ 'कुटिया' तुझसे
कितनी आशायें रखती है।
सोच राष्ट्र-आशा के पूरक
कहाँ पर सपने हुए दफन हैं।

अपने प्राण पर अडिग रहे तू,
इतना कर संयत जीवन को।
सोच तनिक भारत के नायक
कहां पर तेरा जन-जीवन है।

अभी निशा का गहन अंधेरा,
बैठा ग्रसने को जीवन है।
अभी दूर मंजिल तय करनी,
अभी न आलोकित आंगन है।

अभी दुष्ट-मक्कारो ने क्या ?
बदला अपना चाल चलन है !
अभी तो आंधी सहम गई है,
अंदर-अंदर, जलन-घुटन है।

अभी किलो भर आटे के हित,
लगी बहुत लम्बी लाइन है।
अभी अल्प पैसों की खातिर,
बेच रहा नर अपना पन है।

चारों ओर द्वेष-ज्वालायें,
आतुर अभी भस्म करने को।
सोच तनिक भारत के रक्षक
आज कहाँ पर छलापन है।

भोगवाद के क्षणिक सुखों में,
तेरा जन-जीवन भरमाया।
सोच तनिक ओ व्यास ! देश के,
आज कहाँ तेरा दर्शन है।

धोखा, रिश्वत, चोर बाजारी
खूब अभी ताण्डव करते हैं।
सोच तनिक युग-धर्म-प्रवर्तक
आज कहाँ पर चाल चलन है।

वह अंगारा बन जा अब तू
जिसको छू दुश्मन जल जाये
सोच तनिक मेरे प्रतापी।
आज कहां तेरा यश-गुण है।

अगर पीर पलती है तुझमें,
देख दशा ओ 'नीर' देश की।
सोच तनिक विद्रोही स्वर से,
आज भुला निजका क्रन्दन है।

यह देखो 'ताज' विशाल खड़ा !

वह कौन ? कहाँ से आया था, उसकी सब बात निराली थी।
जब मिली उसे सच्ची शिक्षा, फोड़ी मादक-मधु-प्याली थी।
'तलवन-वासी,' नरपुंगव का, यह देखो स्वप्न साकार खड़ा।
उस कर्मयोगी ऋषिवर ने निज, जीवन हंस-हंस बलिदान किया।
कुछ करना है, दृढ़ निश्चय कर, घर-बार त्याग सन्यास लिया।
उस 'मुन्शीराम' अलबेले का यह देखो 'ताज' विशाल खड़ा।
एक 'जादूगर' की बोली ने, उसकी आत्मा झकझोरी थी।
परतंत्र देश में शिक्षा की, एक नई संस्था खोली थी।
उस झोली वाले बाबा का, यह देखो गौरव-गान खड़ा।
उस की शिक्षा थी वीर बनो, निर्भय होकर जूझो रण में।
वह कहता था तुम आर्य वीर, कायरता मत लाओ मन में।
उस वीर अमर बलिदानी का, यह देखो खुद बलिदान खड़ा।
इस 'गुरूकुल' की माटी चन्दन, इसका चप्पा हरियाला है।
इसका गौरव हिम शिखर तुल्य, इसका सब जगह उजाला है।
उस देव-तुल्य, महामानव का, यह देखो शुभ्र निशान खड़ा।
इसकी गोदी में जो पलता, उसका इससे पावन नाता।
वह भुला-भुला कर भी इसको, कभी मन से भूल नहीं पाता।
उस मनमोही, मतवाले का, यह देखो प्यार-निशान खड़ा।
यहां धर्म रहे, यहाँ दया रहे, यहां सत्य, न्याय-व्यापार रहे।
उत्थान ही इसका हो हमसे, यह चमन सदा गुलजार रहे।
उस श्रद्धा के अमर पुजारी का, यह देखो तन-मन-प्राण खड़ा।

--महावीर 'नीर'
विद्यालंकार
गुरुकुल कांगड़ी

पंजाब केसरी लाला लाजपतराय

श्री प्रो० रामप्रसाद अध्यक्ष वेद विभाग,

लाला जी का जन्म २८ जनवरी सन् १८६५ को अपने ननिहाल में ढोडि ग्राम जिला फिरोजपुर में हुआ था। यह ग्राम मोगा से १२ मील और जगराँव से १० मील की दूरी पर वर्तमान है। लाजपतराय के पूर्वज जगरांव जिला लुधियाना में रहा करते थे।

लाला जी का जन्म एक साधारण अग्रवाल परिवार में हुआ इनके पितामह ला० वल्लाराम पंजाब में लाहौर के समीप किसी ग्राम में पटवारी थे। शिक्षा की दृष्टि से उनको महाजनी या लाडों के अतिरिक्त किसी भाषा का ज्ञान न था। वे बड़े साहसी, बुद्धिमान तथा मिलनसार स्वभाव के थे। अर्थ के अर्जन करने में कुशल थे। धर्म कर्म के विषय में कट्टर थे। जैन धर्म के अनुयायी होकर उनके साधु सन्तों का यथेष्ट आदर सम्मान करने में उन्हें बड़ी तृप्ति मिलती थी। दादी बहुत सीधी सादी २० तक गिनती जानती थी। रुपये पैसे से उन्हें कोई लगाव नहीं था। उन्होंने घर पर कभी ताला नहीं लगाया। पति यदि कुछ लाते तो उसको गली मौहल्ले में बाँटकर सुख अनुभव करती थी। और घर के कार्य में हृदय से संलग्न रहती और स्वयं प्रायः हाथ पर ही शाक रोटी रखकर खा लेतीं थी।

लाजपतराय के पिता का नाम ला० राधाकृष्ण और माता का नाम गुलाबदेवी था। राधाकृष्ण का जन्म जनवरी सन् १८४५ में लाहौर में हुआ इनकी प्राथमिक शिक्षा जगरांव के एक मदरसे में हुई। मदरसे के मुख्याध्यापक एक कट्टर मुसलमान मौलवी थे जो बड़े चरित्र वान और स्वभाव के इतने मधुर थे कि उनका प्रभाव सहज में ही विद्यार्थियों पर ऐसा पड़ता था कि वे प्रायः धर्म परिवर्तन कर मुसलमान हो जाते थे और यदि किसी कारण वश वे नाम से मुसलमान नहीं भी बन पाते थे तो भी उनकी जीवनचर्य्या मुसलमानी क्रियाकलापों से ओत-प्रोत रहती थी। लाला राधा कृष्ण जी ऐसे मुसलमानों में से एक थे। वे नित्य प्रति ५ समय निवाज पढ़ते थे, रौजे रखते थे मुसलमानों की तरह कुरान का श्रद्धा भक्ति से पाठ करते थे और उन्हीं के साथ प्रायः मांसादि खाते थे पर नाम से हिन्दू थे। यह भी इसलिए कि लाला लाजपतराय की माता जी पीछे से सिख परिवार से थीं। पति के विरोध करते रहने पर भी वे लुके छिपे सब हिन्दु रीति रिवाजों को पूर्ण करती रहती थी। इतनी कट्टर होने पर भी पति प्रेम में वे उनके मार्ग में कभी रोड़ा नहीं बनीं और सब सहन करती रहीं भले ही वे इसको हृदय से सदा अनुभव करती रहती और मन में दुःखी रहती हुई रो भी पड़ती थी। इधर ला० राधाकृष्ण जी भी इसलिए पूर्ण रूपेण मुसलमान नहीं बन सके, कि उन्हें अपनी सेवा परायण पत्नी एवं बच्चों के प्रति प्रगाढ़ अनुराग था। उन्हें यह आशंका थी कि यदि मैं मुसलमान बन गया तो यह मेरे साथ मुसलमान बनने की अपेक्षा बच्चों को साथ लेकर अपने मायके में हिन्दू बनकर रहना अधिक पसन्द करेगी, इसलिए वे नाम से हिन्दु रहे पर जीवन सारा मुसलमानों जैसा और हिन्दू धर्म के विरोध में उन्होंने बहुत लेख भी लिखे हैं।

प्राथमिक शिक्षा के अनन्तर दिल्ली नार्मल स्कूल में प्रवेश लिया वहां सदा प्रथम रहे और नार्मल स्कूल की अन्तिम परीक्षा में तो पंजाब भर में प्रथम रहे। और फिर वे पंजाब के शिक्षा विभाग

में २५ रु० मासिक पर अध्यापक नियुक्त हुए । १० वर्ष की सर्विस के अनन्तर उनका वेतन ३५ रुपये होगया । उनके १० बच्चे हुए जिनमें से ६ जीवित रहे । उन सब में से ज्येष्ठ लाला लाजपतराय जो थे । वे विद्या के इतने व्यसनी थे कि जीवन की ७०-७१ वर्ष की आयु में भी जो पुस्तक या समाचार पत्र उर्दू, फ़ारसी, हिन्दी या गुरमुखी में उनको मिल जाता वे उसे पढ़ डालते थे और यदि कुछ नहीं मिलता तो फिर पुरानी पुस्तकों को ही पढ़ने में लग जाते थे ।

ऐसे परिवार में ला० लाजपतराय का जन्म जनवरी २८ सन् १८६५ को ढोडि ग्राम में हुआ । लाजपतराय का बाल्यकाल प्रायः रोगों में कष्टों और चिन्ताओं में व्यतीत हुआ है । उनकी प्रारम्भिक शिक्षा जगराँव के प्राइमरी स्कूल में हुई । इस के अनन्तर लुधियाना के मिशन हाई स्कूल में और पश्चात् अम्बाला के एक स्कूल में पढ़कर सन् १८८० में १५ वर्ष की आयु में उन्होंने पंजाब और कलकत्ता दोनों विश्वविद्यालयों की मैट्रिक परीक्षाएं एक साथ पास कीं । तदनन्तर गवर्नमेन्ट कालेज लाहौर से एफ. ए. किया । एफ. ए. के द्वितीय वर्ष में ही पिता के अनुरोध से मुख्त्यारी की परीक्षा में बैठे और उस में उत्तीर्ण हो गए । कुछ काल के अनन्तर फिर एल. एल. बी. कर ली । लाजपतराय का विवाह विद्यार्थी काल में मिडिल पास करते ही राधा देवी के साथ हो गया था । राधादेवी जी लगभग उन्हीं की आयु की या उनसे दो एक वर्ष छोटी रही होंगी ।

लाहौर का शिक्षाकाल ला० लाजपतराय के जीवन में सबसे बड़ा महत्त्वपूर्ण मोड़ सिद्ध हुआ । वे अपने शिक्षा काल में सन् १८७८, १८८० और १८८१ में तीन बार लाहौर आए । तीनों बार वे लाहौर के गवर्नमेंट कालेज में ठहरे । लाहौर में उन दिनों सन् १८७७ में महर्षि दयानन्द आए थे और उन्होंने स्वयं लाहौर में आर्यसमाज की स्थापना की और धर्म समाज और राष्ट्र के अभ्यत्थान के सम्बन्ध में अपने विचार दिये जिनका विद्युत के समान पञ्जाब में प्रसार हुआ ।

ला० लाजपतराय की लाहौर में पं० गुरुदत्त और ला० हंसराज से संगति होने पर इन्हें आर्य समाज के राष्ट्रीय भाव रूचिकर लगे परन्तु चूंकि इनके पिता ला० राधाकृष्ण जी आर्यसमाज के कट्टर विरोधी थे इसलिए ये आर्यसमाज में जाने का कभी साहस नहीं करते थे । पर यही लाहौर के वास के अपने दो वर्षों में ही उनके विचार और स्वभाव जिस रंग में रंग गए वे जीवन पर्यन्त बने रहे । इन्हीं दिनों में लाला जी को अपने जीवन का वास्तविक उद्देश्य स्पष्ट होने लग गया था और तदनुकूल उन्होंने उसे कार्य रूप में परिणत करना भी प्रारम्भ कर दिया था । इन्हीं दिनों वे भारतवर्ष की वर्तमान परिस्थितियों, पुरानी घटनाओं तथा देश के प्राचीन गौरवपूर्ण इतिहास को पढ़ पढ़ कर प्रायः रोया करते थे । उन्होंने इन्हीं दिनों बहुत से महापुरुषों के जीवन चरित्र पढ़े और भावी जीवन को भारतीय संस्कृति के प्रचार लोक सेवा एवं राष्ट्र के अभ्युत्थान में लगाने का सङ्कल्प किया ।

उन्हीं दिनों ला० साईं दास जी जो कि आर्य समाज के प्रधान थे । दफ़्तर के समय के बाद उन्हें आर्यसमाज के सदस्य बनाने की ही धुन रहती थी । उनकी पैनी दृष्टि सदा ऐसे युवकों पर रहती थी जिन पर आर्य समाज के भविष्य की आशा सम्भव हो सकती थी । उन्हीं में से एक थे लाला लाजपतराय ।

ला० लाजपतराय कब आर्य आर्य समाजी बने और उनके जीवन ने नई करवट ली, इस का वर्णन उन्होंने अपने भावुक हृदय से अपनी आत्म-कथा में स्वयं किया है।

"सन् १८८२ के नवम्बर या दिसम्बर मास में मैं पहली बार आर्य समाज में गया। आर्यसमाज का वार्षिक उत्सव हो रहा था। उस दिन स्व० ला० मदनसिंह का व्याख्यान था। उनको मुझसे बहुत प्रेम था। उन्होंने व्याख्यान देने से पहले समाज मन्दिर की छत पर मुझे अपना लिखा हुआ व्याख्यान सुनाया और मेरी सम्मति मांगी। मैंने व्याख्यान बहुत पसन्द किया। मैं छत से नीचे उतरा तो स्वर्गीय ला० साईंदास ने मुझे पकड़ लिया और अलग ले जाकर कहने लगे कि हमने बहुत समय तक इन्तजार किया है कि तुम हमारे साथ मिल जाओ।

मैं उस घड़ी को भूल नहीं सकता। वे मेरे से बातें करते थे, मेरे मुंह की तरफ देखते थे और मेरी पीठ पर हाथ फेरते थे। मैंने उनको उत्तर दिया कि मैं तो उनके साथ हूं। मेरा इतना कहना था कि उन्होंने झट आर्यसमाज का सभासद् बनने का प्रार्थनापत्र मंगवाया और मेरे सामने रख दिया। मैं दो चार मिनट सोचता रहा परन्तु उन्होंने कहा कि हस्ताक्षर किये बिना तुझे जाने न दूंगा। मैंने उसी समय हस्ताक्षर कर दिये।

उस समय उनके चेहरे पर जो झलक दिखाई दी, उसका मैं वर्णन नहीं कर सकता। ऐसा मालूम होता था कि जैसे उनको हिन्दुस्तान की बादशाहत मिल गई हो।

उन्होंने एकदम गुरुदत्त को बुलाया और सारा हाल सुनाकर मुझे उनके हवाले कर दिया। वे भी बहुत खुश हो गए।

लाला मदनसिंह के व्याख्यान की समाप्ति पर लाला साईंदास ने मुझे और गुरुदत्त को प्लेट फार्म पर खड़ा कर दिया। हम दोनों से व्याख्यान दिलवाए। लोग बहुत खुश हुए और खूब तालियाँ बजाईं। इन तालियों ने मेरे दिल पर शराब का सा असर किया। मैं सफलता और प्रसन्नता की मस्ती में अपने मकान को वापिस आ गया।"

ला० लाजपतराय के पश्चात् सहस्रों व्यक्तियों ने आर्यसमाज की सदस्यता के फार्म भरे होंगे पर कितनों में वह निष्ठा भावना और उत्साह रहा होगा जो कि ला० लाजपतराय में था। ३२ वर्ष के उपरान्त जब कि वे देश निकाले से वापिस आए थे और लाहौर आर्यसमाज के प्लैट फार्म से उन्होंने अपना व्याख्यान दिया था तो उस में कहा था—"पिछले ३२ सालों में मुझे कभी इस बात का अफसोस नहीं हुआ कि मैं आर्य समाज में क्यों दाखिल हुआ? मैं हमेशा से इस घटना को अपनी जिन्दगी की महत्वपूर्ण परिवर्तनकारी महान बात जीवन का मोड़ समझता हूं और इसे मैं प्रसन्नता और अभिमान से याद करता हूं।

मेरे जीवन में जो हिस्सा खराब है, वह मेरा अपना है। वह या तो मुझको विरासत में मिला है या मेरे पूर्वजन्म के संस्कारों का फल है। लेकिन मेरे जीवन का जो हिस्सा अच्छा और लोगों में प्रसंशायोग्य है वह सब आर्य समाज की बदौलत है। आर्य समाज ने मुझे वैदिक धर्म से प्यार करना सिखलाया, आर्यसमाज ने मुझे प्राचीन आर्य सभ्यता का मान करना सिखाया, आर्य समाज ने प्राचीन आर्यों से मेरा सम्बन्ध जोड़ा और मुझे उनका सेवक और भक्त बनाया।"

आर्य समाज ने मुझे अपनी जाति से प्यार

करना सिखलाया, आर्य समाज ने मुझे कुरबानी का मार्ग दिखलाया । आर्यसमाज ने मेरे अन्दर सत्य धर्म और स्वतन्त्रता की रूह फूंकी । आर्यसमाजने मुझे संगठित करने का पाठ सिखलाया । आर्य समाज ने मुझे यह शिक्षा दी कि समाज धर्म और देश की पूजा और सेवा करनी चाहिए और उनकी सेवा में जो मनुष्य बलिदान करता है और दुःख उठाता है उसे स्वर्ग का राज्य मिलता है । मतलब यह है कि मैंने सार्वजनिक लोक सेवा के तमाम सबक आर्य समाज में रहते हुये आर्यसमाज से सीखे । आर्य समाज के क्षेत्र में ही मैंने अपने प्यारे मित्र बनाए । आर्य समाज के क्षेत्र में ही मैंने सार्वजनिक जीवन में पवित्रता के नमूने देखे । आर्य समाज के उपकार मेरी गरदन पर अनगिनत और असीम है । अगर मेरा बाल-बाल भी आर्य समाज पर न्योछावर हो जावे तो भी मैं उन उपकारों से उऋण नहीं हो सकता ।

अगर मैं आर्य समाज में प्रविष्ट न होता तो ईश्वर ही जाने कि क्या होता, मगर यह सच है है कि मैं आज जो कुछ हूं वह न होता ।"

आर्य समाज में पदार्पण करते ही लाला लाजपतराय, ला० हंसराज और पं० गुरुदत्त त्रिमूर्ति के नाम से प्रसिद्ध हुए । उन दिनों स्वामी दयानन्द जी अजमेर में मृत्यु शय्या पर पड़े थे । तीनों ने सोचा कि स्वामी जी की सेवा में हम में से किसी एक को पहुंचना चाहिये । अन्त में गुरुदत्त को भेजने का निश्चय हुआ और वे अजमेर चले गए ।

सन् १८७३ में दीपावलि के दिन महर्षि दयानन्द सरस्वती का देहावसान हुआ । अगले ही दिन यह शोक काली धारियों में समाचार पत्रों में निकला । आर्य समाज में सन्नाटा छा गया । लाजपतराय वकालत की तैयारी में व्यस्त थे । पुस्तक उनके हाथ से गिर गई । उनकी आंखों से अश्रुधारा प्रवाहित होने लगी मानो कोई अत्यन्त घनिष्ट प्राणी चल बसा हो । आर्यसमाज के प्रधान लालसाईंदास ने बच्चों वाली समाज में शोक सभा का आयोजन किया और उसमें मुख्य वक्ता के रूप में ला० लाजपतराय को चुना ।

शोक सभा में अत्यन्त भीड़ थी, तिल धरने को जगह नहीं थी लोग आस पास की छतों पर भी बैठे हुए थे । बहुत से लौट गए एक वक्ता के बाद दूसरा और दूसरे के बाद तीसरा बोलता गया, पर असफल रहे । अन्त में ला० लाजपतराय जी एक घंटे तक बोले । इस व्याख्यान ने ला० लाजपतराय का आर्यसमाज के प्रथम कोटि के व्याख्यानों में स्थान बना दिया ।

आगे चलकर उन्होंने महात्मा हंसराज और पं० गुरुदत्त जी के साथ मिलकर डी० ए० वी० कालेज की स्थापना की जिस कालेज ने प्रान्त भर की ही नहीं अपितु भारत भर की शिक्षा संस्थाओं में एक उच्च स्थान प्राप्त किया । विभाजन के पूर्व यह कालेज पंजाब प्रान्त की शिक्षा, समाज सुधार और राष्ट्र के पुनरूत्थान का मुख्य केन्द्र माना जाता था । इस कालेज को समुन्नत करने में ला० लाजपतराय जी का पर्याप्त हाथ था ।

ला० जी का राजनीति में प्रवेश

१८८६ से १८९२ ई० तक ये हिसार में वकालत करने के साथ-साथ कार्य भी करते रहे । हिसार में रह कर वहाँ की आर्य समाज को जागरूक कर चहुं ओर प्रचार, समाज सुधार और लोक हित के कार्यों को बढ़ावा दिया ।

अपने लोक प्रिय कार्यों के कारण अपने हिसार के तीन वर्षों के निवास काल में ही ये म्युनिसिपल कमेटी के निर्वाचित सदस्य और अवैतनिक मन्त्री रहे ।

ला० लाजपतराय ने इन तीन वर्षों में कमेटी

के शिक्षा और स्वास्थ्य के कार्यों में अच्छी सफलता प्राप्त की। इस समय ला० लाजपतराय की आयु २५ वर्ष की थी। उनमें देश प्रेम की ज्वाला धधक रही थी। उन्होंने उन्हीं दिनों अपने साथियों से मिलकर दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कालेज की स्थापना की थी। उधर १८८५ में इण्डियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना भी हो चुकी थी। इधर भी उनका झुकाव था।

काँग्रेस के मुख्य विरोधी सुप्रसिद्ध सरसय्यद अहमदखाँ थे जो अलीगढ़ ऐंग्लो मोहम्मडन कालेज के जन्मदाता थे।

सर सैय्यद अहमद साहब ने कुछ समय पूर्व भारतीय राष्ट्रीयता का नारा लगाया था और इस के लिए लेख भी लिखे तथा भाषण भी दिये थे। काँग्रेस की स्थापना के साथ उन्होंने एकदम कांटा बदला और मुसलमानों को कांग्रेस के आन्दोलन से पृथक् रहने का परामर्श दिया।

ला० लाजपतराय को सर सैय्यद अहमद की की राष्ट्र विरोधी नीति में द्रोह की झलक आई। वे अपने को सँभाल न सके। उन्होंने उर्दू के पत्रों में सर सैय्यद के नाम खुली चिट्ठियाँ लिखीं जिनमें उनकी पेंतरे बाजी की कड़ी आलोचना की।

काँग्रेस के जन्मदात ह्यूम साहब को जब उनका पता चला तो उनका अंग्रेजी में अनुवाद प्रकाशित कराया। यह सब कुछ सन् १८८८ की कांग्रेस से पूर्व हो चुका था। जिसमें ला० लाजपतराय प्रथम बार सम्मिलित हुए। सर सैय्यद अहमद खां के साथ यह उनका प्रथम राजनीतिक विवाद था जिसने उनको विख्यात कर दिया था। जब वे इलाहाबाद पहुंचे तो स्टेशन पर उनके स्वागत के लिए ह्यूम साहब, पं० अयोध्यानाथ और पं० मदनमोहन मालवीय जी आए हुए थे। तरुण मालवीय जी ने स्वयं सेवकों के साथ लाजपतराय के नाम पर खुशी से तालियाँ बजाई।

काँग्रेस के अधिवेशन में ला० लाजपतराय का बहुत सत्कार हुआ। व्याख्यान देने के लिये वे कई बार मंचपर आए। इस के बाद भी कई बार ये कांग्रेस के अधिवेषणों में सम्मिलित हुए पर ये इनकी ढीली कार्य प्रणाली से संतुष्ट नहीं थे। इसलिए इस मध्य में ये अपने कार्य के साथ-साथ अनेक सामाजिक कल्याण के कार्य करते रहे कहीं दुर्भिक्ष ग्रस्त लोगों की सहायता के कार्य में कहीं बाढ़ पीड़ित की सहायता के कार्य में जुटे रहे। कहीं अनाथ बच्चों के भविष्य के लिए अनाथालयों की स्थापना कर रहे हैं। इस प्रकार अनेकों लोकहित के कार्यों को अनवरत करते रहे।

अपनी राष्ट्रीय भावनाओं के कारण पुनः १९०१ में लाहौर से उन्होंने कांग्रेस में सक्रिय भाग लिया। १९०४ में वह महामना गोखले के साथ काँग्रेस डेपुटेशन में विलायत गए और भारत की राजनीतिक मांगों को व्याख्यानों तथा लेखों द्वारा अंग्रेजों के सामने रखा।

लोकमान्य तिलक तथा अन्य गर्मदल के नेताओं की भांति लाजपतराय, कांग्रेस की नीति से पूर्णतः सहमत नहीं हुए पर तो भी उनका कांग्रेस के अधिवेशनों में आना जाना बराबर बना रहा।

आगे चलकर अपने राष्ट्रोत्थान के तीव्रतम कार्य-क्रमों के कारण और भारत माता के परतन्त्रता के बन्धनों को शीघ्र से शीघ्र काटने के सम्बन्ध में क्रान्तिरूप साधारण करने के कारण सारे देश में उनकी प्रसिद्धि हो गई। उस समय भारत में त्रिमूर्ति के रूप में लाल बाल पाल प्रसिद्ध थे। ला० लाजपतराय पञ्जाब में स्वतन्त्रता आन्दोलन का नेतृत्व कर रहे थे। और महाराष्ट्र में बाल गंगाधर

तिलक तथा विपिनचन्द्र पाल बंगाल में आन्दोलन का नेतृत्व कर रहे थे। आगे चलकर इनकी अत्यधिक सरगर्मियों के कारण इन्हें (ला० लाजपतराय को ७ मई १९०७ को देश से निर्वासित कर दिया गया। जनता ने इसका इतना विरोध किया कि अंग्रेज सरकार को ११ नवम्बर १९०७ को उन्हें रिहा करना पड़ा।

इस प्रकार से सतत देश की स्वतन्त्रता के लिए भारतवासियों को जागरूक करते रहे और हर आपत्ति का सामना वीरता पूर्वक करते रहे।

भारत की प्रथम योरूपीय महायुद्ध के आठ साल बाद ब्रिटिश सरकार ने पराधीन भारत के भाग्य के निर्णय करने के लिए (भारत सुधार योजना को तैयार करने के लिए) साइमन कमीशन यहां भेजा। कमीशन ३० अक्टूबर १९२८ को लाहौर पहुंचा। लाजपतराय के लिए यह असह्य हो गया कि सात समुद्र पार से आए गोरे उनके देश के भाग्य विधाता बने। ला० लाजपतराय ने काली झण्डियों के साथ जलूस निकाला। वे इस जलूस के अग्रणी थे। यह जलूस "साईमन गो बैक" के नारे लगाता हुआ लाहौर स्टेशन की ओर आगे बढ़ा। पुलिस ने जलूस को आगे बढ़ने से रोका, पर उनके न रुकने पर लाठियों का प्रहार किया। पहली लाठियाँ जलूस के अगुवा, ला० लाजपतराय पर पड़ी लाठी चार्ज की रात को मोरी दरवाजे के बाहर विराट सभा हुई, जिसमें घायल सिंह की तरह गर्जना करते हुए ला० लाजपतराय ने अपने अमर शब्द कहे "हम पर किया गया एक एक लाठी का प्रहार ब्रिटिश साम्राज्य के कफन में कील का काम करेगा।" वेदना असह्य थी दिनों दिन शरीर जवाब दे रहा था। अन्त में १७ नवम्बर १९२८ को वह दीपक पार्थिव शरीर की दृष्टि तो बुझ गया पर सदा के लिये अपने यश: शरीर से प्रकाश स्तम्भ सब का पथ प्रदर्शक बन गया।

—०—

"एकता"

विष्णुदेव प्रसाद विद्यालंकार अन्तिम वर्ष, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

छात्र-सेना के कदम में एकता हो

आपसी मतभेदता को छोड़ दें।
द्वेष इर्ष्या की कड़ी को तोड़ दें,
लोभ-लोचन से अरि-दल इस तरफ
देखे तो उसकी नजर को मोड़ दें,
हम बढ़ें आगे अगर चाहे भी कोई रोकता हो।
छात्र-सेना के कदम में एकता हो ॥१॥

देश रक्षा की तमन्ना मन में हो,
व्यथा-गिरि के टूटे फिर भी गम न हो,
दुर्गमों को पार करने के लिए,
वीर सा साहस हमारे तन में हो,
एक कर दें हम जहाँ विभिन्नता हो।
छात्र-सेना के कदम में एकता हो ॥२॥

सोच लें है भार भारत का हमीं पे,
शान है हम सबकी पावन इस जमीं पे,
देश में ऐसा उजाला हम करें,
जिस प्रभा से हों प्रभासित विश्व जन,
हम न देखें उस बुराई जग भले ही देखता हो।
छात्र-सेना के कदम में एकता हो ॥३॥

दीन दु:खियों की तड़पती आह को,
आँसू भर हम उसकी मिटायें दाह को,
दीन शिशु जो प्यार के भूखे पड़े,
चूमकर हम झट उठालें अंक में,
जो हमें चिरकाल से आशा नयन से देखता हो।
छात्र-सेना के कदम में एकता हो ॥४॥

शिक्षण संस्थाओं का दिग्दर्शन

श्री डा० गंगाराम, रजिस्ट्रार, गुरुकुल काँगड़ी

श्री बलभद्र कुमार जी कुलपति का यह सुझाव है कि विश्वविद्यालय के प्रमुख अधिकारी देश की उच्च शिक्षण संस्थाओं में जायें और वहाँ की व्यवस्था का अध्ययन करके अपने यहां अपेक्षित सुधार करें। उसी निमित्त राजस्थान विश्वविद्यालय वनस्थली विद्यापीठ एवं जामिया मिलिया को हम देखने गये। इसी योजना के अन्तर्गत कुलपति जी गुजरात विद्यापीठ और आचार्य विनोबा भावे के पौनार आश्रम में भी प्रतिनिधि मंडल भेजने का विचार कर रहे हैं। जयपुर में अमरीकी सरकार की ओर से एक सैमीनार हुआ था और उसमें भाग लेने के लिये कुलपति जी जयपुर गये थे। मुझे और श्री एस० पी० वोहरा, कन्ट्रोलर आफ एका-उन्ट्स को भी वहां जाने के लिये कहा गया। विश्वविद्यालय पर अधिक व्यय न पड़े हमने विश्व-विद्यालय की वित्त समिति की बैठक दिल्ली में ही बुलाई। ४ दिसम्बर को उक्त बैठक सम्पन्न होने के पश्चात् हम ५ ता० को जयपुर के लिये रवाना हो गये। हम वहां संध्या में पहुंच गये और हमारी निवास व्यवस्था राजस्थान विश्वविद्यालय गैस्ट हाउस में हो गयी। पहुंचने के बाद ही मैंने विश्व-विद्यालय के रजिस्ट्रार श्री एल० पी० वैश्य से सम्पर्क स्थापित किया कि हम अगले दिन अर्थात ६ दिसम्बर को विश्वविद्यालय देखने आयेंगे। अगले दिन हम विश्वविद्यालय पहुंच गये। श्री वैश्य जी हमारी प्रतीक्षा में थे। मैं और श्री वोहरा जी ने श्री वैश्य जी और वहां के डिपुटी रजिस्ट्रार से विश्वविद्यालय संबंधित अनेक प्रश्न किये जिनका ब्यौरा श्री बौहरा जी अलग से कुलपति जी को अपनी रिपोर्ट मे दे रहें हैं। जो महत्वपूर्ण बातें उनसे हुई उनमें परीक्षा प्रणाली, वित्त व्यवस्था एवं छात्रावास की व्यवस्था सम्मिलित थी। राज-स्थान विश्वविद्यालय में परीक्षायें किसी न किसी फेकल्टी की सम्पूर्ण वर्ष होती रहती हैं। १६०० के लगभग शिक्षकेत्तर स्टाफ़ है और १ लाख से ऊपर परीक्षार्थी होते हैं। राजस्थान यूनिवर्सिटी रेजिडेन्शल भी है और एफीलियेटिंग भी। उत्तर पुस्तिकाओं को किस ढंग से वे रखते हैं और प्रश्न पत्र छपवाने की उनकी क्या व्यवस्था होती है, इस संबंध में भी गोपनीय जानकारी प्राप्त की। हमारे विश्वविद्यालय में हमे सरकार से पूरा अनुदान नहीं मिलता जिसके लिये हमे पर्याप्त हानि उठानी पड़ती है। हमने देखा कि यह कठिनाई कभी कभी उन्हें भी होती है, पर राजस्थान विश्वविद्यालय का एक बड़ा भारी रिजर्व फंड है, जिससे इस प्रकार के घाटे की पूर्ति की जा सकती है। यदि हमारे यहां भी इस प्रकार एक रिजर्व फंड हो जाय तो बहुत कुछ यहां की आर्थिक समस्या हल हो सकती है। इस अध्ययन के पश्चात् विश्वविद्यालय के सम्पूर्ण कार्यालय में जाकर एक २ विभाग को देखा गया। फिर उस स्विमिंग पूल को देखा जिसकी काफी प्रसिद्धि है। १००मीटर लम्बा यह स्विमिंग पूल बहुत ही सुन्दर है और यहां प्रत्येक प्रकार के छात्र के लिये तैरने और कूदने की व्यवस्था है। पहले हमारा विचार था कि हमारे विश्वविद्यालय के पास नहर जाने के कारण स्विमिंग पूल की आवश्यकता नहीं है, पर जो तैराकी के भिन्न २ तरीके हैं, वे नहर की बजाय स्विमिंग पूल में ही हो सकते है। अतः विश्वविद्यालय के लिये अब यहाँ उपयुक्त रहेगा कि वह अपने यहाँ भी स्विमिंग पूल का निर्माण करें।

पुस्तकालय भी देखा। ७ ता० को रविवार था। ८ ता० को हम वनस्थली गये जो जयपुर से कुल७० किलोमीटर दूर है। राजस्थान विश्वविद्यालय की अपेक्षा हमें वनस्थली उस प्रकार की संस्था

लगी जैसी कि हमारी संस्था है। वही त्याग और तपस्या जो इस संस्था के बीज रूप में विद्यमान है, वहां पर भी पाई गयी। नीम के पेड़ के नीचे कई वर्षों तक श्रेणियां लगने के पश्चात कच्ची ईंटों की झौपड़ियों का निर्माण हुआ। लगभग २०० हायर सैकेन्डरी स्कूल की छात्रायें इसमें रहती हैं। इनमें बिजली लगी हुई है और चिकित्सा के लिये ५ बेड का छोटा अस्पताल है। कच्चे होस्टलों में भी सफाई देखते ही बनती है। कहीं पर भी तो कूड़ा करकट नहीं। छात्राओं की वेष भूषा स्वच्छ थी और यह देखने को मिला कि उन्हें इन झोंपड़ियों में रहने का ही आनन्द है। इन्हीं के साथ ही कुछ और कच्ची झौंपड़ियां बनी हुई हैं, जिनमें वनस्थली के संस्थापक और वर्तमान प्रशासक निवास करते हैं। हाल ही कुछ वर्षों में स्टाफ के लिये पक्के क्वार्टर बनाये गये हैं, जिनकी संख्या १०० से अधिक है। ११ पक्के होस्टल भी हैं, जिनमे १५०० छात्रायें निवास करती हैं। लगभग १० लाख की लागत से एक पक्के होस्टल का निर्माण भी हो रहा है। वनस्थली का क्षेत्रफल लगभग ६०० एकड़ है।

पुस्तकालय पक्के भवन में है जिसमें ८० हज़ार के लगभग ग्रन्थ हैं। साढ़े पाँच सौ के लगभग विभिन्न विषयों की पत्रिकायें आती हैं। यह उल्लेखनीय है कि वनस्थली में कला के २१ विषयों में और रसायन में पी-एच० डी० तक के अध्ययन की व्यवस्था है। संगीत, नृत्य, कला, शिल्पकारी, नाट्य गृह, विज्ञान पर विशेष बल दिया जाता है। प्राय: सभी भवनों में उच्च कलाकारों द्वारा बनाये गये भित्ति चित्र हैं। जिनका छात्राओं पर कलात्मक एवं सांस्कृतिक प्रभाव परोक्ष रूप से पड़ता रहता हैं। सभी आधुनिक खेलों की व्यवस्था है। पर इसके साथ ही लड़कियां घुड़सवारी भी करती हैं। इस समय वहाँ २२ घोड़े हैं। छोटी २ बालिकाओं ने १, २ और ३ घोड़ों पर जो कृत्य दिखलाये उनसे उनके अद्वितीय साहस का परिचय मिलता है। यदि हमारे विद्यालय के बच्चों में भी घुड़सवारी का शौक पैदा कर दिया जाये तो निश्चय ही छात्रों में एक आत्म विश्वास की भावना उत्पन्न होगी। प्रारम्भ में दो या चार घोड़ों की व्यवस्था की जा सकती है। राजस्थान में पानी की कमी है और यहां पर उसका काफी असर है। फिर भी यहाँ एक स्विमिंग पूल बना हुआ है, जिसकी सफाई के लिये फिल्टर प्लांट भी है। एक बहुत बड़ा कुंआ है। पर इस वर्ष घोर वर्षा होने के कारण वह बैठ गया है। यहां छोटे-मोटे लान के अतिरिक्त पानी के अभाव में हरियाली दृष्टिगोचर नहीं होती।

यहां पर तीन विमान हैं। लड़कियों की उड़ान की ओर भी काफी रुचि है। भारत में सर्वप्रथम एन० सी० सी० का एयर विंग यहीं खुला है। उस दिन सर्वत्र पढ़ाई हो रही थी और ऐसा प्रतीत होता था कि छात्र छात्राएं, अध्यापिकाएं (कुछ अध्यापक भी यहां कार्य कर रहे हैं) एवं कर्मचारी एक सूत्र में बंधकर एक निश्चित ध्येय की ओर अग्रसर हैं। एम०ए० की श्रेणियों के लिये पर्याप्त पक्के भवन नहीं हैं, पर उन्होंने अपनी समस्या का समाधान निकाला हुआ है। कालिज के पक्के भवन के पीछे काफी झोपड़ियां बना दी गयी हैं, जहां पर स्वच्छता के वातावरण में एम० ए० की श्रेणियां लग रहीं थीं। ऐसा दिन शायद ही कोई जाता हैं जिस दिन किसी न किसी विभाग की सांस्कृतिक गतिविधि न हो।

वनस्थली के प्राँगण में एक उद्बोधन केन्द्र है, जहां से प्रात: और सायं प्रार्थना प्रसारित होती

है। इसकी ध्वनि १५ लाउडस्पीकरों द्वारा लगभग डेढ मील लम्बे परिसर में प्रसारित होती है। इसी प्रकार की व्यवस्था हमारे यहां भी हो सकती है। विद्यालय में प्रातः सायं सन्ध्या हवन होता है। यदि वहीं से इस प्रकार की व्यवस्था का प्रसारण हो तो इसका गुरुकुलवासियों पर एवं बाहर के दर्शकों पर बहुत हो अच्छा प्रभाव पड़ेगा। उस दिन गुरु तेगबहादुर की ३००वीं वर्षगांठ के अवसर पर कुछ छात्राएं ग्रन्थ साहब का पाठ कर रही थीं। यह उल्लेखनीय है कि इस संस्था में भारत के सभी धर्मों को मानने वाली छात्राएं शिक्षा ग्रहण कर रही हैं। इस उद्बोधन केन्द्र में एक वेद विद्यालय भी है, जिसमें प्रत्येक वेद में अध्ययन करने पर अलग २ डिप्लोमा दिया जाता है। इस संस्था के संस्थापक श्री हीरालाल जी शास्त्री की समाधि (जिनकी मृत्यु २८ दिसम्बर को गत वर्ष हुई थी) के निकट एक ब्रह्म मंदिर है, जिसकी दीवारों पर विश्व के प्रमुख धर्मों के उपदेश लिखे हैं। धार्मिक सहिष्णुता यहां पराकाष्ठा पर है और किसी भी प्रकार का धर्म या जातिगत भेदभाव प्रतीत नहीं होता। यह भी उल्लेखनीय है कि कई राज्य तो अपने यहां की छात्राओं को नियमित छात्रवृत्ति देते हैं। भारत के सभी राज्यों ने वनस्थली के निर्माण में कुछ न कुछ योगदान किया है।

काफी समय मैंने उनकी आश्रम व्यवस्था देखने में बिताई। छोटे बच्चों के छात्रावास में बहुत सफाई थी। एक विद्यार्थी के पास एक अलमारी और एक तख्त था। दिन के समय सभी छात्राओं की रजाइयां प्रत्येक भवन में स्थित एक कोने में रखदी जाती थीं। और उनके ऊपर एक चादर डाल दी जाती थी। उनके बक्स एक निश्चित स्थान पर एकत्र रख दिये जाते थे, जिन पर छात्राओं का नाम लिखा रहता है। सभी होस्टलों की टट्टियां साथ थीं और स्नानागार भी उन्हीं के साथ हैं। लगभग ६० छात्राओं के लिये ७६ टट्टियां थीं और ८ स्नानागार। होस्टल में किसी भी स्नानागार की टूटी, कोई तख्त या अलमारी टूटी नहीं मिली। टट्टियों में मुझे बहुत सफाई नजर आई। छात्रावासों में ही इनडोर खेलों की सामग्री जुटाई जाती है। भोजन की व्यवस्था भी हमने देखी और कच्ची सब्जियों में भी हमें कोई शिकायत नजर नहीं आयी। अधिकांश होस्टलों में पूरे समय के लिये वार्डन हैं। जो वहीं पर छात्राओं के पास रहती हैं। दोपहर के भोजन के पश्चात् वनस्थली की फिल्म दिखाई गई। और उसके पश्चात् श्री हीरालाल जी शास्त्री की शव यात्रा एवं दाह संस्कार की फिल्म।

चार बजे हमारी भेंट श्री प्रेमनारायण माथुर से हुई, जो कि राजस्थान के भू० पू० शिक्षा एवं वित्त मंत्री हैं। लगभग डेढ घंटा उनसे बात हुई। अन्य बातों के अलावा उन्होंने इसी विषय में जानकारी मांगी कि गुरुकुल को विश्वविद्यालय के समकक्ष की मान्यता मिलने के बाद क्या कुछ प्रगति हुई। यहां पर शिक्षा प्रारम्भ से लेकर अन्त तक निःशुल्क है। इस समय वनस्थली को ५१ लाख रु० का घाटा है, पर उन्होंने दृढतापूर्वक कहा कि वे शीघ्र ही इस धन की व्यवस्था कर लेंगे। इस प्रकार की घाटा पूर्ति अधिकांश में दान से ही की जा सकती है।

११ ता० को हम साढे दस बजे कुलपति जी के साथ जामिया मिलिया पहुंच गये। वहांपर वहाँ के कुलपति जी से बातचीत हुई, वहां के रजिस्ट्रार भी उपस्थित थे। हूजा साहब का विचार था कि गुरुकुल को और जामिया मिलिया को आपस

मे सहयोग करना चाहिये । बातचीत के बाद विचार बना कि भारत और ईरान के संबंध में जो शीघ्र कार्य हों उसमें गुरुकुल और जामिया का सहयोग संभव हो सकता है। आशा है, कि इस दिशा में प्रगति होगी। क्योंकि हमारे प्रचीन भारतीय इतिहास विभाग में एक शोधछात्र ऐसा है जो कि भारत और ईरान के प्राचीन संबंधों पर शीघ्र कार्य कर रहा है । इसके पश्चात् जामिया मिलिया के परिसर को देखा गया । सबसे अच्छी फ़ैकल्टी वहां की शिक्षा की लगी । जामिया मिलिया ने हमारे अनुरोध पर आश्वासन दिया कि जब भी गुरुकुल शिक्षा की फ़ैकल्टी बनायें तो जामिया उसमें पूर्ण सहयोग देने को तैयार है।

आशा है कि जो कुछ सुझाव ऊपर दिये गये हैं, उनके अनुसार गुरुकुल में कार्य करना संभव हो सकेगा ।

उरहार

भानुदन्त शास्त्री 'मधुरेश' एम० ए, एल० टी०

जो फूल सुरभि का उपवन में,
करते कुछ भी संचार नहीं ।
उन फूलों पर आकर भौंरे,,
करते हैं कभी गुंजार नहीं ।।
उनका गुलाब जैसा जग में,
सम्मान कहाँ कब हो सकता ।
जो काँटों में पलकर अपना,,
कर सकते हैं शृंगार नहीं ।।

गर्मी-सर्दी वर्षा आँधी-अंधड़,
में जो मुसका न सके ।
उसको तो स्नेहिल नयनों का,
मिल सकता कुछ भी प्यार नहीं ।।
तज गेह स्वयं, बिंध सूची से,
जो एक सूत्र में बँध न सके ।
'मधुरेश' कभी इस दुनियाँ में,
वह हो सकता उरहार नहीं ।।

नरेन्द्र से युगपुरुष स्वामी विवेकानन्द

प्रो० नरेश मिश्र प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

संसार के इने-गिने महापुरुषों में स्वामी विवेकानन्द का नाम श्रध्दा के साथ युग-युग तक याद किया जाता रहेगा। विश्व के असंख्य ज्ञान-पिपासु स्वामी जी की अमृतमयी, महाशक्तिदायिनी वाणी से प्रेरणा प्राप्त कर जीवन पथ पर साहस के साथ आगे बढ़ते रहे तथा भविष्य में भी प्रेरणा प्राप्त कर बढ़ते रहेंगे। यदि हम स्वामी जी को 'शक्ति-पुंज' की संज्ञा दें तो अतिशयोक्ति न होगी।

बंगाल प्रान्त के प्रसिद्ध नगर कलकत्ता में १२ जनवरी १८६३ को एक बालक ने जन्म लिया। जिसका नाम था नरेन्द्र। बालक के माता-पिता विद्वान्, ज्ञानपिपासु तथा धार्मिक प्रवृति के थे। बाल्यावस्था से ही उसमें कुशाग्र बुद्धि के लक्षण प्रकट होने लग गये थे। होता भी क्यों न' होनहार विरवान के होत चीकने पात।' बालक माता-पिता से अनेक नये- नये अनुभव प्राप्त करता रहा। आरम्भ में उन्हें अंग्रेजी की शिक्षा मिली। उस समय उनका मन अस्थिर रहा करता था। अपना अधिकांश समय खेल-कूद, गाने-बजाने तथा नाटक आदि में लगा देते थे। ऊंची कक्षाओं में पहुँचते-पहुँचते तर्क तथा दर्शन शास्त्र का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया। वे ईश्वर के विषय में ज्ञान प्राप्त तथा उनके दर्शन करना चाहते थे, इसी कारण उनका मन अशान्त रहता था, और अनेक धर्मों का विवेचन प्रारम्भ कर दिया। इस विवेचन तथा तत्सम्बन्धित आदर्शों के कारण ब्रह्म समाज तथा केशवचन्द्रसेन ने इन्हें बहुत प्रभावित किया जो कट्टर हिन्दू धर्म के विरोधी थे। ज्ञान की खोज में ही इनका सम्पर्क स्वामी रामकृष्ण परम हंस से हुआ। प्रारम्भ में ये बहुत कम प्रभावित हुए और उनकी बात को तब तक नहीं मानते थे, जब तक वह तर्क की कसौटी पर खरी न उतर जाय। धीरे-धीरे स्वामी जी का इन पर गहरा प्रभाव पड़ा और तभी से परमहंस जी को उच्च कोटि का संत समझ कर उन्हें अपने गुरु के रूप में स्वीकार कर लिया। परमहंस जी नरेन्द्र से कहा करते थे कि तुम्हें संसार में एक महान कार्य करना है। नरेन्द्र के गुरु स्वामी परमहंस १६ अगस्त १८८६ को अपना क्षण भंगुर शरीर छोड़कर दिवंगत हो गये। मन की अशांति अब और बढ़ गई। भारत का भ्रमण किया। वे हिमालय से कन्याकुमारी तक गये। दक्षिण में समुद्र के किनारे पहुँचकर समुद्र के जल में दूर, दो उठी हुई चट्टानें देखी। तैर कर वहाँ पहुँचे और पूरे भारत का चिंतन किया आज वह चट्टान' विवेकानन्द चट्टान' नाम से प्रसिद्ध है। उसी समय वहीं पर नरेन्द्र ने निश्चय किया कि स्वामी जी की अमृतमयी वाणी को विश्व के कोने-कोने तक फैलाने के लिए जीवन के अन्तिम क्षणों तक लगा रहूँगा।

सन् १८९३ में विश्व के सामने एक विचित्र बात सामने आई। उस वर्ष तक साधन विहीन, अज्ञात पुरुष भारत से शिकागो पहुँच गया। उनका नाम था नरेन्द्र जो अब अपने गुणों के अनुरूप विवेकानन्द के नाम से जाना जाने लगा था उस समय वहाँ पर संसार का प्रथम अन्तर राष्ट्रीय धर्म सम्मेलन हो रहा था। विवेकानन्द शायद इसी विचार से गये भी रहे होंगे कि सम्मेलन में सम्मिलित हो जाऊँ। बड़ी कठिनाइयों के बाद उस युवक को सम्मेलन में हिन्दू धर्म के प्रतिनिधि रूप में बोलने की अनुमति मिली। वहाँ अनेक भारतीय भी इन्हें संदेह की दृष्टि से देखते थे। स्वामी

विवेकानन्द ने जब सम्मेलन के श्रोताओं को 'भाइयो और बहनों' सम्बोधन किया तो इतने से ही श्रोताओं के मन को जीत लिया और वे हर्षोल्लास से कई मिनट वाह करते रहे । स्वामी जी जब यह बताने लगे कि हिन्दू धर्म क्या है– तब वह श्रोताओं के लिए एक नई बात थी, एक नया चमत्कार था । इसके पूर्व किसी ने इस प्रकार समझाने का प्रयत्न नहीं किया था । ऐतिहासिक विकास में हिन्दू धर्म की मौलिक कल्पना क्या है तथा आधुनिक युग में इसका क्या उपयोग है ? इसके साथ हिन्दू धर्म की उदारता और सार्वभौमिकता को समझ श्रोता बहुत प्रभावित हुए । दो, तीन ही भाषणों में उन्होंने सारे श्रोताओं को मुग्ध कर लिया । उन्होंने उन्नतिशील देश वासियों के धार्मिक दृष्टिकोण में एक नये-युग का प्रवर्तन कर दिया । धर्म सम्मेलन में स्वामी जी ने अपने अद्भुत भाषण में श्रोताओं को धार्मिक तत्वों पर विचार करने का एक नया उपाय बताया । श्रोताओं में अधिकतर सनातनी, ईसाई तथा यहूदी आदि थे जो समझते थे अन्य धर्मावलम्बियों की दशा खराब है तथा वे सच्चे मार्ग से भटके हुए हैं । उन्हें भी अपने विचारों के रंग में रंग दिया ।

स्वामी विवेकानन्द का दिव्य संदेश जहाँ-जहाँ पहुँचा वहाँ के विचार शील लोगों की विचार शैली ही बदलने लगी । कहीं-कहीं पर कट्टर विश्वासों तथा पूजाचर्या में छिपे उनके स्वार्थ थे वहां स्वामी का कड़ा विरोध भी हुआ । स्वामी जी का विरोध करने वाले अधिकांश लोग मिशनरी थे । स्वामी जी ने स्पष्ट घोषित कर दिया था कि हमारा उद्देश्य किसी का धर्म परिवर्तन करने का कदापि नहीं है । मैं नहीं चाहता कोई ईसाई हिन्दू बने और न ही कोई हिन्दू या बौद्ध ईसाई बने स्वामी जी अमेरीकियों को आश्चर्य चकित कर देने वाला भारत का सनातन संदेश बराबर देते रहे जो वेदों के समय से चला आ रहा था । वह संदेश था 'एकम् सत् विप्रा बहुधा वदन्ति ।' अर्थात-सत्य केवल एक है, ज्ञानियों द्वारा उसको अनेक प्रकार में कहा गया है । सर्व प्रथम उक्त वैदिक संदेश स्वामी राम कृष्ण परम हंस ने संसार के सामने नये रूप में रखा तो स्वामी विवेकानन्द के विश्वास, तर्क, शक्ति तथा प्रेरणाबल से पाश्चात्य देशों को विचार करने का नया मार्ग मिला ।

स्वामी विवेकानन्द एक तरफ सभी धर्मों के लोगों में वेदान्त की व्याख्या करते, आध्यात्मिक उपदेश देते जिससे उन्हें मार्ग दर्शन मिलता तो दूसरी तरफ जनता की सेवा की भावना भरते थे । आज उन्हीं की देन है कि रामकृष्ण के कार्य कर्त्ता अस्पताल, अनाथालय आदि चला रहे हैं तथा असहायों को सहारा दे रहे हैं । असहाय, दरिद्र, दलित तथा रोगी की सहायता करके धर्म को व्यावहारिक रूप दिलाया । स्वामी विवेकानन्द इनके लिए 'दरिद्र नारायण' शब्द का प्रयोग करते थे । इसका तात्पर्य यह था कि दरिद्र, जो ईश्वर का एक रूप है उनकी सेवा करना हमारा धर्म है । वे स्पष्ट शब्दों में कहते थे कि ईश्वर को बाहर ढूंढना भ्रम है वह तो दरिद्रों में निवास करता है, यह विचार महान उपदेशक तथा समाज सुधारक कबीर के ही समान है–

कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूढ़ै बन माहि ।
ऐसे घटि-घटि राम है, दुनिया देखै नाहिं ।।

स्वामी जी वेदान्त दर्शन के प्रभाव के कारण अस्पृश्यता तथा ऊँच-नीच की भावना से घृणा करते थे । उनका तो विचार है कि 'यत्र जीवस्तत्र शिवः। स्वामी जी इतना ही नहीं अपनी इस बात को पूरी गंभीरता से कहते थे कि पहले माननीय

अधिकारों से गिरे दलित, पतित, व्यक्तियों के स्तर को उठाना होगा, क्योंकि इसके अभाव में उन लोगों में आध्यात्मिक उपदेश नहीं दिया जा सकता है। इससे दूर अमेरिका ऐसे समृद्ध देशों में जन सेवा की आवश्यकता नहीं है। ऐसे लोगों को संसार के सब धर्मों के आदर्श तथा अच्छे उपदेशों पर चलकर सच्चा जीवन प्राप्त करने पर जोर देते थे। संसार के सब धर्मों को समान बताते हुए वे कहते थे कि ईश्वर का प्यारा कोई धर्म विशेष या जाति विशेष नहीं है। इन्हीं सब अपनी मौलिक विशेषताओं के कारण स्वामी जी को विदेश में भी आश्चर्य जनक सफलता मिली। उन्होंने कभी यह नहीं कहा कि हिन्दू धर्म सब धर्मों में श्रेष्ठ है। वे दूसरे धर्मों के स्थायी सर्व मौलिक तत्वों को मुक्तकंठ से स्वीकार करते थे। उनका यह मन्तव्य था कि सभी धर्मों के मौलिक तत्व एक हैं। इसी के साथ उनका यह दृष्टिकोण सबके सामने था कि भारतीय दृष्टिकोण में और विशेष कर वेदान्त में–विरोधी तत्वों को एक करके उनमें सामंजस्य स्थापित करने और मानवतावादी बनाने की जितनी क्षमता है उतनी और, धर्मों में नहीं है। जो व्यक्ति वेदान्त सिद्धान्त को मानकर अधिक ज्ञान प्राप्त करना चाहता था उसे रामकृष्ण स्वाध्याय मंडल का सदस्य बना लिया जाता था किंतु किसी के धर्म में परिवर्तन नहीं कराया जाता था।

स्वामी विवेकानन्द अमेरिका के अनेक नगरों में घूम–घूम कर उपदेश देते रहे। लम्बे समय तक इस कार्यक्रम में व्यस्त रहने के कारण वे थकान का अनुभव कर रहे थे। इस समय वे सेन्ट लारेन्स नदी अमेरिका और कनाडा के बीच के थाउजैण्ड आईलैण्ड पार्क में जो सहस्त्रद्वीप उद्यान के नाम से जाना जाता है, में थे। वहीं एक शिष्य ने विश्राम के लिए आग्रह किया। स्वामी जी विश्राम तथा स्वास्थ लाभ को दृष्टि में रखकर उसके घर पर सात सप्ताह रुके। उनके साथ कुछ अनन्य भक्त तथा शिष्य भी थे। उनके शिष्यों ने एक महान कार्य किया कि स्वामी जी के वहाँ के सारे उपदेशों को 'इन्सपायर्ड टाक्स' नामक पुस्तक के रूप में लिपिबद्ध कर दिया। सुन्दर, मनमोहक तथा आकर्षक वातावरण की वृक्षावली में जहाँ देवदारु ओक आदि के वृक्ष थे और जंगली फूल खिले रहते थे उन्हीं के बीच स्वामी जी बैठकर ध्यान लगाया करते थे।

कौन जानता था कि बालक नरेन्द्र आगे चल कर युगपुरुष स्वामी विवेकानन्द के रूप में अपने अदम्य साहस से यह सिद्ध कर देगा कि कोई भी मनुष्य तुच्छ या घृणित नहीं है। युग पुरुष अपनी अमृत वाणी को विश्व के कोने–कोने तक पहुँचाते हुए ३९ वर्ष की अल्प आयु में ४ जुलाई १९०२ को अपना पार्थिव शरीर छोड़कर दिवंगत हो गये। इस प्रकार इन्होंने अल्प अवस्था में विश्व के धार्मिक तथा दार्शनिक क्षेत्र में जो क्रांति और लहर फैला दी वह युग–युगान्तर तक याद की जायगी। विश्व में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना जगाते हुए दरिद्रनारायण की सेवा का भी पाठ पढ़ाया। स्वामी जी आज शरीर रूप में हमारे साथ नहीं है किन्तु उनकी अमृत वाणी की शिक्षा तथा उपदेश हमारे साथ हैं, इतना ही नहीं आने वाले समय मे युग–युगान्तर तक मानव को प्रेरणा देती रहेंगी। अस्तु !

—०—

महान् नेता सुभाष चन्द्र बोस-विदेश में

ब्र० सुभाष चन्द

भारत भूमि बहुत ही महान् है। इसने ना जाने कितने ऐसे लालों को जन्म दिया जिनकी कहानी उनके महान् कर्त्तव्यों के कारण सदा अमर रहेगी। उसी कहानी के साथ वह महान, वीर, नेता भी अमर रहेंगे। इन महान् सपूतों की श्रेणी में सुभाष चन्द्र बोस का नाम बड़े गौरव से लिया जाता है। उस युवक ने अपने विरोधियों को एक नहीं कई बार पछाड़ा है। उनसे एक नहीं अनेकों मैदानों में जंग किया। और महान् सफलता प्राप्त की है। इस भारत भूमि पर मर कर शहीद होने वालों की संख्या अनगिनत है किन्तु यह युवक जीवित में ही देश के लिए शहीद हो गया। उसकी तथा दृढ़ निश्चय से अंग्रेज सरकार थर थर थी। वह नेता जनता का दुलारा था।

वह महान् नेता भारत भूमि पर रहकर अपने जीवन का एक एक क्षण उसे दासता की वेणी से मुक्त कराने के लिए प्रयत्न करता रहा। यहाँ के बाद विदेश पहुँचकर भी वह चुप न बैठा। यह कहानी कितनी रोचक और उत्साह पूर्ण है। नेता जी की वह कहानी जो विदेश भूमि से सम्बन्ध रखती हुई भारतीयों के हृदय को छू लेती है। २३ फरवरी के दिन बम्बई से विदेश रवाना होने वाले यश०-यशः गंग नामक जहाज से आपके जाने के लिए व्यवस्था की गयी। आप १७ फरवरी को लखनऊ से जबलपुर लाये गये। आप से मिलने के लिए परिवार के व्यक्ति कलकत्ता से आ पहुँचे। २० फरवरी को जेल में परिवार के सब ही सदस्यों से आपकी भेंट हुई, किन्तु अभाग्यवश पिता जी के दर्शन नहीं हो सके, पिता दर्शन की अभिलाषा हृदय में ही रह गयी। बम्बई में आपके ऊपर से नजर बन्दी हटा दी गयी किन्तु पुलिस का दुर्व्यवहार उन्हें किसी से मिलने न दिया और न किसी से बात-चीत ही हो पायी। मार्च में आप स्वीटजरलैन्ड पहुंच गये। आपने भारत से विदेश जाते समय जहाज से ही एक महान् संदेश देश के नाम प्रकाशित कराया—

"एक वर्ष से अधिक समय से मैं अपने प्रान्त से निर्वासित हूँ। इस निर्वासनकी अस्वस्थ परिस्थितियों के कारण मेरा स्वास्थ्य बिलकुल खो गया है। शारीरिक कष्टों के साथ मानसिक व्यथा भी कुछ कम नहीं है। बंगाल से बाहर कैद करने जाने पर भी ध्यान उस ओर था जो प्रान्त में एक ओर से दूसरे ओर तक फैला है। जीवन की वास्तविकता से बहुत दूर अन्धेरी रातों में मेरे लिये शान्ति और सन्तोष की एक ही वस्तु थी वह माता की भव्य मूर्ति, जिसकी पूजा बंकिम और विवेकानन्द से, लेकर देश-बन्धु सरीखे ऋषि-मुनियों ने निरन्तर की थी। यही भव्य मूर्ति मेरी आँखो के सामने नाचा करती है। इसी से मुझे सदा शान्ति और स्फूर्ति पैदा हुआ करती थी। मैं देखा करता था और इस रूप में जिसमें पहले कभी मैंने नहीं देखा था भावी भारत का वह आकर्षितरूप जो मेरे वास्तविकता से भी बढकर था और उस समय की न्यूनता व कठिनाईयों को भुलाने के लिए काफी था।

मुझे जो उत्साह आशा और महत्वाकांक्षा से पूर्ण होने वाला जो स्वप्न था वह था उस संयुक्त बंगाल का जो भारत माता और मानव समाज की सेवा में अपने को न्यौछावर कर देगा। यह वह बंगाल है जो सम्प्रदायवाद और दल बन्दो से ऊपर है। मुसलमानों, ईसाई तथा बौद्धों का एक सा घर है। इस बंगाल का स्वप्न में नित्य प्रति

देखा करता हूँ । मेरे जीवन की एक इच्छा है कि मैं बंगाल के इस स्वप्न को मूर्त रूप दे सकूं । इस महान् कार्य को पूरा करने के लिए हमें अपने सर्वस्व की बाजी लगा देनी होगी । इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए न तो कोई बलिदान मंहगा है और न किसी प्रकार कष्ट सहना ही अधिक है ।"

नेता जी विदेश पहुँच कर अपना कार्य आगे बढ़ाते रहें । २५ मार्च को वीयना के लार्ड मेंयर से आपकी भेंट हुई । विठ्ठल भाई पटेल इन्हीं दिनों स्वास्थ्य सुधार के लिए यूरोप गये हुए थे । वियाना में पहली मई को दोनों ने एक वक्तव्य प्रकाशित कर कहा "समय आगया है कांग्रेसके संगठन में मौलिक परिवर्तन की आवश्यकता है । यह परिवर्तन नये नेताओं को ध्यान में रखकर करना चाहिए । २७ मई १९३३ ई० जो सुभाष जी के पत्रव्यवहार के उत्साह से भारत में एक लेखक परिषद की स्थापना हुई । जिसमें श्री रवीन्द्र नाथ टेगौर, राधा कृष्णन और शरद चन्द्र चटर्जी सम्मलित हुए । १०,११ जून को लन्दन में होने वाली भारतीय परिषद के आप सभापति चुने गये, लेकिन सरकार ने इंग्लैण्ड जाने की अनुमति नहीं दी । आपकी अनुपस्थिति में आपका लिखा हुआ भाषण पढ़कर सुनाया गया । सुभाष बाबू का यह भाषण सरकार को खटकने लगा । १६ जून को जब्त कर लिया गया । भारत आने पर प्रति-बंध भी लगा दिया गया । उधर उनके सहयोगी पटेल जी का स्वास्थ्य प्रति-दिन खराव होने लगा । सुभाष बाबू ने उनकी खूब सेवा की । लेकिन विधि विधान को कौन रोक सकता है । २२ अक्टुबर को सुभाष की उपस्थिति में ही पटेल जी का देहान्त हो गया । पटेल जी जिस समय वियाना में थे उस समय ही अपनी सम्पत्ति की वसीयत सुभाष बाबू के नाम कर दी थी । वसीयत में उन्होंने लिख दिया था कि मेरी सम्पत्ति का उपयोग सुभाष चन्द्र बोस और उनके साथियों द्वारा अथवा उनके आदेश द्वारा भारत की राजनैतिक उन्नति के लिए विशेष करके विदेश में भारतीय आन्दोलन के विस्तार के लिए किया जाये । इस विषय को लेकर के बोस बाबू और ट्रष्टियों के बीच मत भेद रहा । एक लम्बे आन्दोलन के बाद भी धन सुभाष जी को न मिल सका । अपने सहयोगी पटेल की बिमारी अवस्था में उनकी सेवा में लगे रहने के कारण सुभाष जी के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ा । वातावरण परिवर्तन को ध्यान में रखकर हंगरी रूमानिया व बलगारिया आदि स्थानों का भ्रमण किया । नेता जी जहाँ २ गये भारत का प्रचार करते रहें । आपने **विठ्ठल भाई पटेल के अन्तिम दिन**' नामक पुस्तक भी लिखी । नेता जी की कारवाईयों से अंग्रेज परेशान रहते थे । सरकार को सदा भय रहता था-विदेश में रहकर आपकी लेखनी पूर्ण सशक्त रही इसी के परिणाम स्वरूप अगस्त १९३४ **इण्डियन स्ट्रगल** नाम की पुस्तक प्रकाशित हुई । इस पुस्तक में भारतीय स्वाधीनता संग्राम के महत्वपूर्ण १३ वर्षों का इतिहास है ।

इस पुस्तक को इतना महत्व मिला कि इसका जर्मन, फ्रेच' इटालियन आदि भाषाओं में इसका अनुवाद प्रकाशित हुआ । भारत की अंग्रेजी सरकार नेता जी की हर कार्रवाईयों पर ध्यान रखती थी । सरकार को उनके कार्यो से भय बना रहता था । इसी कारण इस पुस्तक को भी जप्त कर लिया ।

इस प्रकार वह महान् सेनानी जो जीवित ही मात्र भूमि के लिए शहीद हो गया, के दिखाये हुए मार्गों पर चलना हम भारतीयों का सबसे बड़ा कर्त्तव्य है ।

—o—

आचार्य सम्मेलन, वर्धा

परधाम आश्रम, पवनार : १६, १७, १८ जनवरी १६७६

आचार्यों का अनुशासन

(आचार्य विनोबाजी के २५ दिसम्बर, १६७५ को दिये गये भाषण के कुछ अंश)

"इसके आगे दो-चार शब्द में कहूँगा अनुशासन के बारे में और फिर मैं समाप्त करूँगा। 'अनुशासन-पर्व' शब्द महाभारत का है। परन्तु उसके पहले वह उपनिषद् में आया हुआ है। प्राचीन काल में—आचार्यात् हि एवं विद्या विदिता साधिष्ठा प्रापतीति—आचार्यों के पास जाकर बारह साल विद्याभ्यास करने का रिवाज था। तो उस सिलसिले में वहां जिक्र आया है। तैत्तिरीय उपनिषद् में है। प्राचीनकाल का रिवाज-आचार्यों के पास जाकर विद्या प्राप्त करना, बारह साल रहकरके। इसके अनुसार राम और कृष्ण भी गये थे। राम वशिष्ठ के आश्रम में गये और कृष्ण भी साँदीपनि के पास गये। कब गये कृष्ण ? जब वे दुनिया में मशहूर हो चुके थे और कंस आदि का वध हो गया था। इतने प्रसिद्ध होने के बाद भी एक दफा गुरु के पास जाना ही चाहिये सोचके वे साँदीपनि के पास गये। प्राचीनकाल में रिवाज था, बारह साल ब्रह्मचर्यपालन करने के बाद जो गृहस्थाश्रम में प्रवेश करना चाहते थे वे गृहस्थाश्रम में जाते थे, और जो हमेशा के लिये ब्रह्मचारी रहना चाहते थे वे गुरु के साथ ब्रह्मचर्यपूर्वक जीवन बिताते थे। जो घर जाना चाहते थे उनको आचार्य अन्तिम उपदेश देते थे, **'सत्यं वद, धर्मं चर'** इत्यादि। बहुत प्रसिद्ध है वह। उसका यहां विस्तार करने की जरूरत नहीं। उसके अन्त में, उपनिषद के अन्त में जिक्र आया है, **एतत् अनुशासनम्**। यह है **अनुशासन। एवं उपासितव्यम्**। इस अनुशासन पर आपको जिन्दगी भर चलना है। तो आचार्यों का है अनुशासन और सत्तावालों का होता है शासन। शासन और अनुशासन में जो फर्क है, वह हमें अच्छी तरह समझ लेना चाहिये। और मैं कोशिश करूँगा थोड़े में समझाने की। अगर शासन के मार्गदर्शन में दुनिया रहेगी तो दुनिया में कभी भी समाधान होने वाला नहीं। क्या होगा ? शासन के मार्गदर्शन में क्या होगा ? बंगला देश की समस्या सुलझ गई, ज़ाहिर हो गया। फिर सुलझने के बाद उलझ गई। सुलझी हुई उलझी। यह तो आपने तमाशा देखा भारत में। वही दुनियाभर में है। इस्रायल की समस्या सुलझ गई। इस्रायल की समस्या उलझ गई। यह दुनिया भर में चल रहा है। क्या होता है ? हर जगह शासन में लोग जाते हैं, उनके मार्गदर्शन में काम करते हैं, कहीं कत्ल होते हैं कहीं खून होता है। किसी देश के मुख्यमंत्री को मार डाला, किसी देश के राष्ट्राध्यक्ष को मार डाला। यह रोजमर्रा खबरें प्रेस में आया करती हैं। और ऐसे कितने शासन चलते हैं दुनियाभर में ? मुझे ठीक याद नहीं है, लेकिन 'ए' से लेकर 'जैड' तक। अफगानिस्तान से आरम्भ होता है और झाबिया तक चलता है। मेरा ख्याल है, ३००-३५० शासन होंगे। और उनके यहां गुटबन्दी होती है। ये उस गुट में आ गये, वे उस गुट में आ गये और ये जो बड़ी ताकतें हैं, अमरिका इत्यादि, वे इन गुटबन्दियों का उपयोग करती हैं। कभी इस गुट को समर्थन देती हैं। इस तरह से दुनियाभर में सब तरफ असन्तोष, मारकाट जारी है। और ये बड़ी शक्तियां क्या करती हैं ? सब तरफ थोड़ा-थोड़ा असन्तोष रहे, ऐसी कोशिश करती हैं। एक बाजू जितनी पावर (शक्ति) है, उतनी दूसरी बाजू पावर करना। मान लीजिये हिन्दुस्तान में एक शक्ति है, तो कोशिश करेंगे वे बड़े राष्ट्र

कि पाकिस्तान को भी उतनी शक्ति दी जाय। शक्ति यानी हथियार वगैरह देना जो लेटेस्ट–उत्तम से उत्तम हथियार हैं. वे देना। दोनों बाजू 'बैलेन्स ऑफ़ पावर' (शक्ति का संतुलन) हो जायगा, ऐसा कहते हैं। 'बैलेन्स ऑफ पावर' से दुनिया त्रस्त हो गई है। यह रोजमर्रा हम पढ़ते हैं। अब यहां तक बात आ गई है 'बैलेन्स' ऑफ पावर' की, कि 'बैलेन्स ऑफ़ इम्बैलेन्स' (असंतुलन का संतुलन) भी वे करना चाहते हैं। एक जगह जितना दुःख है उतना दुःख दूसरी बाजू होना चाहिये, तब दुनिया में शांति होगी ऐसा कहते हैं। एक बाजू जितना सुख है उतना सुख दूसरी बाजू पैदा हो, यह मामूली बात है। परन्तु एक बाजू में जितनी विषमता है, जितना दुःख है उतनी विषमता, उतना दुःख दूसरी बाजू में पैदा होना चाहिये, तो 'बैलेन्स ऑफ इम्बैलेन्स' हो गया। यहां तक वे लोग चले गये हैं। शासन के आदेश के अनुसार चलने वालों की यह स्थिति है। उसके बदले अगर आचार्यों के अनुशासन में दुनिया चलेगी तब तो दुनिया में शान्ति रहेगी। **आचार्य होते** हैं, जिनका बाबा ने वर्णन किया है, गुरु नानक की भाषा में, निर्भय, **निर्वैर** और बाबा ने जोड़ दिया है निष्पक्ष। और जो **कभी अशान्त होते नहीं। जिनके मन में क्षोभ कभी नहीं होता। कभी उपवास करना, कभी किसी पर दबाव डालना, इत्यादि काम वे जरा भी नहीं करते। हर बात में शान्ति से सोचते हैं। और जितना सर्वसम्मत होता है विचार, उतना लोगों के सामने रखते हैं**। उस मार्गदर्शन में अगर लोग चलेंगे तो लोगों का भला होगा और दुनिया में शान्ति होगी। यह अनुशासन का अर्थ है, आचार्यों का अनुशासन। ऐसा आचार्यों का अनुशासन अगर दुनिया में चलेगा तो दुनिया में शान्ति होगी। लेकिन दुनिया की बात छोड़ दीजिये, फिलहाल भारत तक ही सीमित रहकर बोलिए। भारत बहुत बड़ा देश है, पन्द्रह भाषाओं का देश है। इस वास्ते भारत में भी आचार्यों का अनुशासन अगर लोगों को मिलता रहे और उस अनुशासन के मार्गदर्शन में प्रजा अगर चले तो प्रजा में शान्ति रहेगी, इसमें कोई शंका नहीं हो सकती। और वह जो मार्गदर्शन देंगे आचार्य, उनका अनुशासन उसका विरोध अगर शासन करेगा तो उसके सामने सत्याग्रह करने का प्रसंग आयेगा। लेकिन बाबा को पूरा विश्वास है कि यहां का शासन ऐसा कोई काम नहीं करेगा जो आचार्यों के अनुशासन के खिलाफ होगा। इस वास्ते ऐसा सत्याग्रह का मौका भारत में आयेगा नहीं।

यह मेरा अनुशासन-पर्व का अर्थ आपके सामने मैंने रखा, थोड़े में। आप समझ गये होंगे।"—

सूर्य–वन्दना

भानुदत्त : त्रिपाठी 'मधुरेश' एम० ए०, शास्त्री, एल० टी०

नमाम्यहम् दिवाकरं भजाम्यहम् प्रभाकरम्।
न जानें क्व पलायिता,
निरीक्ष्य त्वां यामिनी।
सरोवरेषु भ्राजिता,
सुपद्म–राजि कामिनी।।
विहंग वृन्द कूजिते, समागतं क्षपाहरम्।
नमाम्यहम् दिवाकरं भजाम्यहम् प्रभाकरम्।।

करानुपेत्य दिनमणे:
प्रमोदिता वनस्थली।
करोति कृत्य–दैनिकं,
अहो मुनीन्द्र मण्डली।।
समस्त देव दानवा: स्मरन्ति यं कृपाकरम्।
नमाम्यहम् दिवाकरं भजाम्यहम् प्रभाकरम्।।

सुभाष का अन्तर्द्वन्द्व

माँ
मेरे हृदय में
भाव इस प्रकार जागृत होते हैं
जैसे आकाश में बेमौसम बादल ।
माँ,
बताओ तो,
शिक्षा का उद्देश्य क्या है ?
माँ, तुम जीवन में
मुझे किस क्षेत्र में
कार्य करता हुआ देखकर प्रसन्न होगी ?
क्या जज, मैजिस्ट्रेट, बैरिस्टर
अथवा किसी बड़े शासकीय पद पर
मेरे नियुक्त होने से तुमको
सर्वाधिक प्रसन्नता होगी ?
जब धनकुबेर समझकर,
लोग मेरी पूजा करेंगे,
तब तुम्हें आनन्द मिलेगा ?
अथवा दरिद्र होकर भी
मैं विद्वान् और गुणी व्यक्तियों द्वारा
सम्मानित होऊँगा
तब तुम्हें प्रसन्नता होगी ?

सुभाष का बाबू रुदन

भगवान ने
इस कलियुग में,
एक नई सृष्टि का सृजन किया है ।
यह सृष्टि बाबू सम्प्रदाय है ।
प्रभु के दिये हुये दो पैर हैं,
किन्तु हम २०-२२ कोस पैदल नहीं चल सकते,
क्योंकि हम बाबू हैं ।
हमारी दो बाहें हैं,
परन्तु शारीरिक श्रम नहीं कर सकते,
क्योंकि हम बाबू हैं ?
हम सब काम नौकरों से करवाते हैं,
हाथ पैर चलाने में हमको कष्ट होता है,
क्योंकि हम बाबू हैं ।
गरम देश में जन्म लेकर,
हम गरमी सहन नहीं कर सकते ।
साधारण ठंड से
हम इतने घबराते हैं
कि सारे शरीर पर
वस्त्रों का बोझ
लाद लेते हैं,
क्योंकि हम बाबू हैं ।
हम मानवता से दूर हैं–
मनुष्य के रूप में
निरे पशु हैं –
पशु से भी अधम हैं ।

('शीष-पुष्प' नामक पुस्तक से साभार)

——*——

सम्पादकीय टिप्पण्यः

पाठकाः ससम्मानं निवेद्यन्ते यत् गुरुकुल पत्रिकायाः प्रत्येकोऽङ्कः कमपि महापुरुषमुद्दिश्य तन्नाम्ना लेखादिना वा पुरस्कृत्य प्रकाशयिष्यतेऽस्माभिरिति विनिश्चयो विहितः । अस्मिन् मासि श्री ला० लाजपतराय सुभाषबोस स्वामि विवेकानन्दादिमहापुरुषा अस्मिन्नङ्के स्थानमलभन्त । एते सर्वे महापुरुषाः स्वदेशभक्ता अग्निकल्पाः शूरवीराः साधुवक्तारः परमतेजस्विन एवं नानाविध गुणानां निधय आसन् । 'अग्निना अग्निः समिध्यते' इति मन्त्रवचनात् परमतेजस्विनो दिव्यप्रभावतो निर्भीकसंन्यासिनः स्वामिदयानन्द महर्षेः सम्पर्कादियं ला० लाजपतरायप्रदीपोऽपि भृशं प्रजज्वाल । श्री सुभाषचन्द्रबोसः जन्मनैव संस्कारप्राबल्यात् स्वदेशस्वभाषास्वसंस्कृतिसंरक्षणक्षमो दासतापङ्कनिमग्नाया मातृभूमेः समुद्धारायाप्रतिमं त्यागं महान्तञ्चाध्यवसायं व्यदधात् । परमहंसशिष्यः स्वामिविवेकानन्दमहाभागो विदेशे विशेषतोऽमेरिकादेशे भारतीयसंस्कृतेः धर्मस्य च माहात्म्यं सर्वातिशायिरूपं च प्रकटीचकार । भारतीयसंस्कृतिधर्मयोः प्रथमो दूतः स्वामिवर्य एवासीदिति मन्तव्यम् । एतेषां भृशं प्रेरणाप्रदं जीवनं स्मारं स्मारं वयं कातंज्ञ्यं प्रकटीकुर्मः ।

'२० सूत्री' पूर्त्यैयुवशक्तिरवलम्बनीया

सर्वकारस्य '२० सूत्री' कार्यक्रमः साफल्यनिःश्रेणिं प्राप्नुयादिति युवशक्तिरस्माभिरवलम्बनीया । युवशक्तिधारायामेतादृशः प्रबलो वेगो भवति यत् अखिलानप्यवरोधान् मार्गपतितान् अनायासेना पसारयन्ति । न तं वेगं रोद्धुं कोऽपि समर्थः । भ्रष्टाचारात्याचारादिदोषाः, तन्द्रालस्यादिदुर्गुणाः सहसा पलायन्ते यदा युवशक्ति रुद्गता भवति । अस्य कार्यक्रमस्य साफल्यायैतत् सुनिश्चितं यत् पूर्वं शासकानां तदनन्तरं प्रजानाँ च विचारेषु कार्यव्यवहारेषु महत् परिवर्तनमपेक्ष्यते । अतः सर्वैर्नेतृभिर्देशस्योद्धारं कामयमानैरन्यैः प्रजाजनैः सुविचार्य सम्यक् परिवर्तनं विधातव्यम् ।

--भगवद्दत्तो वेदालंकारः ।

"गरीबी जो ऐतिहासिक तौर पर आबादी की अधिक वृद्धि का प्रमुख कारण है । जरूरत इस बात की है कि एक ऐसी समग्र दृष्टि अपनाई जाए जो वातावरण के साधनों और व्यक्ति और उसके वातावरण के तारतम्य को इतना सबल बना दे कि इस पृथ्वी पर जो भी व्यक्ति जन्मा है, उसे अपने व्यक्तित्व के सम्पूर्ण विकास के लिए आवश्यक भौतिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक साधन मिल सकें । इसलिए जनसंख्या संबंधी नीति सम्पूर्ण सामाजिक विकास के कई आधारभूत साधनों में एक महत्वपूर्ण साधन है और यह तब तक सफल नहीं हो सकती जब तक कि कुछ अन्य जरूरी नीतियाँ और कार्यक्रम अधिक बच्चों के जन्म के मूल भूत कारणों को बदलने में सफल नही हो जाते । इसलिए हमारी सम्मति में सर्वांगीण विकास ही गर्भनिरोध का सर्वोत्तम साधन है ।"

--कर्णसिंह
स्वास्थ्य मन्त्री भारत सरकार

साहित्य-समीक्षा

कल्याण

[श्री भगवत्कृपा – अङ्क]

सम्पादक––स्वामी रामसुखदास,

प्रकाशक––मोतीलाल जालान, गीता प्रेस, गोरखपुर

मूल्य–भारत में १२)

विदेश में २०)६०

गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित कल्याण पत्र के प्रायः सभी अंक भारतीय संस्कृति विशेषकर प्रभुभक्ति से ओत प्रोत होते हैं और उसके विशेषांक अपनी एक अनूठी विशेषता रखते हैं।

इस बार का भगवत् कृपा अंक तो विशेष महत्त्वशाली है। हम पुत्रों पर उस परम पिता प्रभु की कृपा वृष्टि निरन्तर हो रही है। पुत्र जैसे अपने पिता का पल्ला पकड़ लेता है उसी भांति हमें उस भगवान का पल्ला पकड़ लेना चाहिये। इस भवसागर से पार होने का एक यही मार्ग है। इस अंक में प्रायः सभी लेख पठनीय हैं। मुस्लिम सन्तों ने भी किस भांति उस प्रभु पर सर्वस्व अर्पण कर रखा था यह भी इस अंक में प्रदर्शित हुआ है। इसी प्रकार यहूदी ईसाई आदि मतों से भी भगवत्कृपा की झांकी संकलित की गई है। हम इस उत्तम विशेषांक के प्रकाशन के लिये सम्पादक आदि का हार्दिक धन्यवाद करते हैं।★

पञ्चाम्बुकेसरी लाला लाजपतरायः

(२८ जनवरी १८६५–१७ नवम्बर १९२८ ई०)

वक्तारं प्रतिभान्वितं हि नितरां, ओजस्विनं स्फूर्तिदं,
देशस्योन्नतये सदैव निरतं, कष्टेषु घोरेष्वपि।
अस्पृश्यत्वनिवारणार्थमनिशं, यत्नं दधानं परं,
लालालाजपतं कुशाग्रधिषणं भक्त्या नुमस्तं वयम्॥

निर्भीकः सततं प्रयत्ननिरतो योऽत्र स्वराज्याप्तये,
कार्यं यः प्रवसंश्चकार परमं, धीमान् विदेशेष्वपि।
यस्यौजस्विगिरा विपक्षिनिवहो नित्यं चकम्पे भृशं,
लालालाजपतं कुशाग्रधिषणं, भक्त्या नुमस्तं वयम्॥

आसीद् यः प्रथितः समस्तभुवने पञ्चाम्बुसत्केसरी,
जज्वालोरसि यस्य पापदहनः स्वातन्त्र्यवह्निः सदा।
आङ्गलानां निशितैरतीव विषमैर्यष्टिप्रहारैः क्षतं,
लालालाजपतं कुशाग्रधिषणं, भक्त्या नुमस्तं वयम्॥

एको मेऽत्र गुरुस्तपोनिधिदयानन्दो मनीषी महान्,
माता चार्यसमाजनाममहिता, स्वातन्त्र्यसत्स्फूर्तिदा।
इत्थं यो हि जुघोष भक्तिसहितो निर्भीक नेत्रग्रणीः,
लालालाजपतं कुशाग्रधिषणं, भक्त्या नुमस्तं वयम्॥

आचार्यः धर्मदेवो विद्यामार्तण्डः

छात्रों में अनुशासनहीनता

बलभद्र कुमार

छात्रों में अनुशासनहीनता की बात बहुधा चला करती है। जरा ठंडे दिल से सोचें कि छात्रों में अनुशासनहीनता कैसे पैदा होती है। क्या हम बड़े लोग छात्रों को वांछनीय नेतृत्व प्रदान करते हैं? छात्रों में असीम शक्ति होती है, बल होता है, प्राण होता है कुछ कर गुजरने की इच्छा होती है। परन्तु वह वानर समान होते हैं। जैसा बड़ों को करता देखते हैं कर डालते हैं। उनको यह तो समझ नहीं आता कि वे क्या कर रहे हैं। यही समझ आता है कि कुछ न कुछ कर जरूर रहे हैं। यदि हम उन्हें जलूस निकालना सिखलायें, तो वह जलूस निकालेंगे। यदि हम उन्हें नारा-बाजी सिखलायें तो वे नारे लगायेंगे। यदि हम उन्हें सड़क बनाना सिखलायें तो वे सड़क बनायेंगे। संगीत सिखलायें तो वे गाना गायेंगे। लैबोरेट्री में रिसर्च करना सिखलायें तो वे रिसर्च करेंगे। उद्यान लगाना सिखलायेंगे तो उद्यान लगायेंगे। अतः यह हम पर लाजिम हो जाता है कि हम उनका सही नेतृत्व करें। नारेबाजी और तोड़-फोड़ के बजाय ठोस काम में लगावें। उन्हें शरीरोन्नति, मानसिक विकास, चरित्रगठन की ओर प्रेरित करें। दरिद्रनारायण की सेवा, इर्द गिर्द के वातावरण के सुधार की ओर प्रेरित करें। परन्तु ऐसी प्रेरणा हम उन्हें तभी दे पायेंगे, जब हम स्वयं उस ओर प्रेरित होंगे। क्योंकि बच्चे, जैसा कि ऊपर कहा है वानर समान नकलची होते हैं।

हमें सोचना है कि हम आज कहां हैं? हमारा देश आज कहां है? हमें आगामी २५ वर्षों में कहां पहुंचना है? हमारे सामने सन् २००० का क्या लक्ष्य है? आज हमारे सामने क्या समस्यायें हैं? कल को क्या पैदा होंगी? क्या हम युवकों को, छात्रों को, स्वयं को उन समस्याओं से उलझने के लिए, उन पर विजय पाने के लिये तैयार कर रहे हैं?

आयंस्टाईन ने कहा है कि ज्ञान से कल्पना अधिक जरूरी है। हमें स्वयं से पूछना होगा कि क्या हम बच्चों को अक्षरज्ञान देने के अतिरिक्त उनकी कल्पनाशक्ति को उजागर करने के लिये कुछ कर रहे हैं। अक्षरज्ञान तो सभी पाठशालाओं में मिलता है। यदि हमने भी अक्षरज्ञान ही दिया तो गुरुकुल का विशेष महत्त्व क्या हुआ? हाँ, यदि हम बच्चों की कल्पनाशक्ति को उजागर कर पायें तो वह अपना व देश का रास्ता स्वयं ही निकाल लेंगे। वरना हमारे ज्ञान के कोष धरे रह जायेंगे। आखिर यह ज्ञान कोष काशी के पण्डितों के पास भी तो थे। पर उन दिनों देश रसातल तक पहुंच गया था। दयानन्द ने उस निधि को परखा, जाँचा। अन्धकार के कूप से बाहर निकाला और आर्य समाज के द्वारा उसने देश में क्रान्ति की ज्वाला प्रज्वलित की। आज उसके प्रोग्राम को देश का सारा प्रबुद्ध वर्ग स्वीकार करता है।

लेकिन जब तक उस पर अमल न होगा, सब भाषणबाजी बेकार है। वेद क्या कहता है?

इन्दु ऋतुं न आभर पिता पुत्रेभ्यो यथा।
शिक्षाणोऽस्मिन् पुरुहूत यामनि जीवा ज्योतिरशीमहि (ऋ० ७–३२–४६)

हे प्रभो, तू हमारी नस नस में कर्म को भर दे, हमें कर्म की शिक्षा दे। ताकि हम जीवन-

संग्राम में जीवित जाग्रत रहते हुये ज्योति को प्राप्त कर सकें।

भद्रं नो अपि वातय मनो दक्षमुत क्रतुम्।
(ऋ० १०-२५-१)

हे प्रभो, तू हमारे अन्दर उत्साह, बल और कर्म को फूंक दे।

हमें स्वयं के अन्दर एवं बच्चों के अन्दर उत्साह, बल और कर्मशक्ति को फूंकना होगा। इसके लिए हमें क्लासरूम से बाहर निकलना होगा। आसमान के नीचे, खुले मैदानों में उतरना होगा। नदियों में तैरना होगा, पहाड़ों पर चढ़ना होगा, आकाश में, अन्तरिक्ष में उड़ना होगा। व्यायाम करना होगा, सामूहिक खेलों का प्रबन्ध करना होगा। बच्चों में टीम स्पिरिट भरना होगा। पर यह सब कुछ तभी हो सकता है जब पहिले हम स्वयं में यह गुण पैदा करें। हमें अपने अन्दर झांक कर देखना होगा कि हम में यह गुण विद्यमान हैं या नहीं।

कुछेक लोग इस कार्यक्रम का विरोध करेंगे। उन्हें स्वयं की जांच करनी होगी कि वह इसका विरोध कहीं प्रमाद के कारण तो नहीं कर रहे हैं। ऐसे कार्यक्रम को उपयोगी देखते हुये ही तो ऋषि मुनियों ने जंगलों में जाकर ऋषिकुल, गुरुकुल स्थापित करने की परिपाटी डाली थी। इसी विचारधारा से प्रभावित होकर ही तो स्वामी श्रद्धानन्द ने गंगा के पार गुरुकुल कांगड़ी को स्थापित किया था। अभी हाल ही में जर्मनी में एक प्रयोग हुआ है। उसका वर्णन भी यहां रेलेवेन्ट होगा। ल्यूबैक के व्याकरण स्कूल को शिक्षा-मंत्रालय का आदेश पहुंचा कि अपने बच्चों को चार सप्ताह के लिये बहिर्मुखी शिक्षा के कैम्प में भेजेंगे। हेडमास्टर ने सोचा कि इससे तो समय नष्ट ही नष्ट होगा, पर वह आदेश की अवहेलना भी नहीं कर सकता था। चुनाचे उसने अपने विद्यार्थियों में से पढ़ने लिखने में कम प्रवीण विद्यार्थियों को चुनकर कैम्प में भेज दिया। जब यूनिवर्सिटी की अन्तिम परीक्षा हुई। तो वह बहिर्मुखी ग्रुप दूसरे ग्रुप को मात कर गया। बाहर खुले स्वस्थ वातावरण में रहने से उन बच्चों में प्राणशक्ति का संचार हुआ। उसके जोर पर उन्होंने किताबी कीड़ों को पछाड़ दिया।

जीवनयापन की कला बहुत कठिन है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य यही तो है कि बच्चे जीवनयापन की कला सीखें। यही गुरुकुल का उद्देश्य है। गुरुकुल में ऐसी शिक्षा दीक्षा मिले जिससे बच्चे उत्साह से, पराक्रम दिखाते हुये जीवनयापन कर पायें। अप्रमादी हों, तेजस्वी हों, यशस्वी हों। पर ? पर ? पर ? यह सब तभी होगा जब गुरुजन उनके आगे सही मिसाल कायम करेंगे। क्या हम इस परीक्षा में उत्तीर्ण होंगे ? हमारे कुल के बच्चे और अभिभावक इस प्रश्न के उत्तर की परीक्षा में हैं। उनकी तसल्ली शब्दों द्वारा नहीं होगी, केवल हमारे दैनिक व्यवहार द्वारा होगी।

—००—

हम चाहते हैं कि हमारे बच्चों को एक ऐसा संसार मिल सके, जो कि हमारे मौजूदा संसार से कहीं ज्यादा खुशहाल और खूबसूरत हो। हर माता-पिता यही चाहते हैं और नियोजित विकास का उद्देश्य भी यही है।"

—इन्दिरा गांधी

आर्यसमाज शताब्दी समारोह में

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का योगदान

शताब्दी समारोह दिवसों में टी० वी० पर शोभायात्रा की कई बार झलकियां दिखाई गईं एक झलकी में तो शोभायात्रा में गुरुकुल का योगदान स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो रहा है।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री बलभद्र कुमार ने मारिशस से पधारे आर्यसमाज के नेता और वहां के कृषि मन्त्री श्री तिलक से टी० वी० पर साक्षात्कार किया, जिसमें आर्यसमाज के प्रभाव पर व्यापक रूप से चर्चा की गई। यह इन्टरव्यू २७ जनवरी को प्रसारित किया गया।

शताब्दी शोभा यात्रा का नेतृत्व करते हुये-डा० गंगाराम, कु०स० (दुपट्टा डाले) दांई ओर डा० अनन्तानन्द बाईं ओर पं० धर्मवीर विद्यालंकार, पीछे धर्म पत्नी डा० गंगाराम जो सम्पूर्ण शोभायात्रा में साथ रहीं

स्काउटों के साथ एन०सी०सी० के अफसर। सीटी लिये खड़े हैं विद्यालय के व्यायाम प्रशिक्षक
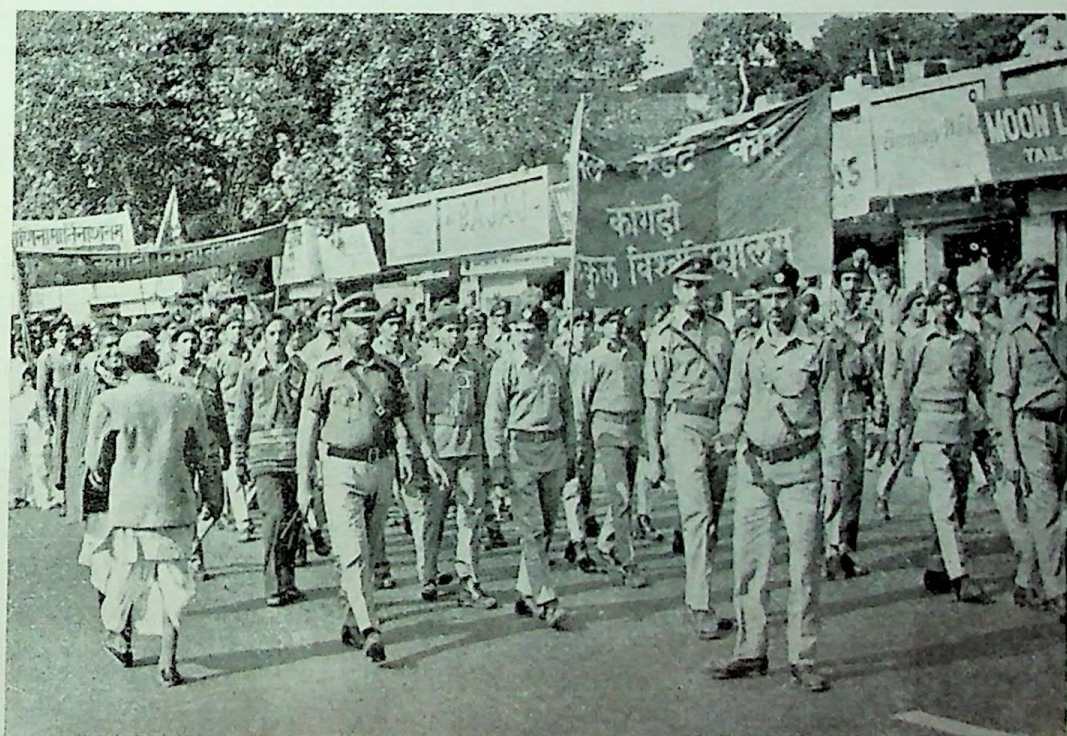
शोभायात्रा में एन० सी० सी० के केडेट्स मार्च-पास्ट करते हुये

गुरुकुल समाचार

महावीर 'नीर' विद्यालंकार, एम.ए. (हिन्दी व इतिहास)

ऋतु रंग

१९७५ वर्ष अपने अन्तस् में राष्ट्र की ही नहीं अपितु गुरुकुल की भी अनेक घटनाओं को समेटे बीत चला। यह वर्ष वस्तुतः उखड़ाव एवं अस्थिरता का रहा। १९७६ वर्ष का शुभारम्भ स्वर्णिम आकांक्षाओं और अभिलाषाओं के साथ हुआ। एक ओर भारतीय क्षितिज पर कांग्रेस के नूतन कार्य-क्रमों का श्रीगणेश 'कामागाटामारु' नगर, पंजाब में हुआ तो दूसरी ओर आर्यसमाज के विशाल संगठन से भारत की राजधानी 'दिल्ली' चमत्कृत हो उठी। नये वर्ष की सुनहरी रश्मियों से आलोकित हो, गुरुकुल का वातावरण भी सौख्य समृद्धि, तथा स्थिरता की नवीन धाराओं में उद्भूत हो उठा। ऋतु ने भी अपना रंग खूब जमाया। ओस और पाले से नहाये, पत्र और पुष्प विहीन वृक्ष ऐसे प्रतीत होने लगे जैसे कोई लुटा-पिटा, भय विकम्पित व सिकुड़ा सा भिखारी खड़ा हो। कड़ाके की ठण्ड शरीर के जोड़ों को भी छूने लगी। वायु के ठण्डे-ठण्डे झोंके शीत-लहर को और प्रकुपित करते रहे। कुल में सर्वत्र हलका सा कुहासा छाया रहा। दूर की वस्तुएं धूमिल सी दिखाईं देती रहीं कुलीय गगन पर मेघ-समूह यद्यपि मास के प्रारम्भ से ही छाया रहा फिर भी मास के मध्य व अन्त में वर्षा की बौछार पड़ी। बूंदा-बाँदी ऋतु-रंग में परिवर्तन ले आयी। गेहूं की फसल लहलहा उठी। दूर तक मखमली चादर सी बिछ गयी। पर्वत मालाओं के मध्य से उभरता हुआ सूर्य अपनी स्वर्ण-प्रभा से नव-जीवन सञ्चार कर उठा। छात्रों की प्रभात फेरी की स्वर लहरी दूर-दूर तक फैली प्रमाद की तामसिक चादर को उघाड़ने लगी। संध्या व हवन की सात्विक स्वर-लहरी प्रभु प्रेम की नयी तरंग हृदयों में भरने लगी। इसी मास मार्घी (मकर-संक्रान्ति) का पावन-पर्व जाड़े की अन्तिम प्रबलता का संदेश देकर चला गया। जाड़े की मेवा मूगफली, रेवड़ी, गजक आदि का आस्वादन होने लगा। च्यवनप्राश और गुरुकुल चाय का दौर शुरू हो गया। शुष्क ठण्ड से जुकाम खाँसी के रोग उभरने लगे। वातावरण शान्त और भीतभरा रहा। समस्त कुलवासी स्वस्थ तथा प्रसन्न हैं।

विद्यालय-विभाग

विद्यालय में अध्ययन व अध्यापन का कार्य प्रगति पर है। स्वाध्याय-सत्र चालू हो गया है। साथ ही क्रीड़ा-सान्मुख्य भी चलते ही रहते हैं। ब्रह्मचारी स्वस्थ तथा प्रसन्न हैं। समय-समय पर आचार्य डा० रामनाथ जी का निरीक्षण कार्य भी जारी है।

योग्यता और आयु आदि के आधार पर ६ माही परीक्षा के बाद निम्न ब्रह्मचारियों को उन्नति दी गयी। ब्र० वीरेन्द्र कुमार प्रथम को द्वितीय श्रेणी में, ब्र० प्रेमप्रकाश द्वितीय, ब्र० संजय हरदोई

द्वितीय तथा ब्र० शिवशंकर द्वितीय को तृतीय श्रेणी में, ब्र० गजदीप तृतीय को चतुर्थ में ब्र० नेमसिंह चतुर्थ को तथा ब्र० शिवप्रकाश चतुर्थ को पञ्चम श्रेणी में, ब्र० उमा शंकर व ब्र० भोलेराम पञ्चम दोनों को षष्ठ श्रेणी में, ब्र० रमेश (खेकड़ा) षष्ठ को सप्तम श्रेणी में उन्नति दी गई ।

गुरुगोविन्दसिंह जन्मदिवस

६ जनवरी को विद्यालय विभाग की ओर से श्री तिलकराज जी की अध्यक्षता में गुरुगोविन्द सिंह जी का जन्म दिवस मनाया गया । सभा का संचालन श्री विजय कुमार जी ने बड़ी योग्यता पूर्वक किया । ब्र० ताराचन्द व ब्र० सुखबीरसिंह षष्ठ ने कुलपताका गीत गाया । ब्र० सुभाष षष्ठ, ब्रजमोहन अष्टम, ब्र० इन्द्रपाल षष्ठ तथा ब्र० नरेन्द्र कुमार ९ म ने गुरु जी को श्रद्धाञ्जलि भेंट की। अध्यापक वर्ग से सर्व श्री विजय कुमार जी, पं० जनेश्वर पाल जी, पं० हरिवंश जी वेदालंकार ने ओजस्वी एवं विचारोत्तेजक वाणी में गुरुजी को वीरता, निर्भीकता, काव्यमयता आदि का प्रतीक बताया । सभा में छात्र बड़े अनुशासित ढंग से विचार सुनते रहे ।

नेता जी जन्म दिवस

२३ जनवरी को विद्यालय-विभाग की ओर से नेता जी सुभाषचन्द्र बोस का ८० वां जन्मदिवस आचार्य जी की अध्यक्षता में सोत्साह मनाया गया । छात्रों एवं अध्यापकों की ओर से ब्र० नरेन्द्र नवम एवं श्री विजयकुमार जी शास्त्री, श्री आनन्द कुमार जी, श्री पं० हरिवंश जी, श्री तिलकराज जी आदि ने नेता जी के जीवन को प्रेरणादायी एवं अनुकरणीय बताकर महान क्रान्तिकारी देशभक्त, आजाद हिन्द फौज के सेनानायक के रूप में याद कर श्रद्धा सुमन भेंट किए ।

आर्यसमाज गुरुकुल कांगड़ी

इस मास आर्यसमाज में प्रत्येक रविवार को यज्ञादि होते रहे । रविवार ४ जनवरी को विशेष रूप से कुलपति श्री बलभद्रकुमार जी का आर्यसमाज की आवश्यकता पर विशेष व्याख्यान हुआ । तदुपरान्त वेदविभाग के प्रो० श्री भारत भूषण जी वेदालंकार का वेदों की संख्या एवं स्थिति' के बारे में सारगर्भित गवेषणापूर्ण एवं विद्वत्तापूर्ण भाषण हुआ । प्रो० ने पुराणादि से प्रमाण देकर 'वेद चार ही हैं ' इस मत की पुष्टि की । प्रधान श्री पं० भगवद्दत्त जी वेदालंकार ने धन्यवाद दिया ।

पुस्तकालय-समिति

पुस्तकालय की व्यवस्था को सुचारू बनाने के लिए श्री कुलपति जी की अध्यक्षता में एक 'विश्वविद्यालय स्तर पर पुस्तकालय समिति' गठित की गयी है । सभी विभागों के अध्यक्ष इसके सदस्य हैं ।

'वैदिक मैगज़ीन' व 'शोधभारती' के प्रकाशन की योजना

श्रद्धानन्द 'शोध-संस्थान' की बैठक २९-१२-७५ को दिल्ली में हुई। इसमें कुलपति श्री बलभद्र कुमार जी, श्री डा० सत्यकेतु जी विद्यालंकार, श्री डा० गंगाराम जी (कुलसचिव) ने भाग लिया। निश्चय हुआ कि संस्थान की ओर से निकट भविष्य में आंग्लभाषा में 'वैदिक मैगजीन तथा आर्य भाषा (हिन्दी) में त्रैमासिक 'शोधभारती' का प्रकाशन किया जाय। इनमें उच्चस्तरीय वैदिक लेख तथा साहित्यिक शोध, लेख प्रकाशित होंगे। 'वैदिक मैगजीन' के प्रधान सम्पादक डा० सत्यकेतु जी तथा 'शोध भारती' के मुख्य सम्पादक आचार्य डा० रामनाथ जी वेदालंकार होंगे। यह विश्व विद्यालय के लिए एक सुन्दर प्रयास होगा।

फार्मेसी-परिसर में जलपान गृह का उद्घाटन

१ जनवरी ७६ से गु० कु० कांगड़ी फार्मेसी के परिसर में फार्मेसी के कर्मचारियों के लिए एक जलपान-गृह (कैण्टीन) को प्रारम्भ किया गया। इसके संचालक श्री हरीशकुमार राठौर है। इसका समस्त श्रेय फार्मेसी विभाग को है। इस अवसर पर फार्मेसी के कार्यकर्त्ताओं एवं अधिकारियों की ओर से श्री कुलपति बलभद्र कुमार जी का भव्य स्वागत किया गया। इस समारोह में हरिद्वार क्षेत्र के अनेक गण-मान्य सज्जन भी पधारे। चायपान आदि के पश्चात् कार्यक्रम समाप्त हुआ।

डा० हरिप्रकाश जी अस्वस्थ

फार्मेसी के व्यवसायाध्यक्ष डा० हरिप्रकाश जी को पेट की तीव्र वेदना के कारण दिल्ली के मैडिकल इन्स्टीट्यूट में दाखिल किया गया। जहाँ अब डाक्टर जी के स्वास्थ्य में काफी सुधार है। हम प्रभु से डाक्टर जी के शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना करते हैं।

संग्रहालय-सप्ताह-समारोह

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में ८ से १४ जनवरी तक प्राचीन भारतीय इतिहास विभाग के तत्त्वावधान में संग्रहालय सप्ताह का सफल आयोजन हुआ। दिनांक ८-१-७६ को उद्घाटन करते हुए पुरातत्त्व संग्रहालय के निदेशक डा० विनोदचन्द सिन्हा ने संग्रहालयों की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हम इस संग्रहालय को शीघ्र ही एक बड़े क्षेत्रीय संग्रहालय के रूप में परिणत कर देने के लिए सबल प्रयास कर रहे हैं। दिनांक ९ जनवरी से १४ जनवरी तक संग्रहालय के सभी कक्ष साधारण जनता के लिए खोल दिए गए।

संग्रहालय-सप्ताह का प्रमुख सांस्कृतिक आयोजन १३ जनवरी को डा० रामनाथ जी आचार्य द्वारा उद्घाटन से किया गया। 'पृथ्वीराज की आंखें' नामक एकांकी नाटक तथा 'हड़प्पा हाउस' और 'नशाबन्दी' नामक प्रहसन की भूरी-भूरी प्रशंसा की गयी। 'भालू वाला' प्रहसन देखकर दर्शक

लोट-पोट हो गए। ब्र० बलबीर ब्र० गणेश विद्यालंकार, ब्र० रवीन्द्र आदि का अभिनय अच्छा रहा। अनेक छात्रों ने गीत गाये। इस समारोह को सफल बनाने में विशेष सहयोग प्रो० जबरसिंह जी, प्रो० श्यामनारायण सिंह जी, श्री सुखबीरसिंह जी व श्री कालूराम जी न दिया।

वित्त समिति की बैठक

पिछले दिनों दिल्ली में वित्त समिति की बैठक हुई। श्री कुलपति बलभद्रकुमार जी, श्री डा० गंगाराम जी कुलसचिव, श्री गुलाठी जी (सहायक शिक्षा सलाहकार भारत सरकार) श्री सरदारी लाल वर्मा, श्री ए० बी० वोहरा (कण्ट्रोलर) उपस्थित हुए। इसमें विश्वविद्यालय का ७५-७६ का संशोधित तथा ७६-७७ का अनुमानिक बजट विचारार्थ प्रस्तुत हुआ। सामान्य संशोधन के साथ पास हुआ।

वाद-विवाद प्रतियोगिता

२१ जनवरी को श्रद्धानन्द-परिवार की ओर से एक वाद-विवाद प्रतियोगिता का समायोजन, परिवार प्रमुख प्रो० जयदेव वेदालंकार के संयोजकत्व में हुआ। सभा की अध्यक्षता आचार्य श्री विश्वबंधु जी ने की। प्रतियोगिता का विषय था—'धर्म और राजनीति अन्योन्याश्रित है। इसमें ८ छात्र वक्ताओं ने भाग लिया। ब्र० आनन्दकुमार संस्कृत एम० ए० (प्रथम वर्ष) प्रथम रहे। ब्र० अशोक विद्यालंकार व ब्र० वेदप्रकाश संस्कृत एम. ए. (प्रथम वर्ष) क्रमशः द्वितीय व तृतीय रहे। पिछले मास उज्जैन में हुई प्रतियोगिता में जिन छात्रों ने विजयी पुरस्कार प्राप्त किये उनके नाम इस प्रकार हैं। ब्र० देवकेतु एम. ए. (प्रथम वर्ष) तथा ब्र० विक्रमकुमार। छात्रों को बधाई।

डा० राकेश जी द्वारा हिन्दी की अनेक गोष्ठियों में प्रतिनिधित्व

(१) हिन्दी साहित्य के प्रतिष्ठित विद्वान्, सुकवि एवं गुरुकुल विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक डा० विष्णुदत्त जी 'राकेश' ने अनेक संगोष्ठियों में भाग लेकर कुल को गौरवान्वित किया। 'दिल्ली विश्वविद्यालय में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सहयोग से आयोजित 'अखिल भारतीय तुलसी संगोष्ठी' में तुलसी की काव्य भाषा पर मौलिक विचार प्रकट किए। डा० राकेश जी के वक्तव्य पर हिन्दी दैनिक 'नव-भारत-टाइम्स' ने अपनी विशेष टिप्पणी भी दी।

(२) इसी प्रकार गत मास 'मेरठ विश्व विद्यालय हिन्दी प्राध्यापक परिषद्' के खतौली अधिवेशन में 'हिन्दी साहित्य के इतिहास' के पुनर्मूल्यांकन की समस्या गोष्ठी में भी राकेश जी ने 'मध्यकालीन हिन्दी साहित्य को विविध धाराओं के व्यवस्थापन और उद्भव पर आधुनिक इतिहासकारों की मान्यताओं का खण्डन करते हुए इतिहास लेखन की नवीन पद्धति सुझाई।

(३) 'हिन्दू स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अमरोहा में 'हिन्दी परिषद्' का उद्घाटन करते हुए भी डा० राकेश जी ने कहा कि—"साहित्य, साहित्यकार के अहं का सामाजिक प्रत्यारोपण है। अतः

साहित्य में मात्र व्यक्ति स्वातन्त्र्य कोई मूल्य नहीं रखता।' इस गोष्ठी की अध्यक्षता प्रसिद्ध नाटककार श्री विष्णु प्रभाकर ने की।

शतहस्त समाहर सहस्रहस्त संकिर

जिन दानी महानुभावों ने गुरुकुल को अपने अर्थ का सात्विक दान दिया, उनके धन्यवाद सहित नाम इस प्रकार हैं—

१००१) श्री पं० धर्मवीर जी विद्यालंकार, स० मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी से।
१९६) श्री सूर्यदेव प्रधानाचार्य, जीवन शक्ति फार्मेसी, गोरखपुर से।
११५) मेसर्स वृन्दावन हंसराज क्लाथ मर्चेण्ट कटरा जयमलसिंह, अमृतसर से।
१०१) श्री मोतीलाल जी सरावगी से ब्र० राजेन्द्र २य के वस्त्रों वा मूल्यदान में।
१०१) श्री रमेशचन्द्र जी अग्रवाल से उनकी माता जी की पुण्य स्मृति मे।

विविध खेल-कूद प्रतियोगितायें

१- २ जनवरी को विश्वविद्यालय और हरिद्वार क्लब का हाकी मैच हुआ। निर्णय हरिद्वार के पक्ष में रहा।

२- ४ जनवरी को विद्यालय की षष्ठ तथा सातवीं श्रेणी में मनोरंजक क्रिकेट मैच हुआ। सप्तम श्रेणी विजयी रही।

३- ७ जनवरी को विश्वविद्यालय और हरिद्वार क्लब के मध्य हाँकी मैच अनिर्णीत रहा।

४- ९ जनवरी को विद्यालय की अष्टम तथा षष्ठ+सप्तम श्रेणी के बीच फुटवाल का मनोरंजक मैच हुआ। अष्टम श्रेणी विजयी रही

५- १० जनवरी को ज्वालापुर इन्टर कालेज तथा विद्यालय-विभाग के मध्य फुटवाल का मैच हुआ। विद्यालय ७ गोल से जीता।

६- ११ जनवरी को आयुर्वेद महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय का क्रिकेट मैच हुआ। विश्वविद्यालय टीम विजयी रही। आचार्य रामनाथ जी ने उद्घाटन किया। डा० वासुदेव जी (आयुर्वेद), प्रो० वीरेन्द्रसिंह जी (गणित विभाग), प्रो० श्यामनारायणसिंह जी (इतिहास विभाग), श्री राजेन्द्र प्रसाद जी (आश्रम अ०) ने छात्रों का उत्साहवर्द्धन किया।

७- आयुर्वेद महाविद्यालय के टी० एन० छात्रावास में नियमित वालीवाल का खेल होता रहा।

८- जनवरी मास में 'राजेन्द्र-छात्रावास' में आचार्य श्री देवव्रत जी व्यायामाचार्य ने वेद एवं विज्ञान के छात्रों को लाठी, बनेठी, योग एवं मलखम्ब की क्रियात्मक शिक्षा दी। ज्ञात हो कि आचार्य जी उत्तरी भारत में धनुर्विद्या एवं मलखम्ब के एकमात्र शिक्षक कहे जा सकते हैं। समय २ पर गुरुकुल उनकी सेवाओं का लाभ उठा सकता है।

९– १७ जनवरी से २२ जनवरी तक विश्वविद्यालय हाकी कोच श्री अजीतसिंह के प्रयत्न से 'गुरुकुल के विभिन्न महाविद्यालयों' का हाकी टूर्नामेंट सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ । आयुर्वेद महाविद्यालय प्रथम रहा ।

१०–२७ जनवरी को आयुर्वेद महाविद्यालय तथा ऋषिकुल आयुर्वेदिक कालेज का परस्पर स्नेहपूर्ण बालीवाल खेल हुआ ।

११–जनवरी मास में 'विद्यालय-आश्रम' में 'योगासन' एवं पी.टी.' व्यायाम होते रहे ।

१२–३० जनवरी को विश्वविद्यालय के शिक्षणेत्तर कर्मचारियों और उपाध्याय वर्ग के बीच बालीवाल मैच हुआ । कर्मचारी विजयी रहे । आज से ही 'ओ३म्' ध्वज फहराने का कार्य-क्रम निश्चित हुआ ।

संस्कृत-भाषण व श्लोक प्रतियोगिता

३१ जनवरी ७६ को कुरुक्षेत्र विश्व विद्यालय में संस्कृत-भाषण व श्लोक-पठन प्रतियोगिता हुई । जिसमें ब्र० देवकेतु संस्कृत एम·ए· (२य वर्ष) व ब्र० रणवीरसिंह संस्कृत एम० ए० (२ य) ने 'भाषण' में भाग लिया । ब्र० देवकेतु का २य स्थान रहा । ब्र० गणेशप्रसाद विद्यालंकार ने श्लोक-पाठ किया । विजयी ब्र० को बधाई ।

२६ जनवरी का भव्य समारोह

आकर्षक एन. सी. सी. परेड– गणतंत्र–दिवस की २७ वीं वर्ष-गांठ के अवसर पर कुल में अनेक कार्यक्रम हुए । शुभारम्भ प्रभात फेरी से हुआ । मेघावलि से आच्छादित गगन-मण्डल के नीचे श्रद्धानन्द-नगरी में लगभग ९ बजे गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, भल्ला कालेज, आनन्दमयी सेवासदन तथा विद्यालय विभाग (गु० कां०) के एन·सी· सी· छात्रों, छात्राओं तथा स्काउट्स गाइड्स के द्वारा भव्य परेड का कार्य-क्रम प्रस्तुत हुआ । एन· सी. सी. के सजीले युवक और युवतियाँ तथा विद्यालय के स्काउट्स-छात्र और बैण्ड दल जब सलामी-मञ्च से गुजरे तो समस्त जन-समूह ने तालियों की गड़गडाहट के बीच उनका स्वागत किया । परेड का कमाण्ड गुरुकुल विज्ञान महाविद्यालय के प्रो० सै० लैफ्टि० जी· पी. भट्ट ने किया । परेड की सलामी व निरीक्षण कुलपति श्री बलभद्रकुमार जी ने किया । उन्होंने सभी को सम्बोधित करते हुए कहा कि– देश के सामने जो मुश्किलात हैं उन्हें हम सब को दूर करना है । आज का दिन हमारे लिए बड़ा दिन है । आज के दिन राष्ट्र को एक संविधान प्रदान किया गया था । इस देश का झंडा सदा ऊंचा रहे यह सब का कर्तव्य है । देश में जो गरीब है उनकी क्या सेवा करें, यह भी हमें सोचना है ।" तदुपरान्त एन· सी.सी· कर्नल ने भी दो शब्द कहे । परेड की सम्पूर्ण व्यवस्था एवं संचालन गुरुकुल एन· सी·सी· के कमाण्डर सै. लै. प्रो० वीरेन्द्रसिंह जी अरोड़ा ने किया । कार्यक्रम बड़ा ही स्फूर्तिदायक एवं आकर्षक रहा । इस अवसर पर आनन्दमयी सेवासदन की बालिकाओं ने भंगड़ा और कव्वाली का रंगा-रंग कार्य-क्रम प्रस्तुत किया । विद्यालय-छात्रों ने श्री रणजीतसिंह जी के नेतृत्व में पी· टी. एवं लेजिम का शानदार प्रदर्शन किया ।

ब्र. देवकेतु का बलप्रदर्शन-- इसी समारोह के दूसरे चरण में व्यायामाचार्य श्री देवव्रत जी के संरक्षकत्व में अनेक ब्रह्मचारियों ने (देवकेतु, रणवीर, ओमप्रकाश, बलबीर, विजय, राजकुमार, विजयेन्द्र, हरिदेव) योगासन, लाठी, जापानी कुश्ती, स्तूपनिर्माण तथा मलखम्ब के अद्भुत खेल प्रदर्शित किए । अन्त में विश्वविद्यालय के संस्कृत एम· ए· (२य वर्ष) के छात्र ब्र० देवकेतु ने लोहे की जंजीर तोड़कर, थाली फाड़कर तथा कार को रोककर अपने अद्वितीय बल का प्रदर्शन किया । गणतन्त्र-दिवस का समस्त कार्यक्रम बड़े उत्साह और उल्लास युक्त वातावरण के साथ समाप्त हुआ ।

ला० लाजपतराय-दिवस

दिनांक २८-१-७६ को वेद मन्दिर में श्री कुलपति जी की अध्यक्षता में पंजाब केसरी लाला लाजपतराय की १११ वीं वर्षगांठ मनाई गई । सभा-संयोजन अंग्रेजी विभाग के प्रोफेसर डा० अमरनाथ द्विवेदी ने किया । अनेक वक्ताओं ने लाला जी के ज्वलन्त जीवन पर अपने भाषण दिए ।

शोक-समाचार

कुल वासियों को यह समाचार पढ़कर अत्यन्त दुःख होगा कि पिछले दिनों श्री मंगूराम जी मिस्त्री का अचानक ही देहान्त हो गया । वे गुरुकुल के बहुत पुराने कार्य-कर्ता थे । हम दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रभु से प्रार्थना करते हैं ।

छात्र आश्रम की गतिविधियां

दिनांक १६-११-७५ की कार्यवाही

१ छात्रावास के छात्रों से बकाया शुल्क का धन प्राप्त करने के लिये निर्णय हुआ।

(क) कालेज के प्रिंसिपलों के पास बकाया शुल्क वाले छात्रों की सूची बनाकर कार्यालय से भेजीजावे
(ख) छात्रों से बकाया शुल्क प्राप्त करने के लिये कालेज के प्रिंसिपल उचित कार्यवाही करें।
(ग) बकाया शुल्क प्राप्त करने के लिये कार्यालय छात्र के घर उसके पिता को शुल्क-कार्ड भेजे।
(घ) छात्र को इस बात की सूचना प्रिंसिपल एक मास पहले से ही दे देवें कि शेष शुल्क जमा न कराने पर छात्र को वार्षिक परीक्षा से वंचित कर दिया जायेगा और यह सूचना छात्र के संरक्षकों को भी श्री प्रिंसिपल महानुभाव शुल्क-कार्ड द्वारा दे देवें।

२ छात्रावासों के छात्रों से आश्रम-शुल्क तथा बिजली-व्यय जमा कराने का उत्तरदायित्व कालेज के प्रिंसिपलों का होगा। अतः वार्षिक परीक्षा का फार्म भरने से पहले ही छात्र से बकाया आश्रम-शुल्क, बिजली व्यय जमा करा लेना चाहिये।

३ तीनों छात्रावासों—राजेंद्र छात्रावास, टेकचन्द नागिया आश्रम, विज्ञान छात्रावास। इनमें नवीन शुल्क दर नवम्बर १९७५ से लागू किया जावे। नवम्बर ७५ से पूर्व शुल्क पुराने दर से प्राप्त किया जावे। नवम्बर ७५ से छैः मास के लिये इकट्ठा शुल्क ले लिया जावे। नवीन शुल्क-दर जो राजेन्द्र छात्रावास तथा टेकचन्द नागिया आश्रम के लिये निर्धारित किया गया अधोलिखित है—

५०)०० रक्षाधन(धरोहर), १८)०० क्रीड़ा वार्षिक, १५)०० फर्नीचर (वार्षिक), ६०)०० आश्रम शुल्क (छैः मास का), २४)०० बिजली व्यय—(छैः मास का) कुल योग १६७)००।

नोट—यदि मीटर रीडिंग के अनुसार हिसाब ४) रुपया मासिक से अधिक आयेगा तो वह अधिक रुपया भी प्रति छात्र से प्राप्त किया जायेगा।

४ विज्ञान छात्रावास में रहने वाले आयुर्वेद के हाउस सर्जनों चिकित्सकों से १८)०० मासिक शुल्क तथा ७)०० मासिक बिजली व्यय कुल मिलाकर २५)०० मासिक लिया जायेगा, जो प्रतिमास उनके वेतन से कटौती करली जायेगी।

५ सब आश्रमों में नित्य प्रति सन्ध्या-हवन किया जाना चाहिये।

६ राजेन्द्र छात्रावास, टेकचन्द नागिया आश्रम तथा धन्वन्तरि विज्ञान छात्रावास इन तीनों के लिये डाक्टर कान्तिकृष्ण आयुर्वेदालंकार एम० ए० को चीफ वार्डन (मुख्य आश्रमाध्यक्ष) नियुक्त किया जाता है। चीफ वार्डन के सहायक के रूप में अधिष्ठाता वार्डन नियुक्त किया जावे। वार्डन छात्रावास में ही रहेंगे और रात्रि में वहीं छात्रावास में सोया करेंगे। टेकचन्द नागिया आश्रम के लिये डाक्टर जसवीरसिंह को वार्डन (अधिष्ठाता) नियुक्त किया जाता है। राजेन्द्र छात्रावास के लिये श्री राजेन्द्रप्रसाद सैनी को वार्डन (अधिष्ठाता) नियुक्त किया जाता है।

संरक्षक सभा की कार्यवाही

दिनांक १-१२-१९७५

कार्यवाही संरक्षक सभा आज दिनांक–११-१२-१९७५ को प्रातः १०बजे सीनेट हाल, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार में निम्न महानुभावों की उपस्थिति में सम्पन्न हुई।

उपस्थिति

१–श्री बाबूराम जी आर्य, २–श्री अतरसिंह जी ३-श्री ओमप्रकाश जी ४–श्री लखनलाल जी, ५–श्री रामप्रसाद जी वैद्य, ६–श्री रामकृष्ण जी, ७–श्री अमरनाथ, ८–श्री आनन्दपालसिंह जी, ९-श्री पदमसिंह जी, १०–श्री ओमनारायण जी, ११–श्री लटूरसिंह जी, १२–श्री अमरसिंह जी, १३–श्री मांगेराम, जी १४–श्री दरियावसिंह जी, १५–श्री अतरसिह जी, १६–श्री ब्रह्मसिह जी, १७–श्री छेदालाल जी, १८-श्री वसन्तलाल जी आर्य, १९–श्री कृपालसिह जी, २०–श्री भगवानसिंह जी, २१–श्री बृजेन्द्रसिंह जी, २२–श्री श्यामसिंह जी, २३–श्री रघुवीरसिंह जी, २४–श्री परमसिह जी, २५–श्री नरवीरसिंह जी, २६–श्री चाननलाल जी, २७–श्री सरजीतसिंह जी, २८–श्री दयाराम जी, २९–श्री धूमसिंह जी ३०–श्री विश्वबन्धु जी शास्त्री,

विशेष आमन्त्रित

१–श्री बलभद्रकुमार जी कुलपति, २–श्री डा० रामनाथ जी आचार्य, ३–श्री धर्मबीर जी विद्यालंकार, स०मुख्याधिष्ठाता,४–श्रीरामाश्रय जी मिश्र, ५–श्री तिलकराज जी, ६–श्री जगदीशप्रसाद जी, ७–श्री डा० श्यामनारायण जी ८–श्री हरिबन्धु जी, ९–श्री अतरसिंह जी,

श्री डा० रामनाथ जी आचार्य की अध्यक्षता में संरक्षक सभा की कार्यवाही प्रारम्भ हुई।

१ श्री दरियावसिंह जी ने प्रस्तावित किया कि गुरुकुल की संरक्षक सभा के पदाधिकारियों का चुनाव गुरुकुल कांगड़ी को पुरानी संरक्षक सभा के आधार पर किया जावे। श्री रामकृष्ण जी ने इस प्रस्ताव का अनुमोदन किया। सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ।

२ श्री दरियावसिह जी ने प्रस्तावित किया कि मैं श्री बाबूराम जी आर्य, को प्रधान पद के लिये, श्री अतरसिह जी को उपप्रधान पद के लिये, व श्री रामकृष्ण जी को मंत्री पद के लिये तथा श्री श्यामसिंह को उपमंत्री पद के लिये व श्री अतरसिंह जी आर्य को कोषाध्यक्ष के लिये नियुक्त करना चाहता हूँ।
श्री अतरसिह जी ने उपरोक्त प्रस्ताव का समर्थन किया। सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ।

३ श्री बाबूराम जी आर्य ने प्रस्तावित किया कि श्री ओमप्रकाश जी, श्री कृपालसिह जी,श्री वसन्तलाल जी आर्य, श्री दरियावसिंह जी, श्री आनन्दपालसिंह जी तथा श्री मांगेराम जी आर्य को कार्यकारिणी सभा के लिये नियुक्त करते हैं। उपरोक्त प्रस्ताव का समर्थन श्री अतरसिंह जी ने किया। सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ।

४ गुरुकुल की व्यवस्था के सम्बन्ध में सुझाव प्रस्तुत किये जिनका विवरण निम्न प्रकार है :–

क गुरुकुल में अध्यापक, व अन्य अधिकारिगण वैदिकधर्मी ही रखे जावें जो वेदाज्ञा का पालन करते हों।

(ख) सब अधिकारीगणों व छात्रों की वेशभूषा गुरुकुल की परम्परानुसार धोती, कुर्ता, टोपी होनी चाहिये। पैण्ट, बुशर्ट व टाई वाले महा-

नुभावों को तिलांजलि दे दी जावे छोटे बच्चे श्रेणी १ पायजामा तथा धोती।

(ग) अधिकारीगणों के गृहों में व आश्रम में प्रत्येक छात्र को सन्ध्या, यज्ञ करना अनिवार्य हो।

(घ) गुरुकुल में चौदह त्यौहार –प० भवानीप्रसाद कृत आर्यपर्व पद्धति पुस्तक के अनुसार ही प्रत्येक कुलवासी के गृह में व आश्रम में मनाये जाने चाहिये। इसके विरुद्ध कोई अन्य त्यौहार न मनाये जावे।

(ङ) ऐसे कर्मचारियों की ठीक प्रकार से निगरानी की जावे जो गुरुकुल के धन को गबन करते हैं। पकड़े जाने पर गबन कैश धारा ४०९ भारतीय दण्ड संहिता के अनुसार चलाया जावे और सेवा तुरन्त समाप्त कर दी जावें।

(च) आश्रम में बच्चों के वस्त्र कुर्ता, कम्बल आदि बहुत चोरी होते हैं यह चोरी बन्द होनी चाहिये। यदि किसी बच्चे के वस्त्र चोरी जाते हैं तो अधिष्ठाता उसका पता लगावें व चोर से वसूल करे अन्यथा उसके संरक्षक को सूचित करें।

(छ) प्रत्येक बच्चे के वस्त्र, नाखून. दांत, व बाल स्वच्छ होने चाहिये क्योंकि धुलाई आदि का व्यय पड़ता है और समय समय पर साबुन ,तेल जो बच्चों के लिये नियुक्त है मिलना चाहिये और यह सब प्रबन्ध अधिष्ठाताओं को सही ढंग से करना चाहिये।

(ज) आश्रम के अन्दर इन्डौर गैम खेल खिलाया जाये। बच्चों को सिनेमा आदि बाहर देखने जाने न दिया जावें।

(झ) ऐसी प्रदर्शनी या निर्माण कार्य या सम्मेलन जिसमें बच्चों पर अच्छा प्रभाव पड़े गुरुकुल के अधिकारियों की संरक्षता में दर्शनार्थ ले जाया जावें।

(ञ) भोजनालय में प्याज, लहसुन, लालमिर्च आदि का निरोध हो। सात्विक भोजन दिया जावे। दूध, घी, मौसमी फल, सूखे मैवें अधिक दिये जावें।

(ट) ऐसे कर्मचारी जो हमारे बच्चों को भड़काकर तथा हमारे बच्चों द्वारा अपने बैरी (दुश्मन) को पिटवाते हैं जिसके कारण हमारे बच्चे पिता व गुरुओं का अपमान करने लगते हैं। ऐसे कर्मचारियों को क्षमा नहीं किया जा सकता हैं। क्योंकि वह हानि हमें ही हो रही हैं। यदि बच्चे गुरुकुल में अपने गुरुओं का निरादर करेंगे तो फिर घर पर आकर हम लोगों की भी बारी आयेगी।

(ठ) पाठशाला में अध्यापकगण योग्य होने चाहियें किसी की सिफारिश द्वारा न लिये जायें। मुख्याध्यापक काफी अनुभवी होना आवश्यक है तथा कम से कम ५,६ वर्ष मुख्याध्यापक पद पर रह चुका हो।

(ड) जो अध्यापक जिस विषय को पढ़ावे वह विषय वर्ष भर पढ़ावे और वर्ष के अन्त में प्रत्येक छात्र को उस विषय का ज्ञान कोर्स के हिसाब से होना चाहिये। यदि छात्रों को कुछ आता जाता नहीं है तो ऐसे अध्यापक की सेवा समाप्त करदी जावे। विषय अदला-बदली में अध्यापक यह बहाना ले लेते हैं कि हमसे पूर्व अमुक पंडित जी यह विषय पढ़ाते थे, उन्होंने कुछ पढ़ाया ही नहीं है तो हम क्या करें कि छात्र को कुछ आता जाता नहीं।

(ढ) अध्यापकों को अच्छा वेतन दिये जावे तथा यह वेतन प्रत्येक मास की अन्तिम तिथि ३०

या ३१ तारीख को दे दी जावे । तीन-तीन चार चार मास वेतन न मिलने पर उत्साह कम हो जाता है ।

(ण) फार्मेसी की पूर्ण आय गुरुकुल पर व्यय होवे क्योंकि उसकी स्थापना गुरुकुल के खर्च चलाने के निमित्त हुई है ।

(त) आश्रम में दरवाजे, खिड़कियां जो टूट गई हैं बनाई जावे ताकि कमरे बन्द किये जा सकें ।

(थ) स्कूल के समय में सब छात्रों को अधिष्ठाता पाठशाला भेजें व स्कूल समय में कोई छात्र आश्रम में पाठशाला से वापस न आवे बहुत से छात्र पाठशाला न जाकर आश्रम में ही छुपे बैठे रहते हैं ।

(द) आश्रम में रात्रि के समय अधिष्ठाता सब छात्रों को स्कूल में बताये पाठ को याद करने में संलग्न करावें तथा पढ़ावें ।

(ध) प्रत्येक ब्रह्मचारी को पाठशाला में अपना पूर्ण बस्ता लेकर जाना होगा । कलम, स्याही, कापी, पुस्तकें आदि का पूर्ण प्रबन्ध हो क्योंकि देखने में यह आया है कि स्कूल में अध्यापक पाठ लिखा रहे हैं ब्रह्मचारी के पास कलम नहीं है। कलम है तो कापी नहीं है। लेखन, सामग्री का व्यय प्रतिमास हमारे बिल में शामिल होता है फिर यह सामान क्यों नहीं दिया जाता ।

(न) प्रत्येक ब्रह्मचारी को कक्षा ५ से १० तक प्रत्येक दिन बारी बारी से धार्मिक विषय पर या अन्य विषय पर भाषण देना भी अनिवार्य रूप से सिखाया जावे । धर्म के विषय में वाद-विवाद प्रतियोगिता भी अनिवार्य हो ।

(प) युद्ध विद्या को भी शिक्षा प्राचीन प्रणाली के अनुसार धनुषबाण, बन्दूक चलाना तथा व्यायाम व कुश्ती लड़ना भी सिखाया जावे ताकि युद्ध के समय ब्रह्मचारी समय पर अपनी रक्षा भी कर सकें ।

(फ) गुरुकुल के कुलपति जी को स्थायीतौर से अधिकतर गुरुकुल में ही निवास करना चाहिये ताकि गुरुकुल की व्यवस्था ठीक हो सकें ।

(ब) गुरुकुल की नियमावली के अनुसार ८ वर्ष की आयु के ऊपर का बच्चा गुरुकुल में प्रवेश न पावे । अधिक आयु के बच्चे प्रवेश करने का यह दुष्परिणाम है ।

(भ) गुरुकुल विद्यालय के ऊपर की कक्षाएं जो बारहवीं से एम० ए० तक की है उन में भी गुरुकुल के ही नियम लागू हों ।

(म) हम सब संरक्षक गुरुकुल का शुल्क प्रत्येक मास के अन्त में स्वतः भेज दिया करें । गुरुकुल के मासिक व्ययपत्र की प्रतीक्षा न करें ।

(य) ऐसे ब्रह्मचारी जो गुरुकुल के नियमों का पालन न करें, उद्दण्डता करें । गुरुकुल के अधिकारी तथा अन्य मान्य बन्धुओं का अपमान करें तो उन्हें समझाया जाये । न मानें तो पत्र द्वारा उन के संरक्षकों को बुलाकर उन्हें समझाया जावे' फिर भी न मानें तो संरक्षक सभा के मंत्री व प्रधान सभा समझावें और इस पर भी न मानें तब उनके माँ-बाप को बुलाकर उन्हें स्कूल से निकाल दिया जावे ।

(र) यह आर्यसमाज की संस्था है इसलिये इस गुरुकुल की पवित्रभूमि पर जहाँ तक गुरुकुल की सीमा है इस के अन्दर कार्य करने वाले कार्यकर्ता तथा कुलवासी व बाहर से अन्य आने वाले यात्री दर्शक कोई भी हो किसी प्रकार का मद्य, शराब, भाँग, बीड़ी, सिगरेट आदि प्रयोग न कर सकेंगे ।

(ल) गुरुकुल के फार्म की अमूल्य भूमि से कोई लाभ नहीं होता है जब कि आजकल वैज्ञानिक ढंग से खेती होती है यदि सही प्रबन्ध हो तो गुरुकुल विद्यालय का सारा खर्च अकेले फार्म से चल सकता है। इसलिये इस फार्म के प्रबन्ध कर्ता कृषि विद्वान रखे जावें ताकि लाभ हो सके।

(व) आश्रम में ब्रह्मचारियों के वस्त्र आदि फटने पर यदि माँ – बाप घर से न भेज सके तो गुरुकुल से बनवा दिया जावे तथा खर्चा संरक्षक के नाम डाल दिया जावें।

(श) गुरुकुल आर्यसमाज की भट्टी है। योग्य शिक्षकों को ऐसी शिक्षा देनी चाहिये ताकि अमिट छाप हो जावे और प्रत्येक ब्रह्मचारी पक्का वैदिकधर्मी बनकर निकले।

(ष) पाठशाला का समय ६ बजे से १२॥ तथा २॥ से ४ बजे तक रहे। दोनों समय पाठशाला रहने से बच्चों को उपद्रव करने का समय नहीं मिल सकता। साढ़े बारह बजे से अढ़ाई बजे तक २ घण्टे में सब ब्रह्मचारियों का भोजन हो जाया करेगा।

(स) अस्पताल के डाक्टर महोदय बच्चों के स्वास्थ्य का ध्यान रखें तथा प्रतिमास संरक्षकों को जाने वाले बिलों में प्रत्येक बच्चे की तोल तथा स्वास्थ्य का विवरण सही भेजा करें।

(ह) अधिष्ठाताओं का वेतन मान कम है साधारण मजदूर भी दिन भर ही कार्य करता है और रात को अपने निवास गृह पर चला जाता है। अतः अधिष्ठाताओं की दिन रात की सेवा देखते हुए उनका वेतन कम है। अतः यह सभा ६०) रू प्रतिमास के स्थान पर १५०) रुप्रतिमास देने की सिफारिश करती है। एवं इस अतिरिक्त वेतन का भार संरक्षकों पर वहन करने की अनुमति देती है। अधिष्ठाता यदि ठीक कार्य नही करेंगे तो उनको वेतन घटाने का अधिकार भी संरक्षक सभा को रहेगा।

(अ) संरक्षक सभा को आयोजित करने का व्यय गुरुकुल वहन करे तथा दैनिक कार्यवाही का खर्चा भी सभा के पदाधिकारियों को मांगने पर बिल द्वारा धन दें। संरक्षक सभा के खाते में जो धन एकत्रित है उसे सभा पद धिकारियों को हस्ताँतरित करने का गुरुकुल व्यवस्था करें।

(आ) कक्षा एक से ५ तक के अधिष्ठाता विद्वान् एवं वानप्रस्थी हों।

(इ) बच्चों के फटे वस्त्रों की सिलाई नहीं होती है। इस लिये दर्जी को आश्रम में ही प्रतिदिन कम से कम तीन घण्टा बैठना चाहिये ताकि फटे वस्त्रों की सिलाई यथासमय हो सके।

(ई) बच्चों के बाल समयपर नहीं बनते। इस लिये नाई को प्रति सप्ताह रविवार के दिन सब बच्चों के बाल बनाना चाहिये। बाल १ से डेढ अगुंल बड़े किसी छात्र के न हो। अंग्रेजी या हिप्पी कट बाल कोई ब्रह्मचारी नही रख सकता। अधिकतर मुण्डन हो ता कि सिर की सफाई होती रहें।

(उ) योगाभ्यास भी बच्चों को कराया जावे तथा इसकी सम्पूर्ण व्यवस्था की जावे।

(ऊ) बच्चों को मध्यान्ह नाश्ते में मौसमी फल आदि ही दिये जावे।

(ए) आयुर्वेद के ब्रह्मचारियों को भी सन्ध्या, हवन का पालन करना चाहिये।

(ऐ) बाहर भ्रमण में जाने पर बच्चों को जो

मिठाई आदि खिलाई जावे वह सब को समान रूप से हो। व्यक्तिगत रूप से बच्चा अपने निज़ी पैसों से कुछ न लेवे।

(ओ) कार्यालय से नकद पैसा किसी ब्रह्मचारी को न दिया जावे।

(औ) समस्त कुलवासी व अधिकारी गण से अनुरोध किया जावे कि वे अपने बच्चों को गुरुकुल में ही पढ़ावे।

(अ) वार्षिक परीक्षा के बाद १५ मई तक आश्रम व भंडार ग्रीष्मावकाश में १ जुलाई तक बन्द कर दिया जावे। इन दिनों कोई भी ब्रह्मचारी आश्रम में न रहने दिया जावे। मार्च मास में गुरुकुल की ओर से संरक्षकों को सूचित कर दिया जावे कि ब्रह्मचारी की वार्षिक परीक्षा के पश्चात् ग्रीष्मावकाश में जो तिथि निश्चित हो गुरुकुल से ले जावे।

(अः) कार्यालय के निकट का कालेज आश्रम वेद-महाविद्यालय वाले छात्रों को दिया जावे।

(।) फार्मेसी, बच्चों के इलाज हेतु जो भी दवाएं आवश्यक हो उनका प्रावधान करे। इन दवाओं का व्यय फार्मेसी के नाम ही रहेगा। तथा ब्रह्मचारी हेतु जो भी दवाएं बाजार से आवे उनका खर्चा गुरुकुल वहन करे। जो अंग्रेजी दवाएं फार्मेसी से उपलब्ध नहीं है वह बड़े अस्पताल से ब्रह्मचारियों को आवश्यकता पड़ने पर दिलाई जावे।

(।।) संरक्षकों के गुरुकुल आने पर उनके रहने की व्यवस्था तुरन्त हो और कोई जानकारी लेनी हो तो गेट पर उपस्थित कर्मचारी ही सम्बन्धित व्यक्ति को अपने साथ लेकर कार्यवाही करें तथा यथास्थान पहुंचावे।

(।।।) ब्रह्मचारी का मासिक व्यय कम से कम रखा जावे जिससे कि संरक्षवगण बच्चों को शिक्षा हेतु अधिक से अधिक संख्या में भेज सकें।

(।।।।) वर्तमान समय में जबकि मंहगाई कम हुई है तो गुरुकुल का भोजन व्यय पूर्ववत् ही है अतः विचार किया जाये।

(।।।।।) गुरुकुल पत्रिका प्रत्येक संरक्षक के पास पहुंचती थी वह नहीं पहुंच रही है अतः व्यवस्था सुधारी जावे।

(।।।। ।) हमारा उपरोक्त सुझाव प्रस्तावों से कोई नया मन्तव्य नही है। गुरुकुल की जो नियमावली है उसके अनुरूप ही पालन होनाचाहिये।

(५) विद्यासभा के प्रतिनिधि चुनने पर विचार हुआ। श्री दरियावसिंह जी ने श्री बाबूराम जी आर्य का नाम विद्यासभा गुरुकुल कांगड़ी हेतु प्रस्तावित किया जिस का समर्थन श्री रामकृष्ण ने किया सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ।

(६) संरक्षक सभा के चुने हुए पदाधिकारियों के नाम पूर्ण पते सहित :- =

प्रधान– श्री बाबूराम जी आर्य, ग्राम नगर पो० ढकना लहिया (खुटार) पिन कोड न० २४२४०५ जिला शाहजहांपुर

उपप्रधान– श्री अतरसिंह जी पंवार, लोहारी खुर्द, पो० चरथावल (मुजफ्फरनगर)

मंत्री– श्री रामकृष्ण जी गुप्ता सैन्ट्रल बैंक आफ इण्डिया, कासगंज (एटा)

उपमंत्री– श्री श्यामसिंह, ग्राम छीतरा, पो० बढ़रायूं (जिला मुरादाबाद)

कोषाध्यक्ष –श्री अतरसिंह जी आर्य, अधिष्ठाता, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार

सदस्य कार्यकारिणी

श्री ओमप्रकाश जी द्विवेदी, पो० गंगाजमुनी, बहराइच ।

श्री कृपालसिंह जी, ग्राम डयोढी, उर्फ हरीपुर (मुरादाबाद)

श्री बसन्तलाल जी आर्य, ग्राम मन्सूरपुर, पो० रहमतमल, जिला रामपुर ।

श्री दरियावसिंह जी, ग्राम कुरैनी, पो० नरेला, दिल्ली –४०

श्री आनन्दपालसिंह जी, ग्राम व पो० मुलहटा (बहजोई) जिला मुरादाबाद

श्री मांगेराम जी आर्य पुत्र श्री राजेराम, ग्राम बदरखा पो० छपरोली, ज़िला मेरठ

७– उपरोक्त समस्त कार्यवाही की प्रतिलिपि गुरुकुल के निम्नलिखित अधिकारियों एवं संस्था को सूचनार्थ भेजी जावे ।

(१) कार्यालय– सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दमानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली ।

(२) कार्यालय – गुरुकुल कांगडी सहायक मुख्याधिष्ठाता, ज़िला सहारनपुर ।

(३) कार्यालय – आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, हरियाणा, नई दिल्ली ।

(४) कार्यालय–कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार ज़िला सहारनपुर

(५) प्रतिलिपि समस्त संरक्षकों (अभिभावकों को)

(६) प्रतिलिपि प्रकाशनार्थ संपादक गुरुकुल पत्रिका

(७) संरक्षक सभा की सूचना पदाधिकारियों की सूची सहित निम्न दैनिक साप्ताहिक समाचार पत्रों को भेजी जावे ।

दैनिक – वीर अर्जुन, नई दिल्ली

दैनिक – नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली

दैनिक – स्वतन्त्र भारत, लखनऊ

दैनिक – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान, नई दिल्ली

साप्ताहिक – आर्यमित्र, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश, ५मीराबाई मार्ग, लखनऊ। पंजाब हरियाणा एवं दिल्ली आदि के आर्य प्रतिनिधि सभाओं के पत्रों को भी सूचना दी जावे ।

८– समस्त कार्यवाही को छपवाने व वितरण कार्य कार्यालय गुरुकुल कांगड़ी सम्पन्न करे ।

डा० रामनाथ
२–१२–७५

रामकृष्ण गुप्ता
२–१२–७५

बाबूराम आर्य
२–१२–७५

गुरुकुल डायरी जनवरी १९७६

(क) प्रातः कुलपति द्वारा छात्रावास निरीक्षण एवं छात्रों को नववर्ष की बधाई ।

(ख) फार्मेसी कर्मचारी कैन्टीन का उद्घाटन ।

३ क्रीड़ा समिति की बैठक ।

४ कुलपति एवं जिलाधीश वार्ता सहारनपुर ।

६ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, अध्यक्ष से कुलपति वार्ता ।

७ प्रो० नूरूल हसन शिक्षा मन्त्री से कुलपति वार्ता ।

८--१४ संग्रहालय सप्ताह ।

९--११ वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय तिरुपति में कुलपति सम्मेलन ।

१२--१४ कुलपति अरविन्द आश्रम पांडिचेरी में ।

१३-- संग्रहालय सप्ताह के उपलक्ष में सांस्कृतिक कार्य क्रम ।

१६--१८ परम धाम आश्रम, पवननार, वर्धा के अखिल भारतीय आचार्य सम्मेलन में कुलपति ।

१७–२३ विश्वविद्यालय हाँकी टूर्नामेंट ।

२१ अन्तः परिवार वाद विवाद प्रतियोगिता ।

२३ सुभाष जयंती ।

२६ गणतन्त्र दिवस परेड एवं सांस्कृतिक कार्य क्रम ।

२७ वेद-कला एवं विज्ञान महाविद्यालयों के प्राध्यापकों की बैठक एवं विभिन्न समितियों का गठन ।

२८ लाला लाजपत जयंती ।

३० प्रतिभावान् छात्रों की बैठक एवं राष्ट्र-पिता के निर्वाण दिवस पर मौन ।

रामाश्रय मिश्र
जन-सम्पर्क अधिकारी
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

प्रगति के बढ़ते चरण—
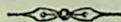
२० सूत्रीय आर्थिक कार्यक्रम

१–आवश्यक उपभोक्ता वस्तुओं के मूल्यों में गिरावट के रूझान को बनाये रखना। उत्पादन की ग करना तथा आवश्यक उपभोक्ता पदार्थों तथा वितरण की व्यवस्था को प्रभावशाली बनाना।

२– कृषि भूमि को भूमिहीनों में तेजी से वितरण करने की कार्यवाही करना और भूमि सम्बन्ध अभिलेख पूर्ण करना।

३–भूमिहीनों व समाज के कमजोर वर्गों को आवासीय भू-खण्डों को तेजी–आंवंटित करना।

४–मजदूरों से जवरन काम लेने को तत्काल गैर कानूनी घोषित किया जायेगा।

५–ग्रामीणों पर कर्ज का बोझ समाप्त किया जायेगा। ग्रामीण क्षेत्रों में भूमिहीन मजदूरों दस्तकार और छोटे किसानों से ऋण-वसूली पर रोक लगाने के लिये कानून बनाकर प्रतिबन्ध लगाया जायेगा

६–खेतिहर मजदूरों को न्यूनतम मजदूरी सम्बन्धी कानूनों में संशोधन किया जायेगा।

७– ५० लाख हैक्टेयर और भूमि में सिचाई की व्यवस्था की जायेगी। भूमिगत जल के अधिकाधिक उपयोग के लिए राष्ट्रीय स्तर के कार्य क्रम बनाये जायेंगे।

८–विद्युत-उत्पादन के कार्यक्रमों में तेजी लाई जायेगी तथा केन्द्रीय सरकार के नियन्त्रण में सुपरता बिजली घरों की स्थापना की जायेगी।

९–हाथ कर्घा उद्योग के विकास की नयी योजना बनाई जायेगी।

१०–जनता कपड़े की किस्म में सुधार किया जायेगा व वितरण की समुचित व्यवस्था की जायेगी।

११–शहरी भूमि व शहरी काम में लाने योग्य भूमि का समाजीकरण किया जायेगा। खाली छोड़ी हुई भूमि तथा नये मकानों के क्षेत्रफल की सीमा निर्धारित की जायेगी।

१२–शहरी सम्पति के मूल्यांकन के लिए विशेष दस्तों का गठन किया जायेगा तथा कर चोर। व गलत मूल्यांकन करने वालों के विरुद्ध त्वरित मुकद्दमें चलाकर कड़ी सजाएं दी जायेंगी।

१३–तस्करों की सम्पत्ति जब्त करने के लिए विशेष कानून बनाया जायेगा।

१४–पूंजी नियोजन की प्रक्रिया को आसान बनाया जायेगा। आयात लायसेंसों का दुरुपयोग करने वालों के खिलाफ कार्यवाही की जायेगी।

१५–उद्योगों के प्रबन्ध में मजदूरों को साथ लेने की नई योजनाएं बनाई जायेंगी।

१६–सड़क परिवहन के लिए राष्ट्रीय परमिट व्यवस्था की जायेगी।

१७–मध्यम आय वर्ग को आयकर में राहत देने के लिए आयकर में छूट कर दी जायेगी।

१८–छात्रावासों में रहने वाले छात्रों को नियन्त्रित मूल्य पर आवश्यक वस्तुओं की व्यवस्था की जायेगी

१९–पुस्तकें और स्टेशनरी नियन्त्रित मूल्यों पर उपलब्ध कराई जायेगी।

२०–रोजगार व प्रशिक्षणके अधिक अवसर बढ़ाने के लिए एप्रिन्टिसशिप की नई योजना शुरू की जायेगी। इस योजना में समाज के कमजोर वर्गों को प्राथमिकता दी जायेगी।

(रामाश्रय मिश्र)
जन-सम्पर्क अधिकारी, गु० कां० विश्व

एन०सी०सी० केडेट्स श्री कुलपति जी को मार्च पास्ट की सलामी देते हुये
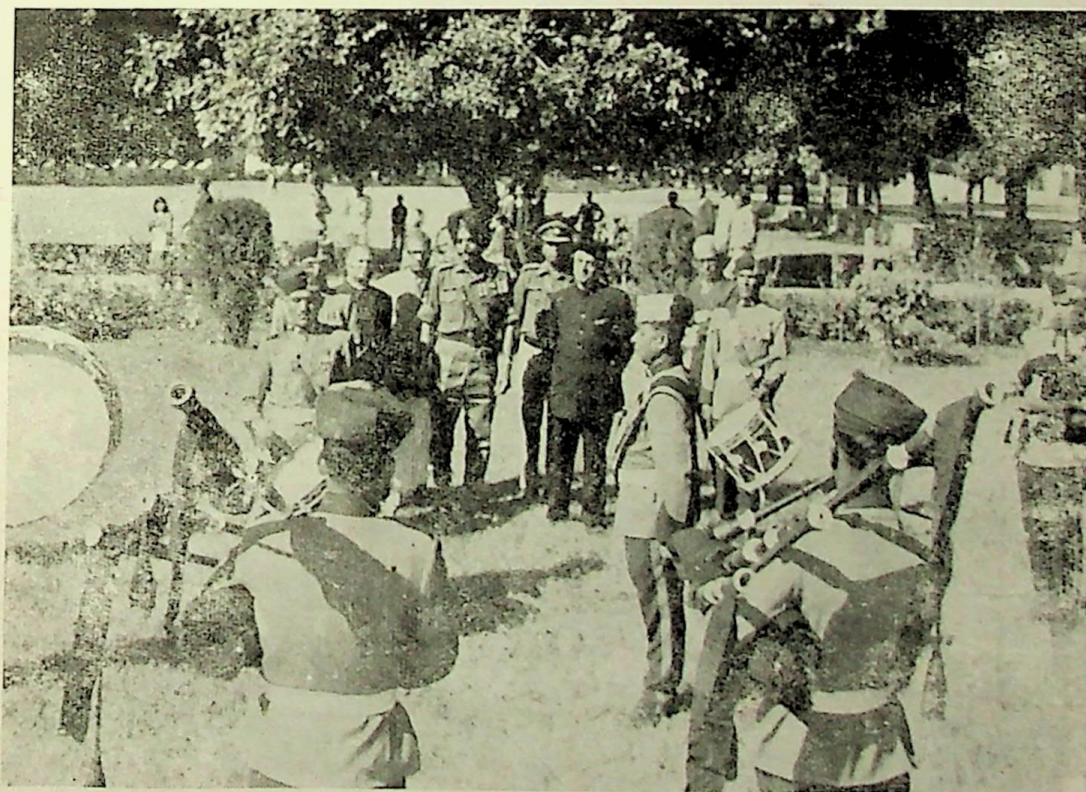
श्री कुलपति जी बैंड वादकों का निरीक्षण करते हुये

हमारी कुछ स्वर्ण निर्मित व अन्य विशिष्ट औषधियां

★ **बसन्त कुसुमाकर**

मधुमेह तथा शारीरिक निर्बलता के लिए उत्तम ।

★ **सिद्ध मकरध्वज**

यौवन को स्थिर रख, सम्पूर्ण शरीर में ताजगी लाता है ।

★ **बृहद् वात चिन्तामणि**

घबराहट, बेचैनी, कमजोरी में सेवन करें ।

★ **योगेन्द्र रस**

अनिद्रा, बेचैनी, अंगों की शिथिलता में लाभदायक है ।

प्रकाशक : डॉ० गंगाराम कुलसचिव : गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय ।

मुद्रक : सुरेशचन्द्र वैष्णव, मैनेजर : गुरुकुल कांगड़ी प्रिन्टिंग प्रेस, हरिद्वार ।